

विषयानुक्रम

चतुर्थस्थानक---३३१-५५५

प्रथम उद्देशः ३३१ द्वितीय

,,

तृतीय

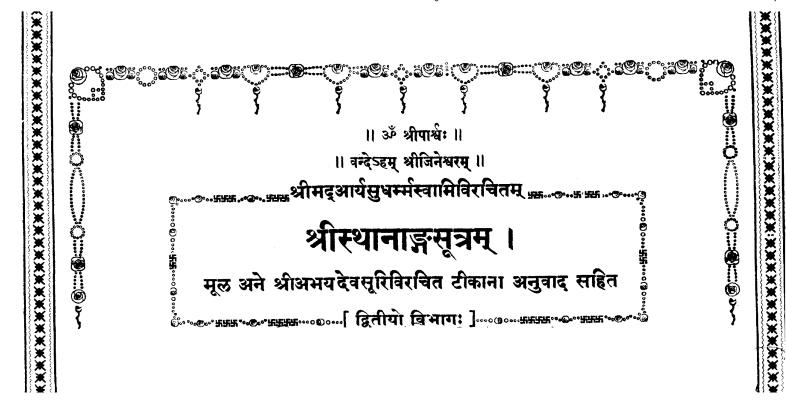
चतुर्घ

3/9

888

909

For Private and Personal Use Only



श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद 11 ३३१ ॥

॥ अथ चतुर्थस्थानकाध्ययने प्रथमः उद्देशः ॥

त्रीजा अध्ययनचुं व्याख्यान करायुं, हवे संख्याना क्रमवंडे संबंधमां आवेछं चार स्थानक नामनुं चोथुं अध्ययन शरू थाय छे. आ अध्ययननो पूर्वना अध्ययन साथे आ प्रमाणे संबंधिवशेष छे. पूर्व अध्ययनमां विचित्र प्रकारे जीव अने अजीव द्रव्यनां पर्यायो कहा, आ चोथा अध्ययनमां पण ते ज कहेवाय छे, तेवा संबंधवंडे प्राप्त थयेल आ अध्ययनना चार अनुयोगद्वारवाळा चार उद्देशकना सत्रानुगममां प्रथम उद्देशकनुं पहेछं सत्र आ प्रमाणे छे—

चत्तारि अंतिकिरियातो पं० तं०-तत्थ खळु पढमा इमा अंतिकिरिया-अप्पकम्मपद्मायाते याित भवति, से णं मुंडे भिवत्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते संजमबहुले संवरबहुले समाहि-बहुले छहे तीरिट्ठी उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति णो तहप्पगारा वेयणा भवति तहप्पगारे पुरिसजाते दीहेणं परितातेणं सिज्झित बुज्झित मुच्चित परिणि-व्वाति सव्वदुक्खाणमंतं करेइ, जहा से भरहे राया चाउरंतचक्कवद्दी, पढमा अंतिकिरिया १, अहावरा दोच्चा अंतिकिरिया, महाकम्मे पचाजाते यािव भवति, से णं मुंडे भिवत्ता अगाराओ अण-

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ अन्तर्कियाः स्र० २३५

॥ ३३१ ॥

गारियं पव्वतिते, संजमबहुले संवरबहुले जाव उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी, तस्स णं तहप्पगारे तवे भवति तहप्पगारा वेयणा भवति, तहप्पगारे पुरिसजाते निरुद्धेणं परितातेणं सिज्झति जाव अंतं करेति जहां से गतसूमाले अणगारे, दोचा अंतिकरिया २, अहावरा तचा अंतिकरिया, महा-कम्मे पचायाते यावि भवति, से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते, जहा दोचा, नवरं दीहेणं परितातेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति, जहा से सणंकुमारे राया चाउरंतचक्क-वही तच्चा अंतिकिरिया ३, अहावरा चउत्था अंतिकिरिया अप्पकम्मपचायाते यावि भवति, से णं मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते संजमबद्धले जाव तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति णो तहप्पगारा वेयणा भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए णिरुद्धेणं परितातेण सिङ्झति जाव सब्वदुवखाणमंतं करेति, जहा सा मरुदेवा भगवती, चउत्था अंतिकरिया ४। सू० २३५

मूलार्थ:-चार अंताक्रियाओ-भवनो अंत करनारी कहेली छे, ते आ प्रमाणे-' खल्ल शब्द वाक्यालंकारमां छे. पहेली अंतिक्रया अल्पकर्मप्रत्यायात-अल्प कर्मने लीघे देवलोकथी च्यवी मनुष्य भवने पामेल ते यावत् ग्रंड थई, घरथी (नीकळीने) अनगारपणाने प्राप्त थयेल, पृथ्वी आदिनी रक्षारूप बहुल (अधिक) संयमवाळो, आश्रवना निरोधरूप अधिक श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद सा ३३२ ॥

संवरवाळो, इंद्रिय अने मननी प्रश्नमतारूप अधिक समाधिवाळो, स्नेह रहित, भवने तरवानो अर्थी (इच्छनारो), उपधान तपने करनार, दुःखना कारणभूत कर्मने खपावनार, तपस्वी-तप करनार थाय छे तेने तथाप्रकारनो-अति घोर तप न होय, तथा-प्रकारना दुःखे सहन करी शकाय एवी वेदना न होय, तथाप्रकारना अल्पकर्मी विगेरे विशेषणवाळो पुरुषजात, घणा काळनी प्रविज्यावडे सिद्ध थाय छे-मोक्षे जाय छे, केवलज्ञानवडे जाणे छे, सकल कर्मथी मुकाय छे, समग्र कर्मना छूटवाथी शीतळ थाय छे, समस्त (ग्रारीरिक अने मानसिक) दुःखोनो अंत करे छे-जेम चारे दिशाना स्वामी चक्रवर्त्ता भरत महाराजाए कर्यो तेम. (१), हवे बीजी अंतिक्रया कहे छे-घणा कर्मोवडे बहुल कर्मवाळो प्रत्यायात-मनुष्यपणाने प्राप्त थयेल यावत् ग्रंड थईने ते अगारथी अणगारपणाने पामेल, अधिक संयमवाळो, विशेष संवरवाळो यावत उपधानतपवाळो, दुःखने। क्षय करनारो तपस्वी थाय छे, तेने तथाप्रकारनो घोर तप, तथाप्रकारनी अत्यंत वेदना थाय छे, तेवा प्रकारनो पुरुषजात थोडा काळनी प्रवज्यावडे सिद्ध थाय छे यावत् सर्वे दुःखोनो गजसुकुमाल मुनिनी माफक अत करे छे. आ बीजी अंतक्रिया. (२), वळी अन्य त्रीजी अंतिक्रया कहे छे-महाकर्मवाळो, मनुष्यत्वने प्राप्त थयेल यावत होय छे, ते ग्रंड थईने अगारथी अणगारपणाने पामेल इत्यादि जेम नीजी अंतिक्रिया कही तेम जाणवी, परंतु विशेष ए के-लांना कालनी प्रव्रज्यावडे सिद्ध थाय छे यावत् चारे दिशाना स्वामी सनत्कुमार चक्रवर्त्तानी माफक सर्व दुःखोना अंतने करे छे. आ त्रीजी अंतक्रिया (३), वळी अन्य चोथी अंतिकिया कहे छे-अल्प कर्मवाळो मनुष्यपणाने पामेल यावत् थाय छे, ते मुंड थईने यावत् प्रवज्याने प्राप्त करेल, बहुल संयमवाळो यावत तेने तथाप्रकारनो तप नथी, तथाप्रकारनी वेदना नथी, तेवा प्रकारनो पुरुषजात अल्पकालीन प्रवज्यावडे मोक्षे ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ अन्तक्रियाः स्रु० २३५

1 332 1

जाय छे यावत् भगवती-पूज्या मरुदेवी मातानी माफक सर्वे दुःखोनो अंत करे छे. आ चोथी अंतक्रिया (४). (स्० २३५) टीकार्थः — आ (चोथा) उद्देशकनो आ प्रमाणे संबंध छे. पूर्वना (त्रीजा) उद्देशकना छेल्ला सत्रमां कर्मना चय विगेरे वर्णवेल छे. अहिं पण कर्म अथवा तेना कार्यभूत भवनो अंत करवानी किया कहेवाय छे. अथवा में सांभळ्युं छे के आयुष्मान भगवाने आ प्रमाणे कहेलुं, तेथी तेमनावडे जे कहेवायेलुं ते कह्युं तेमज वळी आ बीजुं जे तेमणे ज कहेलुं ते पण कहेवाय छे, माटे आवा प्रकारना आ संबंधनी व्याख्या कराय छे. अंतक्रिया एटले भवनो अंत करवो. तेमां (चार प्रकारनी अंतक्रियामां) जेने तथाविध तप नथी, तथाविध परीषद्द विगेरेथी उपजती वेदना (पीडा) पण नथी, परन्तु लांबा काळना दीक्षापर्यायवडे सिद्धि थाय छे ते पहेली अंतिक्रया होय. १. जेने तथाविध तप अने वेदना छे अने थोडा कालना प्रवज्यापर्यायवडे सिद्धि थाय तेने बीजी अंतिक्रिया होय. २. जेने उत्कृष्ट तप अने वेदना (होय छे) अने दीर्घ दीक्षापर्यायवर्ड सिद्धि थाय छे तेने त्रीजी अंतिक्रया होय छे. ३. वळी जेने तथाप्रकारनं तप अने वेदना नथी अने अल्प पर्याय(थोडा समयनी प्रव्रज्या)वडे सिद्धि थाय छे तेने चोथी अंत-किया होय छे. ४. अंतिक्रियानी एकस्वरूपता होवा छतां पण साधनना भेदथी चार प्रकाररूप छे. आ साम्रदायिक अर्थ समजवो. अवयव(प्रत्येक शब्द)नो अर्थ नीचे प्रमाणे जाणवो-भगवाने चार अंतिकया कहेली छे, एम जणाय छे-प्राप्त थाय छे. 'तन्ने'-ति० अर्हि निरधारण-चोकस करवाना अर्थमां सप्तमी विभक्ति छे, ते चारना मध्यमां एवो एनो अर्थ छे. 'खलु' शब्द वाक्या-लंकारमां छे. आ, तरत ज कहेवामां आवनार होवाथी साक्षात्रूप पहेली, बीजानी अपेक्षाए आद्य, अंतिक्रया. अहिं कोईक पुरुष, देवलोकादिने विषे जईने, त्यांथी अल्प-थोडा साधनभृत कर्मोवडे प्रत्यायात-मतुष्यत्व फरीथी जे पाम्यो ते अल्पकर्मप्रत्यायात,

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥३३३॥

एम जणाय छे. अथवा एक स्थले उत्पन्न थईने त्यांथी अल्पकर्मवाळो थयो थको जे पाछो (मनुष्य भवमां) आवेल ते अल्पकर्म- प्रत्यायात अर्थात् लघु कर्मपणाए उत्पन्न थयो एवो अर्थ छे. आगळ कहेवामां आवनार महाकर्मनी अपेक्षाए मूलमां जे 'च'कार छे ते ससुच्चयना अर्थवाळो छे, 'अपि' संभावनाना अर्थमां छे. आ पक्षनी पण संभावना कराय छे, भवति—होय, से—आ अने 'णं' वाक्यां लकारमां छे. द्रव्यथी शिरनुं छंचन करवावडे अने भावथी रागादिने द्र करवार्थी ग्रुंड थईने, अगार—द्रव्यतः घरथी अने भावतः संसारमां आनंद माननार जीवोना निवासभृत अविवेकरूप घरथी नीकळीने, ए प्रमाणे अर्थ समजवो. अनगारिता—अगारी—असंयत गृहस्थ, तेनो निषेध करवाथी अनगारी—संयत, तेनो भाव ते अनगारिता अर्थात् साधुपणाने, प्रव्रजित—प्राप्त थयो अथवा विभक्तिना परिणाम(बदलवा)थी अनगारीपणाए—निर्म्नथपणाए प्रव्रज्याने पामेल, ते केवो छे ? ' संज्ञयचहुले' ति ० पृथ्वी विगेरेना संरक्षणरूप संयमवडे जे बहुल—अधिक ते संयमबहुल अथवा संयम छे विशेष जेने ते. एवी रीते संवरबहुल पण समजवुं. विशेष ए के—आश्रवनो जे निरोध ते संवर, अथवा इंद्रिय अने कषायनो निग्रह विगेरे भेद. अहिं संवरबहुल ग्रुहण करेलुं छे ते प्राणातिपात(हिंसा)नी विरतिनुं प्राधान्य जाणवा माटे ज. कहुं छे के—

एकं चिय एरथ वयं, निहिट्टं जिणवरेहिं सब्वेहिं। पाणाइवायविरमण-मवसेसा तस्स रक्खट्टा ॥१॥

प्राणातिपातविरमणरूप एक ज व्रत समस्त जिनवरोए कहे छुं छे, बाकीना मृषावादिवरमण विगेरे व्रतो तेनी रक्षा माटे छे. आ बीजुं विशेषण पण रागादिना उपशमयुक्त चित्तनी बृत्तिथी थाय छे, आ कारणथी ज कहे छे-समाधिबहुल, समाधि ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ अन्तक्रियाः स्र० २३५

तो प्रश्नमवाहिता अथवा ज्ञानादिस्वरूप, वळी समाधि स्नेह रहितने ज होय छे माटे कहे छे के-ल्ट्रहे-रुक्ष-शरीर अने मनने विषे द्रव्य-भावरूप स्नेह रहितपणाए कठोर, अथवा स्ट्रुषयित-कर्मरूप मळने द्र करे छे ते स्ट्रुप, आ कई रीते संवत्त-संवर-वाळो छे ? ते कारणथी कहे छे-' तीरही ' तीर--भवरूप समुद्रना पारने प्रार्थे छे एवा स्वभाववाळो ते तीराधी अथवा तीर-स्थायी. तीर-भवना पारने विषे स्थितिवाळो, अथवा प्राकृतपणाथी 'तीरहे 'त्ति० आ कारणथी ' उवहाणवं ' ति० जेना-वडे श्रुत स्थिर कराय छे ते उपधान, अर्थात श्रुतविषय तपना उपचारवाळो, आ कारणथी ' दुक्खक्खवे ' स्ति ० सुख नहिं ते दःख अथवा तेना कारणपणाथी कर्म, तेनो जे क्षय करे छे ते दुःखक्षय, तपना निमित्तथी कर्मनुं खपवुं (क्षय) थाय छे, आ कारणथी कहे छे-' तबस्सी ' ति० तप-अभ्यंतर तप, कर्मरूप इंधन(लाकडा)ने बाळनार अग्नि जेवो, निरंतर श्चम ध्यान लक्षण छे जेनुं ते तपस्वी. 'तस्स णं' ति० जे आ प्रकारनो छे तेने (णंकार अलंकारना अर्थमां छे) तथाप्रकार-महा-वीर भगवानना जेवो अत्यंत घोर तप (अनशनादि) न होय. वळी तथाप्रकार-अति भयंकर उपसर्गादिवडे प्राप्त करवा योग्य दःखने विषे रहेनारी वेदना न होय, अल्प कर्मवडे (मनुष्यभवमां) आवेल होवाथी अने ते कारणशी तथाप्रकाररूप अल्प कर्मप्रत्यायातादि विशेषणना समृह युक्त पुरुषजात-पुरुषप्रकार, दीर्घ-बहुकालीन पर्याय-साधनभूत प्रव्रज्यालक्षणवडे सिद्धयति-अणिमादि सिद्धिना योगवडे कृतांर्थ अथवा विशेषथी मोक्ष जवाने योग्य थाय छे, कारण के सकल कर्मना नायकरूप मोहनीय कर्मनो नाश थाय छे अने एकंदर चार घातिकर्मना नाशवडे प्रगटेल केवळज्ञानथी समग्र वस्तुने जाणे छे, तेथी भवापग्राही (भव संबंधी) कमीवडे मुकाय छे, तेमज परिनिट्याति-समस्त कमीवडे थयेल विकारना समृहतुं निराकरण थवाथी शीतल थाय

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ३३४॥ छे. हवे ग्लं कहेवुं थाय छे ? ते माटे कहे छे के-सकल दुःखोना अंतने करे छे अर्थात शारीरिक अने मानसिक सर्व दुःखोना अंतने करे छे. जेने तथाविध तप अने वेदना नथी ते दीर्घकालीन पर्यायवडे कोईपण सिद्ध थयो छे ? आ शंकाने दर करवा माटे कहै छे के− 'जहां से ' इत्यादि॰ प्रथम जिन ऋषभदेवना पहेला पुत्र, एकसो पुत्रमां मोटा पुत्र, पूर्व दक्षिण पश्चिमना समुद्र अने हिमवान पर्वतहरूप चार अंत-छेडावाळी पृथ्वीना स्वामीपणाए चातुरंत, एवा जे भरत नामना राजा चक्रवर्ती ते पूर्व-भवमां हळकर्मा. सर्वार्थिसद्भ विमानथी च्यवीने, चक्रवर्त्वापणामां उत्पन्न थईने, राज्यावस्थामां ज केवळज्ञानने उत्पन्न करीने एक लाख पूर्वनी प्रवज्यावाळा तथाविध तप अने वेदना रहित ज मोक्षने प्राप्त थया. आ पहेली अंतिक्रया समजवी. (१), 'अहावरे' ति ० त्यारबाद वीजी अंतक्रिया (पूर्वनी अपेक्षाए अन्य अर्थात बीजाना स्थानमां कहेवाथी बीजी) बहुभारे कर्मीवडे महाकर्मवाळो थयो थको प्रत्यायात अथवा प्रत्याजात-मजुष्यभवने प्राप्त थयेलने-महाकर्मवडे मनुष्यमां आववापणाए ते महा-कर्मनो क्षय करवा माटे तथाप्रकारनुं घोर तप होय छे, एम वेदना उपसर्ग विगर पण कर्मना उदयथी प्राप्त थवा योग्य छे-थाय छे, 'निरुद्धेने' ति ० अल्पेन जेम श्रीकृष्णना लघु बंधु गजसुकुमाल, भगवान् अरिष्टनेमिनी समीपे प्रव्रज्या स्वीकारीने इमशानमां कायोत्सर्गरूप महातपना करनार, शिर उपर मुकेल जाज्वल्यमान अंगाराथी उत्पन्न थयेल अत्यंत वेदनावाळा, थोडा ज समयना पर्यायवडे सिद्ध थया. शेष हकीकत सुगम छे. (२), 'अहावरे ' त्यादि० सुगम छे. सनत्कुमार चोथा चक्रवर्त्ती, ते तो महातपवाळा अने महावेदनावाळा रोग सहित होवाथी दीर्घकालीन पर्यायवंड ते भवमां सिद्धिना अभावथी भवांतरमां सिद्धत्वने पामनार होवाथी त्रीजी अंतिक्रिया (३), 'अहावरे' त्यादि० सरळ छे. जेम मरुदेवी माता, पहेला जिन ऋषभदेवनी

%
%
काध्ययने
उद्देशः १
अन्ताकियाः
ж
अन्ताकियाः
ж
अ
२३५

1 339 H

माता स्थावरकायपणामां पण बहुलताए क्षीण कर्मपणाथी अल्प कर्मवाळा, बळी जेने तप अने वेदना नथी ते सिद्ध थया. उत्तम हाथी उपर बेठेला मरुदेवी मातानुं आयुष्य समाप्त थये सिद्धपणुं थयेल छे. (४) आ दार्षांतिक (उपमा अने उपमेयरूप) अर्थोनुं सर्व प्रकार समानपणुं विचारनुं निहं. एओने देश (अमुक अंश)रूप दृष्टांतपणाथी विचारनुं.) कारण के मरुदेवी-माताने 'मुंडे अवित्ते 'त्यादि० केटलाएक विशेषणो घटी शकता नथी पण फळथी सर्वथा समानपणुं घटी शके छे. (स०२३५)

पुरुपविशेषोनी अंतिकिया कही, हवे तओना ज स्वरूपने निरूपण करवा माटे दार्षांतिक छवीश सूत्रो कहे छे-

चत्तारि स्वस्ता पं० तं०-उन्नए नामेगे उन्नए १, उन्नते नाममेगे पणते २, पणते नाममेगे उन्नते ३, पणते नाममेगे पणते ४, १। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उन्नते नामेगे उन्नते, तहेव जाव पणते नामेगे पणते २। चत्तारि स्वस्ता पं० तं०-उन्नते नाममेगे उन्नतपरिणए १, उप्णए नाममेगे पणतपरिणए २ पणते णाममेगे उन्नतपरिणते ३ पणए नाममेगे पणतपरिणए ४, ३। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उन्नते नाममेगे उन्नतपरिणते चउभंगो ४, ४। चत्तारि स्वस्ता पं० तं०-उन्नते नामेगे उन्नतस्वे तहेव चउभंगो ४, ५। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-

श्रीस्था-नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ ३३५॥ ** उन्नए नामं० ४, ६। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०—उन्नते नाममेगे उन्नतमणे उन्न० ४, ७। एवं संकप्पे ८ पन्ने ९ दिट्टी १० सीलायारे ११ ववहारे १२ परक्कमे १३ एगे पुरिसजाए पडिवक्खो नाश्य। चत्तारि रुक्खा पं० तं०—उज्जूनाममेगे उज्जू, उज्जूनाममेगे वंके, चउभंगो ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०—उज्जूनाममेगे [उज्जू] ४, एवं जहा उन्नतपणतेहिं गमो तहा उज्जुवंके-हिवि भाणियव्वो, जाव परक्कमे २६। सृ० २३६

मूलार्थ:-चार प्रकारना वृक्षो कहेला छे, ते आ प्रमाणे ('नाम ' शब्द संभावनाना अर्थमां छे)-कोई एक वृक्ष द्रव्यथी उन्नत-शरीरथी ऊंचो अने भावथी पण उन्नत-ऊंचो ते अशोकादि १, कोई एक वृक्ष द्रव्यथी ऊंचो पण भावथी प्रणत-नीचो ते लींबडो विगेरे २, कोई एक वृक्ष द्रव्यथी प्रणत-नीचो पण भावथी ऊंचो ते नीचा (नाना) *अशोकादि ३, कोई एक वृक्ष द्रव्यथी प्रणत-नीचो अने भावथी पण प्रणत-नीचो ते (नाना) लींबडा विगेरे ४ (१), ए प्रमाणे वृक्षना दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-कोई साधु अथवा गृहस्थ द्रव्यथी-शरीरथी ऊंचो अने भावथी कुल, ऐश्वर्यादि लीकिक गुणवडे उन्नत-ऊंचो अथवा कोईक साधु लीकिक गुणोथी अने शरीरथी ऊंचो अने दीक्षा लीधा पछी पण ज्ञानादि गुणोथी ऊंचो

* टबामां त्रीजे भांगे एलची विगेरे अने चोथे भांगे नानो बावळ विगेरे जणावेल छे, ते पण संभवित जणाय छे.

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ उन्नतादि स्र० २३६

॥ ३३५ ॥

१, कोई पुरुष द्रव्यथी-शरीरथी ऊंचो पण भावथी नीचो २, कोई पुरुष द्रव्यथी नीचो पण भावथी ऊंचो ३, कोई एक पुरुष द्रव्यथी पण नीचो अने भावथी पण नीचो ४ (२), चार प्रकारना वृक्षो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोई एक वृक्ष द्रव्यथी-श्रीरथी उन्नत अने भावथी उन्नत परिणत- श्रभ रसादिरूप श्रेष्ठतावडे परिणत छे १, कोई एक वृक्ष शरीरथी उन्नो छे पण अशुभ रसादिवडे परिणत छे २, कोई एक वृक्ष शरीरथी नीचो छे पण शुभ रसादिवडे परिणत छे ३, कोई एक वृक्ष शरीरथी नीचो छे अने अशुभ रसादिवडे परिणत छे ४ (३), ए प्रमाणे चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोई एक पुरुष जात्यादिवंड अथवा शरीरवंडे उन्नत छे अने शुभ परिणामवंडे पण उन्नत छे १, कोई एक पुरुष शरीरादिवंडे ऊंचो छे पण परिणामवडे नीचो छे २, कोई एक पुरुष शरीरादिवडे नीचो छे पण परिणामवडे ऊंचो छे ३, कोई एक पुरुष शरीरवडे नीचो अने परिणामवडे पण नीचो छे ४ (४), चार प्रकारे वृक्षो कहा छे, ते आ प्रमाणे-कोईक वृक्ष शरीरथी ऊंचो छे अने भावथी शुभ आकारवाळो छे १, कोईक वृक्ष शरीरथी ऊंचो छे पण रूप-आकारथी कुरूप छे २, कोईक वृक्ष शरीरथी नीच (नानो) छे पण आकारथी सुंदर छे ३, कोईक वृक्ष शरीरथी नीचो अने आकारथी कुरूप छे ४, आ चार भँग जाणवा (५), ए न्याये चार प्रकारना पुरुषो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक जाति विगेरेथी ऊंचा अने सुंदर आकारवाळा, २ कोईक जाति विगेरेथी ऊंचा पण खराब आकारवाळा, ३ कोईक जाति विगेरेथी नीचा पण सुंदर आकारवाळा, ४ कोईक जाति विगेरेथी नीच अने खराब आकारवाळा छे (६), चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक पुरुष शरीर विगेरेथी उन्नत-ऊंचे। हे अने औदार्य आदि गुणथी ऊंचा मनवाळो छे १, कोई एक शरीरादिथी ऊंचो छे पण हलका मनवाळो छे २, कोई श्रीस्था-ना**ङ्गध्**त्र सानुवाद ॥ ३३६ ॥ *:×

एक दारीरादिथी नीच पण मोटा मनवाळो छ ३, कोई एक दारीरादिथी नीच अने इलका मनवाळो ४ (७). एवी रीते (८) संकल्प-विचार, (९) प्रज्ञा-सक्ष्म अर्थनी विचारणा, (१०) दृष्टि-नजर अथवा अभिप्राय, (११) श्रीलाचार-स्वाभाविक आचार, (१२) व्यवहार-परस्पर देवुंलेवुं विगेरे, (१३) पराक्रम. आ मन प्रमुख सात भांगामां एक पुरुषजातरूप आलावो जाणवो परंतु प्रतिपक्ष (वृक्ष) सूत्र नथी. चार प्रकारना वृक्षो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोई एक वृक्ष शरीरथी-द्रव्यथी ऋजु—सरल अने भावथी पण सरल-उचित फलने देनार १, कोई एक वृक्ष शरीरथी सरल पण भावथी वक्र-विपरीत फलने देनार २, कोई एक वृक्ष शरीरथी वक्र पण भावथी सरल-उचित फलने देनार ३ अने कोई एक वृक्ष शरीरथी वक्र अने भावथी पण वक-विपरीत फलने देनार छे ४. एवी रीते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-कोईक पुरुष भरीरादि बाह्य स्वरूपथी सरल अने अंतरथी पण सरल छे १, कोईक पुरुष शरीरादिथी सरल पण अंतरथी वक्र-मायावी छे २, कोईक पुरुष शरीरादिथी वक्र पण अंतःकरणथी सरछ छ ३ अने कोईक पुरुष शरीरादिथी वक्र अने अंतःकरणथी पण वक्र छे ४. एवी रीते जेम उन्नत-प्रणत शब्दवडे गमो-आलावो कहेल छे तेम ऋजु अने वक्र शब्दवडे पण कहेवा यावत पराक्रम पर्यंत चार चार भांगा कहेवा. एम १३ सूत्रो कहेवा (२६) (स० २३६)

टीकार्थ-'चत्तारि रुक्खे' त्यादि० सत्रो सरळ छे. चृश्च्यंते-छेदाय छे ते वृक्षो, विवक्षावडे भगवाने ते चार प्रकारना कहेला छे, तेमां उन्नत-द्रव्यथी ऊंचो, 'नामे'ति० संभावनामां अथवा वाक्यालंकारमां छे. एक-कोईक वृक्षविशेष, ते ज वृक्ष वळी जात्यादि भावथी पण ऊंचो अशोकवृक्ष विगेरे, आ एक भांगो. कोई एक अन्य वृक्ष द्रव्यथी ज ऊंचो अने प्रणत-जात्यादि

४ स्थान काध्ययने उद्देशः १ उन्नतादि स्र० २३६

338 11

भावीवडे हीन (हलकी) लींबडो विगेरे, आ बीजो भांगी. कोई एक कुक्ष द्रव्यथी प्रणत-नीची (नानो) ते ज जात्यादि भाववडे ऊंची (श्रेष्ठ) अशोकादि, आ त्रीजो भांगो. कोई एक वृक्ष द्रव्यथी ज नानो ते ज जात्यादियी हीन ठीं बडो विगेरे, आ चोथो मांगो. अथवा पहेला ऊंचो अने हमणां पण ऊंचो ज-ए प्रमाणे कालनी अवेक्षाए चार भांगा जाणत्रा. (१),'एव' मित्यादि० एवी रीते वृक्षनी जेम पुरुषोना चार प्रकारो, ते साधुओ अथवा गृहस्थोना पण छे. कुल, ऐश्वर्य विगेरे लौकिक गुगोवडे अथवा गृहस्थपर्यायमां शरीरवडे ऊंचो (श्रेष्ठ), वळी लोकोत्तर ज्ञानादिवडे दीक्षापर्यायमां श्रेष्ठ अथवा उत्तम भाववडे उन्नत, वळी कामदेव विगेरेनी जेम शुभ गतिवडे श्रेष्ठ, आ पहेलो भंग. 'तहेव'त्ति० दृक्ष सूत्रनी माफक आ सूत्र पण 'जाव'त्ति० यावत 'पणए नामं एगे पणए'त्ति० एम चार भंग पर्यंत कहेबुं. तेमां उन्नत-कुलादिवडे अने प्रणत-ज्ञान अने विहार विगरेमां हीनपगार्थी शैलक राजर्षिनी जेम अथवा दुर्गतिमां जवाथी ब्रह्म-दत्तनी माफक बीजो भंग जाणवो.फरीथी वैराग्यने प्राप्त थयेल शैलके राजर्षिनी माफक अथवा मेतार्यनी जेम प्रणत-उन्नत नामनो त्रीजो भंग अने उदायीनृपने मारनारनी जेम अथवा कालसैं(करिक(कसाई)नी माफक प्रणत-प्रणत चोथो भंग जाणवो.(२),ए रीते दृष्टांत अने दार्षांतिकना सत्रमां सामान्यथी कहीने तेना विशेष सत्रोने कहे छे-ऊंचाईपणाए एक वृक्ष, उन्नतपरिणत-अशुभ रसादिरूप नीचपणाने छोडीने शुभ रसादिरूप श्रेष्ठपणावडे परिणत छे, आ एक भंग. बीजा भांगामां प्रणतपरिणत-कहेल लक्षणाविशिष्ट उन्नतपणाने छोड-वाथी, अने ए बेना आधारे त्रीजो अने चोथो भांगो जाणवो.(३),आ चतुर्भंगी स्त्रनी विशेषता आ प्रमाणे छे-पहेलां उन्नतपणुं अने प्रण-तपणुं सामान्यथी कहुं. आ सूत्रमां तो पूर्वनी अवस्थाथी अन्य अवस्थाने पामवावडे विशेष रूपे कहेल छे.एवी रीते उपमेयमां पण परि-णत सूत्र जाणवुं (४), परिणाम आकार, बोध अने कियाना भेद्थी त्रण प्रकारे छे, तेमां आकारनो आश्रय करीने रूपनुं सूत्र छे.

www.kobatirth.org

श्रीस्था-नाङ्गध्त्र सानुवाद ॥ ३३७॥ तेमां उन्नतरूप (वृक्ष), आकार अने अवयवादिना सौंदर्यथी (५), गृहस्थ पुरुष संबंधे पण एम ज जाणवुं. प्रव्रजित तो संविग्न-साधना वेषने धरनार (६), बोधपरिणामनी अपेक्षावाळा चार (मन, संकल्प, प्रज्ञा अने दृष्टि) सूत्रो छे. तेमां जात्यादि गुणोवडे अथवा ऊंचाईवडे उन्नत, स्वभावे औदार्यादि युक्त मनवाळो. एवी रीते बीजा पण त्रण भंगो जाणवा. 'एव'मिति०संकल्प विगेरे सत्रोमां चोभंगीनो अतिदेश लाघव माटे सत्रकारे कयों छे. संकल्पविकल्प एटले विशेष विचार. आतुं उन्नतपणुं औदार्थ विगेरेथी युक्तपणाए अथवा सतपदार्थना विषयपणावडे छे (८), श्रेष्ठ ज्ञान ते प्रज्ञा अर्थात् सक्ष्म अर्थतुं विवेचकपणुं, प्रज्ञानुं श्रेष्ठपणुं अविसंवादि-अविरोधपणाए छे (९), दर्शन-दृष्टि-चक्षुजन्य ज्ञान अथवा नयनो अभिप्राय, तेतुं उन्नतपणुं तो अविसंवा-दिपणाए छे (१०), क्रियारूप परिणामनी अपेक्षावाळा त्रण सूत्रोमां शीलाचार-शील एटले समाधि, ते समाधिप्रधान आचार अथवा समाधिनो आचार-अनुष्ठान ते शीलवडे अथवा स्वभाववडे आचार. आनुं उन्नतपणुं तो निर्दृषणपणाए छे, वाचनांतरमां तो शिलसूत्र अने आचारसूत्र भेदवडे कहेवाय छे अर्थात जुदा छे. (११), व्यवदार परस्पर देवं-लेवं विगेरे अथवा विवाद, आनं उन्नतपणुं तो प्रशंसायोग्यपणाए छे. (१२), पराक्रम-उद्यमविशेष अथवा बीजा-शत्रुओनुं आक्रमण करवुं (द्वाववुं), तेनुं उन्नतपणुं तो अपराजितपणाए अने सारा विषयपणाए छे. (१३), उन्नतथी विरुद्ध(प्रणतपणुं) सर्वत्र विचारवुं. 'एगे पुरी'त्यादि० आ मन विगेरे चौभंगीना सात सूत्रोमां एक ज पुरुषजातनो आलावो जाणवो. प्रतिपक्ष-बीजो पक्ष (दृष्टांतभूत वृक्ष) सूत्र नथी अर्थात पराक्रम पर्यंत न कहे हुं, केम के दृष्टांतभूत दृक्षोने विषे उपमेय पुरुषना धर्मोनो (मन विगेरेनो) असंभव छे. ऋजु-पूर्वनी माफक कोईक सरल दृक्ष तथा ऋजु-अविपरीत स्वभाव, उचितपणावडे फलादिना

४ स्थानः काध्ययने उद्देशः १ उन्नतादि स्र० २३६

11 339 1

संपादनथी आ एक भंग. बीजा भंगमां बीज़ं पद वंक-वक्र अर्थात फलादिने विषे विपरीत, त्रीजा भंगमां पहेलुं पद वक्र-वांको अने चोथो भंग सुगम छे. अथवा पहेला ऋजु--सरल, पछी पण ऋजु अथवा मृळमां सरल अने छेडे पण सरळ, एम ऋजु अने वक्र पदवडे चार भांगा करवा. आ दृष्टांतरूप छे. पुरुष तो ऋजु एटले बहारथी शरीर, गति, वाणी अने चेष्टा विगेरेथी सरल तेमज अंतरथी कपटरहितपणाए सुसाधुनी माफक ऋजु, आ एक भंग. तथा ऋजु तो बहारथी पूर्वनी जेम वंक--वक्र अने अंतरमां कारणवंशात कपटीपणाए सरलभाव बतावनार दुष्ट साधुनी जेवो,आ बीजो मंग. त्रीजो भंग तो कारणवंशात बहारथी बतावेल वक्रभाव अने अंतरथी कपट रहित, प्रवचन-शासनना गोपननी रक्षामां प्रवर्तेल साधुनी जेम. चोथो भंग तो बन्ने रीतथी वक्र, तथाप्रकारना शठ-कपटीनी माफक. अथवा कालना भेदवडे पण व्याख्या करवी. हवे ऋजु अने ऋजुपरिणत विगेरे अगियार चोभंगीओ लाघव (संक्षेप) माटे अतिदेशवडे कहे छे-'एव' मिति० आ शब्दवडे ऋजु नाम ऋजु इत्यादिवडे बतावेल क्रमथी भांगाना क्रमबंडे 'यथे'ति० जे प्रकारे परिणत रूपादि त्रिशेषणबंडे [उन्नत-प्रणत] विशेषितपणाए ऋज्ञ-वक्र छे, आ अर्थ छे. उन्नत अने प्रणत-आ बन्ने शब्द उन्नत-उन्नत अने उन्नत-प्रणत परस्पर प्रतिपक्षभृत (प्रणत-उन्नत अने प्रणत-प्रणत)वडे सरखो पाठ करेल छे. 'तथा' ते प्रकारवडे परिणत अने रूपादि वे विशेषणवाळार्था ऋजु अने वक्र शब्दवडे पण पाठ कहेवा. क्यां सुधी ते कहेवा ? ते दर्शावता कहे छे-'जाव परक्कमे'ित्त ॰ ऋजु-वक्र वृक्ष सूत्रथी यावत तेर सूत्र पर्यंत. तेमां ऋजु २ ऋजुपरिणत २ ऋजुरूप २ लक्षणवाळा छ सूत्रो, दृक्ष दृष्टांत अने पुरुष दार्षांतिक-स्वरूप छे. अने मन प्रमुख शेष सात सूत्रो दृष्टांत रहित छे. (स० २३६) हुज पुरुषना विचार संबंधी ज कहे छे के-

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ३३८ ॥

पडिमापडिवन्नस्स णमणगारस्स कप्पंति चत्तारि भासातो भासित्तए तं०-जायणी पुच्छणी अणुन्नवणी पुटुस्स वागरणी। सू० २३७, चत्तारि भासाजाता पं० तं०-सच्चमेगं भासजायं बीयं मोसं तइयं सच्चमोसं चउत्थं असच्चमोसं ४। सू० २३८, चत्तारि वत्था पं० तं०-सुद्धे णामं एगे सुद्धे १ सुद्धे णामं एगे असुद्धे २ असुद्धे णामं एगे सुद्धे ३ असुद्धे णामं एगे असुद्धे ४, एवा-मेव चत्तारि पुरिसजाता पं॰ तं०-सुद्धे णामं एगे सुद्धे चउभंगो ४, एवं परिणतरूवे वत्था सपाडिव-क्वा, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-सुद्धे णामं एगे सुद्धमणे चउभंगो ४, एवं संकप्पे जाव परक्कमे । सृ० २३९

मूलार्यः-बार प्रतिमाने प्रतिपन्न-स्वीकारेल अनगारने चार भाषा बोलवा माटे करने छे, ते आ प्रमाणे-अन्न, पाणी विगेरेनी याचना माटे जे बोलवुं ते याचनी, मार्ग विगेरेतुं पूछवुं ते प्रच्छनी, अत्रग्रह (वसति) विगेरेनी याचना अर्थात 'हुं थोडा वखत अहि रहुं छुं' एम गृहस्थने जणाववुं ते अनुज्ञापनी अने कोईए पूछेल अर्थनुं कहेवुं ते वा गरणी-व्याकरणी भाषा. (सू० २३७) चार प्रकारे भाषा कहेली छे, ते आ प्रमाणे-सर्वने हितकर ते सत्य ए प्रथम भाषा, बीजी मृपा-असत्य भाषा, त्रीजी सत्य-मृषा-मिश्रभाषा अने चोथी असत्यमृषा-व्यवहारभाषा. (स०२३८) चार प्रकारना वस्त्रो कहेलां छे, ते आ प्रमाणे-कोई एक

वस्त्र प्रथमथी ज तंतु विगेरेथी शुद्ध छे अने पछी पण शुद्ध छे १, कोई एक वस्त्र प्रथम शुद्ध होय छे अने पछी (मेलथी) अशुद्ध थाय छे २, कोई एक वस्त्र पहेलां अग्रुद्ध अने पछी (घोवराववार्थी) ग्रुद्ध थाय छे ३, कोई एक वस्त्र पहेलां अग्रुद्ध छे अने पछी पण अशुद्ध होय छे ४. एवी रीते ज चार प्रकारना पुरुषो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-कोई एक पुरुष जात्यादिथी शुद्ध अने गुणथी शुद्ध १, जात्यादिथी शुद्ध पण गुणथी अशुद्ध २, जाति विगेरेथी अशुद्ध पण गुणथी शुद्ध ३ अने जात्यादिथी अशुद्ध पण गुणथी अशुद्ध ४, एवी रीते परिणत अने रूप दृष्टांत सिंहत बस्त्री कहेवा, ते आ प्रमाणे-१ कोई एक बस्त्र शुद्ध अने शुद्धपरिणत-शुभ परिणामवाळं,२ कोई एक वस्त्र शुद्ध पण अशुभ परिणामवाळं, ३ कोई एक वस्त्र अशुद्ध पण शुभ परिणामवाळं, अने ४ कोई एक वस्त्र अशुद्ध अने परिणामे पण अशुभ. तेम रूप् शब्द साथे चार भांगा करवा. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोई एक मनुष्य जात्यादिकथी शुद्ध अने मन-अंतर्वृत्तिवडे शुद्ध १, कोईक मनुष्य जात्यादिथी शुद्ध पण अंतर्वृत्तिथी अशुद्ध २, कोईक जात्यादिथी अशुद्ध पण अंतर्वृत्तिथी शुद्ध ३ अने कोईक मनुष्य जात्यादिथी अने अंतर्वृतिथी पण अशुद्ध छे. एवी रीते संकल्प यावत् पराक्रम पर्यंत शब्दो शुद्ध पद साथे जोडवा अने चार चार भांगा करवा. (छ० २३९)

* एक वस्त्र शुद्ध अने शुद्ध आकारवाळुं छे १, एक वस्त्र शुद्ध ध्राने अशुद्ध आकारवाळुं छे २, एक वस्त्र अशुद्ध अने शुद्ध आकारवाळुं छे ३ अने एक वस्त्र अशुद्ध अने आकार पण अशुद्ध छे ४. ए प्रमाणे चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—एक जात्यादिवडे शुद्ध अने सुंदर रूप संठाणवाळो छे १, एक पुरुष जात्यादिवडे शुद्ध पण रूपादिवडे अशुद्ध छे २, एक जात्यादिवडे अशुद्ध पण रूप आकारादिवडे शुध्ध (सुंदर) छे ३ अने एक जात्यादिवडे अशुद्ध अने रूप आकारादिवडे पण अशुद्ध छे ४.

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद # ३३९ ॥

टीकार्थ:-स्पष्ट छे. प्रतिमा-सिद्धांतमां प्रसिद्ध भिक्षुनी बार प्रतिमा, तेने स्वीकारनारवडे जे याचना कराय छे ते याचनी-पाणी विगेरेनी याचना 'मने आमांथी आटलुं पाणी विगेरे तुं आपीश ' इत्यादि सिद्धांतना प्रसिद्ध क्रमवडे. तथा मार्ग विगेरेनं पूछवं अथवा कंईक सूत्र अने अर्थनुं पूछवं ते प्रच्छनी, तथा [अम्रक समय पर्यंत रहेवा माटे] अवग्रह-(जग्या)नं अनुज्ञापन-जणाववं ते अनुज्ञापनी तथा कोईए पूछेल अर्थ विगेरेनं प्रतिपादन करवं ते व्याकरणी. (स०२३७) भाषाना प्रसंगर्थी भाषाना भेदोने कहे छे-'चत्तारि भासे'त्यादि० जात-उत्पत्तिधर्मविशिष्ट, ते व्यक्तिरूप वस्तु, आ कारणथी भाषाथी उत्पन्न थयेल व्यक्तिरूप वस्तुओ, भेदो-प्रकारो ते भाषाजातो, तेमां विद्यमान रहेला मुनिओ, गुणो अथवा पदार्थोना माटे हितरूप ते सत्य, एक सूत्रनी अपेक्षाए प्रथम, अथवा जेनावडे जे बोलाय छे ते भाषा अथवा बोलवं ते भाषा-काययोगवडे ग्रहण करेल अने वचनयोगवडे नीकळेल भाषाद्रव्यनी संहति(वर्गणा)नो जे प्रकार ते भाषा-जात आत्मा छे. इत्यादिनी जेम. सूत्रना क्रमथी बीजुं 'मोसं'ति० प्राकृतपणाधी मुषा-असत्य, 'आत्मा नथीं' इत्यादिनी माफक, त्रीजं सत्यामुपा-कईंक सत्य ने कईंक असत्य-मिश्ररूप, 'आत्मा छे, अकत्ती छे' इत्यादिनी जेम, चोथुं असत्यामृपा-सत्य निहं अने असत्य निहं, आत्मा इत्यादिनी माफक. (आ चार भाषाजात छे). आ संबंधे वे गाथा जणावतां कहे छे के— सचा हिया सतामिह, संतो मुणओ गुणा पयत्था वा। तिवववरीया मोसा, मीसा जा तदुभयसहावा ॥२॥

सत्पुरुषोना हितरूप ते सत्या अथवा सारा मुनिओ माटे हितरूप अथवा सुंदर मुलोत्तर गुणोने हितरूप अथवा

४ स्थान. काध्ययने उद्देशः १ प्रतिभावतः पानकानि भाषाः शु-× द्धादिः सू० *

भगवाने कहेल विद्यमान जीवादि पदार्थीना माटे हितरूप ते सत्यभाषा, तेनाथी विपरीत स्वरूपवाळी ते मृषाभाषा, सत्य अने असत्य बन्ने स्वभाववाळी ते मिश्रभाषा (सत्यमृषा) छे.

अणिहगया जा तीसुवि, सदो चिय केवलो असचमुसा। एया सभेयलक्खण, सोदाहरणा जहा सुत्ते ॥३॥

त्रण भाषामां पण जे स्वीकारेली नथी, मात्र शब्दरूप ज छे ते असत्यमुषा-आमंत्रण अने आज्ञापन (हकम करवं) विगेरे विषयवाळी छे. आ चार भाषा भेद सहित, लक्षण सहित अने उदाहरण सहित स्त्रमां जेम कहेली छे तेम जाणवी. पुरुषना भेदनं निरूपण करवा माटे ज आ तेर सूत्रो-'चत्तारि वत्ये'त्यादि० स्पष्ट छे. विशेष ए के-शुद्ध वस्त-पवित्र तंत विशेरे कारणवर्ड बनावेल होवाथी, वळी शुद्ध-नवीन मलना अभावथी अथवा पहेला शुद्ध हतुं अने हमणा पण शुद्ध ज छे. प्रथम भगना वे पदशी विपक्षभृत सुगम ज छे. हवे दार्षांतिकनी योजना कहे छे-'एवमेवे'त्यादि० ग्रुद्ध-जात्यादिवडे ग्रुद्ध. वळी निर्मल ज्ञानादि गुणपणाए अथवा कालनी अपेक्षाए 'चउभंगो' ति० चार भांगानो सम्रदाय ते चतुर्भंगी अथवा चतुर्भग. पुह्लिंगपणुं तो अहिं प्राकृतपणाथी छे. तेनो आ अर्थ-वस्त्रनी माफक चार भांगा पुरुषने विषे पण कहेवा. 'एव'मिति० जेम शुद्ध पद्थी बीजा शुद्ध पदमां दार्षातिक सहित चार भांगावाळं वस्त्र कह्यं, एवी रीते शुद्ध पद छे पूर्वपदमां जेने एवा परिणतपद अने रूपपदमां चार भांगावाळा वस्त्रो 'सपिंडवक्ख'त्ति० प्रतिपक्ष सहित (अशुद्ध परिणत विगेरे) दार्षांतिक (पुरुष) सहित कहेवा. ते आ प्रमाणे-'चत्तारि वत्था पन्नत्ता, तं जहा-सुद्धे नामं एगे सुद्धपरिणए चतुर्भगी' 'एवमेवे' त्यादि॰ प्रस्पजात

श्रीस्था-नाङ्गप्रत्र सानुवाद 1 38011

स्त्रनी चोभंगी, एवी रीते शुद्ध वस्त्र अने शुद्ध रूपनी चोभंगी वस्त्रमां करवी ए मज पुरुषमां पण चोभंगी करवी. व्याख्या तो पूर्वनी माफक जाणवी. "चत्तारी" त्यादि० शुद्ध-बहारथी अने शुद्ध मनवाळो-अंतरथी, एवी रीते शुद्ध # संकल्प, शुद्ध प्रज्ञ, शुद्ध दृष्टि, शुद्ध शीलाचार, शुद्ध व्यवहार अने शुद्ध पराक्रम आ [सात स्रुत्रोमां] बस्त्रने छोडीने× पुरुषो ज चार भांगाबाळा कहेवा, व्याख्या तो पूर्वनी माफक जाणवी. आ ज कारणथी कहे छे ' एवमि 'त्यादि० (स० २३९) प्रक्षिदेना अधिकारमां ज नीचेनं सत्र कहे छे.

चत्तारि सुता पं० तं०-अतिजाते अणुजाते अवजाते कुर्छिगाले । सू० २४०, चत्तारि पुरिस-जाता पं॰ तं॰-सच्चे नामं एगे सच्चे, सच्चे नामं एगे असच्चे ४, एवं परिणते जाव परक्रमे, चत्तारि वत्था पं० तं०-सुतीनामं एगे सुती, सुईनामं एगे असुई, चउभंगो ४, एवामेव चत्तारि पुरि-सजाता, पं॰ तं॰-सुतीणामं एगे सुती, चउभंगो, एवं जहेव सुद्धेणं वत्थेणं भणितं तहेव सुति-णावि, जाव परक्रमे। सू० २४१, चत्तारि कोरवा पं० तं०-अंवपलंबकोरवे तालपलंबकोरवे वाहिप-

तेथी वस्त्रमां प्रतिपक्ष सहित छ सूत्रो छे अने पुरुषमां फक्त सात सूत्रो छे.

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ अतिजाता-दिः सत्या-दिः कारकाः 83

380 II

^{*} शुद्ध संकल्प विगेरे सूत्रोनो अर्थ पूर्वे लखाई गयेल छे. × वस्त्र जड होवाथो तेमां मन, संकल्प विगेरे चैतन्य धर्मी न होय

लंबकोरवे मेंढविसाणकोरवे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं०तं०—अंबपलंबकोरवसमाणे तालपलंब-कोरवसमाणे विष्ठपलंबकोरवसमाणे मेंढविसाणकोरवसमाणे । सू० २४२

मुलार्थः-चार प्रकारना पुत्रो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-अतिज्ञात-पितानी अपेक्षाए अधिक संपदावावाळो, श्री ऋषमदेव-स्वामीनी माफक, अनुजात-पितानी अपेक्षाए समान संपदावाळो, महायञ्चानी माफक, अपजात-पितानी अपेक्षाए हीन संपदावाळो, आदित्ययशानी माफक, कुलांगार-कुलमां दृषण लगाडनार, कंडरीकनी माफक. (स्० २४०) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाण-सत्य प्ररूपणा करनार अने सत्य (संयम) पाळनार, सत्य बोलनार पण सत्य (संयम) न पाळनार, सत्य बोलनार निहं पण सत्य (संयम) पाळनार अने सत्य बोलनार निहं अने सत्य (संयम) पाळनार पण निहं. एवी रीते सत्य पद साथ परिणतथी लईने यावत् पराक्रम पर्यंत चोभंगी करवी. चार प्रकारना वस्त्रो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-एक वस्त्र स्वभावथी शुचि अने शुचि-संस्कार करवाथी, एक वस्त्र स्वभावथी शुचि पण अशुचि-संस्कार न करवाथी, एक वस्त्र स्वभावथी अशुचि-पण शुचि-संस्कार करवाथी अने एक वस्त्र स्वभावथी अशुचि अने अशुचि-संस्कार न करवाथी. एवी रीते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-एक पुरुष पवित्र शरीरवडे शुचि अने स्वभावथी पण शुचि, एक पुरुष शरीरथी शुचि पण स्वभावथी अशुचि, एक पुरुष शरीरथी अशुचि पण स्वभावेथी शुचि अने एक पुरुष शरीरथी अशुचि तेमज स्वभावेथी पण अशुचि छे. एवी रीते जे प्रमाणे शुद्ध पदवडे कह्युं छे तेमज शुचि पदवडे यावत पराक्रम पर्यंत कहेवुं (स्ट० २४१)

श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद भ ३४१ ॥ चार प्रकारना कोरक (कली) कहेला छे, ते आ प्रमाण-आंबाना फलनुं कोरक, तालना फलनुं कोरक, वेलडी-तरबूच (किलंगर) विगेरेना फलनुं कोरक, मेंदाना शींगडा जेवा फलवाळी वनस्पित (आवळ)ना फलनुं कोरक. एवी रीते चार प्रकारना पुरुष कहेल छे, ते आ प्रमाण-एक आम्रफलना कोरक समान जे पुरुष सेव्यो थको उचित काले उचित फळने आपे छे, बीजो ताल फलना कोरक समान, जे सेव्यो थको लांबे काले कष्टवडे महान उपकारकरूप फलने आपे छे, बीजो विह्निता फलना कोरक समान थोडा समयमां कष्ट सिवाय फळने आपे छे अने चोथो मिंदविषाण (आवळ)ना कोरक समान मीठा वचन बोले पण कांई आपे निह. (स० २४२)

टीकार्थः-सुताः-पुत्रो, 'अइजाए' ति०पितानी संपदाने उछंघीने जातः थयेल अथवा पितानी संपदाने उछंघीने अर्थात् पिताथी अति विशेष संपदाने पामेल अर्थात् अतिसमृद्धिवालो माटे अतिजात अथवा अतियात श्री ऋषभ [प्रभु]नी माफक १, तथा 'अणुजाए' ति० अनुरूप-समान संपत्तिवहे पितानी जेवो थयेल ते अनुजात, अथवा अनुगत-पितानी ऋष्धिवहे अनुस-स्नार-पिता समान, महायशानी माफक, आदित्ययशा पितावहे तेनुं तुल्यपणुं होवाथी, तथा ' अवजाए 'त्ति० अप-हीन पितानी संपत्तिथी हीन थयेल ते अपजात, पिताथी कंईक हीन गुणवालो, आदित्ययशानी माफक, भरत चक्रीनी अपेक्षाए तेनुं हीनपणुं होवाथी, तथा 'कुालिङ्गाले' ति० कुल-पोताना गोत्रमां अंगारो, दोषनो करनार होवाथी अथवा संतापनो करनार होवाथी कंडरीकनी माफक ४, एवी रीते शिष्यनुं चार प्रकारपणुं जाणवुं. सुत शब्दनी शिष्योमां पण प्रवृत्ति छे, तेमां अतिजात-सिंहगिरि आचार्यनी अपेक्षाए वज्रस्वामीनी जेम १, अनुजात-श्रू यंभव आचार्यनी अपेक्षाए यशोभद्र आचार्यनी

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ अतिजाता-दिः सत्या-दिः कारकाः स्० २४०-४२

ा ३४१ ।

माफक २, अपजात-भद्रबाहुस्वामीनी अपेक्षाए स्थूलभद्रनी माफक अने कुलांगार-कुलवालक साधुनी माफक, अथवा उदायिनए-ने मारनार(कपटी साधु)नी माफक (सू॰ २४०) तथा 'चत्तारी' त्यादि॰ जेम छे तेम वस्तुने कहेवाथी अने जेवी रीते प्रतिज्ञा करेल तेवी रीते करवाथी सत्य, वली सत्य-संयमीपणावडे सत्वोने-जीवोने हित होवाथी अथवा पूर्वे सत्य हतुं, हमणा पण सत्य ज हे एवी रीते चोभंगी करवी, ए प्रमाणे सूत्रोने अतिदेश करतां थकां कहे छे-'एव'मित्यादि० स्पष्ट छे. विशेष आ प्रमाणे सूत्रो छे-चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं॰-सचे नामं एगे सचपरिणए४, एवं सचरूवे ४ सचमणे ४ सचसंकप्पे ४ सचपन्ने ४ सच्च-दिट्टी ४ सच्चसीलायारे ४ सच्चववहारे ४ सच्चपरकम्मेति ४॥१ सत्य अने सत्यपरिणत, २ सत्य अने असत्यपरिणत, ३ असत्य अने सत्यपरिणत, ४ असत्य अने असत्यपरिणत. एवी रीते सत्य रूपपद, सत्य मनपद, सत्य संकल्पपद, सत्य प्रज्ञापद, सत्य दृष्टिपद, सत्य शीलाचार, सत्य व्यवहार अने सत्य पराक्रम-आ बधा उत्तरपदो साथे पूर्वमां सत्यपद जोडवाथी चतुर्भेगी थाय छे. पुरुषोना अधिकारमां ज आ बीजुं कहे छे-'चत्तारि वत्थे 'त्यादि० शुचि-स्वभावे पवित्र, वली संस्कारवडे पवित्र अथवा कालना भेदवडे एटले पूर्वे पण पवित्र अने पछी पण पवित्र. पुरुषनी चार्भगीमां शुचि पुरुष दुर्गंघ रहित श्वरीरवडे वली शुचि स्वभाववडे, 'सुइपरिणए सुइरूवे' आ वे सूत्रो दर्शात अने दार्शातिक सहित छै. 'सुइमणे' इत्यादि० पुरुष मात्रने आश्रित ज सात सूत्रने अतिदेश करता थका कहे छे 'एव' मित्यादि० सुगम छे. (सू०२४१) पुरुषना अधि-कारमां ज आ अन्य सत्र कहे छे-'चत्तारि कोरवे' इत्यादि० तेमां आंबो, तेनुं प्रलंब-फळ, तेनुं कोरक-तेने उत्पन्न करनार मुकुल (कलिका) ते आम्रपलंबकोरक, एवी रीते बीजा पण जाणवां. विशेष कहे छे के-ताल-बुक्षविशेष (ताडि), वल्ली-

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ३४२ ॥ **

कार्लागा विगेरेनी वेलडीओ, मंढविषाणा-मंढाना शींगडा समान फळवाळी वनस्पतिनी जाति, अर्थात् आवळ, तेतुं कोरक ते मंढिविषाणकोरक. आ चार ज कोरक दृष्टांतपणाए प्रहण करेला छे माटे चार एम कहुं छे, परंतु लोकमां (कोरक) चार ज नथी परन्तु अति घणा जणाय छे. 'एवे'त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-उपनय आ प्रमाणे जाणवो-जे पुरुष, सेवायो थको योग्य कालमां उचित उपकाररूप फळने आपे छे ते आप्रप्रलंबकोरक समान, वळी जे पुरुष सेवकने घणा काळवडे कष्टथी महान् उपकारफळने करे छे ते तालप्रलंबकोरक समान, वळी जे पुरुष छेश विना तत्काल फलने आपे छे ते वछीप्रलंबकोरक समान अने जे पुरुष सेवायो थको पण सारां वचनोने ज कहे छे परंतु कंईपण उपकार करतो नथी ते मंढिविषाणकोरक समान जाणवो. आवळना कोरकनो सुवर्ण जेवो वर्ण होवाथी अने न खावा लायक फळने देनार होवाथी तेनी उपमा आपी छे. (स० २४२) पुरुषना अधिकारमां ज घुण(लाकडाने कोतरनार जंतु)ना सूत्रने कहे छे—

चत्तारि घुणा पं० तं०-तयक्वाते छिहिक्वाते कटुक्वाते सारक्वाते, एवामेव चत्तारि मि-क्वागा पं० तं०-तयक्वायसमाणे जाव सारक्वायसमाणे, तयक्वातसमाणस्स णं भिक्वागस्स सारक्वातसमाणे तवे पण्णत्ते, सारक्वायसमाणस्स णं भिक्वागस्स तयक्वातसमाणे तवे पण्णत्ते, छिहक्वायसमाणस्स णं भिक्वागस्स कटुक्वायसमाणे तवे पण्णते, कटुक्वायसमाणस्स णं भिक्वागस्स छिहक्वायसमाणे तवे पण्णते । सृ० २४३ ४ स्थान-काष्ययने उदेशः १ त्वक्खादा-दिः स्र० २४३

॥ ३४२ ॥

मूलार्थ:—चार प्रकारना घुणा (काष्ठमां उपजे ते जीवो) कहेला छे, ते आ प्रमाणे—कोईएक घुणां बहारनी त्वचा(छाल)—ने खानार, कोईएक अंतरनी छालने खानार, कोईएक लाकडाने खानार अने कोईएक लाकडाना सार(गर्भ)ने खानार. आ दृष्टांते चार प्रकारे भिश्चको—साधुओं कहेला छे, ते आ प्रमाणे—एक बहारनी त्वचा—छालना खानार घुणा सरखा, ते साधु आयंबिल प्रमुख तप करनार अने तुच्छ आहारना करनार,एक अंदरनी छालने खानार घुणा समान साधु, ते लेप रहित (चणा विगेरे) आहारना करनार, कोईक काष्ट्रना खानार घुणा समान साधु, विगय रहित आहार करनार, कोईक सार खानार घुणा समान साधु, त्वगय रहित आहार करनार, कोईक सार खानार घुणा समान साधु, सरस भोजन करनार, त्वचाने खानार समान साधुनुं सार खानारना जेवुं तप छे, सारने खानार समान साधुनुं त्वचाने खानार समान तप छे, छालने खानार समान साधुनुं काष्टने खानार समान तप छे, छालने खानार समान साधुनुं काष्टने खानार समान तप छे. (सू० २४३)

टीकार्थः—त्वचं-बहारनी छालने ने खाय छे ते त्वक्खाद—त्वचाने खानार, एवी रीते श्रेष (त्रण) जाणवा. विशेष ए के 'छिछि ' त्ति अंदरनी छाल, काष्ठ—लाकडुं अने सार—लाकडानो मध्य—अंदरनो भाग, आ दृष्टांत छे. 'एवमेवे 'त्यादि ० उपनय सूत्र छे. भिक्षण स्वभाववाळा, याचनाना धर्मवाळा अथवा भिक्षामां श्रेष्ठ ते भिक्षाको (ग्रुनिओ), त्वचाने खानार घुणा समान—अत्यंत संतोषीपणाए आयंबिलादि तपमां प्रांत—तुच्छ आहारना खानार होवाथी त्वचाने खानार नेवो १, एवी रीते अंदरनी छालने खानार जेवो, लेप रहित आहारने करनार होवाथी २, काष्ठने खानार नेवो, विगय रहित आहार करवाथी ३, सार खानार जेवो, सर्वकामगुण—इंद्रियोने पुष्टि करनार आहार करवाथी, आ चारे भिक्षुओना तपविशेषने कहेनारं सूत्र—' तय-

श्रीस्था-नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ ३४३ ॥ क खाये' त्यादि० सुगम छे. भावार्थ ए छे के-बहारनी छाल जेवा असार आहार वापरनारने आसक्तिपणुं न होवाथी कर्मना मेद(विनाश)ने स्वीकारीने वजसार (वज जेवुं) तप होय छे, माटे सूचना करे छे-'सारक्खायसमाणे तवे' त्ति० सारने खानार होवाथी सार खानार घुणानुं सामर्थ्य अने वज्र जेवुं मुख होवाथी १, सारने खानार समान कहेल लक्षण-वाळा साधुनुं सरागपणाए वहारनी छालने खानार समान तप होय छे, ते कर्मना रसने भेदवाने समर्थ थतुं नथी, वहारनी छालने खानार घुणाने चोकस त्वक्(छाल)नुं खावापणुं होवाथी काष्ट्रना सारना भेदन प्रत्ये असमर्थ होवाथी २, तथा अंतरछालने खानार घुणा जेवा साधुने बहारनी छाल खानार घुणा जेवानी अपेक्षाए कंईक विशिष्ट-सारा भोजनना करवावडे कंईक सरागपणुं होवाथी अने काष्ट्रना सारने खानार अने काष्ट्रने खानार घुणा समान साधुनी अपेक्षाए तो हलकां भोजन करवा-वडे आसक्ति न होवाथी कर्मना भेदन प्रत्ये काष्ट्रने खानार घुणा समान तप कह्युं छे. सारने खानार घुणानी जेम अति तीव तप निह अने त्वक् अने छालने खानार घुणानी माफक अतिमंद् विगेरे तप निर्हे, आ रहस्य छे ३, काष्ट्रने खानार घुणा जेवा साधुने सारने खानार घुणा जेवानी अपेक्षाए सार रहित भोजन करवावडे आसक्ति न होवाथी त्वक् (बहारनी छाल) अने अंतर छ।रुने खानार घुणा जेवा साधुनी अपेक्षाए विशेष सारा भोजनने करवावडे अने सरागपणुं होवाथी छारुने खानार घुणा समान तप कहां छे, कर्मना भेदन प्रत्ये सारने खानार अने काष्ठने खानार घुणानी जेम अतिसमर्थ विगेरे तप नथी, त्वक्ने खानार घुणानी माफक अतिमंद पण नथी ४. प्रथम विकल्पमां प्रधानतर तप, बीजामां अप्रधानतर, त्रीजामां प्रधान अने चोथा विकल्पमां अप्रधान तप छे. (सू० २४३) हमणा ज वनस्पतिना अवयवोने खानार घुणाओ कह्या, माटे वनस्पतिनी

४ स्थान-काध्ययने **************** उद्देशः १ त्वक्खादा-दिः सू० २४३

1 303 1

ज प्ररूपणा करतां कहे छे-

चउिवहा तणवणस्सातिकातिता पं० तं०-अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधवीया। सू० २४४, चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे णेरइए णेरइयलोगंसि इच्छेजा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते, णो चेव णं संचातेइ हव्वमागिच्छत्तते, अहुणोववण्णे नेरइए णिरयलोगंसि समुद्भ्यं वेयणं वेयमाणे इच्छेजा माणुसं स्रोगं हव्वमागिच्छत्तते णो चेव णं संचातेति हव्वमागिच्छत्तते १, अहुणोववन्ने णेरइए निरत्लोगंसि णिरयपालेहिं भुजो २ अहिट्टिजमाणे इच्छेजा माणुसं लोगं हव्वमागच्छि-त्तते, णो चेव णं संचातिति हव्यमागिच्छत्तते २, अहुणोववन्ने णेरइए णिरतवेयणिजांसि कम्मंसि अवखीणंसि अवेतितंसि अणिजिन्नांसि इच्छेजा०, नो चेव णं संचाएइ ३. एवं णिरयाउआंसि क मंसि अवलीणांसि जाव णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तते ४, इचेतेहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणो-ववन्ने नेरातिते जाव नो चेव णं संचातेति हृदवमागि छत्तए ४। सू० २४५, कप्पंति णिग्गंथीणं चत्तारि संघाडीओ धारित्तए वा पारिहरित्तते वा, तं०-एगं दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थवित्थारा एगं चउहत्थावित्थारं । सु० २४६

For Private and Personal Use Only

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद स ३४४ ॥

मूलार्थः-चार प्रकारे तृणवनस्पतिकायिको कहेल छे, ते आ प्रमाणे-अग्रबीज कोरंटक, घउं विगेरे, मूलबीज-कंद विगेरे, पर्ववीज-शेलडी विगेरे अने स्कंघवीज-सल्लकी (कांस) विगेरे (स० २४४). चार स्थान-कारणवडे तत्काल उत्पन्न थयेल नारक, नरकलोकमांथी मनुष्यलोकमां शीघ्र आववाने माट इच्छे, पंरतु ते मनुष्यलोकमां आववाने माटे समर्थ न थाय. हमणा उत्पन्न थयेला नैरियक, नरकलोक(भूमि)मां उत्पन्न थयेली वेदनाने वेदती थको मनुष्यलोकमां शीघ्र आववाने माटे इच्छे, परंतु ते मनुष्यलोकमां आववाने माटे समर्थ न थाय १, वर्तमानमां उत्पन्न थयेल नैरियक, नरकभूमिमां नरकपाली-परमाधामीओवडे वारंवार आक्रमण करायो थको मनुष्यलोकमां शीघ्र आववा माटे इच्छे परनत शीघ्र आववा माटे समर्थ न थाय २, वर्तमानमां उत्पन्न थयेल नैरियक, नरकमां भोगववा योग्य असातावेदनीयादि कर्म, स्थितिवडे क्षीण न थये छते, विपाकवडे न भोगवाये छते अने आत्मप्रदेशथी अलग न थये छते मनुष्यलोकमां आववाने माटे इच्छे, परंतु आववा माटे समर्थ न थाय ३, एवी रीते नरकायुष्क कर्म, स्थितिथी क्षीण न थये छते यावत् अब्दवडे विपाकथी न वेदाये छते अने निर्जरा निर्ह थये छते नैरियक मनुष्यलोकमां आववाने माटे इच्छे, परंतु आवी शके नहीं ४. आ उक्त चार कारणवडे वर्त्तमानमां उत्पन्न थयेल नैरियक यावत मनुष्यलोकमां आववाने माटे शक्तिमान थाय निह (स० २४५). निर्ग्रेथी-साध्वीओने चार संघाटिका-पछेडी घारवा माटे, लेवा माटे अने ओढवा माटे कल्पे छे, ते आ प्रमाणे-एक पछेडी वे हाथना विस्तारवाळी, उपाश्रयमां ओढवा माटे. वे पछेडी त्रण हाथना विस्तारवाळी, तेमां एक गोचरीमां अने एक स्थंडिलभूमिमां जवा माटे. एक चार हाथना विस्तारवाळी पछेडी, ते समवसरणमां जवा माटे ओढे. (स्० २४६)

४ स्थान-** काष्ययने उद्देशः १ अप्रवीजा-** स्ट्रिः नारका-** समः संघा-खाः स॰ २४४-४६

11 388 F

टीकार्थः-'चउव्विहे' त्यादि० वनस्पतिओ प्रसिध्ध छे. ते ज काय-शरीर छे जेओने ते वनस्पतिकायो, तेओ ज वन-स्पतिकायिको, तुणनी जातिवाळा वनस्पतिकायिको ते तुणवनस्पतिकायिको अर्थात् बाद्रो. अग्र-आगळ बीज छे जेओतुं ते अग्रवीजो, कोरंटक विगेरे, अथवा अग्र-आगळमां बीज छे जेश्रोने ते अग्रवीजो-ब्रीही [चोखानी जात] विगेरे. मूलमां ज बीज छे जेओने ते मूलबीजो-कमलना कंद विगेरे, एवी रीते पर्वबीजो-शेलडी विगेरे, स्कंघबीजो-सहकी विगेरे. स्कंघ एटले थड. आ सूत्रो बीजा वनस्पति जीशोनो निषेध करनारा नथी, तेथी बीजरुह-बीजथी उत्पन्न थनार अने सम्मूर्च्छन-स्वाभाविक उत्पन्न थनार विगेरे वनस्पतिओनो अभाव मानवो निह. जो अभावनी मानीए तो बीजा सत्र साथे विरोध आवे. (स० २४४) हमणां ज वनस्पति जीवोना चार स्थानक कह्या, हवे जीवना साधर्म्यथी नारकर्जावोने आश्रयीने ते कहे छे-'चउहीं' त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-' ठाणेहिं'ति० कारणेविड 'अहुणोववन्ने'त्ति० तत्काल उत्पन्न थयेल, नीकळी गयेल छे शुभ कर्म-मांथी ते निरय-नरक, तेमां उत्पन्न थेपल ते नैरियक, तेंनुं अनन्य (बीज़ं निह एनुं) उत्पत्तिनुं स्थानपणुं बताववा माटे कहे छे के-नरकलोकमां, ते स्थानथी आ मनुष्योना लोक-क्षेत्रविशेष प्रत्ये ' हव्व ' शीघ्र आववा माटे इच्छे ' नो चेव'ति ० नहीं. 'णं' वाक्यालंकारमां छे. ' संचाएइ ' आववा माटे समर्थ, अर्थात आवी शके नीहे. ' समुब्भूयं 'ति० अत्यंत प्रवलपणाए उत्पन्न थयेली, पाठांतरथी सम्मुखभूतां एक हेला मात्रमां (थोडी वारमां) उत्पन्न थयेली, पाठांतरथी समहद्भूतां अथवा सुमहद्भूतां-जे महान् नथी तेने महान् थवुं ते महद्भूत, तेनी साथे जे ते समहद्भूता अथवा सुमहद्भूता, एवी दुःखरूप वेदनाने अनुभवता थको इच्छा करे, आ मनुष्यलोकमां आववानी इच्छानुं प्रथम कारण (१), असमर्थनुं ए ज

श्रीस्था-नाङ्गग्रत्र सानुवाद ॥ ३४५ ॥

कारण छे केम के तीत्र वेदनाथी पराभव पामेल आववा माटे समर्थ नथी. अंब विगेरे नरकपालोवडे वारंवार दवायो थको (नारक), मनुष्यलेकमां आववाने इच्छे, आ आगमननी इच्छानुं बीजुं कारण (२) अने आववामां अशक्तिनं ए ज कारण छे, केम के तेओवडे अत्यंत दबायेल होवाथी आववाने अशक्त छे. तथा नरकभृमिमां जे अनुभवाय छे अथवा नरकभृमिने योग्य जे वेदनीय ते निर्यवेदनीय अत्यंत अग्रुभ नामकर्भ विगेरे अथवा असातावेदनीय. ते कर्मस्थितिवडे क्षीण न थये छते, अनुभाग-विपाकवडे अनुभव न थये छते, जीवना प्रदेशोथी दूर न थये छते, मनुष्यलोक प्रत्ये आववानी इच्छा करे परंतु आवी शके नहिं. अवश्य वेदवा योग्य कर्मरूप निगड(बेडी)वडे बंधायेल होवाथी आववाने असमर्थमां ए ज कारण छे (३), तथा 'एव' मिति० 'अहुणोववन्ने ' इत्यादि अभिलाप-कथन सारी रीते सूचन करवा माटे छे. नरकतुं आयुष्यकर्म क्षीण न थये छते यावत शब्दर्थी ' अवेइए ' इत्यादि पाठ जोवी (४), निगमन (निचोड) करता थका कहे छे-' इच्चेएिंह ' ति॰ आ चार प्रकारना प्रत्यक्ष कारणोवडे हमणां ज कहेवायुं. (स्व॰ २४५) हमणां ज नारकनुं स्वरूप कहुं, नारको असंयमने सहायक परिग्रहथी उत्पन्न थाय छे माटे तेना विपक्षीभृत (संयमने सहायक) परिग्रहविशेषने चार स्थानकमां अवतारता थका कहे छे-' कप्पंती 'त्यादि० कल्पे छे-युक्त छे, ग्रंथथी-बंधना हेतुभूत सुवर्ण विगेरेथी अने मिध्यात्वादिथी ।निर्गत-मुक्त थयेली निर्श्रथीओ-साध्वीओ, तेणीओने संघाटीओ उत्तरीय(वस्त)विशेष-पछेडीओ खीकारवामां, पहेरवा माटे, बे हाथनो विस्तार-पहोळाई छे जेणीनो ते बे हाथवाळी 'कल्पन्ते ' आ क्रियापदनी अपेक्षाए संघाटीओतुं कर्त्तापणुं छे, ' एगं दुइत्थवित्यारं, एगं चउइत्यवित्यारं ' ति० अहिं प्रथम विभक्तिना अर्थमां प्राकृतपणाथी बीजी

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ अग्रवीजादि नारकागमः संघाटघः स्र० २४४-४६

II 394 II

विभक्ति कहेली छे अथवा धारयन्ति *परिभुञ्जते च आवी रीते प्रत्ययना फेरफारवडे क्रियानुं अनुस्मरण करवाथी द्वितीया विभक्ति ज थाय छे, ते पछेडीना विषयमां पहेली (बे हाथना विस्तारवाळी) उपाश्रयमां ओढवा योग्य छे. त्रण हाथना विस्तारवाळी वे पछेडी पैकी एक गोचरी जवामां, बीजी स्थंडिलभूमि जवामां अने चोथी समवसरणमां. कह्यं छेके- संघाडीओ चउरो, तत्थ दुहत्था उवसयंमि । दुन्नि तिहत्थायामा, भिक्खट्टा एग एग उच्चारे ॥४॥

साध्वीओने चार संघाटीओ कल्पे छे, तेमां बे हाथना विस्तारवाळी उपाश्रयमां ओढवा माटे, त्रण हाथनी पहोळाईवाळी वे पछेडी पैकी एक मिक्षाने अर्थे अने एक उचार (वडीनित) जवामां. आ सर्व पछेडीओ लंबाईमां साडात्रण हाथ अथवा चार हाथनी जोईए. एने ओढया सिवाय क्यारे पण खुछे शरीरे रहें वुं निहं. समवसरणमां चार हाथना विस्तारवाळी अने चार हाथनी लांबी पछेडी ओढवी कल्पे, केम के समवसरणमां साध्वीओए ऊभा रहें वुं जोईए, तेओबी बेसाय निहं माटे समस्त अंगने ढांकवा वास्ते पछेडी मोटी जेईए. आ चारे पछेडीओ देहने ढांकवा माटे तथा श्लाघादिने माटे ओढाय छे (४) (छ० २४६) नारकपणुं ध्यानविशेषथी होय छे अने ध्यानविशेष माटे ज संघाटिका विगेरेनुं ग्रहण छे, ए हेत्थी ध्याननुं वर्णन करे छे.

ओसरणे चउहत्था, निसन्नपच्छायणी मसिणा।

* ' धारित्तए वा परिहरित्तए वा, धारियतुम् परिहरिहत्तुम् ' अहि तुम् प्रत्ययने बदले धार्यन्ति परिभुञ्जते आ क्रियापद कीधेल छे. श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद ॥ ३४६ ॥

चत्तारि झाणा पं० तं०-अहे झाणे रोद्दे झाणे धम्मे झाणे सुके झाणे, अहे झाणे चउव्विहे पं० तं०-अमणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स विष्पओगसातिसमण्णागते यावि भवति १, मणुन्नसंपओग-संपउत्ते तस्स अविष्पओगसतिसमण्णागते यावि भवति २, आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विष्पओगसतिसमण्णागए यावि भवति ३, परिजुसितकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविष्पओग-सतिसमण्णागते यावि भवइ ४, अहस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पं० तं०-कंदणता सोतणता तिप्पणता परिदेवणता । रोद्दे झाणे चउव्विहे पं० तं०-हिंसाणुबंधि मोसाणुबंधि तेणाणु-वंधि सारवखणाबंधि, रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पं० तं०-ओसण्णदोसे बहुदोसे अन्नाणदोसे आमरणंतदोसे । धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पं०तं - आणाविजते अवायविजते विवागविजते संठाणविजते, धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पं० तं०-आणारुई णिसग्गरुई सुत्तरुई ओगाढरुती, धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पं०तं०-वायणा पडिपुच्छणा परियद्यणा अणुष्पेहा, धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुष्पेहाओ पं० तं०-एगाणुष्पेहा अणिचाणुष्पेहा असरणा-

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ ध्यानानि स्र० २४७

11 39E II

णुप्पेहा संसाराणुप्पेहा, सुक्के झाणे चउन्विहे चउप्पडोयारे पं० तं०-पुहुत्तवितके सवियारी १, एगत्तवितके अवियारी २, सुहुमिकिरिते अणियद्दी ३, समुच्छिन्नकिरिए अप्पाडिवाती ४, सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पं० तं०-अव्वहे असम्मोहे विवेगे विउस्सग्गे, सुक्रस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पं० तं०—खंती मुत्ती मद्दवे अज्जवे, सुक्रस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पं० तं०-अणंतवत्तियाणुप्पेहा विष्परिणामाणुप्पेहा असुभाणुप्पेहा अवायाणुष्पेहा । मूलार्थः-चार प्रकारना ध्यान कहेला छे, ते आ प्रमाण-आर्चध्यान-पीडामां थयेलुं, दढ अध्यवसायरूप ध्यान, रौद्रध्यान-हिंसादि अति क्रूरताथी थयेलुं ध्यान, धर्मध्यान-श्रुत अने चारित्र धर्मथी युक्त अने शुक्कध्यान-कर्ममलने शुद्ध करनारुं ध्यान. आर्त्तध्यान चार प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाण-अमनोज्ञ वस्तुनो संबंध थत्राथी तेना वियोगनी चिंता(विचारणा)वाळुं थाय छे ते अनिष्टयोगआर्तिध्यान १, मनोज्ञ वस्तुनो संबंध थवाथी तेनो वियोग न थवानी चिंतावाळुं थाय छे ते इष्टवियोग-आर्त्तिध्यान २, आतंक-रोगनो संबंध थवाथी तेना वियोग(नाञ्च)नी चिंतावाळुं थाय छे ते रोगचिंतार्त्तिध्यान ३ अने सेवायल कामभागना संबंध थवाथी तेनो वियाग न थवानी चिंतावाळुं थाय छे ते भागार्त्तध्यान छे ४. आर्त्तध्यानना चार लक्षणो कहेलां छे,ते आ प्रमाणे-१ क्रंदनता-मोटे सार्द रोबं, २ शोचनता-दीनता करवी,३ तेपनता-आंसु पाडवा अने ४ परि-

देवनता-वारंवार दुःखपूर्वक बोलवुं. राद्रध्यान चार प्रकारे कहेलुं छे, ते आ प्रमाणे-१ हिंसानुबंधी-जीवहिंसाना अनुबंध-

श्रीस्था-नाङ्गप्रत्र सानुवाद अ ३४७॥ **

प्रवृत्ति)वाळुं ध्यान, २ मृषानुबंधी-चार्डाचुगली प्रमुख असत्यना अनुबंधवाळुं ध्यान, ३ स्तेयानुबंधी-परद्रव्यने चोरवाना अनुबंधवाळुं ध्यान अने ४ संरक्षणानुबंधी-विषयना साधन अने धन विगेरेने सारी रक्षण करवाना अनुबंधवाळुं ध्यान. रौद्र-ध्याननां चार लक्षणो कहेलां छे, ते आ प्रमाणे-१ ओसन्नदोष-हिंसादि दोषमांथी कोईक एक दोषमां विशेष प्रवृत्ति करे, २ बहुलदोष-हिंसा विगेरे बधा दोषोमां विशेष प्रवर्ते, ३ अज्ञानदोष-कुशास्त्रना संस्कारथी हिंसादिमां प्रवर्ते अने ४ ज्यां सुधी जीवे रयां सुधी पाप करे ते आमरणांतदोष. धर्मध्यान चार प्रकार अने चार पदमां अवतारवाळुं छे, ते आ प्रमाणे−१ आज्ञा-विचय-१ प्रभुना वचननो सम्यक् रीते विचार करवो, २ अपायविचय-रोग विगेरेथी थता दोषनो अने तेनाथी छटवानो विचार करवो, ३ विपाकविचय-कर्मना विपाक-शुभाशुभ फळनो विचार करवो अने ४ संस्थानविचय-चैाद राजलोकना स्वरूपतुं चितन करवं, धर्मध्याननां चार लक्षणो कहेलां छे, ते आ प्रमाणे-१ आज्ञारुचि-भगवंतभाषित अर्थ(निर्धक्ति विगेरे)मां रुचि, २ निसर्गरुचि-उपदेश विना जिनप्रवचनमां रुचि, ३ स्त्ररुचि-आगमने विषे रुचि अने ४ अवगाटरुचि-द्वादशांगी सिद्धांतने विस्तारथी जाणवा. धर्मध्यानना चार आलंबनो कहेलां छे, ते आ प्रमाणे-१ वाचना-सत्रार्थतुं आपवुं,२ प्रतिप्रच्छना-शंकाने टाळवा माटे गुरुने पूछवुं, ३ परिवर्त्तना-भणेला सत्रादिनुं याद करवुं अने ४ अनुप्रेक्षा-सत्रादिना रहस्यनुं चिंतन करवुं, धर्मध्याननी चार अनुप्रेक्षा (ध्यान पछीनी विचारणा) कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ एकत्वानुप्रेक्षा-' हुं एक छुं, मारो कोई नथी ' इत्यादि विचारणा, २ अनित्यानुप्रेक्षा-संपत्ति विगेरे सर्व वस्तु क्षणभंगुर छे इत्यादि विचारणा, ३ अशरणानु-प्रेक्षा-दःखथी ग्रक्त करनार धर्म सिवाय अन्य कोई शरणभूत नथी इत्यादि विचारणा अने ४ संसारानुप्रेक्षा-संसारनी विचित्रतानी

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ ध्यानानि सु० २४७

विचारणा. शुक्कध्यान चार प्रकार अने चार पदमां अवतारवा छं कहेलुं छे, ते आ प्रमाणे-१ पृथक्तवितर्कसविचारी-एक द्रव्यने आश्रित उत्पाद विगेरे पर्यायोतुं श्रुतना आलंबनपूर्वक भिन्न भिन्नपणे चिंतवतुं, २ एकत्ववितर्कअविचारी-उत्पाद विगरे पर्यायोमांथी कोईएक पर्यायने अभेदपणाए अवलंबीने श्रुतना आलंबनपूर्वक अर्थ अने शब्दना विचार रहित चिंतन, र सक्ष्मक्रियाअनिवृत्ति-उच्छ्वास विगेरे सक्ष्म कायानी क्रियानी निवृत्ति थयेल नथी, ते केवळीने चौदमे गुणठाणे योगने निरोध करता समये होय छे, ४ सम्रुच्छिन्निकियाअप्रतिपाती-समस्त योगनी क्रियानो उच्छेद थाय छे ते अप्रतिपाती, अर्थात अक्रियपणं प्राप्त थाय छे. शुक्कध्यानना चार लक्षणो कहेलां छे, ते आ प्रमाणे-१ अव्यथ-देवादिकृत उपसर्गथी भय रहित, २ असंमोह-सक्ष्म पदार्थना विषयमां मृढता रहित, ३ विवक-देहादिथी आत्मादि पदार्थनुं पृथक्करणरूप, ४ व्युत्सर्ग-देह अने उपाधिनो त्याग. शुक्कध्यानना चार आलंबनो कहेलां छे, ते आ प्रमाणे-१ क्षमा, २ निर्लोभता, ३ माईव-कोमळता अने ४ आर्जव-सरळता. शुक्कध्याननी चार अनुप्रेक्षाओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ अनंतन्नत्तितानुप्रेक्षा-आ संसारमां जीव अनंती वार भटक्यो छे इत्यादि विचारणा, २ विपरिणामानुप्रेक्षा-वस्तुओनुं विविध प्रकारे परिणमन थाय छे एवी विचारणा, ३ अशुभानु-प्रेक्षा-संसारना अञ्चभपणानी विचारणा अने ४ अपायानुप्रेक्षा-आश्रव विगेरेथी थता दोषोनी विचारणा. (स्व० २४७)

दीकार्थः-आ सूत्र सुगम छे. विशेष ए के-ध्यातिओ-ध्यानो, अंतर्प्रहर्त्त मात्र काल सुधी चित्तनी स्थिरता लक्षणवाळां छे. कहेलुं छे के-

अंतोमुहुत्तमित्तं, चितावत्थाणमेगवत्थुम्मि । छउमत्थाणं झाणं, जोगनिरोहो जिणाणं तु ॥ ५॥

श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद 11 386 11

कोईपण एक वस्तु(जेमां गुण अने पर्यायो वसे छे ते)मां अंतर्मुहूर्त मात्र चित्तनी स्थिरता ते छद्गमस्थोनुं ध्यान अने 'योगनो निरोध' करवो ते केवळीं ओतुं * ध्यान होय छे.

वसायरूप १, हिंसादिमां अत्यंत क्र्रतावडे आवेछं घ्यान ते रौद्र २, श्रुतधर्म अने चारित्रधर्मथी युक्त घ्यान ते धर्म्य-धर्म-भेदो जेना ते चतुर्विध, अमनोज्ञ-अनिष्ट, ' असमणुन्नस्स ' त्ति ॰ (ओ) पाठांतरमां अस्वमनोज्ञ-आत्माने अप्रिय शब्दादि विषयनो, अथवा तेना साधनभूत वस्तुनो जे संप्रयोग-संबंध, तेथी संप्रयुक्त संबंध-आत्माने अप्रिय विषयना साधनभूत वस्तुनो संयोग ते अमनोज्ञसंप्रयोगसंप्रयुक्त अथवा अस्वमनोज्ञसंप्रयोगसंप्रयुक्त, तेनो अमनोज्ञ शब्दादिना वियोग माटे स्मृति-चिंताने जे जीव संप्राप्त थाय छे ते, अभेद उपचारथी आर्च कहेवाय छे. 'च' अने 'अपि' शब्द बीजा भेदोनी अपेक्षाए समुचय अर्थवाळा छे. अथवा अमनोज्ञ वस्तुना संबंध सहित जे जीव, ते प्राणीने, विप्रयोग-संबंधथी अमनोज्ञ शब्दादि वस्तुओना वियोगमां स्मृति-विचारणानुं सारी रीते आवतुं, ते विष्रयोगस्मृतिसमन्वागत अर्थात् वियोगनी चिंतावाळं अने अनिष्ट संयोगवाळं आर्त्तध्यान थाय छे. 'च' अने 'अपि' पूर्ववत् छे. अथवा अमनोज्ञ वस्तुना संयोगयुक्त प्राणीमां 'तस्ये' ति० अमनोज्ञ शब्दादिना

* केवलीने भावमन होतुं नधी तेथो चित्तनी स्थिरताह्मप ध्यान न होय, परंतु तेरमे गुणठाणे ध्यानांतरिका होय छे. चौदमे गुण-

ठाणे शैलेशीकरण करतां योगनिरोधरूप ध्यान होय छे.

उद्देशः १ घ्यानानि स॰ २४७

इ४८ ध्र

वियोगनी चिंतावाळुं आर्तिध्यान छे. कह्युं छे के-" आर्त्तममनोज्ञानां सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः।" (तत्त्रार्थ० अ० ९, स्२० ३१) अर्थ स्पष्ट छे. आ पहेलो भेद. एवी रीते पाछळना भेदो पण जाणवा. विशेष ए के-मनोज्ञ-वहाला धन, धान्यादिनो वियोग न थाओ एम चितवबुं ते बीजुं (भेद) आर्त्त, आतंक्र-रोग ए त्रीजुं, तथा ' परिजुसिय ' ति ० सेवायेला जे कामो-इच्छवा योग्य, भोगो-शब्द विगेरे अथवा शब्द अने रूप ते कामो अने गंध, रस तथा स्पर्श ते भोगो अर्थात कामभोगो अथवा ' कामानां ' शब्द विगेरेनो जे भोग, तेनावडे जोडायेल, पाठांतरमां तो तेत्रोतुं कामभोगना संबंधवंडे जे युक्त ते निषेवित कामभोगसंप्रयोगसंप्रयुक्त, अथवा-'परिझुसिय ' त्ति० जरा विगेरेवडे क्षीण थयेल अने कामभोगवडे जोडायेल जे जीव, तेने कामभोगना ज अवियोगनी स्मृतितुं प्राप्त थवुं (आववुं) ते पण आर्त्तध्यान कहेवाय छे. आ चोथो भेद छे. बीजो भेद बहुभ धनादिना विषयवाळो छे अने चोथो भेद ते धनादिथी मळेल शब्दादि भोगना विषयवाळो हे. ए प्रमाणे आ बन्ने वच्चे रहेल तफावत विचारवो. शास्त्रांतरमां तो बीजा अने चोथा भेदनुं एकपणावडे त्रीज़ं कहेल छे, अने चोथो भेद तो त्यां निदान (नीयाणुं) कहेल छे. कह्यं छे के-

अमणुन्नाणं सद्दाइविसयवत्थूण दोसमइलस्स । (वस्तूनि-शब्दादिसाधनानि दोसोत्ति द्वेषः) धणियं वियोगचिंतणमसंपओगाणुसरणं च ॥ ६ ॥

अमनोज्ञ शब्दादि विषयना साधनभूत वस्तुओनी (प्राप्तिमां) द्वेषवडे मालेन थयेल जीवने एना वियोगनी अत्यंत चिंता

५२

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र साजुवाद ॥ ३४९ ॥ थाय-'कई रीते आनो वियोग थाय अने भाविष्यमां पण एनो संयोग न थाओ' एम अनुस्मरण करे ते प्रथम भेद.
तह सूलसीसरोगाइ-वेयणाए विओगपणिहाणं । तयसंपओगचिंता, तप्पाडियाराउलमणस्स ॥ ७॥
ऋलरोग अने मस्तकना रोग विगेरनी पींडाना वियोगनुं दृढ चिंतन अने भविष्यमां रोग न थाओ एवी विचारणारूप
जे ध्यान ते, रोगना प्रतिकार-निवारण करवामां व्याङ्कळ मनवाळाने होय छे, आ बीजो भेद.

इट्ठाणं विसयाईण, वेयणाए य रागरत्तरस् । अविओगण्झवसाणं, तह संजोगाभिलासो य ॥ ८॥

इष्ट विषयादि भोगववामां रागवडे आसक्त थयेलने तेनो वियोग न थवानो अध्यवसाय अने तेना संयोगना अभिलाष-रूप घ्यान होय छे, आ त्रीजो भेद.

देविंद्चक्कविद्विणाइगुणरिद्धिपत्थणामइअं । अहमं नियाणिवितण-मन्नाणाणुगयमचंतं ॥ ९॥

देवेंद्र अने चक्रवर्तीत्व विगेरेना गुण(रूपादि) अने ऋद्धि(विभृति)नी प्रार्थनारूप अधम निदान(नियाणा)नुं चितन, ते अत्यंत अज्ञानथी थयेछं होय छे. आ चोथो भेद.

चितन, त अत्यत अज्ञानथा थयछ हाय छ. आ चाथा मद. हवे आर्त्तध्याननां लक्षणो कहे छे-चित्तनी वृत्तिरूप होवाथी परोक्ष छतां पण जेनावडे आर्त्तध्यान निर्णय कराय छे ते लक्षणो, तेमां १ क्रंदनता-मोटा शब्दवडे आरडवुं-रोवुं, २ शोचनता-दीनपणुं, ३ तेपनता-तिप् धातुनो क्षरण (खरी जवुं) अर्थ होवाथी आंसुनुं खरवुं, अने ४ परिदेवनता-वारंवार खेदपूर्वक बोलवुं. आ जणावेल क्रंदनतादि इष्टवियोग, अनिष्टसंयोग अने ४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ ध्यानानि सु० २४७

रोगनी पीडाथी थयेल शोकरूप आर्षध्याननां लक्षणो छे. कह्यं छे के— तस्सकंद्णसोयण-परिदेवणताडणाइं लिंगाइं । इट्टाणिट्टवियोगा-ऽवियोगवियणानिमित्ताइं ॥१०॥ प्रायः उक्तार्थ छे. अन्य निदानना अने बीजाओना लक्षणो कहे छे. कह्यं छे के—

निंद्इ निययकयाई, पसंसइ सविम्हओ विभूईओ। पत्थेइ तासुरज्जइ, तयज्जणपरायणी होइ॥११॥ पोताना करेला कार्यना अन्य फळोने निंदे छे, बीजानी विभूतिओने आश्चर्य सहित प्रशंसे छे, प्रार्थना करे छे अने प्राप्त थयेल ऋदिओमां रागवाळो थाय छे. वळी तेने मेळववामां तत्पर थाय छे.

हवे रौद्रध्यानना भेदो कहेवाय छे-हिंसा एटले विविध वधबंधनादिवडे प्राणीओने पीडा प्रत्ये अनुबन्नाति-निरंतर प्रवृत्त करे छे एवा स्वभाववाळं जे प्रणिधान-दृढ अध्यवसाय अथवा हिंसानो अनुबंध छे जेमां ते हिंसानुबंधी रौद्रध्यान, आ प्रक्रम छे. कह्युं छे के-

प्राणीओनो वध करवो, वींधवुं, बंधन, बाढ्यं, अंकन-चिह्न करवं (आंकवुं) अने मारवुं विगेरेमां अति क्रोधरूप ग्रहथी ग्रहण करायेल जे दृढ अध्यवसायरूप रोद्रध्यान निर्दय मनवाळाने होय छे अने ते अधम (नरकादि) फलवाळं थाय छे.

तथा मृषा-पिश्चन, असम्य, असद्भृत (अछतुं) विगरे वचनना भेदोवडे असत्यना अनुबंधने करनार जे ध्यान ते

श्रीस्था-नाङ्गस्रत्र सानुवाद भ ३५०॥

मृपानुबंधी. कह्यं छे के-विसुणाऽसब्भाऽसब्भूयभूयघायाइवयणपणिहाणं। मायाविणोऽतिसंधणपरस्स पच्छन्नपावस्स ॥१३॥ पिशुन-अनिष्टतुं सचक, समाने अप्रिय ते असभ्य, अछतुं, सत्यनो अपलाप इत्यादि वचनना प्रणिधानरूप राद्रध्यान मायावीओ, व्यापारी विगेरेने, कोईने पण ठगवामां तत्पर थयेलने अने गुप्त पाप करनारने होय छे.

स्तेन-चोरनं कार्य ते स्तेय (चोरी), ते प्रत्ये तीव क्रोध विगेरेथी व्याक्रलपणाए अनुबंधवाळं जे ध्यान ते स्तेयानुबंधी. कह्यं छे के-

तह तिव्वकोहलोहा-उल्लस्स भूतोवघायणमणज्ञं । परद्व्वहरणचित्तं, परलोगावायानिरवेक्खं ॥१४॥

तीव्र क्रोध अने लोभवडे व्याकल थयेलने अनार्यरूप, नजीकमां आवेल प्राणीओने हणवारूप, पारका द्रव्यने चोरवामां चित्तवाळुं अनार्य कर्म अने परलोकना अपाय-नरकगमन विगेरेथी अपेक्षा (भय) रहित एवं रौद्रध्यान होय छे. आ त्रीजो भेद.

संरक्षण-समग्र उपायोवडे विषयना साधनभूत धनतुं रक्षण करवामां अनुबंध छे जेमां ते संरक्षणानुबंधी. कहुं छे के-सद्दाइविसयसाहण-धणसंरक्वणपरायणमणिट्टं । सव्वाहिसंकणपरो-वघायकळुसाउलं चित्तं ॥१५॥

श्चदादि विषयना साधनभूत धननी रक्षामां उद्यमवाळं, सारा माणसोने इच्छवा योग्य नहि एवं, वळी बधा उपर शंकाने

लईने व्याकुल-रखेने कोई धन लई जरो एवा विचारथी बधाओनो नाश करवो ए ज श्रेय छे, एवा परोपघात कषायोवडे

उद्देशः १ ध्यानानि

आकुळ चित्तरूप रौद्रध्यान होय छे.

हवे रौद्रध्याननां लक्षणो कहेवाय छे-'ओसन्नदोसे'त्ति० हिंसादि विगेरेमांथी कोईएकने विषे ओसन-प्रवृत्तिनुं जे बहुलपणुं ते ज दोष,अथवा 'ओसन्नं'ति०हिंसादि चार भेदमांथी कोई पण भेदमां बहुलताए विराम न पामवाथी जे दोष ते ओसन्न-दोष १, बळी हिंसादि सर्वमां प्रवृत्तिरूप दोष ते बहुदोष अथवा बहु-घणा प्रकारे हिंसा अने असत्य विगेरेनो दोष ते बहुदोष २, तथा अज्ञान-क्रुशास्त्रना संस्कारथी नरकादिना कारणभूत अधर्मस्वरूप हिंसादिने विषे धर्मनी बुद्धिवडे अभ्युदय-कल्याण माटे प्रवृत्तिरूप जे दोष ते अज्ञानदोष अथवा कहेल लक्षणविशिष्ट अज्ञान ज दोष. ते अज्ञान दोष बीजे स्थले ' नानाविध दोष' एवो पाठ छे त्यां नाना प्रकारोमां तो-कहेल लक्षणवाळा हिंसादि दोषोने विषे अनेक वार प्रवृत्ति ते नानाविधदोष समजवो ३ तथा मरण ए ज अंत ते मरणांत, मरणना अंत सुधी ते आमरणांत, नथी थयेल खेद जेने एवा कालसाकारिक विगेरे व्यक्तिनी हिंसादिमां जे प्रवृत्ति ते आमरणांत दोष ४. हवे स्वरूपवडे धर्म्य-धर्मध्यान चार प्रकारे दर्शावे छे. स्वरूप, लक्षण, आलंबन अने अनुप्रेक्षा-रूप चार पदोने विषे विचारणीयपणाए अवतार छे जेनो ते चतुष्पदावतार, अथवा चार प्रकारनो ज आ पर्यायवाचक शब्द . छे. क्वचित् 'चउप्पडोयार' मिति०एवो पाठ छे, त्यां चार पदोने विषे प्रत्यवतार छे जेनो एवो समास करवो. 'आणा-विजए'त्ति ॰ आ एटले अभिविधि व्याप्तिथी जणाय छे अर्थी जेनावडे ते आज्ञा (प्रवचन), ते विचीय ते-ानिर्णय कराय छे, अथवा जेने विषे विचाराय छे ते आज्ञाविचयधर्मध्यान. प्राकृतपणा थी विजय शब्द छे. जे आज्ञा विजीयते-अधिगम-उपदेश-द्वारा परिचयवाळी कराय छे जेने विषे ए आज्ञाविजय १.एवी रीते शेष त्रण भेदो पण जाणवा.विशेष ए के -२ अपायो-प्राणीओने

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद भ ३५१॥

रागादिथी उत्पन्न थयेल ऐहिक तथा पारलेकिक अनथों, ३ विपाक - ब मोंनुं फल-ज्ञानादिने रोक वुं विगेरे,४ संस्थानी-लोक,द्वीप, समुद्र अने जीवादिना आकारो- स्वरूपो. क बुं छे. के-आप्तपुरुषना वचनस्वरूप प्रवचनना अर्थनो निर्णय करवो ते आज्ञाविचय १, आश्रव, विकथा, सातादि गौरव अने परीषह विगेरेथी थता दोषनुं चिंतन ते अपायविचय २, अश्रम अने श्रम कर्मना विपाकना अनुचितन अर्थवाळो ते विपाकविचय ३ देमज द्रव्य अने क्षेत्रनी आकृतिनुं चिंतन ते संस्थानविचय ४. हवे धर्मध्याननां लक्षणो सत्रकार कहे छे- 'आणारह' चिंत-आज्ञा-सत्रना व्याख्यानरूप निर्वृक्ति विगेरे, आज्ञामां अथवा आज्ञावडे रुचि-श्रद्धा ते आज्ञारुचि. बीजी रुचिओना विषयमां एम ज जाणी लेवुं. विशेष ए के-निसर्ग एटले उपदेश सिवाय-पोतानी मेळे अर्थात् स्वाभाविक रुचि २, सत्र-आगममां अथवा तेना द्वारा रुचि ते सत्ररुचि. ३तथा अवगाहवुं ते अवगाह-द्वाद्शांगीनुं विस्तारथी जाणवुं एम संभावना कराय छे, ते विस्तारवेडे रुचि ए अवगाहरुचि अथवा 'ओगाह 'चिंत साधुनी समीपमां रहेलने साधुना उपदेशथी थती रुचि ते अवगाहरुचि ४. कह्युं छे के-

आगमउवएसेणं [उवएसाणा],* निसम्गओ जं जिणप्पणीयाणं । भावाणं सद्दृणं, धम्मज्झाणस्स तं छिंगं॥ १६॥

* गाथावृत्तिमां ' उवएसाणा ' ए प्रमाणे जे पाठ छे ते योग्य जणाय छे. आ०स०वाळी तथा बाबूबाळी प्रतमां 'उवएसेणं' एवो षाठ छे. ए पद प्रमाणे अर्घ करवाणी त्रण रुचि घवा पामे छे, परंतु आज्ञारुचि रही जवा पामे छे. ४ स्थान काध्ययने उद्देशः १ ध्यानानि स्र० २४७

२ ।। ३५१ ॥

आगमथी. उपदेशथी,आज्ञा-अर्थथी अने निसर्ग-स्वभावथी जिनप्रणीत भावोतुं श्रद्धान करवुं, ते धर्मध्याननां लक्षणो छे. तत्त्वार्थना श्रद्धानरूप सम्यक्तव ते धर्मनं लक्षण छे.आ भावार्थ छे. हवे धर्मना आलंबनो कहेवाय छे. धर्मध्यानरूप महेल उपर चडवा माटे जे आलंबन लेवाय छे ते आलंबनो कहेवाय, ते आ प्रमाणे-सम्यक् प्रकारे कहे छुं ते वाचना अर्थात् शिष्यने कर्मनी निर्जरा माटे जे सूत्र नुंदान विगरे आपछुं ते १, सत्र विगरेमां शंकावाळी थये छते शंकाने दूर करवा माटे गुरूने पृछ्छुं ते प्रतिप्रच्छना २, अहिं प्रति शब्द धातुना ज अर्थवाळो छे. तथा पूर्वे भणेल छत्र विगेरेनी दिस्मृति न थाय अने निर्जरा थाय ते माटे जे अभ्यास (आवृत्ति) ते परिवर्त्तना ३, तथा सत्रना अर्थनुं चिंतन करनुं ते अनुप्रेक्षा ४. हवे चार अनुत्प्रेक्षा (भावना) कहेवाय छे. अन्-ध्याननी पाछळ प्रेक्षणानि-सारी रीते विचारो करवा ते अनुप्रेक्षाओ. तेमां ' हुं एक छूं, मारुं कोई नथी, हुं अन्य कोईनो नथी, जेनो हुं छुं तेने जोतो नथी अने भविष्यमां कोई मारो थाय एम नथी. ' एवी रीते एकाकी-असहायभृत आत्मानी अनुप्रेक्षा-भावना ते एकानुप्रेक्षा. (१) तथा 'काया, तरत नाज पामवावाळी छे. संपत्तिओ आपत्तिओनं स्थान छे,संयोगो वियोगवाळा छे.जे उत्पन्न थाय छे ते क्षणभंगुर छे.' एवी रीते अनित्य जीवन विगेरेनी अनुप्रेक्षा ते अनित्यानुप्रेक्षा (२), तथा 'जन्म, जरा अने मरणना भयोवडे पराभव थये छते, व्याधिनी पीडावडे ग्रस्त थये छते आ लोकमां जीवने जिनवरना वचन सिवाय बीजुं कोई शरणभूत नथी. एवी रीते शरण रहित एवा आत्मानी अनुप्रेक्षा अश्वरणानुप्रेक्षा (३) तथा 'आ संसारमां माता थईने दीकरी, बहेन अने स्त्री थाय छे, दीकरो थईने पिता थाय छे, स्राता थाय छे, वळी रात्रु पण थाय छे. चार गतिमां सर्व अवस्थाओने विषे संसरण(अमण)रूप संसारनी अनुप्रेक्षा ते संसारानुप्रेक्षा. (४). हवे

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ३५२ ॥ ** कहे छे-'पुहत्तवितके'त्ति ० पृथक्त-एक द्रव्यमां रहेल उत्पाद विगेरे पर्यायोना भेदवर्ड अथवा अन्य आचार्यो विस्तारपणे कहे छे, वितर्क-विकल्प, ते पूर्वगत श्रुतना अवलंबनरूप विविध नयने अनुसरण लक्षणवाळो छे जेन विषे ते पृथक्त्ववितर्क. पूज्य श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणे श्रुतना अवलंबनपणाए उपचारथी वितर्क-श्रुत कहेल छे, तथा विचरण एटले अर्थथी व्यंजन(शब्द)मां अने शब्दथी अर्थमां, वळी मन प्रमुख त्रण योग पैकी कोई एक योगमांथी बीजा योगमां जबुं ते विचार, '' विचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसंकांतिः " (तत्त्वा० अ० ९, स० ४६) इति वचनात्, विचार सहित ते सविचारी, अहिं ' सवधनादि ' गणथी समासांत इन्प्रत्यय थयेल छे. कह्युं छे केः—

उप्पायिति भंगाइं पज्जयाणं जमेगद्दवंमि । नाणानयाणुसरणं, पूद्यगयसुयाणुसारेणं ॥ १७ ॥ सवियारमत्थवंजण-जोगंतरओ तयं पढमसुक्कं। होति पुहुत्तवियक्कं, सवियारमरागभावस्स ॥ १८ ॥

उत्पात, स्थिति अने नाश विगेरे पर्यायोने जे एक द्रव्यमां पूर्वगतश्रुतने अनुसारे नाना-अनेक नयवडे अनुसरबुं अर्थात् द्रव्यार्थिक विगेरे नयभेदवडे चिंतववुं. अहिं मरुदेवी विगेरेनो अपवाद छे केम के तेमने पूर्वगतश्रुतनुं आलंबन नथी. वळी विचार-अर्थथी शब्दमां अने शब्दथी अर्थमां संक्रमण तेम ज योगांतरमां संक्रमण ते प्रथम शुक्रु ध्याननो भेद पृथक्त्व-वितर्क नामनो रागरिहत भाववाळा पुरुषने होय छे अर्थात् उपशमश्रेणी के क्षयकश्रेणीयाळा जीवने होय छे. आ पहेलो भेद. तथा ' एगत्तवियको 'त्ति एकत्व-अभेदवडे उत्पादादि पर्यायोमांथी कोई एक पर्यायना अवलंबनपणावडे

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ ध्यानानि स्र० २४७

II 342 H

वितर्क-पूर्वगतश्रुतना आश्रयवाळो व्यंजन-शब्दहर अथवा अर्थहर छे जे जीवने ते एकत्ववितर्क, तथा अर्थ के व्यंजनने विषे कोई एकमांथी बीजामां विचार-गमन विद्यमान नथी तथा मन विगेरे कोई एक योगमांथी बीजा योगमां, वायु वगरना गृहमां रहेल दीपकनी जेम, संचरण (गमन) लक्षण नथी जेने ते अविचारी पूर्वनी माफक जाणवुं. कह्युं छे के—

जं पुण सुनिप्पकंपं, निवायसरणप्पईवामिव चित्तं । उप्पायिठइभंगाइयाणमेगंमि पज्जाए ॥१९॥ अवियारमत्थवंजणजोगंतरओ तयं बिइयसुक्कं । पुठ्वगयसुयालंबण–मेगत्तवियक्कमवियारं ॥२०॥

भावार्थ उपर कह्या मजब छे.

आ एकत्ववितर्कअविचारी नामनो बीजो भेद. तथा 'सुहुमिकिरिए'ति० निर्वाणना गमनसमयमां मनोयोग अने वचनयोगनो निरोध करेल छे अने काययोगनो अर्घ निरोध करेल छे एवा केवलज्ञानीने सक्ष्मिक्रयाअनिवृत्ति ध्यान होय छे, तथी काया संबंधी उच्छ्वासादि सक्ष्म क्रिया छे जेने विषे ते सक्ष्मिक्रय, ते अनिवृत्ति स्वभाववालुं छे केम के अत्यंत प्रवर्धमान परिणाम होय छे. वळी कह्युं छे के—

निव्वाणग्मणकाले, केवलिणो दरनिरुद्धजोगस्स । सुहुमिकरियाऽनियद्दिं, तइयं तणुकायिकरियस्स॥२१॥

भावार्थ जणाव्या मुजब छे. आ त्रीजो भेद.

श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद ॥ ३५३॥ तथा 'समुच्छिन्निकिरिए' त्ति ॰ शैलेशीकरणमां * योगना निरोधपणाए कायिकादि क्रिया समुच्छिन्न-नाश थयेल छे जेने विषे ते समुच्छिन्निकिय 'अप्पिडिवाए' त्ति ॰ विराम निर्हं पामवावालो स्वभाव छे जेनो एवो अर्थ छे. समुच्छि-न्निकियअप्रतिपाती नामनो चोथो भेद छे. कहे छे के —

तस्सेव य सेलेसी-गयस्स सेलोव्व निष्पकंपस्स । वोच्छिन्नकिरियमप्पडिवाई झाणं परमसुकं ॥२२॥ भावार्थ जणाच्या प्रमाणे छे.

अहि शुक्कध्यानना छेछा वे भेदमां आ प्रमाणे क्रम छे-केवलीने ज्यारे चोक्स अंतर्भृहर्त्तकालमां मोक्षे जवानुं होय छे त्यारे वेदनीयादि चार भवापग्राही (आयुष्य पर्यंत रहेनार) कर्म, समुद्धातथी अथवा स्वभावे ज समान स्थितिवाळा होते छते केवली योगनुं रुंधन करे छे. योगनिरोधमां क्रम बतावे छे—

पज्जसमेत्तसन्निस्स, जित्तयाइं जहन्न जोगिस्स । होति मणोद्व्वाइं, तव्वावारो य जम्मेत्तो ॥२३॥ तद्संखगुणविहीणे, समए समए निरुंभमाणो सो । मणसो सव्वनिरोहं, कुणइ असंखेजसमएहिं॥२४॥

पर्याप्त मात्र संज्ञीपंचेंद्रिय× जघन्य योगवाळा जीवने मनोद्रच्यो अने तेनो च्यापार जे प्रमाणमां होय छे तेनाथी असं-च्यात गणहीन मनोयोगनुं समये समये रुंधन करता थका ते असंख्यात समयवंड सर्वथा मनोयोगनुं रुंधन करे छे.

अंशिंश निरुपर्वतनी माफक निष्प्रकंप रहेवं ते शैंछेशीकरण.
 प्रयोप्तपणाए प्रथम समयवाळो.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ ध्यानानि स्र०२४७

॥ ३५३ ॥

पज्जत्तमेत्तविदिय, जहन्नवइजोगपज्जया जे उ । तद्संखगुणविहीणे, समए समए निरुंभंतो ॥२५॥ सव्ववइजोगरोहं, संखातीएहिं कुणइ समएहिं। तत्तो अ सुहुमपणगरस, पढमसमओववन्नस्स ॥२६॥

पर्याप्त मात्र द्वीन्द्रिय जीवना जघन्य वचनयोगना जेटला पर्यायो छे, तथी असंख्यातगुणहीन वचनयोगने समये समये हंधन करता थका असंख्यात समयमां सर्वथा वचनयोगनुं हंधन करे छे. तथारबाद प्रथम समयमां उत्पन्न थयेल स्वक्ष्मपनक- (निगोदविशेष जीव)नो

जो किर जहन्नजोगो, तदसंखेजगुणहीणमेकेके। समए निरुंभमाणो, देहतिभागं च मुंचतो ॥२७॥ रुंभइ स काययोगं, संखाईतेहिं चेव समएहिं। तो कयजोगनिरोहो, सेलेसीभावणामेइ ॥ २८॥

जे निश्चये जघन्य योग छे तेथी असंख्यातगुणहीन-एकेक समयमां निरोध करता थका अने योगना सामध्येथी देहना त्रीजा भागने मूकता थकां असंख्यात समयमां ते स्वकाययोगनो निरोध करे छे, एम करतो थको स्वकार्मणशरीरथी बनेला मुख, कर्ण, शिर अने उदर विगेरेना छिद्रोने पूरे छे तेथी त्रण योगनो निरोध करेल छे जेणे एवा केवली शैलेशीभावने प्राप्त थाय छे अर्थात श्वासोश्वासना निरोधसमये अयोगी थाय छे.

शैल-पर्वत, तेनो ईश ने मेरु, तेनी माफक स्थिरता, ते शैलेशी. हवे शैलेशीनुं कालप्रमाण कहे छे— हस्सक्खराइं मज्झेण, जेण कालेण पंच भन्नति। अच्छइ सेलेसिंगओ, तत्तियमेत्तं तओ कालं॥२९॥ श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ३५४॥ तणुरोहारंभाओ, झायइ सुहुमिकिरियाणियिं सो। वोच्छिन्नकिरियमप्पाडिवाइं सेलेसिकालंमि ॥३०॥ मध्यम रीतिवडे अ इ उ ऋ ॡ, आक्ष पांच इस्व अक्षरनो जेटला कालवडे उचार कराय तेटला काळपर्यंत शैलीशी अव-स्था होय छे. काययोगना निरोधनी श्रह्मआतथी केवली भगवान् सक्ष्मिकियाऽनिष्वतिरूप त्रीजा भेदनो विचार करे छे. त्यारबाद सर्व योगनो निरोध करवा पछी शैलेशी अवस्थामां समुच्छिन्। व्यवच्छिन)क्रियाऽप्रतिपाती ध्यान करे छे.

हवे शुक्तिध्याननां लक्षणो कहेवाय छे—' अव्वहें 'त्ति देव विगरेना करेल उपसर्गादिथी उत्पन्न थयेल मय अथवा चिलत थवारूप व्यथा—पीडानो अभाव ते अव्यथ, तथा देव विगरेथी करायेल मायाजन्य मोहनो अथवा सक्ष्म पदार्थ विषयक संमोहनो—मृहतानो निषेध ते असंमोह, तथा देहथी आत्मानुं अथवा आत्माथी सर्व संयोगोनुं विवेचनचुद्धिवडे पृथक्करण ते विवेक, तथा सर्वसंगपरित्यागपणाए देह अने उपधिनो त्याग ते व्युत्सर्ग. अहिं विवरणनी गाथा जणावे छेः— चालिज्जइ बीहेइ व, धीरो न परीसहोवसग्गेहिं। सुहुमेसु न संमुज्झइ, भावेसु न देवमायासु ॥ ३१ ॥ देहविवित्तं पेच्छइ, अप्पाणं तहय सव्वसंजोगे ३। देहोवहिवुस्सग्गं, निस्संगो सव्वहा कुणइ ॥ ३२॥

परीषहो अने उपसर्गोवडे धीर पुरुष चित्रत थतो नथी अने भय पामतो नथी १, सक्ष्म भावोने विषे अने देवनी मायामां संमोह पामतो नथी २, देह अने आत्माने पृथक् (जुदो) तथा आत्माने सर्व संजोगोथी भिन्न माने छे ३, देह अने उपधिनो

* अन्य आचार्यो ङ् ज् ण् न म आ पांच अक्षरो कहे छे.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ ष्यानानि स्र०२**४७**

॥ ३५४ ॥

सर्वथा त्याग करे छे ते व्युत्सर्ग ४.

आलंबननं सूत्र स्पष्ट छे, ते संबंधी गाथा जणावे छे-

अह खंतिमद्दवज्जव-मुत्तीओ जिणमयप्पहाणाओ । आलंबणाइं जेहिं उ, सुक्कज्झाणं समारुद्दइ ॥३३॥

क्षांति, मार्दव, आर्जव अने निर्लोभता-आ चार जिनमतमां प्रधान छे, केम के कर्मक्षयना हेतुभूत होवाथी आ आलंबनो छे, जेनाद्वारा शुक्लध्यानरूप महेल प्रत्ये जीव आरोहण करे छे-चडे छे

हवे धर्मध्याननी अनुप्रेक्षाओं कहेवाय छे. 'अंगतवत्तियाणुप्पेह'त्ति० अनंता-अत्यंत विस्तृतवृत्ति चर्चन छे जेतुं अथवा अनंतपणाए वर्त्ते छे ते अनंतवर्त्ती, तेनो भाव ते अनंतवर्त्तिता, जे भवपरंपरानी जाणवी, तेनी अनुप्रेक्षा (भावना) ते अनंतवृत्तितानुप्रेक्षा अथवा अनंतवर्त्तितानुप्रेक्षा. कधं छे के-

एस अणाइ जीवो, संसारो सागरोव्व दुत्तारो । नारयतिरियनरामर-भवेसु परिहिंडए जीवो ॥३४॥

अनादिकालनो आ जीव सागरनी जेम दुस्तर संसारमां नारक, तिर्यंच, मनुष्य अने देवना भवीने विषे परिश्रमण करे छे. एवी रीते बीजी त्रण अनुप्रेक्षामां पण समास करवो. विशेष ए के-' विपरिणामे ' त्ति० वस्तुओनुं विविध प्रकारे

परिणमन थवुं ते विपरिणाम. क्युं छे के— सठ्वट्टाणाइं असा–सयाइं इह चेव देवलोगे य । सुरअसुरनराईणं, रिद्धिविसेसा सुहाइं च ॥३५॥

80

श्रीस्था-नाङ्गधत्र सानुवाद ॥ ३५५ ॥

आ (मनुष्य) लोकमां अने देवलोकमां सर्व स्थानो अशाश्वत छे. वळी सुर, असुर अने मनुष्यादिकनी विविध संपत्तिओं तेमज सुखो पण अशाश्वत छे.

' असुभे ' त्ति ० संसारनुं अशुभपणुं छे. कह्युं छे के—

धी संसारो जमि(भी) जुयाणओ परमरूवगिवयओ। मरिजण जायइ किमी, तत्थेव कडेवरे नियए ॥३६ आ संसारने घिकार छे के जैने विषे उत्कृष्ट रूपवडे गर्वित थयेल युवान पुरुष मरीने पोताना ज कलेवरमां कीडो थाय छे. तथा अपायो एटले आश्रवोना दोषो. यथा—

कोहो य माणो य अणिग्गहीया, माया य लोभो य पवहुमाणा । चत्तारि एए किलणा कसाया. सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥ ३७॥

दमन निह करायेल क्रोध अने मान तथा वृद्धि पामता माया अने लोभ-आ चारे दुष्ट कषायो पुनर्भवरूप वृक्षना मुलोने सींचे छे. आ संबंघमां गाथा दर्शावतां कहे छे के—

आसवदारावाए, तह संसारासुहाणुभावं च । भवसंताणमणंतं, वत्थूणं विपरिणामं च ॥ ३८ ॥ मिध्यात्वादि आश्रवद्वारोनुं चितन ते अपायानुप्रेक्षा, संसारनुं अशुभपणुं चितवन्नं ते संसारानुप्रेक्षा, अनंत भवपरंपरानुं

चिंतन ते अनंतवृत्तितानुप्रेक्षा अने वस्तुओना विविध परिणामनुं चिंतन ते विपरिणामानुप्रेक्षा. (स.० २४७)

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ ध्यानानि स्०२४७

॥ ३५५ ॥

घ्यानथी देवपणुं पण प्राप्त थाय तेथी देवस्थितिस्त्रने कहे छे-

चउ विवहा देवाण ठिती पं० तं०-देवे णाममेगे १, देवसिणाते नाममेगे २, देवपुरोहिते नाम-मेगे ३, देवपज्जलणे नाममेगे ४, चउविवधे संवासे पं॰ तं०-देवे णाममेगे देवीए सर्द्धि संवासं गच्छेजा. देवे णाममेगे छवीते सर्छि संवासं गरछेजा, छवी णाममेगे देवीए सर्छि संवासं गरछेजा, छवी णाम-मेगे छवीते सर्छि संवासं गच्छेजा। सू० २४८, चत्तारि कसाया पं० तं०-कोहकसाए माणकसाए माया-कसाए लोभकसाए, एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, चउपतिद्विते कोहे पं० तं०-आतपइद्विते परपतिद्विते तदुभयपतिद्विते अपतिद्विते, एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, एवं जाव छोभे, वेमा-ाणियाणं २४, चंडाहें ठाणेहिं कोधुप्पत्ती सिता, तं०-खेत्तं पडुचा वत्थुं पडुचा सरीरं पडुचा उवहिं पहुचा, एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, एवं जाव लोभ० वेमाणियाणं २४, चउव्विधे कोहे पं० तं - अणंताणु वंधिकोहे अपचवलाणकोहे पचवलाणावरणे कोहे संजलणे कोहे. एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, एवं जाव लोभे वेमाणियाणं २४, चउ विवहे कोहे पं० तं०-आभोगणिव्वत्तिए अणाभोग- श्रीस्था-नाङ्गस्वत्र सानुवाद ॥ ३५६॥

णिव्यत्तिते उवसंते अणुवसंते, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, एवं जाव छो मे जाव वेमाणियाणं २४ । सु० २४९

मूलार्यः-चार प्रकारे देवोनी स्थिति-मर्यादा कहेली छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक सामान्य देव छे १, कोईएक स्नातक-(प्रधान) देव छ २, कोईएक शांतिकर्म करनार पुरोहित देव छ २ अने कोईएक प्रज्वलन देव एटले भाट चारणनी जेम अन्य देवोनी प्रशंसा करनार देव छे ४. चार प्रकारे संवास (मैथुन) अर्थे पुरुष अने स्त्रींतुं एकत्र वसवुं कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईएक देव देवीनी साथे संवास करे (भोग करे), २ कोईएक देव छत्री-नारी अथवा तिर्यचणीनी साथे संवास करे, ३ कोईएक छत्री-नर अथवा तिर्यंच, देवीनी साथे संवास करे अने ४ कोईएक छत्री-मनुष्य के तिर्यंच, मनुष्यणी के तिर्यंचणी साथे संवास करे. (स्ट॰ २४८) चार कषायो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-क्रोध कषाय. मान कषाय. माया कषाय अने लोभ कषाय. ए चार कषाय नैरियकने होय यावत् वैमानिकने चार कवायो होय. चार स्थानक(भाव)मां रहेनारो क्रोध कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ पोताना अपराधयी पोताने तिषे थयेल क्रोध ते आत्मप्रतिष्ठित, २ बीजाना वचनथी थयेल क्रोध अथवा बीजा प्रत्ये थ्येल क्रोध ते परप्रतिष्ठित, ३ बन्नेयी (कंईक पोताथी अने कंईक परना निभित्तयी) थ्येल क्रोध ते तदभयप्रतिष्ठित अने ४ कंई पण कारण सित्राय क्रोधना उदयथी ज थयेल ते अप्रतिष्ठित क्रोध. आ चार प्रकारनो क्रोध नैर्यिकथी मांडीने यावत वैमानिकने होय छे. चार कारणीवडे क्रोध उत्पन्न थाय छे, ते आ प्रमाणे -१ पोतपोताना उत्पत्तिना

४ स्थान काष्ययने उद्देशः १ संवासः कषायाश्र स्र॰ २४८-२४९

11 346 1

स्थानने आश्रयीने, २ वस्तु-सचित्तादि पदार्थ अथवा घरने आश्रयीने, ३ शरीर-खराब स्थितिवाळं अथवा कद्रपाने आश्रयीने अने ४ उपिध-उपकरणने आश्रयीने उत्पन्न थाय छे. आ रीते नैरियकोने अने यात्रत् वैमानिकोने चार कारणीवडे क्रोधनी उत्पत्ति थाय छे. एवी ज रीते मान, माया अने लोभ पण चार कारणोवडे थाय छे. ते वैमानिको पर्यंत चात्रीश दंडकमां जाणवा. चार प्रकारे कोध कहेल छे, ते आ प्रमाणे १ अनंतानुबंधी कोध, ते पर्वतनी रेखा (फाट) सरखो, २ अप्रत्याख्यानी कोध, ते पृथ्वीनी फाट सरखो, ३ प्रत्याख्यानी क्रोध, ते रेतीनी रेखा सरखो अने ४ संज्यलन क्रोध, ते जलनी रेखा सरखो. ए प्रमाणे नैरियकने यात्रत वैमानिकोने चार प्रकारनो क्रोध कहेल छे. एवी रीते मान, माया अने लोभ वैमानिक पर्यंत चोवीश दंडकमां चार प्रकारे होय छे. चार प्रकारे क्रोध कहेल छे, ते आ प्रमागे-१ आमोगनिवर्तित-क्रोधना फळने जाणता छतां पण क्रोध करवो ते, २ अनाभोगनिवन्तित-क्रोधना फलने नहि जाणतां छतां क्रोध करवो ते, ३ उपशांत-उदय अवस्थामां निह आवेल क्रोध अने ४ अनुपद्मांत-उद्यमां आवेल क्रोध. एवी रीते चार प्रकारनो क्रोध नैरियकने यावत् वैमानिकोने होय छे. एशेज रीते चार प्रकारे मान,माया अने लोभ यात्रत् वैमानिक पर्यत चोत्रीञ्च दंडकमां होय छे.(स्० २४९) टीकार्थः — स्थितः -क्रम, मनुष्यनी स्थिति माफ ह देवोमां पण राजा,प्रधान विगेरेनी मर्यादा छे. देव सामान्य मात्र,

'नामे'ति० शब्द बाक्यालंकारमां छे. कोईएक देव स्नातक(प्रधान),देव पोते ज स्नातक अथवा देवोनो स्नातक, एवा समास करवो. एवी रीते बाकीना बे भेदमां पण समास करवो. विशेष ए के-पुरोहित एटले शांति कर्म करनार, 'पज्जलणे'त्ति०मागध-भाट-चारणनी जेम प्रश्नंसा करवाथी बीजा देवोने प्रज्वलन करे-तेजस्वी करे ते प्रज्वलन. देवनी स्थितिना प्रसंगथी देवना विशेषभूत श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ३) ३५७ ॥

संवाससूत्रने वहेल छे. ते सूत्र स्पष्ट छे, विशेष ए के-संवास-मैथुन माटे एकत्र वसवुं, छिवि' क्ति० त्वचा(चामडी)ना योगथी औदारिक शरीर अने ते शरीरवाळी मनुष्यणी के तिर्यंचणी अथवा ते शरीरवाळा मनुष्य के तिर्यंच छवी कहेवाय. हमणां ज संवास कह्यों, ते वेदस्वरूप मोहना उदयथी होय छे, माटे मोहना विशेषभूत क्षाय प्रकरणने कहे छे—' चत्तारि कसाये '— त्यादि० तत्र कर्मरूप क्षेत्रने जे खेडे छे, अर्थात् सुख-दुःखना फलने योग्य करे छे. अथवा जीवने मालेन करे छे, आ निरुक्ति विधिवडे ते क्षायों कहेवाय छे. कह्युं छे के—

सुद्दुवस्वबद्दुसईयं, कम्मवस्वेतं कसंति ते जम्हा । कल्लुसंति जं च जीवं, तेण कसायत्ति वुच्चंति ॥३९ प्रायः भावार्थ उपर वर्णव्या मुजब छे.

अथवा प्राणीओने कवित-हणे छे ते कप-कर्म अथवा संसार, तेना लाभनो हेतु होवाथी आयो ते कषायो, प्राणीओने संसार के कर्म प्रत्ये जे लई जाय छे ते कषायो. कहुं छे के-

कम्मं कसं भवो वा, कसमाओ सिं जओ कसायातो। कसमाययंति व जओ, गमयंति कसं कसायत्ति॥४०

प्रायः भावार्थ उपर जणाच्या प्रमाणे छे.

त्रायः मावाय उपर जणाव्या त्रमाण छ. क्रोध करवो अथवा जेनाथी क्रोध थाय छे ते क्रोध, अर्थात् क्रोधमोहनीय कर्मना उदयवडे थवा योग्य जीवनी परिणतिविशेष, अथवा क्रोधमोहनीय कर्म एज क्रोध, एवी रीते मान, माया विगेरे क्षायोमां पण जाणवुं. विशेष ए के-हुं जाति विगेरे गुण- ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ संवासः कषायाश्च द्य०२४८-२४९

11 3610 11

वाळो छं एम मानवुं-जाणवुं, अथवा जेनावडे मनाय छे ते मान, तथा मान-हिंसा, वंचन (ठगवुं) एवो अर्थ छे. जेनी द्वारा ठगे छे ते माया, तथा लोभन-वस्तुनी इच्छा अथवा जेनाद्वारा छुब्ध थाय छे ते लोभ. 'एव'मिति० जेम सामान्यथी चार क्षायो कहा छे तेम विशेषथी नारकोने, असुरोने यावत चोवीशमा पदमां वैमानिकोने पण चार चार कषायो होय छे. 'चउप्पड-द्विए'त्ति व्यारमां स्व. पर, तदुभय-स्वपर अने तेना अभावमां प्रतिष्ठित-रहेल ते चतुःप्रतिष्ठित, तेमां 'आयपइद्विए'ति व पोताना अपराधवडे पोताना विषयमां ऐहिक अने पारलौकिक दोषने जीवाथी जे क्रोध उत्पन्न थाय छे ते आत्मप्रतिष्ठित क्रोध. अन्यवहे आक्रोश-गाळीप्रदान प्रमुख्थी उदीरणा करायेल अथवा बीजाना विषयवाळो ते परप्रतिष्ठित, पोताना अने अन्यना निमित्त-वाळो ते उभयप्रतिष्ठित, आक्रोशादि कारणनी अपेक्षा सिवाय, केवळ क्रोधमोहनीयना उदयथी जे क्रोध थाय छे ते अप्रतिष्ठित. कहां है के-'फळना अनुभवोमां कमीं, आपेक्ष अने निरपेक्ष है.' जेम आयुष्यकर्म, सोपक्रम अने निरुपक्रम कहेल है तेम फळना अनुभवोमां कर्मो अपेक्षा सहित अने अपेक्षा रहित होय छे. वळी आ चोथो भेद जीवने विषे रहेल छे, तथापि स्व-पर विशेरेना विषयमां (कारणवडे) उत्पन्न न थवाथी अप्रतिष्टित कहेल छे, परंतु सर्वथा अप्रतिष्ठित नथी, केमके चार प्रतिष्टितपणाना अभावनो प्रमंग आबी जाय. क्रोधनं आत्मादि प्रतिष्ठितपणुं, एकेंद्रिय अने विकलेंद्रियोने जे कहेल छे ते पूर्वभवने विषे ते परिणामपरिणत मरणवहे उत्पन्न थयेलाने आत्मादिप्रतिष्ठितपणुं होय छे. एवी रीते मान, माया अने लोभवहे पण अन्य दंडक त्रणनं सत्र कहेबुं, नारक विगेरेनुं क्षेत्र पोतपोताना उत्पितस्थानने आश्रयीने, एम वस्तु-सचित्तादि पदार्थ अथवा वास्तु-घर, खराब आकारवाळ शरीर, जे जेनुं उपकरण ते उपिष, एकेंद्रियोने उपिष भवांतरनी अपेक्षाए जाणवी, एवी रीते मान, मायादिक त्रण सत्र-

श्रीस्था-नाङ्गस्रत्र सानुवाद H 346 II

पाठ कहेवा. अनंत भवने जे निरंतर बांधे छे-अनंत भवनी परंपराने करे छे एवा स्वभाववाळो जे कषाय ते अनंतानुबंधी, अथवा अनंत अनुबंध छे जेनो ते अनंतानुबंधी, सम्यग्दर्शनना सहभावी [साथेथनार] क्षमादि स्वरूप उपञ्चम विगेरे चारित्रना लव-(लेश)ने अटकावनार छे, केम के अनंतानुबंधी चारित्रमोहनीयरूप छे. उपश्वमादि[लक्षण]बडे ज चारित्री कहेवाय नींह, केम के अल्प संज्ञा होवाथी जैम अमनस्क संज्ञी कहेवाय निंह, परंतु मननी संज्ञावडे संज्ञी कहेवाय तेम महान मूलगुणादिहर चारित्रवडे चारित्री कहेवाय छे. आ कारणथी ज त्रिविध दर्शनमोहनीय अने पचीस प्रकारे चारित्रमोहनीय छे. दांका-'पढिमिल्त्ह्रयाण उदए नियमे 'त्यादि० प्रथम कषायना उदयमां निश्चये समिकतनो अभाव होय छे, परंतु चारित्रने रोकनार कषायनी सम्यकत्वनो अटकाव करवामां उत्पत्ति निर्वं थाय, आ हेत्थी सात प्रकारे दर्शनमोहनीय अने एकविश प्रकारे चारित्रमोहनीय छे. ए मत योग्य जगाय छे. समाधान-'पढमेल्ळ्याणे 'त्यादि० जे कहेलुं छे ते अनंतानु-बंधी कषायोने सम्यक्त्वनो अटकाव करवावडे कहेल नथी, परंतु सम्यक्त्वना सहमात्री उपश्चम विगेरेना अटकात करवावडे कहेल छे. जो एम निहं मानीए तो अनंतानुबंधी कषायोवडे ज सम्यक्त्वनुं आहत(आच्छादन)पणुं होवाथी अन्य(कारणभूत) मिध्यात्वथी शुं प्रयोजन छे ? आवृतनं पण आवरण करवामां अनवस्था(दोष)नी प्रसंग आवशे. ते कारणथी जेम 'केवलि-यनाणलंभो नन्नत्थ खए कसायाणं' ति० कषायोनो क्षय थया सित्राय केतळज्ञाननो लाभ न थाय, आ प्रसंगमां कषायोतुं केवलज्ञानने आवरण करवापणुं न छते पण कषायनो क्षय, केवलज्ञानना कारणपणाए कहेल छे; केम के कषायनो क्षय थये छते ज केत्रळज्ञाननो भाव होय छे. एवी रीते अनंतानुवंधी कवायना श्वयोवज्ञममां ज सम्यक्त्वनो लाभ कहेवाय छे. अनंतानुवंधी

कषायोनो क्षयोपश्चम छते समिकतनो लाभ होय छे जेथी अनंतानुबंधी कषायोनो उदय होते छते मिथ्यात्व क्षयोपश्चमने पामतो नथी अने क्षयोपशमना अभावथी सम्यक्त्व थतुं नथी. वळी मतांतरमां के सप्ताविध सम्यग्दर्शनमोहनीय कहेल छे, ते सम्यक्त्वना साहचर्यवंडे उपश्रम विगेरे गुणोमां सम्यक्त्वनो उपचार करवाथी, अर्थात् चारित्रना अंशरूप उपश्रमादि गुणोने विषे सम्यक्त्व कहुं छे, एम अमे मानीए छीए. अणुत्रतादिरूप प्रत्याख्यान जेने विषे विद्यमान नथी ते अप्रत्याख्यान कषाय, ते देशविरतिने आवरण करनार छे. मर्यादावडे सर्वविरतिपणाने जे आवरण करे छे ते प्रत्याख्यानावरण कषाय. सर्व सावद्यनी विरतिने पण संज्वलन करे छे, तपावे छे अर्थात अतिचार दोषने करावे छे, अथवा इंद्रियना विषयनी प्राप्तिने विषे प्रदीप्त थाय छे ते संज्वलन कषाय, ते यथाख्यात चारित्रनुं आवरण करनार छे. एवी रीते मान, माया अने लोभने विषे पण अनंतानुबंधी विगेरे चार भेद कहेवा. आ चारेनी निरुक्ति पूज्यपुरुषोए निचे प्रमाणे कहेली छे-चुद्धिने वास्ते अर्थात् जन्मनी परंपरा माटे जे अनंत जन्मोनो अनुबंध करे छे तथी प्रथम क्रोधादिना भेदमां 'अनंतानुबंधी' संज्ञा बतावी छे (१) प्रस्तत विषयमां क्रोधादिना उदयथी प्राणी अल्प पण प्रत्याख्यानने इच्छे निह-स्वीकारे निहं, तेथी बीजा प्रकारना कषायोमां 'अप्रत्याख्यान ' संज्ञा बतावी छे. (२) सर्व सावद्यनी विरतिरूप प्रत्याख्यान कदेल छे, तेना आवरणनी संज्ञा अर्थात् 'प्रत्याख्यानावरण' एवं नाम त्रीजा प्रकारना कषा-योमां राखेल छे. (३) अने शब्दादि विषयोने मेळत्रीने वारंवार प्रदीप्त करे छे ते 'संज्वलन' नाम चोथा प्रकारना कषायोमां कहेवाय छे. (४) एवी रीते मानादिकथी त्रण दंडक कहेवा-' आभोगणिव्वत्तिए 'त्ति० ज्ञानपूर्वक थयेल ते आभोगनिवर्तित # आचारांतसूत्रनी टोकामां सप्तविध दर्शनमोहनीय अने एकवीश प्रकारे चारित्रमोहनीय कहेल छे.

श्रीस्था-नाष्ट्रव्यत्र साजुवाद अ ३५९ ॥ अर्थात् क्रोधना विपाक(फळ)ने जाणतो थको रोष करे छे, जे क्रोधादिना फळने न जाणतो थको रोष करे छे ते अनामोग-निवर्तित, उदय अवस्थाने प्राप्त न थयेल क्रोध ते उपशांत, तेनो प्रतिपक्ष एटले उदयमां आवल क्रोप ते अनुपशांत एकें-द्रियादि(असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्यंत)ने आभोगनिवर्तित क्रोध, संज्ञीना पूर्वभवनी अपेक्षाए कहेल छे. अनामोगनिवर्तित क्रोध तो वर्त्तमान भवनी अपेक्षाए पण छे. नारकादिकने विशिष्ट उदयना अभावथी उपशांत क्रोध छे. अनुपशांत क्रोध शब्द माटे विचारवा जेवुं नथी. अथवा ते सर्व दंडकमां उदयरूप होय छे. एवी रीते मानादिकवडे दंडक त्रण कहेवा. (स० २४९) हवे कष्पयोनां ज त्रण काल संबंधी फलविशेषो कहेवाय छे—

जीवा णं चउिं ठाणेहिं अट्ट कम्मपगडीओ चिणिसु तं०—कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं, एवं जाव वेमाणियाणं २४, एवं चिणंति एस दंढओ, एवं चिणिस्संति एस दंढओ, एवमेतेणं तिन्नि दंढगा, एवं उविचिणंसु उविचणंति उविचिणस्संति, वंधिसु ३ उदीरिंसु ३ वेदेंसु ३ निर्ज्ञरेंसु णिज्ञरेंति निज्जरिस्संति, जाव वेमाणियाणं, एवमेकेके पदे तिन्नि २ दंडगा भाणियव्वा, जाव निज्जरिस्संति। सू० २५०, चत्तारि पडिमाओ पं० तं०—समाहिपडिमा उवहाणपडिमा विवेगपडिमा विवरस्सगपडिमा, चत्तारि पडिमाओ पं० तं०—भद्दा सुभद्दा महाभद्दा सव्वतोभद्दा, चत्तारि

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ कर्मचयादि प्रातिमाश्च स्र० २५०-२५१

॥ ३५९ ॥

पडिमातो पं॰ तं०-खुड्डिया मोयपिडमा महिस्या मोयपिडमा जवमज्झा वइरमज्झा। स्र० २५१ मूलार्थ:--जीवो चार कारणवडे आठ कर्मप्रकृतिओने एकत्र करता हता, ते आ प्रमाणे-क्रोधवडे, मानवडे, मायावडे अने लोभवडे. एवी रीते यावत् वैमानिको पर्यंत जाणवुं अर्थात् २४ दंडकमां एम जाणवुं. एवी रीते आ दंडक एकत्र करे छे, एमज आ दंडक भविष्यमां एकठा करशे ए आलापकवडे त्रण दंडको कहेवा. एवी रीते उपचयन-कमदलना निषेकनी रचना करेल छे, करे छे अने करशे. बांधेल छे-निकाचित करेल छे, करे छे अने करशे. उदीरणा करेल छे, करे छे अने करशे. भोगवल छे, भोगवे छे अने भोगवशे. निर्जरेल छे, निर्जरे छे अने निर्जरशे-आत्मप्रदेशथी दूर करशे यावत वैमानिक पर्यत एम जाणवुं, एम एकेक पदमां त्रण त्रण दंडक-पाठ कहेवा यावत् निर्जरा करशे त्यां सुधी. (स० २५०) चार पडिमाओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-समाधिप्डिमा-श्रुतचारित्रनी समाधि, उपधानप्रतिमा-तपविशेष, विवेकप्डिमा-अशुद्ध भातपाणी विगेरेना त्यागरूप अने व्युत्सर्गपडिमा-कायोत्सर्गरूप. वळी चार प्रतिमाओ कहे छे, ते आ प्रमाण-भद्राप्रतिमा-चार दिशाए मळींने सोळ प्रहरना कायोत्सर्गरूप,सुमद्रा पण प्रायः भद्रानी माफक छे, महाभद्रा-चार दिशाए आठ आठ प्रहर कायोत्सर्ग करवारूप, सर्वतोभद्रा-दश दिशाओमां एकेक अहोरात्र कायोत्सर्गरूप. वळी चार प्रतिमाओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-लघु मोकपडिमा सोळ भक्ते पूर्ण थाय, मोटी मोकपडिमा अटार भक्ते पूरी थाय, यवमध्या-आदि, अंतमां कवळनी हानि अने मध्यमां दृद्धिरूप, वज्रमध्या-आदि-अंतमां कवळनी वृद्धि अने मध्यमां इतिरूप. * प्रतिमाओनं स्वरूप बोना ठाणाना त्रीना उदेशामां कहेवाई गयेल छे.

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ।। ३६०॥

टीकार्थः-'जीवा ण'मित्यादि० सत्र कहेल अर्थवाछं छे, विशेष ए के-चयन-कषायथी परिणत जीवने कर्मपुद्गलोनुं ग्रहण मात्र, उपचयन-ग्रहण करेल कर्मना अवाधाकालने छोडीने ज्ञानावरणीवादि स्वरूपे निषेक करवो, ते आ प्रमाणे- प्रथम स्थिति(प्रथम उदयमां आवे ते)मां अत्यंत कर्मदिलकोन स्थापे छे, ते पछी बीजी स्थितिमां विशेषहीन कर्मदलने स्थापे छे, एवी रीते त्रीजी चोथी यावत उत्कृष्ट स्थितिमां विशेषहीन दिलकोने स्थापे छे, कह्यं छे के-

मोत्तृण सगमबाहं, पढमाइ ठिइऍ बहुतरं द्व्वं। सेसे विसेसहीणं, जावुक्कोसंति सव्वेसिं॥ ४१ ॥ भावार्थ जणाव्या म्रजब छे.

बंधन-ज्ञानावरणीयादि स्वरूपे निषेक करेल कर्मदिलकने फरीथी पण कषायनी परिणितिविशेषथी निकाचन-मजबूत करवा-रूप, उदीरण-उदयमां निह आवेल कर्मदिलकने करण(जीवना वीर्य)वडे खेंचीने उदयमां प्रक्षेपवुं-लाववुं, वेदन-कर्मनी स्थितिना क्षयथी सहज उदयमां आवेल अथवा उदीरणाकरणवडे उदयभावमां प्राप्त थयेल कर्मनुं अनुभववुं, निर्जरा-कर्मनुं अकर्मस्वरूप थवुं, अहिं देशथी ज निर्जरा ग्रहण करवी, केम के चोवीश दंडकमां निर्जरानो असंभव होय छे. वळी निर्जरामां क्रोध विगेरे कारण थता नथी, केमके क्रोधादिकना क्षयने ज निर्जरानुं कारण होय छे अर्थात् क्रोधादि क्षय थवाथी ज निर्जरा थाय छे. अहिं प्रज्ञापना सत्रमां कहेली संग्रहगाथा जणावे छे-

आयपइद्विय १ खेत्तं, पडुच्च २ णंताणुबंधि ३ आभोगे ४। चिणउवचिणबंध, उदीर वेथ तह निज्जरा चेव ॥

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ कर्मचयादि प्रतिमाश्र स्०२५०-२५१

11 380 11

१ आत्मप्रतिष्ठित पदवडे उपलक्षित (जणातुं) स्वत्र, २ क्षेत्रने आश्रयी स्वत्र, ३ अनंतानुबंधी पदवडे उपलक्षित स्वत्र अने ४ आभोगपदवडे उपलक्षित स्वत्र. त्यारबाद चयन, उपचयन, बंधन, उदीरण, वेदन अने निर्वरा अर्थात् चयनादि विषयवाळा स्वत्रो छे. (स० २५०)

हमणा निर्जरा कही ते विञ्चिष्ट निर्जरा प्रतिमादि अनुष्ठानथी थाय छे, माटे प्रतिमाना त्रण खत्रो कहेल छे. ते बीजा स्था-नक(ठाणा)मां वर्णवाई गया छ तो पण अहिं कहेवाय छे केमके चार स्थानकना अनुरोधथी तेनुं वर्णन करवुं जोईए. एनी व्याख्या पूर्वनी माफक जाणवी परंतु स्मरणना वास्ते किंचित कहेवाय छे. समाधि एटले श्रुत अने चारित्ररूप, तेना विषयवाळी प्रतिमा-प्रतिज्ञा अर्थात अभिग्रह ते समाधिप्रतिमा, अथवा द्रव्यसमाधि प्रसिद्ध छे, तेना विषयवाळी प्रतिमा-अभिग्रह ते समाधिप्रतिमा. एवी रीते बीजी प्रतिमाओना संबंधमां पण जाणवुं. विशेष ए के-उपधान एटले तप अने विवेक-अशुद्ध अने अतिरिक्त (वधारे) भक्तपान, बस्न, शरीर अने शरीरना मल विगेरेनो त्याग. 'विउस्सरगे'त्ति० कायोत्सर्ग. भद्राप्रतिमा एटले पूर्वादि चार दिञ्चानी सन्मुख रहेल साधुने प्रत्येक दिञ्चामां चार प्रहर पर्यंत कायोत्सर्ग करवारूप, वे अहोरात्रिवडे आ प्रतिमानी समाप्ति थाय छे. सुभद्रा प्रतिमा पण ए प्रमाणे ज संभवे छे, कारण के कोई ग्रंथमां तेतुं स्वरूप जोयेल न होवाथी लख्तुं नथी. एवी रीते दरेक दिशामां अहोरात्र प्रमाणे कायोत्सर्ग करवारूप महाभद्राप्रतिमा चार अहोरात्रवडे समाप्त थाय छे. अने जे देश दिशाओमां प्रत्येक दिशाए अहोरात्र प्रमाण कायोत्सर्ग करवारूप छे ते सर्वतोभद्रा प्रतिमा दश अहोरात्रवडे समाप्त थाय छे. मोक प्रतिमा एटले प्रश्रवण (लघुनीति) संबंधी प्रतिज्ञा, जे सोळ भक्त (सात उपनास)वडे समाप्त थाय छे, ते श्रक्षिक

त्रीस्था-बाङ्कद्यत्र सानुवाद ॥ ३६१ ॥ (नानी) कहेवाय अने आठ उपवासवडे समाप्त थाय छे ते महती (मोटी) प्रतिमा. यवनी माफक दाचि (दात) अने क्वलीथी आदि-अंतमां हीन अने मध्यमां वृद्धिवाळी ते यवमध्या प्रतिमा अने वज्रमध्या प्रतिमा तो आदि-अंतमां वृद्धिवाळी अने मध्यमां हीन होय छे. (स्० २५१) प्रतिमाओ जीवास्तिकायमां ज होय छे, तेनाथी विपरीत अजीवास्तिकायनुं सूत्र कहे छे—

चत्तारि आत्थिकाया अजीवकाया पं० तं०-धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए पोगालिथिकाए चत्तारि अत्थिकाया अरूविकाया पं० तं०-धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवित्थिकाए। सू० २५२, चत्तारि फला पं० तं०-आमे णामं एगे आममहुरे १ आमे णाम-मेगे पक्कमहुरे २ पक्के णाममेगे आममहुरे ३ पक्के णाममेगे पक्कमहुरे ४ एवामेव चत्तारि पुरि-सजाया पं० तं०-आमे णाममेगे आममहुरफलसमाणे ४। सू० २५३, चउव्विहे सच्चे पं० तं०-काउज्ज्यया भासुज्ज्यया भावुज्ज्यया अविसंवायणाजोगे, चउव्विहे मोसे पं० तं०-कायअणु-ज्ज्यया भासअणुज्ज्यया भावअणुज्ज्यया विसंवादणाजोगे, चउव्विहे पणिहाणे पं० तं०-मण-पणिहाणे वइपणिहाणे कायपणिहाणे उवकरणपणिहाणे, एवं णेरइयाणं पांचिंदियाणं जाव वेमा-

काध्ययने उद्देशः १ अजीवाास्त-कायाः, आमादि. सत्यप्रणि-धानानि च स्र० २५२-२५४

🗷 🖺 ૫ રફશ ૫

णियाणं ४, चउिवहे सुप्पणिहाणे पं०तं०—मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरणसुप्पणिहाणे, एवं संज-यमणुरसाणिव, चउिवहे दुप्पणिहाणे पं० तं०—मणदुप्पणिहाणे जाव उवकरणदुष्पणिहाणे, एवं पंचिदियाणं जाव वेमाणियाणं २४। सू० २५४

मलार्थ:-चार अस्तिकाय अजीवकाय कहेला छे,ते आ प्रमाणे-धर्मास्तिकाय,अधर्मास्तिकाय,आकाशास्तिकाय अने पुद्गला-ार्रतकाय. चार अस्तिकाय अरूपीकाय कहेला छे,ते आ प्रमाणे-धर्मास्तिकाय,अधर्मास्तिकाय,आकाशास्तिकाय अने जीवास्तिकाय. चार प्रकारनां फळ कहेलां छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक फळ काचुं छे अने रसथी कंईक मधुर छे १, कोईएक फळ काचुं छे पण रसथी अत्यंत मधुर छे २, केाईएक फळ पाइं छे पण रसथी कंईक मधुर छे ३ अने कोईएक फळ पाकेलुं छे अने अतिशय मधुर छे ४. ए दृष्टांतथी चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाण-कोईएक पुरुष वय अने श्रुत(ज्ञान)थी अव्यक्त-काचो छे अने उपश्वमादिगुणथी अल्प मधुरतावाळो छे १, कोईएक पुरुष वय अने श्रुतथी काचो छे पण उपश्वमादिगुणथी अत्यंत मधुरतावाळी छे २, कोईएक पुरुष वय अने श्रुतथी परिणत (पाको) छे पण उपश्रमादिगुणथी अल्प मधुरतावाळी छे ३ अने कोईएक पुरुष वय अने श्रुतथी परिणत तेमज उपश्वमादिगुणरूप अत्यंत मधुरतावाळी छे ४. (स० २५३) चार प्रकारे सत्य-सरल भाव कहेल छे, ते आ प्रमाणे-कायानी सरलता-शरीरनी कुचेष्टादिथी रहित, भाषानी सरलता-कपट वचननो अभाव, भावनी सरलता-मननी सरलता, अविसंवादनायोग-विपरीत ज्ञान रहित बोलवुं अर्थात् गायने गाय कहेवी इत्यादिरूप. श्रीस्था-नाष्म्रधत्र सानुवाद भ ३६२ ॥

चार प्रकारे मृषा-जूडं कहेल छे, ते आ प्रमाणे-कायानी वक्रता-वांकं चालवं, भाषानी वक्रता-कपट वचन बोलवं, भावनी वक्रता-मननं वक्रपणुं अने विसंवादनयोग-गायने घोडो कहेगे इत्यादिरूप. चार प्रकारे प्रणिधान-प्रयोग कहेल छे, ते आ प्रमाणे-मननं प्रणिधान, वचननं प्रणिधान, कायानं प्रणिधान अने उपकरण-बस्न पात्र विमेरेनं प्रणिधान. एवी रीते चार प्रकारनं प्रणिधान नैरिपकोने,पंचेद्रियोने यावत् वैमानिकोने होय छे अर्थात् पंचेद्रियना सोळ दंडकमां होय छे. चार प्रकारे सुप्र-णिधान-सारो च्यापार कहेल छे, ते आ प्रमाणे-मननो मलो च्यापार, वचननो मलो च्यापार, कायानो मलो च्यापार अने उपकरणनो मलो च्यापार. आ चार प्रकारनो प्रणिधान संयत (साधु) मनुष्योने ज होय छे. चार प्रकारे दुष्प्रणिधान कहेल छे, ते आ प्रमाणे-मननो दुष्प्रणिधान, वचननो दुष्प्रणिधान, कायानो दुष्प्रणिधान अने उपकरणनो दुष्प्रणिधान एवी रीते चार प्रकारनो दुष्प्रणिधान पंचेद्रियोने यावत् वैमानिकोने होय छे अर्थात् सोळ दंडकमां होय छे. (स० २५४)

टीकार्थः—' अत्यिकाय'त्ति ॰ अस्ति ए निपात त्रण कालनो बोधक छे. भूतकालमां हता, वर्तमानमां होय छे अने भित्रपमां हते एवी भावना छे. एटले त्रिकाल विषयक कायो ते कोना १ प्रदेशाना समुदायो अथवा ' अस्ति ' शब्दवडे कोईक स्थलमां प्रदेशो कहेवाय छे. तथी तेओ(प्रदेशो)ना कायो ते अस्तिकायो अने ते चार अस्तिकायो अचेतन होवाथी अजीवकायो छे. अस्तिकायो मूर्च अने अमूर्च होय छे माटे अमूर्च अस्तिकायना प्रतिपादन माटे अरूपी अस्तिकायनुं छत्र कहेल छे. रूप-आकारवाळं अर्थात् वर्ण विगेरे स्वरूपवाळं छे जेओने ते रूपी अस्तिकाय. तेना पर्युदास निवेधयी अरूपी अर्थात् अमूर्च अस्तिकायो. हमणां ज जीवास्तिकाय कहो, तेना विशेषभृत पुरुषना निरूपण माटे फलखत्र कहे छे-आम एटले अपक फल छतां

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ अजीवास्ति-कायाः, आमादि, सत्यप्रिष-धानानि च स्० २५२-र५४

ा। ३६२ ॥

काचा फलनी जेम मधुर अर्थात् थोइं मधुर ते *आममधुर १, तथा काचुं फल छतां पक्व-पाका फळनी जेम मधुर अर्थात् अत्यंत मधुर २, तथा पक्व फळ छतां काचा फळनी जेम मधुर एटले के पूर्वनी जेम थोडं मधुर ३, तथा पक्व फळ छतां पक्व मधुर अर्थात् पूर्वनी जेम अत्यंत मधुर ४. पुरुष तो आम-वय अने श्रुतथी अन्यक्त (काचो) अने आम मधुर फल समान, केम के अल्प उपशम विगेरे लक्षणह्रप माधुर्यना भावथी १, वय अने श्रुतथी अन्यक्त ज अने पक्न मधुर फल समान अर्थात् पक्व फळनी जेम मधुर स्वभाव केम के श्रेष्ठ उपश्वमादि गुण युक्त होवाथी २, तथा अन्य पक्व-वय अने श्रुतथी परिणत अने आम मधुर फल समान केम के उपश्रमादि माधुर्यनुं अल्पत्व होवाथी ३, तथा अन्य पक्व तेमज वय अने श्रुतथी पक्व मधुर फल समान, केमके श्रेष्ठ उपशमादि गुण युक्त होवाथी ४ (स० २५३) हमणां पक्व मधुर कहो। ते सत्य गुणना योगथी होय छे ए हेतुथी सत्य अने तेवुं विपर्यय मुना तथा सत्य-असत्य निमित्तवाळा प्रणिधान प्रत्ये कहेवानी इच्छावाळा स्वत्रकार ते ते सूत्रोने कहे छे 'चउव्विह सचे' इत्यादीनि ० कहेल अर्थवाळा आ सूत्रो छे. विशेष ए के -ऋजुक-माया रहितनो भाव अथवा कर्म [कार्य] ते ऋजुकता [सरलता], कायानी ऋजुकता ते कायऋजुकता, एवी रीते बीजा पण जाणवा. विशेष ए के-भाव एटले मन, कायऋजुकता विगेरे शरीर, वाणी अने मननी यथावस्थित अर्थ(यथार्थ)स्त्रह्रप जणाववाने माटे प्रश्वित्रो छे तथा अजाणपणाथी गाय विगेरेने अश्व विगेरे जे कहे छे अथवा कोईना माटे कंईक स्थीकारीने जे करतो नथी ते विसंवादन, तेना विपक्षथी योग-संबंध ते अविसंवादनायोग 'मोसे ' त्ति ॰ मृपा-असत्य, कायानी सरलता निर्दे अर्थात् वक्रता इत्यादि वाक्य छे. प्रणिधि:-प्रणिधान प्रदेशोनो अध्याहार करेल छे.

श्रीस्था-नामधन साजुवाद अ ३६३ ॥ ४

अर्थात् प्रयोग तेमां मनतुं प्रणिधान-आर्च, रौद्र, धर्म विगेरे स्वरूपवहे प्रयोग ते मनप्रणिधान, एवी रीते वचनप्रणिधान अने कायप्रणिधान पण जाणवुं. उपकरण-लौकिक अने लोको त्ररूप वस्त्र पात्रादि संयम अने असंयमना उपकार माटे प्रणिधान—प्रयोग ते उपकरणप्रणिधान छे. 'एव' मिति । जेवी रीते सामान्यथी कधुं तेम नैरियकोने पण कहेवुं. वटी कहेल चोवीश दंखकना मध्ये पण वैमानिक पर्यंत जे पंचेंद्रियों छे तंओने पण एवी ज रीते चार प्रणिधानों कहेवा. एकेंद्रियादिने मन विगेरेनों असंभव होवाथी प्रणिधाननों पण असंभव छे. प्रणिधान सुप्रणिधान अने दुष्प्रणिधान एम वे प्रकारना छे माटे ते बंने सत्रो छे. शोभन-संयमना हेतुवाछं होवाथी सारुं प्रणिधान अर्थात् मन विगेरेनुं प्रयोजन [प्रवर्चावनुं] ते सुप्रणिधान. आ सुप्रणिधान चोवीश दंखकना निरूपणमां मनुष्योंने छे, तेमां पण संयतोने ज होय छे केम के-सुप्रणिधान चारित्रनी परिणितिरूप होय छे. सत्र-कार कहे छे ' एवं संजये 'त्यादि । दुष्प्रणिधाननुं सत्र सामान्य सत्रनी माफक जाणवुं. विशेष ए के-दुष्प्रणिधान—असंयम माटे मन विगेरेनो व्यापार करवो ते. (स० २५४) हवे पुरुषना अधिकारथी बीजी रीते पुरुष संबंधी १४ सत्रो कहे छे—

चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-आवातभद्दते णाममेगे णो संवासभद्दते १, संवासभद्द णाम-मेगे णो आवातभद्द २, एगे आवातभद्दतेवि संवासभद्दतेवि ३, एगे णो, आवायभद्दते नो वा संवासभद्द ४ (१) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अप्पणो नाममेगे वर्जं पासति णो परस्स, परस्स णाममेगे वर्जं पासति ४ (२) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अप्पणो णाममेगे वर्जं उदीरेइ णो ४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ आपातभद्र-कादि स्०२५५

11 363 11

परस्त ४ (३) अप्पणो नाममेगे वर्ज उवसामेति णो परस्त ४ (४) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०— अब्भुट्ठेइ नाममेगे णो अब्भुट्ठावेति (५) एवं वंदित णाममेगे णो वंदिवेइ (६) एवं सक्कारेइ (७) सम्माणेति (८) पूएइ (९) वाएइ (१०) पिडपुच्छिति (११) पुच्छइ (१२) वागरेति (१३) सुत्तधरे णाममेगे णो अत्थधरे अत्थधरे नाममेगे णो सुत्तधरे (१४) सृ० २५५

मूलार्थ:—चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—कोईएक पुरुष आपातभद्रक एटले प्रथम मिलापमां मधुर वचनादिवडे सुखकारी पण संवास—घणा कालना वसवाटमां सारो निहं १, एक पुरुष संवास—घणा कालना वसवाटमां सारो पण
आपात—प्रथम मिलापमां सारो निहं अर्थात् मधुरभाषी निहं २, एक पुरुष प्रथम मिलापमां पण सारो अने पछी संवासमां पण
सारो ३ अने कोईएक पुरुष आपात—प्रथम मिलापमां पण सारो निहं तथा पछी पण सारो निहं ४ (१) चार प्रकारना पुरुषो
कहेला छे, ते आ प्रमाणे—कोईएक पुरुष पोताना पापकर्म(दोष)ने जुए छे परंतु बीजाना पापकर्म(दोष)ने जोतो नथी १, कोई
एक पुरुष बीजाना दोषने देखे छे परंतु पोताना दोषने जोतो नथी २, कोई एक पुरुष पोताना अने पारका दोषने जुए छे ३
अने कोईएक पुरुष पोताना के पारका दोषने जोतो नथी ४ (२) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—कोईएक पुरुष
पोताना पापने बीजा पासे कहे छे परंतु बीजाना पापने कहेतो नथी १, कोईएक पुरुष बीजाना पाप दोष)ने कहे छे परंतु
पोताना दोषने कहेतो नथी २, कोईएक पुरुष पोताना के पारका दोषने

श्रीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद श्र ३६४॥

कहेतो नथी ४ (३) कोईएक पुरुष पोताना पापनुं निवर्त्तन (दूर करनुं) करे छे परंतु बीजाना पापनुं निवर्त्तन करतो नथी कहता नथा ४ (२) कोइएक पुरुष पाताना पापनु निवत्तन (दूर करने) कर छ परत बाजाना पापनु निवत्तन करता नथा १, कोईएक पुरुष पोताना पापनुं निवर्त्तन करे छे परंतु पोताना पापनुं करतो नथी २, कोईएक पुरुष पोताना अने पारका पापनुं निवर्त्तन करे छे ३ अने कोईएक पुरुष पोताना के पारका पापनुं निवर्त्तन करतो नथी ४ (४) चार प्रकासम्बद्ध पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे–कोईएक पुरुष (संविज्ञपाक्षिकादि साधु) आसनथी ऊमो थाय छे पण अन्यने ऊठवा न आपे १, कोईएक पुरुष बीजाने उठवा दे छे पण पोते ऊमो थतो नथी ते गुरु २, स्वयं ऊमो थाय छे अने बीजाने पण ऊमो थवा दे छे ते स्थविर मुनि ३ अने आ प्रमाणे-कोईएक पुरुष (संविज्ञपाक्षिकादि साधु) आसनथी ऊमो थाय छे पण अन्यने ऊठवा न आपे १, कोईएक पुरुष बीजाने ऊठवा दे छे पण पोते ऊभो थतो नथी ते गुरु २, स्वयं ऊभो थाय छे अने बीजाने पण ऊभो थवा दे छे ते स्थविर सुनि ३ अने कोईएक पुरुष स्वयं ऊमो थतो नथी अने बीजाने आसनथी ऊमो थवा देतो नथी ते जिनकल्पिक विगेरे ४ (५) एवी ज रीते कोईक पुरुष स्वयं वंदन करे छे पण बीजा पासे वंदावतो नथी, कोईक पुरुष बीजा पासे वंदावे छे पण पोते वंदन करतो नथी २, कोईक पुरुष पोते वंदन करे छे ने बीजा पासे वंदन करावे छे २ तेमज कोईएक पुरुष स्वयं वंदन करे नीई अने अन्य पासे करावे पण नाहि ४ (६) एवी ज रीते सत्कार करे पण करावे नाहि १, सत्कार करावे पण करे नाहि २, स्वयं सत्कार करे अने करावे ३, स्वयं सत्कार करे निह अने करावे पण निहं (७) सन्मान करे पण करावे निह १, सन्मान करावे पण करे निह २, सन्मान करे अने करावे ३, सन्मान करे निहं अने करावे पण निहं ४ (८) स्वयं पूजे पण पूजावे निहं १, पूजावे पण पूजे निहं २, पूजे अने पूजावे ३, पूजे निहं अने पूजावे निहं ४ (९) स्वयं भगावे छे पण भणतो नथी ते उपाध्याय १, भणे पण भणावतो नथी ते शिष्य २, बीजाने भणावे छे अने स्वयं न भणेल ग्रंथने भणे छे ते विद्वान् साधु ३ तेमज भणतो नथी अने भणावता नथी ४ (१०) स्वयं सत्र अने अर्थनुं ग्रहण करे छे पण बीजाने ग्रहण करावतो नथी शिष्य १, बीजाने ग्रहण करावे छे अने स्वयं ग्रहण

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ आपातमद्ग-कादि स्०२५५

11 3E8 W

करतो नथी ते उपाध्याय २, स्वयं ग्रहण करे छे अने बीजाने ग्रहण करावे छे ते स्थिवर ३ अने स्वयं ग्रहण करतो नथी तथा बीजाने ग्रहण करावतो नथी ४ (११) स्वयं प्रश्नने पूछे छे पण बीजावडे प्रश्न करावतो नथी ते लघु शिष्य १, बीजाओवडे पूछाय छे पण स्वयं पूछतो नथी ते ग्रुक्त २, स्वयं पूछ छे अने पूछाय छे ते स्थिवर साधु ३ तेमज स्वयं पूछतो नथी अने बीजावडे पूछावातो नथी ते जिनकिल्पक. ४. आ प्रश्नस्त्र शास्त्रना विषयमां समजवुं. (१२) पोते स्त्रादिने बोले छे पण बीजा पासे बोलावतो नथी १, बीजा पासे बोलावे छे पण पोते बोलतो नथी २, पोते बोले छे अने बीजा पासे बोलावे छे ३ तेमज पोते बोलतो नथी तथा बीजा पासे बोलावतो नथी ४ (१३) कोईएक पुरुष स्त्रने घरनार छे पण अर्थने घरनार नथी ते नवीन अभ्यासी १, कोई पुरुष अर्थने घरनार छे पण स्त्रने घरनार नथी जाणकार श्रावक विगेरे २, कोईक पुरुष स्त्र अने अर्थ बन्नेना घरनार छे ते गीतार्थ ३ अने कोईक पुरुष स्त्रघर तथा अर्थघर पण नथी ते जड मनुष्य ४ (१४) (स० २५५)

रीकार्थ:—चौद सत्रो सुगम छे. विशेष ए के-आपतन-आपात, अर्थात प्रथम मिलाप. तेमां मद्रक-सुखकारक, केम के जोवुं अने भाषणादि द्वारा सुखकर होनाथी. संवास-लांबा कालना सहवासमां कल्याणकारक निहं केम के हिंसक होनाथी अथवा संसारना कारणमां जोडनार होनाथी. १, साथे वसनाराओने अत्यंत उपकारीपणाए संनासमद्रक, परंतु प्रथम मिलनमां भद्रक निहं, केमके न बोलवुं अने कठोर भाषण विगेर होनाथी. २, एवी ज रीते त्रीजो अने चोथो मांगो जाणनो ४. (१) ' वर्ज्ञं '- त्रि त्याग कराय छे ते वर्ज्य, अथवा अवद्य-पाप (अकारनो लोप थनाथी अवज्जने बदले मूलमां वज्ज थयेल छे.) अथवा वज्जनी माफक भारे होनाथी वज्र-हिंसा, असत्य निगेरे पापक्रप कर्म, कोईएक पुरुष पोताना पापकर्मने कलह निगेरमां जुने छे,

श्रीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद अ ३६५ ॥

केमके पश्चात्ताप सहित होवाथी, परंतु परना पाप-अपराधने जोतो नथी, केम के तेथी तो उदासीन होवाथी. १, अन्य पुरुष तो परना दोषने जुवे छे परंतु पोताना दोषने जोतो नथी, केम के अहंकार सहित होवाथी. २, अन्य पुरुष स्व-परना दोषने 👺 जुवे छे, केम के पश्चात्ताप सिवाय यथार्थ वस्तुनो बोध थवाथी. रे, कोईक तो बन्ने(स्व-पर)ना दोषने जोतो नथी, केम के विशेष मृढ होवाथी ४. (२) कोईएक पोताना पापने जोईने कहे छे अर्थात एम कहे के-'में आ पाप कर्युं छे' अथवा शांत थयेल[क्लेशादि]नी फरीथी प्रवात्त करे छे, अथवा वजरूप कर्मनी उदीरणा करे छे अर्थात् [बीजाने] पींडा उत्पन्न करवावडे उदयमां कर्मने प्रवेशावे * छे. (३) एवी रीते उपशमावे छे अर्थात् पाप अथवा कर्मने द्र करे छे. (४) 'अब्सुट्टेइ' ति० अभ्युत्थान करे छे एटले के गुरु विगरेने आवतां जोईने आसनथी ऊभो थाय छे, बीजा पासे अभ्युत्थान करावतो नथी ते कोण ? संविज्ञपाक्षिक× अथवा लघुपर्यायवाळो मुनि. १, फक्त अभ्युत्थान करावे ज छे ते कोण १ गुरु. २, अभ्युत्थान करनार अने करावनार ते कोण ? गीतार्थ स्थिवरादि. ३, अभ्युत्थान करे निह अने करावे निह ते कोण ? जिनकल्पिक अथवा अविनीत शिष्य. ४ (५) एम ज वंदनादि सत्रोमां पण चार भांगा जाणवा. विशेष ए के-द्वादश आवर्त्तनादिद्वारा वंदन करे हो. (६) वस्त्रादिना दानवडे सत्कार करे हो. (७) स्तुति विगेरेथी गुणोनी उन्नति करवावडे सन्मान करे हो. (८) योग्य पूजा-

टीकाकारे बीजा भांगाओं ज्यां कहेल नधी ते स्थळे मूलना अनुवादधी जाणी लेवा. फक्त एक भांगों कहेल छे तेना अनुमारे बीजा जोडवा. × शुद्ध प्ररूपक परंतु शुद्ध किया न करनार तेमज मुनिवेषने घरनार ते संविज्ञपाक्षिक, विशेष जिज्ञासुए श्री धर्मदासगणि-विरचित उपदेशमाळा नामक ग्रंथमां जोवुं. ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ आपातभ-द्रकादि प्र० २५५

X X 11 354 11

द्रव्योविड पूजे छे. (९) वाचयित-भणावे छे, 'नो वायावेइ' बीजा पासेथी पोते जाणतो नथी ते कोण ? उपाध्यायादि. १, स्वयं भणे छे परंतु बीजाने भणावतो नथी, आ बीजा भांगामां अभ्यासी शिष्य. २, त्रीजा मांगामां बीजाने भणावे छे अने निहं भणेल ग्रंथने स्वयं भणे छे ते कोण ? विद्वान् साधु ३, चोथा भांगामां जिनकिष्पक, [स्वयं भणे निहं अने अन्यने भणावे पण निहं] ४, एवी रीते स्वबुद्धिवडे सर्वत्र उदाहरणनी योजना करवी. (१०) सत्र अने अर्थने ग्रहण करे छे. (११) प्रश्न करे छे. (१२) सत्रादिने बोले छे तेवी ज रीते अन्य भांगा जाणवा. (१३) सत्रधर-भणनार १, अर्थघर-जाणनार २, त्रीजो उभय(सत्रार्थ) धर विद्वान् सुनि ३ अने बक्नेने निहं धरनार ते जड ४ (१४)

चमरस्स णं असुरिंद्स्स असुरक्रमारस्त्रो चत्तारि लोगपाला पं० तं०-सोमे जमे वरुणे वेस-मणे, एवं बलिस्सिव सोमे जमे वेसमणे वरुणे, धरणस्स कालपाले कोलपाले सेलपाले संखपाले, एवं भूयाणंद्स्स चत्तारि कालपाले कोलपाले संखपाले सेलपाले, वेणुदेवस्स चित्ते विचित्ते चित्त-पवस्वे विचित्तपवस्वे, वेणुदालिस्स चित्ते विचित्तपवस्वे चित्तपवस्वे (१) हरिकंतस्स पभे सुप्पभे पभकंते सुप्पभकंते, हरिस्सहस्स पभे सुप्पभे सुप्पभकंते पभकंते, अग्गिसिहस्स तेऊ तेउसिहे तेउकंते तेउप्पभे, अग्गिमाणवस्स तेऊ तेउसिहे तेउपभे तेउकंते, पुन्नस्स रूप रूपंसे रूदकंते श्रीस्था-नाङ्गस्रत्र सानुवाद भ ३६६ ॥ Ж

रूदप्पभे, एवं विसिट्टस्स रूते रूतंसे रूतप्पभे रूयकंते, जलकंतस्स जले जलइते जलकंते जल-प्पमे, जलप्पहस्स जले जलरते जलप्पहे जलकंते (२) अमितगतिस्स तुरियगती खिप्पगती सीहगती सीहविक्सगती, अमितवाहणस्स तुरियगती खिप्पगती सीहविक्समगती सीहगती, वेलंबस्स काले महाकाले अंजणे रिट्टे, पभंजणस्स काले महाकाले रिट्टे अंजणे, घोसस्स आवत्ते वियावत्ते णंदिया-वत्ते महाणंदियावते, महाघोसस्स आवते वियावते महाणंदियावते णंदियावते २०, सक्कस्स सोमे जमे वरुणे वेसमणे, ईसाणस्स सोमे जमे वेसमणे वरुणे, एवं एगंतरिता जावरचुतस्स, चउव्विद्दा वाडकुमारा० पं० तं०-काले महाकाले वेलंबे पभंजणे। सृ० २५६, चडिवहा देवा पं० तं०-भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया विमाणवासी। सृ० २५७, चउठिवहे पमाणे पं० तं०-द्ववप्पमाणे खेत्तप्पमाणे कालप्पमाणे भावप्पमाणे । सृ० २५८

मूलार्थः-असुरेंद्रना-असुरकुमारना राजा चमरेंद्रना चार लोकपालो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-सोम, यम, वरुण अने वैश्रमण १, एवी रीते बलींद्रना पण चार लोकपाल छे-सोम, यम, वैश्रमण अने वरुण २, घरणेंद्रना कालवाल, कोलपाल, ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ लोकपा-लाः, देवाः प्रमाणश्च स्०२५६-

11 368 11

शेंलपाल अने शंखपाल ए चार लोकपाल छे ३, एम भृतानेन्द्रना कालपाल, कोलपाल, शंखपाल अने शैलपाल ए चार लोकपाल छे ४, वेणुदेव इंद्रना चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष अने विचित्रपक्ष ए चार लोकपाल छे ५, वेणुदालि इंद्रना चित्र, विचित्र, विचित्रपक्ष अने चित्रपक्ष ए चार लोकपाल छे. ६, (१) हरिकान्त इंद्रना प्रभ, सुप्रभ, प्रभक्षांत अने सुप्रभक्षांत ए चार लोकपाल छ ७, हरिस्सह इंद्रना प्रभ, सुप्रभ क्षंत अने प्रभक्षांत ८, अग्निशिख इंद्रना तेजः, तेजःशिख, तेजस्कांत अने तेजप्रभ ९, अग्निमानव इंद्रना तेजः, तेजिशाखर, तेजप्रभ अने तेजस्कांत १०, पूर्ण इंद्रना रूप, रूपांश, रूपकांत अने रूपप्रभ ११, विशिष्ट इंद्रना रूप, रूपांश, रूपप्रभ अने रूपकांत १२, जलकांत इंद्रना जल, जलरत,जलकांत अने जलप्रभ १३, जलप्रभ इंद्रना जल, जलरत, जलप्रभ अने जलकांत १४, आ नामवाळा लोकपालो छे. (२) अमितगति इंद्रना त्वरितगति, क्षिप्रगति, सिंहगति अने सिंहविक्रमगति १५. अमितवाहन इंद्रना त्वरितगति, क्षिप्रगति, सिंहविक्रमगति अने सिंहगति १६, वेलंब इंद्रना काल, महाकाल, अंजन अने रिष्ट १७, प्रभंजन इंद्रना काल, महाकाल, रिष्ट अने अंजन १८, घोष इंद्रना आवर्त्त, न्यावर्त्त, नंदिकावर्त्त अने महानंदिकावर्त्त १९, महाघोष इंद्रना आवर्त्त, न्यावर्त्त, महानंदिकावर्त्त अने नंदिकावर्त्त २०, आ नामवाळा लोकपालो छे. असुरकुमारनिकायमां दक्षिण दिशानो स्वामी चमरेंद्र अने उत्तर दिशानो बलींद्र छे. आ प्रमाणे दरेक निकायना ऋमशः दक्षिण अने उत्तर दिशाना इंद्रो मली बीश इंद्रो छे. (च्यंतर अने ज्योतिष्क्रना इंद्रोने लोकपालो नथी.) शकेंद्रना सोम, यम, वरुण अने वैश्रमण ४. ईशानेंद्रना सोम, यम, वैश्रमण अने वरुण−आ नामवाळा लोकपालो कहेल छे. एवी रीते एक एकने अंतरे नामो यावत् अच्युतेंद्र पर्यंत कहेवा. अर्थात् सनत्कुमार, ब्रह्मलोक, महाशुक्र अने प्राणत इंद्रना लोकपालना नामो सौधर्मेंद्र(शक्र)ना लोकपालोनी जैम अने भीस्था-नाङ्गध्त्र सानुवाद भ ३६७॥ **

माहेंद्र, लांतक, सहस्रार अने अच्युत इंद्रना लोकपालोना नामो ईशानेंद्रना लोकपालोनी माफक जाणवा. चार प्रकारना वायुकुमारो पातालकलशाना अधिपति देवो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-काल, महाकाल, वेलंब अने प्रभंजन. (स० २५६) चार प्रकारना देवो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-भवनपति, वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वेमानिक. (स० २५७) चार प्रकारे प्रमाण कहेला छे, ते आ प्रमाणे-द्रव्यप्रमाण, क्षेत्रप्रमाण, कालप्रमाण अने भावप्रमाण (स० २५८)

टीकार्थ:—पुरुषना अधिकारथी ज देवविशेष पुरुषोतुं निरूपण करनार लोकपालादि सूत्रो सुगम छे. विशेष ए के-इंद्र एटले परम ऐश्वर्यना योग्यी प्रभ्र अथवा गर्जेंद्रनी जेम महान्. राजन-दीपतो होवाथी अर्थात शोभावाळो होवाथी अथवा आराध्य होवाथी राजा, अथवा इंद्र अने राजा एकार्थवाचक छे. दक्षिण दिशाना लोकपालीमां नामथी जे त्रीजो लोकपाल छे ते उत्तर दिशाना लोकपालोमां नामथी चोथो छे अने चोथो छे ते त्रीजो छे. एवी रीते 'एकंतरिय ' त्ति ॰ जे नामवाळा शक इंद्रना होकपालों छे ते नामवाळा ज सनरकुमार, ब्रह्मलोक, शुक्र अने प्राणतेंद्रना लोकपालों छे, तथा जे नामवाळा ईशानेंद्रना लोकपालो हो ते नामवाळा ज माहेंद्र, लांतक, सहस्रार अने अच्युतेंद्रना लोकपालो हो. कालादि वायुकुमार देवो पातालकलशाना स्वामी छे. (सू॰ २५६) चार प्रकारना देवो छे (सू॰ २५७) एम जे कहेल छे ते संख्याप्रमाण छे माटे प्रमाणनी प्ररूपणा करनार सूत्र कहे छे. जे प्रमाण करे छे अथवा जेनावडे पदार्थानिर्णय कराय छे ते प्रमाण, तेमां द्रव्य ए ज प्रमाण, दंड विगेरे दृच्यथी अथवा धनुष्य विगेरेथी शरीर प्रमुखनुं प्रमाण अथवा दंड, हस्त अने अंगुल विगेरेथी निर्णय करवो ते द्रव्यप्रमाण, जीवादि द्रव्यतुं अथवा जीव, धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय प्रमुख द्रव्योतुं प्रमाण अथवा परमाणु विगेरे द्रव्यमां पर्यायोनो ४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ लोकपा-लाः, देवाः प्रमाणश्च स्र०२५६— ५८

।। ३६७ ॥

अथवा परमाणु आदि द्रव्योने विषे ज पर्यायोनो निर्णय अकरवो ते द्रव्यप्रमाण. एवी रीते क्षेत्रप्रमाणादिमां यथायोग्य समास करवी. त्यां द्रव्यप्रमाण वे प्रकारे छे-१ प्रदेशनिष्पन्न अने २ विभागनिष्पन्न. आ बन्नेमां पहेंछं परमाणुथी आरंभीने अनंत प्रदेशिक स्कंघ पर्यंत अने बीज़ं विभागनिष्पन्न मान प्रमुख पांच प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे-१ मान-धान्यनुं मान, ते सेतिका (बे पसली प्रमाण) विगेरे, रसनुं मान, ते कर्ष (तोलो) विगेरे, २ उन्मान-त्राजवाना तोला, शेर विगेरे, ३ अवमान-हाथ विगेरे, ४ गणित-एक वे विगेरे, ५ प्रतिमान-गुंजा (चणोठी), वाल विगेरे. क्षेत्र-आकाश, तेनुं प्रमाण वे प्रकारे-प्रदेशनिष्पन्नादि. तेमां प्रदेशनिष्पन्न-एक प्रदेश अवगादधी लईने असंख्यात प्रदेश अवगाद (अवगाहीने रहेल) पर्यंत अने विभागनिष्पन्न ते अंगुल प्रमुख. काल-समयनुं मान वे प्रकारे छे-१ प्रदेशनिष्पन्न ते एक समयनी स्थितिथी आरंभीने असंख्यात समयनी स्थिति पर्यंत अने विभागनिष्पन्न ते समय, आविलका विगेरे. क्षेत्र अने कालमां द्रव्यपणुं छते पण द्रव्यथी जे बेने जुदा कहेल छे ते जीवादि द्रव्योना विशेषकपणाए क्षेत्र अने काल विषे ते द्रव्योनुं पर्यायपणुं पण छे; माटे द्रव्यथी क्षेत्र अने कालनी विशिष्टता कहेवा माटे भेदनो निर्देश करेल छे. भाव ए ज प्रमाण, अथवा भावानुं प्रमाण ते भावप्रमाण, ते गुण, नय अने संख्याभेदथी त्रण प्रकारनुं छे, त्रणमां जीवना ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुणो छे, तेमां ज्ञान प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमा अने आगमरूप गुणप्रमाण छे, नैगमादि नयो ते नयप्रमाण छे, एक वे विगरे संख्या ते संख्याप्रमाण छे. (सू० २५८) देवना अधिकारथी ज विशेष जणावतां कहे छे के-

🗙 आ प्रमाणनी व्याख्यामां तृतीया, षष्ठी अने सप्तमी विभक्तिओना एकवचन अने बहुवचन लीघेल छे.

श्रीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद ॥ ३६८ ॥

चत्तारि दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पं॰ तं॰—रूया रूयंसा सुरूवा रूयावती, चत्तारि विज्जु-कुमारिमहत्तरियाओ पं॰ तं॰—चित्ता चित्तकणगा सतेराश्च सोतानणी। सृ॰ २५९, सक्कस्स णं देविंद्स्स देवरन्नो मिडिझमपरिसाते देवाणं चत्तारि पिछिओवमाइं छिती पं॰, ईसाणस्स देविंद्स्स देवरन्नो मिडिझमपरिसाए देवीणं चतारि पिछिओवमाइं छिई पं॰। सृ॰ २६०, चउिविहे संसारे पं॰ तं॰—द्व्वसंसारे खेत्तसंसारे कालसंसारे भावसंसारे। सृ॰ २६१

मूलार्थ:-दिशाकुमारीनी चार महत्तिका देशीओ मध्यरुचकनी वसनारी कहेली छे, ते आ प्रमाणे-रूपा, रूपांशा, सुरूपा अने रूपावती. विद्युत्कुमारीनी चार महत्तिरिका देशीओ रुचक पर्वतनी विदिश मां वसनारी कहेली छे, ते आ प्रमाण-चित्रा, चित्रकनका, श्रतेरा अने सौदामिनी. (स० २५९) शक, देशेंद्र, देशना राजाना मध्यम परिषद्ता देशेनी चार पर्योपमनी स्थिति कहेली छे. ईशान, देशेंद्र, देशना राजाना मध्यम परिषद्ती देशीनी चार पर्योपमनी स्थिति कहेली छे. (स० २६०) चार प्रकारे संसार कहेल छे, ते आ प्रमाणे-द्रव्यसंपार, क्षेत्रसंतार, कालसंपार अत्ते भागसंपार (स० ५६१)

टीकार्थः - 'चत्तार दिसा ' इत्यादि० सत्र मुगम छे. विशेष ए के - दिशाकुमारीओ एवी अत्यंत श्रेष्ठ देवीओ अथवा दिशाकुमारीओमां महत्तरिकाओ ते दिक्कृमारीमहत्तरिकाओ, रुचकनी मध्यमां रहेनारी आ देवीओ जन्म पामेल अरिहंत

अ बाबुवालो प्रतमां सेयंसा छे. हस्तलिखित प्रतमां बन्ने पाठ छे.

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ स्थिति ¥ # # # म० २५९—

॥ ३६८ ॥

परमात्मानी नालछेदनादि क्रियाने करे छे. विद्युत्कुमारी महत्तरिकाओ तो रुचकनी विदिशामां वसनारीओ छे, ते देवीओ चारे दिशाओमां ऊभी रहींने, हाथमां दीवक ग्रहण करीने जन्म पामेल अरिहंतना गीतो गाय छे. आ देवो संसारमां वसनारा छे, माटे संसारद्वत्र कहेल छे. संसरण-अहिंतिई परिश्रमण करवुं ते संसार, तत्र 'संसार' शब्दना अर्थने जाणनार पण वर्तमानकाले संसार शब्दमां जेनो उपयोग नथी ते द्रव्यसंसार, अथवा जीव अने पुद्गललक्षण द्रव्योनुं यथायोग्य भ्रमण ते द्रव्यसंसार, तेओनुं ज चौद राजलोकरूप क्षेत्रमां जे परिभ्रमण ते क्षेत्रसंसार, अथवा जे क्षेत्रमां संसारनी व्याख्या कराय छे ते ज क्षेत्र, अभेद उपचार करवाथी क्षेत्रसंसार, जेम रसवाळी गुणनिका(गुणी) इत्यादि. कालस्य दिवस, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संबत्सर(वर्ष)लञ्चण कालनुं संसरवुं-चक्रन्यायवडे ममवुं अथवा कोई पण जीवनुं नरकादिने विषे पल्योपमादि कालिविशेषवडे भमवुं ते कालसंसार, अथवा पोरसी विगरे जे कालमां संसारनी व्याख्या कराय छे ते कालसंसार कहेवाय छे, अभेद उपचार करवाथी. जैम प्रत्युपेक्षण(पडिलेहण) करवाथी काल पण प्रत्युपेक्षण कहेवाय छे. तथा संसार शब्दना अर्थनी जाणनार अने तेमां उपयोगवाळा ते भावसंसार अथवा जीव अने पुद्गल संबंधी द्रव्य संसरण मात्र गाँण करायेल छे अथवा औदियिकादि भावोनो अथवा वर्णादिनो संसरणपरिणाम ते भावसंसार छे. (स्० २६१). आ द्रव्यादि संसार अनेक नयोवडे दृष्टिवादमां विचाराय छे तथी दृष्टिवाद सूत्र कहे छे-

चउविवद्दे दिद्विवाए पं॰ तं॰-परिकम्मं सुत्ताइं पुत्रवगए अणुजोगे। सू॰ २६२, चउविवद्दे

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ३६९॥ पायि चित्र तं० – णाणपाया चित्र तं सणपाय चित्र चित्र पाय चित्र ते चियत्त किञ्चपाय चित्र ते १, चउ दिवहे पाय चित्र ते पं० तं० – परिसेवणापाय चित्र ते संजीयणापाय चित्र ते आरोअणापाय चित्र ते पित्र उपाय चित्र ते । सू० २६३

मूलार्थ:-चार प्रकार दार्रवाद वहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ सत्रादिना ग्रहण करवानी योग्यता लावनार ते परिकर्म, २ द्रव्य, वर्षाय अने नयादिवना अर्थने ह्ववनार ते सत्र, ३ पूर्व संबंधी श्रुत जेमां रहेलुं छे ते पूर्वगत अने ४ सत्रनो कहेवा योग्य विषयनी साथे जे योग-संबंध ते अनुयोग. प्रथमानुयोगादि). (सू०२६२) चार प्रकारे प्रायश्चित्त कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ ज्ञानना अति-चारोनी श्रुद्धि माटे जे प्रायश्चित्त ते ज्ञानप्रायश्चित्त, २ समिकतना अतिचारोनुं प्रायश्चित्त, ३ चारित्रना आंतचारोनुं प्रायश्चित्त अने ४ व्यक्तकृत्यप्रायश्चित्त-गतिर्थनुं जे कार्य छे ते पापनो छेदक होवाथी प्रायश्चित्त. चार प्रकारे प्रायश्चित्त कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ निहं करवा योग्य कृत्यनुं करवुं ते प्रतिसेवना, तेनुं प्रायश्चित्त ते, २ संयोजना-एक जातिना अतिचारोनुं मलवुं, तेनुं प्रायश्चित्त, ३ आरोपणा प्रायश्चित्त-एक अपराधना प्रायश्चित्तमां पुनः पुनः दोष सेववाथी बीजा विज्ञातीय प्रायश्चित्तनुं आरोपण करवुं ते अने ४ परिबुंचनाप्रायश्चित्त-पापनुं छुपावनुं अर्थात एकतुं बीजुं कहे तेनुं प्रायश्चित्त (सू० २६३)

टीकार्थ:-'चउच्चिहे दिष्टिचाए' इत्यादि० जेनावडे दृष्टिओ-दर्शनो अर्थात् नयो कहेवाय छे ते दृष्टिवाद, अथवा पतंति-जेने विषे नयो अवतरे छे ते दृष्टिपात बारम्रं अंग. तेमां स्त्रादिना ग्रहण करवा माटे योग्यतानुं संपादन करवामां ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ द्विट्यादः प्रायश्चित्तश्च स्व २६२-

॥ ३६९ ॥

गीणतना संस्कारनी माफक समर्थ ते परिकर्म, १, ते सिद्धसेनिकादि. ऋजुस्त्र विगेरे बाबीश स्त्रो होय छे. अहिं सर्व द्रव्य, पर्याय अने नयना अर्थनुं स्चन करनार होवाथी स्त्रो छे. २, समस्त श्रुतथी प्रथम रचायेला होवाथी पूर्वो, ते उत्पाद प्रमुख चौद पूर्वो छे. तेओना नाम अने प्रमाण आ प्रमाणे—

उप्पाय १ अग्गेणीयं २, वीरियं ३ अत्थिनित्थ उ पवायं ४ । णाणपवायं ५ सच्चं ६, आयपवायं च ७ कम्मं च ८ ॥ ४३ ॥ पुठवं पच्चवखाणं ९, विज्जणुवायं १० अवंझ ११ पाणाउं १२ । किरियाविसालपुठवं १३, चोइसमं बिंदुसारं तु १४ ॥ ४४ ॥

१ उत्पाद पूर्व, २ अग्रायणीय पूर्व, ३ वीर्यप्रवाद पूर्व, ४ अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व, ५ ज्ञानप्रवाद पूर्व, ६ सत्यप्रवाद पूर्व, ७ आत्मप्रवाद पूर्व, ८ कर्मप्रवाद पूर्व, ९ प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्व, १० विद्यानुवाद पूर्व, ११ *अवंध्य पूर्व, १२ प्राणायु पूर्व, १३ क्रियाविश्वाल पूर्व अने १४ लोकविंदुसार पूर्व छे.

उपाये पयकोडी १, अग्गेणीयंमि छन्नउइलक्खा २।

मतांतरे कल्याण पूर्व एवं पण नाम छे.

भीस्था-नाङ्गधत्र सानुवाद ॥ ३७० ॥

विरियम्मि सयरिलक्खा ३, सद्दिलक्खा उ अस्थिणस्थिमि ४ ॥ ४५ ॥

१ उत्पाद पूर्वमां एक क्रोड पद, २ अग्रायणीय पूर्वमां छन्नुं लाख, ३ वीर्यप्रवाद पूर्वमां सी तेर लाख, ४ अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्वमां साठ लाख पद छे.

एका पउणा कोडी, णाणपवायंमि होइ पुव्विम्मि ५। एका पयाण कोडी, छच्च पया सच्चवायंमि ॥४६॥ ५ ज्ञानप्रवादपूर्वमां एक पद न्यून एक क्रोड पद छे, ६ सत्यप्रवाद पूर्वमा एक क्रोड अने छ पद छे.

छन्वीसं कोडीओ, आयपवायंमि होइ पयसंखा ७। कम्मपवाए कोडी, असीती लक्बेहिं अब्भहिआट॥

७ आत्मप्रवाद पूर्वमां छव्वीश क्रोड पदनी संख्या छे, ८ कर्मप्रवाद पूर्वमां एक क्रोड ने एंशी लाख पद छे.

चुलसीइ सयसहस्सा पच्चक्वाणांमि वन्निया पुठवे ९। एका पयाण कोडी, द्ससहसहिया य अगुवाए१०॥४८

९ प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्वमां चाराशी लाख पद छे, १० विद्यानुवाद पूर्वमां एक क्रोड अने दश हजार पद छे.

छव्वीसं कोडीओ, पयाण पुठवे अवंझणामंमि११। पाणाउम्मि य कोडी, छप्पणलक्खेहि अब्भहिया१२।४९। 💥

११ अवंध्य नामना पूर्वमां छव्वीस क्रोड पद छे, १२ प्राणायु पूर्वमां एक क्रोड ने छप्पन्न लाख पद छे.

नवकोडीओ संखा किरियविसालंमि विश्वया ग्रुरुणा १३। अध्यत्तेरसलक्खा , पयसंखा बिंदुसारम्मि १४॥५० 💢 🗓 ३७० ॥

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ **दृष्टिवाद्**र प्रायश्चि ६३

१३ क्रियाविशाल पूर्वमां नव क्रोड पद छे अने १४ विंदुसार पूर्वमां साडाबार *लाख पदनी संख्या छे. तेओने विषे गत-रहेछं जे श्रुत ते पूर्वगत, अर्थात् पूर्वी ज जेम अंगप्रविष्ट ते अंगो कहेवाय छे तेम अहिं जाणबुं. जोडबुं ते योग, ते अनुरूप अथवा अनुकूल. सूत्रनी पोताना अभिधेय-विषय साथे योग ते अनुयोग. तीर्थंकरोने प्रथम समिकतनी प्राप्ति अने पूर्वभव विगेरेनुं वर्णनरूप जे छे ते मूल प्रथमानुयोग कहेवाय छे. वळी जे कुलकर विगेरेनी वक्तव्यता जणावनार ते गंडिका-नुयोग छे. (सू० २६२) पूर्वगत श्रुत हमणा कहुँ, तेमां प्रायाश्चित्तनी प्ररूपणा हती माटे प्रायश्चित्तनां वे सूत्र कहेल छे. तेमां ज्ञान एज प्रायश्चित्त, कारण के ज्ञान ज पापने छेदेँ छे अथवा प्रायः चितने शुद्ध करे छे माटे निरुक्तिवशात् ज्ञानप्रायश्चित्त, एवी रीते दर्शन अने चारित्रमां पण समजवुं. 'वियत्तकिन्ने' त्ति ० व्यक्तस्य – भावथी गीतार्थनुं जे कृत्य ते व्यक्तकृत्यप्रायश्चित्त, गीतार्थ तो गुरु लघुना पर्यालोचन(विचार)वडे जे कंई पण करे छे ते वधुं पापनी विशुद्धि करनार ज होय छे, अथवा ज्ञान विगरेना अतिचारोनी विद्युद्धि माटे जे प्रायिश्वत्तो एटले आलोचनादि विशेषेथी कहेला छे,ते ज्ञानप्रायिश्वत्तादि कहेवाय छे, अथवा 'वियत्ते'ति० विशेषवडे-अवस्था विगेरेनी उचितताए [सूत्रमां] न कहेल छतां पण जे आप्युं-आज्ञा करी-हुकम कर्यो एवं जे कंई पण मध्यस्थ गीतार्थवडे करायेलुं अनुष्ठान ते विदत्तकृत्यप्रायश्चित ज छे. ' चि यत्तिक्वे'त्ति० आ पाठांतरथी तो प्रीतिवडे करवा योग्य वैयावृत्य विगेरे अर्थ थाय छे. प्रतिषेवणम्-अकृत्यनुं सेववुं ते प्रतिसेवना, ते परिणामभेदथी अथवा प्रतिसेवनीयना भेदथी वे प्रकारे छे. परिणामना भेदथी तो-पूर्वना पदनी संख्यामां मतातर पण छे.

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ओ २७१॥ पिंसिवणा उभावो, सो पुण कुसलोव्व होज्जऽकुसलो वा। कुसलेण होइ कप्पो, अकुसलपिरणामओ द्प्पो॥ ५१॥

प्रतिसेवना तो भाव-जीवना अध्यवसायरूप ज छे, ते भाव वळी कुशल अने अकुशळ एम बे प्रकारे छे. तेमां ज्ञानादिरूप बुशल भाववडे जे बाह्य बस्तुनी प्रतिसेवना ते ×कल्पप्रतिसेवना, अने अविरति विगेरे अकुशळ भाववडे जे प्रतिसेवना ते दप्पे-प्रतिसेवना कहेवाय छे. प्रतिसेवनीयना भेदो तो-

मूलगुणउत्तरगुणे, दुविहा पिंसवणा समासेणं। मूलगुणे पंचिवहा, पिंडविसोहाइगी इयरा॥ ५२॥

प्रतिसंदना, मूलगुणना दिषयवाळी अने उत्तरगुणना विषयवाळी एम संक्षेपथी वे प्रकारे छे. तेमां मूलगुणना विषयवाळी प्राणातिपात विगेरे पांच प्रकारे छे अने उत्तरगुण विषयवाळी प्रतिसंदना अनेक प्रकारे छे.

प्रतिसेवनामां प्रायश्चित्त ने आलोचना विगेरे आ प्रमाणे-

आलोयण १ पडिक्रमणे २, मीस ३ विवेगे ४ तहा विउस्सग्गे ५।

तव ६ छेय ७ मूल ८ अणवटूया य ९ पारंचिए १० चेव ॥ ५३॥

गुरुनी आगळ बचनवडे पापना प्रकाशवा मात्रथी जे पापनी शुद्धि थाय ते आलोचना प्रायिश्वत्त १, फरीने न करवानी

🗙 विष्णुद्धमार विगेरे मुनिओए नमुचि विगेरेने शिक्षा करेल ते कल्पप्रतिसेवना जाणवी.

* 8 स्थान•
* काष्ययने
* उद्देशः १
* दृष्टिवादः
प्रायाध* स्०२६२६३

॥ ३७१ ॥

प्रतिज्ञापूर्वक स्वयं मिथ्या दुष्कृत आपवा मात्रथी जे पापनी छाद्धे थाय ते प्रतिक्रमण प्रायिश्व २, आलोचना अने प्रतिक्र-मण ए बकेशी (गुरुनी समक्ष आलोचना करीने गुरुना आदेशपूर्वक प्रतिक्रमण करे अने पछी मिथ्यादुष्कृत आपवाथी) पापनी शाद्धि थाय ते मिश्रप्रायश्चित्त है, त्याग करवाथी जे पापनी शाद्धि थाय ते विवेकप्रायश्चित्त, दा. त. आधाकमीदि आहारनं ब्रहण कर्ये छते तेनो त्याग वरवाथी पापनी शुद्धि थाय छे. ४, कायानी चेष्टाना निरोधरूप उपयोग मात्रथी जे पापनी शुद्धि थाय ते च्युत्सर्ग प्रायश्चित्त, जेम दुःस्वप्नथी थयेल पापनी कायोत्सर्ग मात्रथी शुद्धि थाय छे ५, जे पापनी शुद्धि नीवी विगेरे छ मास पर्यंत तप करवाथी थाय छे ते तप प्रायश्चित्त ६, जे प्रायश्चित्तमां संयमना पूर्व पर्यायनी रक्षा माटे दुष्ट च्याधिथी द्षित थयेल शरीरना अमुक भागना हेदननी जेम अमुक पर्यायनो छेद कराय छे ते छेद प्रायश्चित्त ७, जे प्रायश्चित प्राप्त थये छते समस्त संयमपर्यायनो छेद करीने फरीथी महात्रतनुं आरोपण कराय छे अर्थात फरीथी दक्षिा अपाय छे ते मूल-प्रायश्चित्त ८, जेणे फरीथी प्रितसेवना करेल ते उत्थापना(फरीथी महाव्रतारोपण)मां अयोग्य छतो पण व्रतोमां किंचित काल स्थापन कराय छे ते अनवस्थाप्यता, ते ज्यां सुघी स्वीकारे छं विशिष्ट तप पूर्ण नथी कर्युं त्यां सुघी होय छे, पछी तप पूर्ण करवाथी दोष रहित थयेल होवाथी त्रतोमां स्थापन कराय छे. कहेल तप ज्यां सुधी पूर्ण नथी कर्युं त्यां सुधी त्रत के लिंगमां स्थापन नथी करातुं माटे अनवस्थाप्यताप्रायश्चित्त ९, जे दोष सेववे छते लिंग, क्षेत्र, काल अने तपथी दोषना पारने पामे छे ते पारांचित. अहि अञ्च् घातु गतिना अर्थमां छे. छेल्लामां छेल्छं प्रायाश्चित आ छे अने ते उत्कृष्ट दोषमां ज अपाय छे. १०. आ प्रतिसेवणा प्रायिष्य १. बीजुं संयोजन एटले एक जातिवाळा अतिचारनुं मिलन-एकत्र थवुं ते संयोजना, जेम श्रूटयातरविंड

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ३७२ ॥ **

लीधेल, ते पण पाणीथी भींजायेल हस्तादिवहे, वळी ते सामे लोवेल, ते पण आधाकर्मिक, आ दोषोनुं मिलन जेमां छे तेनुं प्रायिश्वत्त ते संयोजनाप्रायिश्वत्त २. तथा एक अपराधना प्रायिश्वत्तमां फरी फरी दोष सेववावहे विज्ञातीय—अन्य प्रायिश्वत्तनुं आरोपण करवुं ते आरोपणा, जेम पांच अहोरात्र प्रमाण प्रायिश्वत्तने पामेल, फरीथी दोषने सेव्ये छते दश अहोरात्र प्रमाण, फरीथी सेववामां पंदर अहोरात्र प्रमाण, एवी रीते फरी फरी दोष लगाडवाथी यावत् छ मास पर्यंत तप आपवुं. तेथी अधिक तप आववा योग्य नथी. शेष (छ मासथी अधिक) तप छ मास तपमां ज अंतर्भूत करवा योग्य छे, केमके आ वर्तमान तीर्थमां छ मासनुं ज तप कहेल छे. कह्यं पण छे के—
पंचाईयारोवण नेयव्वा जाव होति छम्मासा। तेण पर मासियाणं, छण्डुवरिं जोसणं छुज्जा।।५४।।

भावार्थ उपर जणाव्या ग्रुजब छे. आरोपणावहे प्रायश्चित्त ते आरोपणापायश्चित्त ३. परिकंचन—दुच्य, क्षेत्र, काल अने भाव संबंधी अपराधनं गोपववं

आरोपणावडे प्रायिश्वत्त ते आरोपणाप्रायिश्वत्त ३, परिक्वंचन-द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव संबंधी अपराधनुं गोपवनुं, अन्यथा-एक रीते होवा छतां बीजी रीते कहेनुं ते परिक्वंचना अथवा परिवंचना. कह्युं छे के— दुव्वे खेत्ते काले, भावे पलिउंचणा चउवियप्पा। चोअगकप्पारोवण, इहाईं भणिया पुरिसजाया ॥५५॥%

आ गाथा व्यवहारभाष्यनो छे. अहि टोकाकारे पूर्वार्द्ध भाग लीधेल छे. गाधावृत्तिमां उत्तरार्द्ध भाग पण आपेल छे माटे अहि संपूर्ण लखेल छे परंतु प्रस्तुत विषयमां तेनो संबंध नथी एटले उत्तरार्द्धनो अर्थ लखेल नथी.

४ स्थान काध्ययने उद्देशः १ द्धिवादः त्रायश्वि- त्तश्च ६३

॥ ३७२ ॥

द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव विषयवाळी परिकृंचना चार विकल्पे छे, ते आ प्रमाणे— साचित्ते अचितं १ जणत्रयपिंडसेवियं च अद्धाणे २। सुब्धिनक्खे य दुब्धिनक्खे ३ हट्टेण तहा गिलाणेणं ।। सचित्त [के मिश्र] द्रव्य लीधे छते अचित्त कहे ते द्रव्यपरिकृंचना १, कोई पण अद्धुक गाममां दोष करेल ते मार्गमां दोष सेव्यो कहे ते क्षेत्रपरिकृंचना २, सुभिक्ष कालमां दोष सेत्रीने दुर्भिक्ष कालमां दोष सेव्यो कहे ते कालपरिकृंचना २ अने निरोगपणामां दोष सेत्रीने में सरोगपणामां दोष सेव्यो छे एम कहे ते भातपरिकृंचना ४.

परिक्रंचनानुं प्रायश्चित्त ते परिक्रंचनाप्रायश्चित्त ४. अहं विशेष स्वरूप व्यवहारस्त्रनी पीठिकाथी जाणवुं. (स्० २६३) प्रायश्चित्त कालनी अपेक्षाए अपाय छे माटे कालनुं निरूपण करवा माटे सूत्र कहे छे के—

चउिवहे काले पं॰ तं॰-पमाणकाने अहाउयिनव्यक्तिकाले मरणकाले अद्धाकाले । सू॰ २६४, चउिवहे पोग्गलपिणामे पं॰ तं॰-वन्नपिणामे गंधपिणामे रसपिणामे फासपिणामे । सू॰ २६५, भरहेरवएसु णं वासेसु पुरिमपिन्छमवज्ञा मिन्झिमगा बावीसं अरहंता भगवंता चाउज्जामं धम्मं पण्णवेति, तं॰-सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं, एवं मुसावायाओ वेरमणं, सव्वातो अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणा परिगाहा]ओ वेरमणं १, सव्वेसु णं महाविदेहेसु अरहंता

६३

नाङ्गमूत्र साजुवाद अ ३७३॥ ह

भगवंतो चाउजामं धम्मं पण्णवयंति, तं०-सब्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं, जाव सब्वातो बहिद्धादाणाओं वरमणं । सू० २६६

मुलार्थः-चार प्रकारे काल कहेल छे, ते आ प्रमाण-१ प्रमाणकाल-दिवस अने रात्रि विगेरेना प्रमाणरूप, २ यथायु-ष्किनिर्देत्तिकाल-जे प्रमाणे आयुष्य बांध्यं होय ते प्रमाणे पूर्ण करे ते, ३ मरणविशिष्टकाल-मरणकाल अने ४ समय, आवलिकादिरूप मनुष्यक्षेत्रमां वर्त्ततो अद्वाकाल. (स० २६४) चार प्रकारे पुद्गलना परिणाम-अवस्थांतर कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ वर्णनो परिणाम, २ गंधनो परिणाम, ३ रसनो परिणाम अने ४ रपर्शनो परिणाम. (स० २६५) भरत अने ऐर-वतक्षेत्रने विषे पहेला अने हे ह्या तीर्थंकरने वर्जी मध्यम (वचेना) बावीश अरिहंत भगवंतो चार याम(महाव्रत)रूप धर्मने प्ररूपे छे, ते आ प्रमाणे-सर्वथा प्राणातिपातथी विरमवुं, एमज सर्वथा मृषावादथी विरमवुं, सर्वथा अदत्तादानथी विरमवुं, एमज मैथुन-परिग्रहथी विरमवुं. १, सर्व महाविदेह क्षेत्रोने विषे अरिहंत भगवंतो चार यामरूप धर्मने प्ररूपे छे. ते आ प्रमाणे-सर्वथा प्राणातिपातथी विरमवुं यावत् मेथुन-परिग्रहथी विरमवुं. (सू० २६६)

टीकार्थ:-जेनावडे वर्षशत, पल्योपम विगेरेनो निर्णय कराय छे ते प्रमाण, ते ज काल ते प्रमाणकाल, ते दिवस विगेरे लक्षणवाळो अने मनुष्यक्षेत्रमां वर्त्तनार अद्धाकाल विशेष ज छे. कहां छे के-

द्वविहो पमाणकालो, दिवसपमाणं च होइ राई य।चउपोरिासेओ।दिवसो, राई चउपोरिसी चेव।।५७॥ 🛣 ॥ ३७३॥

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ प्रमाण-कालादिः परिणामः । ¥ | यामाः स्० 🎇 २६४–६६

बे प्रकारे प्रमाणकाल छे- १ दिवसप्रमाण अने २ रात्रिप्रमाण. चार पोरिसीप्रमाण दिवस अने चार पोरिसीप्रमाण रात्रि होय छे. १. जे जे प्रकारे नारकादिना भेदवडे आयु:-कर्मविशेष ते यथायुः, तेनुं रौद्रादि घ्यान विगेरेथी निर्धृत्ति-बांघवुं, तेना संबंधथी जे काल एटले जीवोनी नारकादि स्वरूपे जे स्थिति ते यथायुःनिर्वृत्तिकाल, अथवा जेवी रीते आयुष्यनी निर्धृत्ति छे तेवी रीते जे काल नारकादिना भवमां रहे छे ते यथायुःनिर्धृत्तिकाल छे. आ काळ पण आयुष्यकर्मना अनुभवविशिष्ट सर्व संसारी जीवोना वर्त्तनादिरूप अद्वाकाल ज छे. कर्ष्युं छे के-

आउयमेत्तविसिट्रो, स एव जीवाण वत्तणादिमओ। भन्नइ अहाउकालो, वत्तइ जो जिच्चरं जेणं ॥५८॥

अद्धाकाल ज यथायुष्ककाल कहेवाय छे. शुं समग्र अद्धाकाल यथायुष्क छे १ एम निह, परंतु जीवोनो नारकादि आयु-विशिष्ट वर्तनादिमय यथायुष्ककाल कहेवाय छे, ते पोते बांघेल आयुष्यवडे जेटला काल पर्यंत जीव वर्ते छे तेटला काल सुधी रहे छे. २,

सुवा रह छ. २, मृत्युनो जे समय ते मरणकाल, आ पण अद्वासमय विशेष ज छे, अथवा मरणविशिष्ट काल ते मरणकाल अथवा मरण ज काल छे, केमके ते कालनो पर्यायवाचक शब्द छे. कह्युं छे के—

कालोति मयं मरणं, जहेह मरणं गओति कालगओ। तम्हा स कालकालो, जो जस्स मओ मरणकालो। ५९।

'काल' शब्द मरणवाचक छे, जेम अहीं मरणगत जीवने कालगत कहेवाय छे, तेथी प्राणीना जे मरणनो काल (समय)

भीस्था-नामसूत्र सानुवाद ा ३७४ ॥ 🖔 ते *काल-काल कहेल छे. अद्धा ज काल त अद्धाकाल. 'काल' शब्द तो ×वर्ण अने प्रमाणकाल विगेरेमां वर्त्त छे, तेथी अद्धा शब्दवडे विशेष करेल छे. आ अद्धाकाल सूर्यनी क्रिया(भ्रमण)विशिष्ट मनुष्यक्षेत्रनी अंदर वर्ततो समयादिरूप जाणवी. भाष्यमां कद्यं छे के--

सुरिकरिया बिसिट्टो, गो होहाइकिरियासु निरवेक्खो । अद्वाकालो भन्नइ, समयक्खे तंमि समयाइ ।६०। भेरू मेरुपर्वतनी चोतरफ स्पादिना अमगरूप कियावडे प्रगट करातो, मनुष्यक्षेत्रमां वर्तनारो समयादिरूप काल ते अद्वाकाल कहेवाय छे. मनुष्यक्षेत्र सिवाय बीजे स्थले सुपादिनी गातिकिया न होवाथी त्यां अद्वाकाल कहेवातो नथी, केमके त्यां तो कहेवाय छे. मनुष्यक्षेत्र सिवाय बीजे स्थले सुर्यादिनी गातिकिया न होवाथी त्यां अद्वाकाल कहेवातो नथी, केमके त्यां तो वर्तनारूप किया परिणामवाळी होवाथी काल कहेवाय छे. उपरोक्त जे अद्धाकाल ते गायनुं दोहन विगेरे क्रियानी अपेक्षा राखतो नथी, परंतु सूर्यादिनी गतिकियानी अपेक्षा राखे छे अर्थात् गतिमान् सूर्य पोताना किरणे। बडे जेटला क्षेत्रने प्रकाश मान करे तेटला क्षेत्रने दिवस अने ते सिवायना क्षेत्रने रात्रि कहेवाय छे. आ रात्रि के दिवसनो अत्यंत स्ट्रम अंश ते समय, तेवा असं-ख्याता समयनी आविलका विगरे काल, सूर्यनी गांते सिवाय अन्य क्रियानी अपेक्षा राखतो नयी.

†समयाविषयमुहुत्ता, दिवसमहोरत्तपक्रलमासा य । संवच्छरजुगपछिया, सागरओसप्पिपरियद्या ॥६१॥

एक काल शब्द मरणवाचक छे अने बीजो काल शब्द वलत-टाईमत्राचक छे, ते काल-काल. 🗙 जैन कालो वर्ण.

🕂 आ आवश्यक निर्युक्तिनी ६६३ मी गाचा छे.

४ स्थान काष्ययने उद्देशः १ प्रमाण-कालादिः परिणामः] यामाः स्ट्र० [:]¥}∤२६४**–६६**

न्या शर्भ

For Private and Personal Use Only

परम सक्ष्म काल ते समय, असंख्यात समयनी एक आवित्रक्ता, बे घडीरूप काल ते सुदूर्च, सूर्यिकरणोधी प्रकाशित आकाशखंड(क्षेत्र)रूप अथवा चार प्रहरात्मक ते दिवस, सूर्यिकरणथी अप्रकाशित आकाशखंड अथवा चार प्रहरप्रमाण ते रात्रि, ते उभय मळीने अहोरात्र कहेवाय छे. पंदर अहोरात्र मळीने एक पक्ष, बे पक्षनो एक मास, बार मासनो एक वर्ष, पांच वर्षनो एक युग, असंख्यात युगवडे एक पल्योपम, दश कोडाकोडी पल्योपमवडे एक सागरोपम, दश कोडाकोडी सागरोपमे एक उत्सर्पिणी अने तेटला ज प्रमाणवाळी एक अवसर्पिणी तेमज अनंती उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी मळीने एक पुद्गलपरावर्च थाय छे. (स० २६४)

द्रव्योना पर्यायभूत कालना चार स्थानक कहेल छे, हवे पर्यायना अधिकारथी पुर्गलोना पर्यायभूत परिणामना चार स्थानक कहे छे-'चडिवहे 'त्यादि० एक अवस्थाथी बीजी अवस्थाने पामवुं ते परिणाम कहेवाय छे. कहुं छे के- 'बीजी अवस्थाने पामवुं ते परिणाम, सर्वथा मूल स्वरूपे पण न रहेवुं अने सर्वथा नाजरूप पण निह एवो जे परिणाम ते ज्ञानीओने इप्ट छे (१) 'ते परिणाममां कालादि वर्णनो परिणाम-बीजी रीते थवुं अथगा बीजा वर्णना त्यापपूर्वक कालादि वर्णवर्डे पुर्गलनो परिणाम ते वर्ण परिणाम. एवी ज रीते गंध परिणाम विगरेमां पण समजवुं. (सू० २६५) अजीव द्रव्यना परिणामो कहा, हवे जीवद्रव्यना विचित्र परिणामो स्वर्गा विस्तारवर्डे कहेवाय छे-'भरते 'इत्यादि० बे स्त्र स्पष्ट छे. विशेष ए के- पहेला अने छेला तीर्थकरने वर्जीने अर्थात् मध्यमना, ते आठ विगरे पण होय माटे बाबीज कहेल छे. यम ए ज याम-महावत, चार यामो हिंसादिनी निश्चिहरूष छे जेमां ते चतुर्यामधर्म. 'बहुद्धाद्याणाओ 'त्ति० बहिर्द्धा-मैथुन परिग्रहविशेष भेद

औस्था-नाङ्गसूत्र सानुनाद भ्रा ३७५॥

छे, आदान-परिग्रह, ते बंदे नुं इंडसमासथी एकत्व छे अथवा जे ग्रहण कराय छे ते आदान-ग्रहण करवा योग्य वस्तु ते धर्मोपकरण पण होय छे, तेथी कहे छे के-बहिस्तात्-धर्मना उपकरण सिवाय जे परिग्रह, अहि मैथुन परिग्रहमां अंतर्भाव थाय छे, कारण के ग्रहण न करायेशी की भोगवाती नथी. प्रत्याख्यान करवा योग्य प्राणातिपातादिनुं चतुर्विधत्व होवाथी धर्मनी चतुर्यामता-चार महाव्रतस्वर छे. अहि आ भावना जाणवी के--मध्यम बावीश अने महाविदेहना तीर्थकरोना चार महाव्रतस्प धर्मनी प्रह्मणा अने आदि तथा अंत्य तीर्थकरना पांच महाव्रतह्म धर्मनी प्रह्मणा शिष्योनी अपेक्षाए छे. परमार्थथी तो बह्मनी पांच यामनी प्रह्मणा छे, केमके प्रथम अने पश्चिम (छेछा) तीर्थकरना तीर्थमां साधुआं ऋजुजड अने वक्रजड होय छे, ते कारणथी ज परिग्रह वर्जनीय छे एम उपदेश क्यें छते मैथुनने तजी देवुं जोईए एम जाणवाने अने पालवा माटे समर्थ थता नथी. मध्यमना बाविश तीर्थकरो अने महाविदेहना तीर्थकरोना तीर्थमां साधुओ ऋजु अने प्राञ्च होत्राशी मैथुनने जाणवा माटे तेमज तजवा माटे समर्थ थाय छे. अहि आ संबंधे वे स्रोक जणावे छे-

पुरिमा उज्जिज्जा उ, वक्कज्जुा य पन्छिमा। मार्डिझमा उज्जिप्झा उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥ ६२ ॥ प्रथम तीर्थकरना साधुओ सरल अने जड हे, हे ह्या तीर्थकरोना साधुओ वक्क अने जड हे, मध्यमना सरळ अने दक्ष हे. ते कारणथी वे रीते चतुर्याम अने पंचयामरूप धर्म कहेलो हे.

्पुरिमाणं दुव्विस्रोऽझो उ, चारिमाणं दुरणुपालए। कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसुज्झे सुपालए॥६३॥

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ प्रमाणका-लादिः परि-णामः यामाः स्र॰ २६४–६६

॥ ३७५ ॥

प्रथम तीर्थंकरना साधुओने धर्म दुर्वोध्य छे, हेस्ला तीर्थंकरना साधुओने धर्म दुःखपूर्वक पालन करी श्रकाय अने मध्यमना साधुओने धर्म सुबोध्य अने सुखे पाली शकाय तेम छे. (स० २६६)

अनंतर कहेल प्राणातिपात विगरेथी विराम निह पामेलने अने विराम पामेलने दुर्गति अने सुगति थाय छे, ते गतिवाळा जीवो दुर्गत अने सुगत होय छे माट दुर्गति अने सुगत्यात्मक पिणामोना अने दुर्गत सुगतना भेदोने चार सूत्रवडे जणावे छे-चत्तारि दुग्गतीतो पं० तं०-णेरइयदुग्गती तिरिवस्तजोणियदुग्गती मणुस्सदुग्गती देवदुग्गती १, इतारि सोग्गईओ पं०तं०-सिङ्सोग्गती देवसोग्गती मणुयसोग्गती सुदुलपञ्चायाति २, चत्तारि दुगाता पं॰ तं॰-नेरइयदुगाता तिरिवखजोणियदुगाता मणुयदुगाता देवदुगाता ३, चत्तारि सुगाता पं० तं - सिद्धसुगता जाव सुकुलप्रचायाया ४। सू० २६७, पढमसमयजिणस्स णं चत्तारि कम्मंसा खीणा भवंति तं - णाणावरणि जं दंसणावरणि जं मोहणि जं अंतरातितं १, उप्पन्ननाणदंसणधरे णं अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मंसे वेदोती, तं०-वेदणिजं आउयं णामं गोतं २, पढमसमयसिद्धस्स णं चत्तारि कम्मंसा जुगवं खिजाति, तं०-वेयणिजां आउयं णामं गोतं ३ । सू० २६८ मूलार्थ:-चार दुर्गतिओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-नैरियक संबंधी दुर्गति, तिर्यंचयोनि संबंधी दुर्गति, मनुष्य संबंधी दुर्गति

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ३७६

(निंदित मनुष्यनी अपेक्षाए) अने देव संबंधी दुर्गति, (किल्बिषिक विगेरेनी अपेक्षाए) १, चार सद्गति कहेली छे, ते आ प्रमाणे-सिद्ध संबंधी सद्गति, देव संबंधी सद्गति, मनुष्य संबंधी सद्गति अने स्वर्गमां जईने उत्तम कुलमां जन्मवारूप. २, चार दुर्गत (दुष्ट स्थितिमां रहेनार) कहेल छे, ते आ प्रमाणे –ैनरियक दुर्गत, तिर्यंचियोनिक दुर्गत, मतुष्य दुर्गत अने देवदुर्गत. ३, चार सुगत (सारी स्थितिमां रहेनार) कहेल छे, ते आ प्रमाणे-सिद्धसुगत, देवसुगत, मनुष्यसुगत अने सारा कुलमां अवतरेल ४ (स्०२६७) प्रथमसमयविशिष्ट जिनना चार कर्मना अंशो (भेदो) नाश पाम छे, ते आ प्रपाण-ज्ञानावरणिय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अने अंतराय. १, उत्पन्न थयेल केवलज्ञान अने केवलदर्शनना धरनार, अरह (सर्वज्ञ), जिनकेवली चार कर्मांशने वेदे छे, ते आ प्रमाणे-वेदनीय, आयुष्य, नाम अने गोत्र. २, प्रथमसमय सिद्धना कर्मांशो युगपत् (एकी साथे) क्षय थाय छे, ते आ प्रमाणे-वेदनीय, आयुष्य, नाम अने गोत्र, ३. (स्र० २६८)

टीकार्थः-'चत्तारी'त्यादि० सूत्र कहेल प्रधेशाळां छे. विशेष ए के-निंदित मनुष्यनी अपेक्षाए मनुष्यदुर्गति अने किल्विषिक विगेरेनी अपेक्षाए देवदुर्गति. 'सुकुलपचायाइ' नि ० देवलोक विगेरेमां जईने इक्ष्याक विगेरे सुकुलमां आवतुं, अयवा प्रत्याजाति प्रति-जन्म-जन्मवुं. आ तीर्थंकर विगेरेने होय छे. युगलिक विगेरे मनुष्यत्वरूप मनुष्यनी सुगतियी आ सुकुलमां जन्मवारूप मनुष्य सुग-तिनो भेद बतावेल छे. दुर्गति छे जेओने ते दुर्गतो (ऑह अचूप्रत्यय कर्षे छते दुर्गति तुं दुर्गता एवं रूप थाय छे) अथना दुःस्था-दुष्ट स्थि-तिमां रहेला ते दुर्गतो, एमज सुगता एटले सारी स्थितिमां रहेला जाणता. (स्० २६७) अनंतर सिद्धसुगतो कह्या, ते सिद्धो अष्ट कर्मना क्षयथी थाय छे, आ हेतुथी क्षयपरिणामनो क्रम कहे छे-'पढमे'त्यादि० त्रण सत्र स्पष्ट छे. विशेष ए के-प्रथम समय छे जेना

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः 🖁 दुर्गति-सुगती केत्रल्यादि-कमेश्वयौ

ते प्रथमसमय एवा जिन-सयोगिकेवली, ते प्रथमसमय जिनना सामान्यह्रप कर्मनां अंक्षो-ज्ञानावरणीय विगेरे भेदो क्षय थाय छे. आवरणनो क्षय थवाथी उत्पन्न थयेल विशेष अने सामान्य (पदार्थ)ना बोधरूप ज्ञान-दर्शनने धारण करनार ते उत्पन्न ज्ञानदर्शनघर. आ वाक्यवडे अनादि सिद्ध केवळज्ञानवाळा सदाशिवना असद्भावने बतावे छे. नथी विद्यमान रहः-एकांत-रूप गोप्य (छानुं) जेने ते अरहः, केम के समीप, दूर, स्थूल अने ग्रह्मरूप समस्त पदार्थसमृहना साक्षात्कार करनार होनाथी अथवा देवादिवडे पुजाने योग्य होवाथी अईन्. रागादिने जीतनार होवाथी जिन. केवल-परिपूर्ण ज्ञान विगेरे छे जेने ते केवली. सिद्धत्वनो अने कर्मना क्षयनो एक समयमां संभव होवाथी प्रथमसमय सिद्ध इत्यादि कथन कराय छे. (स्० २६८) असिद्ध जीवोने तो हास्य विगेरे विकारो होय छे माटे प्रथम हास्यनुं चार स्थानकमां अवतरण करतां स्वकार कहे छे-चउिं ठाणेहिं हासुप्पत्ती सिता तं०-पासिता भासेता सुगेता संभरेता। सू० २६९, चउित्रहे अंतरे पं० तं० -कटुंतरे पम्हंतरे ले।हंतरे पत्थरंतरे, एवामेव इत्थिए वा पुरिसम्स वा चउिवहे अंतरे पं० तं०-कट्टंतरसमाणे पम्हंतरसमाणे लोहंतरसमाणे पत्थरंतरसमाणे । सृ० २७०, चत्तारि भयगा

For Private and Personal Use Only

पं० तं०-दिवसभयते जत्ताभयते उच्चत्तभयते कन्त्रालभयते । सू० २७१, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-संपागडपिडसेवी णामेगे णो पच्छत्रपिडसेवी पच्छत्रपिडसेवी णामेगे णो संपागडपिडसेवी पंग

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद श्री ३७७ ॥

संपागडपडिसेवीवि पच्छन्नपडिसेवीवि, एगे नो संपागडपडिसेवी णो पच्छन्नपडिसेवी। सृ० २७२

मुलार्थ:-चार कारणे हास्यनी उत्पत्ति थाय, ते आ प्रमाणे-भांड विगेरेनी चेष्टा जोईने १, विकारवाळां वचनो बोलीने २, बीजा विकृत वचनो सांभद्धीने ३ अने चेष्टा विगेरेना शब्दो मनमां संभारीने ४ इसे छे. (स्०२६९) चार प्रकारे अतरं (एक बीजानो भेद) कहेल छे, ते आ प्रमाणे-काष्टांतर-लाकडा लाकडामां अंतर १, पक्ष्मांतर-कपासनी प्रणी प्रणीमां अंतर २, लोढा लोढामां अंतर ते लोहांतर ३ अने पत्थर पत्थरमां अंतर ते पत्थरांतर ४. ए ज दृष्टांते स्त्री स्त्रीमां अंतर, प्ररुप प्ररुपमां अंतर चार प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-विशिष्ट पदवीनी योग्यता विगेरेथी काष्टांतर समान १, वाणीनी कोमळतावडे पहमांतर समान २. स्नेहना हेद करवावडे लोहांतर समान ३ अने चिंतित मनोरथ पूरवावडे जगत्वंद्य जे थाय ते पत्थरांतर* समान (४० २७०) चार भूतक-नोकरो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-दररोजना मृत्यथी जे काम करे छे ते दिवसभूतक १, देशांतर गमनप्रसंगे अमुक मुल्य र्लाइने मदद करनार सेवक ते यात्राभृतक २, मुल्य अने काल(अग्रुक समय)नो निर्णय करीने जे नियमित कार्य करनार नोकर ते उच्चताभृतक ३ अने अग्रुक इस्तप्रमाण भूमि तारे खोदवी अने अग्रुक मूल्य आपीश एम ठरावपूर्वक जे काम करनार ते कब्बाडभूतक. ४. (स्०२७१) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक पुरुष अगीतार्थनी समक्ष अकल्पनीय भात विशेर सेवनार पण प्रच्छन (छानुं) सेवनार निहं ते बहुस १, कोईएक पुरुष प्रच्छन दोषने सेवे छे पण प्रगट सेवतो नथी अहि विशेष रूपधी व्याख्या करेल छे.

% ४ स्थानः
** काध्ययने
** उदेशः १
** हासः अन्त** गृतकाः
** प्रतिसेविनः
** स्० २६९** ७२

॥ ३७७ ॥

ते कषायकुशील २, कोईएक पुरुष प्रगट दोषने सेवे छे अने प्रच्छन्न पण सेवे छे ते प्रतिसेवनाकुशील ३ अने कोईएक पुरुष प्रगट अने प्रच्छन्न दोषने सेवतो नथी ते स्नातक अथवा निर्प्रथ. ४. (स० २७२)

टीकार्थः—'चडही'त्यादि० इसवुं ते हास्य, हास्यमोहनीय कर्मना उदयजन्य विकारनी उत्पत्ति ते हास्योत्पत्ति. 'पासित्त' त्ति विदुषक विगेरेनी चेष्टाने चक्षुवडे जोईने १, वळी कंईक विकार सहित वचनने बोलीने २, बीजाए कहेल तथा-विध हास्यकारी वाक्यने कानवडे सांभदीने र अने हास्यकारी चेष्टा अने वाक्य विगेरने याद करीने हसे छे. ४. एवी रीते जोवं विशेरे हास्यना कारणो थाय छे. (सू० २६९) असिद्ध(संसारीओ)नां ज धर्मान्तरनुं निरूपण करवा माटे दृष्टांत अने दार्प्टीतिक अर्थवाळां वे मूत्रने कहे छे-'चउव्विहें' इत्यादि० काष्ठ काष्ठनो अंतर एटले रूप, रचनादिवडे विशेष ते काष्टांतर, एम पक्ष्म-कपास, रू विगेरेना अर्थात् पक्ष्म पक्ष्मनो (पूणी पूणीनो) विशिष्ट सुकुमारतादिवडे अंतर ते पक्ष्मांतर २, अत्यंत छेद करनार होवाथी लोढानुं अंतर ३, चिंातित वस्तुनी प्राप्ति विगेरेथी पाषाणना अंतर ते प्रस्तरांतर. ४, एवी रीते काष्टादि अंतरनी माफक अन्य स्त्रीओनी अपेक्षाए स्त्रीनुं अंतर अथवा अन्य पुरुषोधी अपेक्षाए पुरुषनुं अंतर. अहिं वे ' वा ' शब्द स्त्री अने पुरुषना चतुर्विधत्व प्रत्ये समानता जणाववा माटे छे. काष्टांतर तुल्य, अंतर-विशेष, अर्थात् विशिष्ट पदवीनी योग्यतादिवडे काष्टांतर समान १, वचननी सकोमलतावडे ज पक्ष्मांतर समान २, स्नेहनां छेद-वडे अने परीषहादिने विषे अभंगत्व-धैर्य विगेरेथी लोहांतर समान ३, इच्छाथी अधिक मनोरथना पूर्ण करवावडे अने विशिष्ट गुणवान् पुरुषवडे वंदन करवा योग्य पदवीनी योग्यतादिवडे प्रस्तरांतर समान. ४ (स्० २७०) हमणा ज अंतर कह्यं, माटे

श्रीस्था-नामसत्र सानुवाद 🛚 💌 ा ३७८ ॥

पुरुषविशेषना अंतरतुं निक्रपण करवा माटे भृतकष्वत्र कहे छे. 'श्रियते' पोषण करायो ते भृतः, अनुकंपा करायेल ते ज भृतक अर्थात् काम करनार. नकी करेल मृल्यद्वारा काम करवा माटे दररोज जे ग्रहण कराय छे (रखाय छे) ते दिवसभृतक १, यात्रा—देशांतरगमनमां सहाय माटे निषत मृल्यद्वारा जे पोषण कराय छे ते यात्राभृतक २, मृल्य अने कालनो निर्णय इंदेशः १ करीने नियत करेल समय प्रमाणे जेनी पासेथी कार्य करावाय छे ते उच्चताभृतक ३ अने कन्नाडभृतक एटले प्रभ्वी खोदनार ओड विगेरे. वे हाथ अथवा त्रण हाथ भूमि तारे खोदवी अने तेना बदलामां आटखं धन तने आपीश एम कहीने पोतातुं कार्य जेने सोंपाय छ ते कन्बाडमृतक. अहिं आ संबंधी ने गाथा दर्शांवे छे-

> दिवसभयओ उ घेप्पइ, छिन्नेण धणेण दिवसदेवसियं। जत्ता उ होइ गमणं, उभयं वा [आगमनं चेत्यर्थः] एतियधणेणं ॥ ६४ ॥ कब्बान ओडमाई, हत्थामियं कम्म एत्तियधणेणं । एचिरकाळुचते, कायव्वं ×कम्म जं बेंति ॥ ६५ ॥

🗙 आ चार प्रकारना भूतकनी नोकरों के काम पूर्ण न धयेल होय तो तेने दीक्षा आपवी करूपे नहि एस निशीधभाष्य अने चूर्णिमां कहेलुं छे, एम गाधावृत्तिकार जणावे छे.

अतिसे विनः

III 300 II

प्रायः भावार्थ जणाव्या मुजब छे.

लौकिक पुरुषिवशेषनुं अंतर कद्यं, हवे लोकोत्तर पुरुषिवशेषना अंतरनुं प्रतिपादन करवा माटे प्रतिषेविसूत्र जणावे छे. तेमां संप्रकट—अगीताथींनी समक्ष अकल्पनीय आहारादि प्रतिसेववानो स्वभाव छे जेनो ते संप्रकट प्रतिसेवी १, एवी रीते सर्वत्र जाणवुं. विश्रष ए के-प्रच्छन्न—अगीतार्थ समक्ष निंहं, आहें पहेला त्रण मांगामां पुष्ट आलंबन (खास कारण प्रसंगे) बकुश विगेरे, अथवा खास कारण सिवाय पार्श्वस्था (पासत्थो) विगेरे, चोथा भांगामां तो निर्प्रथ अथवा स्नातक होय छे. (स० २७२) अंतरना अधिकारथी ज देवपुरुषोनो स्त्रीवडे करायेल अंतरने प्रतिपादन करता थका स्त्रकार कहे छे—

चमरस्स णं असुरिंद्स्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारन्नो चतारि अग्गमिहसीओ पं० तं०-कणगा कणगळता चित्तगुत्ता वसुंधरा, एवं जमस्स वरुणस्स वेसमणस्स, बिलस्स णं वितरो-यणिंद्स्स वितरोयणरन्नो सोमस्स महारन्नो चतारि अग्गमिहसीओ पं० तं०-मित्तगा सुभद्दा विज्जुत्ता असणी, एवं जमस्स वेसमणस्स वरुणस्स (१) धरणस्स णं नागकुमारिंद्स्स णागकुमार-रन्नो काळवाळस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमिहसीओ पं० तं०-असोगा विमळा सुप्पभा सुदंसणा, एवं जाव संखवाळस्स, भूताणंद्स्स णं णागकुमारिंद्स्स णागकुमाररन्नो काळवाळस्स महारन्नो भीस्था-नाङ्गसूत्र साजुवाद स ३७९॥ **

चत्तारि अग्ग० पं० तं०-सुणंदा सुभद्दा सुजाता सुमणा, एवं जाव सेलवालस्स जहा धरणस्स एवं सव्वेसिं दाहिणिंद्लोगपालाणं जाव घोसस्स,जहा भूताणंद्स्स एवं जाव महाघोसस्स लोगपालाणं (२) कालस्स णं पिसाइंद्स्स पिसायरत्रो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-कमला कमलप्पभा उप्पला सुदंसणा, एवं महाकालस्सवि, सुरूवस्स णं भृतिंद्स्स भृतरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-रूववती बहुरूवा सुरूवा सुभगा, एवं पडिरूवस्सवि,पुण्णभद्दस्स णं जिवंखद्स्स जक्खरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-पुत्ता बहुपुत्तिता उत्तमा तारगा, एवं माणिभद्दस्सवि (३) भीमस्स णं रक्खसिंद्स्स रक्खसरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं०तं०-पउमा वसुमती कणगा रतणप्पभा, एवं महाभीमस्सवि, किंनरस्स णं किंनरिंदस्स चत्तारि अग्ग० पं०तं०-वडेंसा केतुमती रतिसेणा रतिप्पभा, एवं किंपुरिसस्सवि,सप्पुरिसस्स णं किंपुरिसिंद्स्स० चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-रोहिणी णवमिता हिरी पुष्फवती, एवं महापुरिसस्सवि (४) अतिकायस्स णं महोरगिंद्स्स चत्तारि अग्गम-हिसीओ पं० तं०-भुयगा भुयगवती महाकच्छा फ़ुडा, एवं महाकायस्सवि, गीतरतिस्स णं गंधविंवदस्स

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ |अग्रमहिष्य: विकृतयः कूटागाराः

चत्तारि अग्ग०पं०तं०-सुघोसा विमलासुस्सरा सरस्सती, एवं गीयजसस्सवि (५) चंदस्स णं जोतिसिं-दस्स जोतिसरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-चंदप्पमा दोसिणाभा अचिमाली पभंकरा, एवं सूर-स्सवि, णवरं सूरप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, इंगालस णं महागहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-विजया वेजयंती जयंती अपराजिया, एवं सव्वेसिं महग्गहाणं जाव भावकेउस्स (६) सकस्स णं देविंद्स्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्ग० पं० तं०-रोहिणी मयणा चित्ता अग्ग० पं० तं०-पुढवी राती रयणी विज्जू, एवं जाव वरुणम्स । सू० २७३, चत्तारि गोरसावि-गतीओ पं० तं०-स्वीरं द्हिं सिपंप णवणीतं, चत्तारि सिणेहविगइतीओ पं० तं०-तेन्नं घयं वसा णवणीतं, चत्तारि महाविगतीओ पं० तं०-महुं मंसं मजं णवणीतं । सृ० २७४, चत्तारि कूडागारा पं० तं०-गुत्ते णामं एगे गुत्ते, गुत्ते णामं एगे अगुत्ते, अगुत्ते णामं एगे गुत्ते, अगुत्ते णामं एगे

^{*} बीनी प्रतमां 'सामा' एवी पाठ पण छे.

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ।। ३८०॥ अगुत्ते, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-गुत्ते णाममेगे ग्रुत्ते ४, चत्तारि कूडागारसालाओं पं० तं०-गुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा, गुत्ताणाममेगा अगुत्तदुवारा, अगुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा, अगुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा, एवामेव चतारित्थीओ पं० तं०-गुत्ता नाममेगा गुत्तिंदिता गुत्ता णाममेगा अगुत्तिंदिआ ४। सू० २७५, चउव्विहा ओगाहणा पं० तं०-द्व्वोगाहणा खेत्तोगाहणा कालोगाहणा भावोगाहणा। सू० २७६, चतारि पन्नतीओ अंगबाहिरियातो पं० तं०-चंदपन्नती सूरपन्नती जंबुद्दीवपन्नती दीवसागरपन्नती। सू० २७७॥ चउट्टाणस्स पढमो उद्देसओ ॥ १॥

मूलार्थः — असुरेंद्र – असुरकुमारना राजा चमरेंद्रना सोम नामना लोकपाल महाराजानी चार अग्रमिहिपीओ कहेली छ, ते आ प्रमाणे – कनका, कनकलता, चित्रगुप्ता अने वसुंधरा. एम ज यमनी, वरुणनी अने वैश्रमण लोकपालनी चार चार अग्रमिहिपीओ छे. बिल नामना वैरोचनेंद्र – वैरोचनना राजाना सोम नामना महाराजानी चार अग्रमिहिपीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे — मित्रका, सुभद्रा, विद्युता अने अश्रनी. एम ज यमनी, वैश्रमणनी अने वरुण लोकपालनी चार चार अग्रमिहिपीओ छे. (१) नागकुमारनो इंद्र – नागकुमारना राजा धरणेंद्रना कालवाल नामना महाराजानी चार अग्रमिहिपीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे — अशोका, विमला, सुप्रभा अने सुदर्शना. एवी रीते यावत् शंखपाल नामना लोकपालनी चार अग्रमिहिपीओ कहेली छे. भृतानंद

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः १ अग्रमहिष्यः विकृतयः कृटागाराः स्र० २७३— ७५

11 3/0 11

नामना नागक्कमारना इंद्र-नागक्कमारना राजाना कालवाल नामना महाराजानी चार अग्रमहिषीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-सुनंदा, सुभद्रा, सुजाता अने सुमना. एवी रीते यावत् शैलपाल नामना लोकपाल महाराजानी चार अग्रमहिषीओ छे. जेम धर-णेंद्रना लोकपालनी अग्रमिहिषीओ छे. ए प्रमाणे बधा ये दक्षिण दिशाना इंद्रना लोकपालोनी यावत् घोष नामना स्तनितक्कमार इंद्रना लेकपालेनी चार चार अग्रमहिषीओ छे. जेम भूतानंद(उत्तर दिशाधिपति)ना लोकपालोनी चार चार अग्रमहिषीओ छे ए प्रमाण महाघोष नामना स्तनितकुमार इंद्रना लोकपालीनी चार चार अग्रमहिषीओ छे अर्थात् ते प्रमाणे नामवाळि छे. (२) काल नामना विशाचना इंद्र-विशाचराजानी चार अग्रमहिषीओं कहेली छे, ते आ प्रमाणे-कमला, कमलप्रभा, उत्पला अने सुदर्शना. एवी रीते महाकाल नामना विशाचेंद्रनी पग चार अग्रमहिषीओ छे. सुरूप नामना भूतना इंद्र-भूतना राजानी चार अग्रमहिपीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-रूपवती, बहुरूपा, सुरूपा अने सुभगा एवी रीते प्रतिरूप नामना भुतेंद्रनी पण चार अग्रमहिषीओ छे. पूर्णभद्र नामना यक्षना इंद्र-यक्षना राजानी चार अग्रमाहिषीओ कहेली छे, ते आ प्रमाण-पुत्रा, बहुपुत्रिका, उत्तमा अने तारका.एवी रीते माणिभद्र नामना यक्षना इंद्रनी पग चार अग्रमाहिवीओ छे. (३)भीम नामना राक्षसना इंद्र-राक्षसना राजानी चार अप्रमहिषीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-पद्मा, वसुमती, कनका अने रत्नप्रमा. एवी रीते महाभीम नामना राक्ष-सेंद्रनी चार अग्रमिहिषीओ छे. किन्नर नामना किन्नर देवना इंद्रनी चार अग्रमिहिषीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-वर्डिसा, केतुमती, रितसेना अने रितप्रभा, एवी रीते किंपुरुष नामना किन्ना इंद्रनी चार अप्रमहिषीओ कहेली छे. सत्पुरुष नामना किंपुरुष देवना इंद्रनी चार अग्रमहिषीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-राहिणी, नविमका, ही अने पुष्पवती. एवी रीते महापुरुष नामना किंपुरुष

भीस्था-नाङ्गसूत्र सातुनाद ॥ ३८१ ॥

देवना इंद्रनी चार अग्रमहिषीओ छे. (४) अतिकाय नामना महोरगना इंद्रनी चार अग्रमहिषीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-भ्रुजगा, भ्रजगवती, महाकच्छा अने स्फ्रटा. एवी रीते महाकाय नामना महोरगना इंद्रनी चार अग्रमहिषीओ कहेली छे. गीतरित नामना गंधर्वना इंद्रनी चार अग्रमहिषीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-सुघोषा, विमला, सुस्वरा अने सरस्वती. एवी रीते गीतयश नामना गंध-वैंद्रनी चार अग्रमाहिषीओ छे.आ दक्षिण अने उत्तर दिशाना मली सोल व्यंतरेंद्रनी अग्रमहिषीओनुं वर्णन करेल छे. दक्षिण अने उत्तर दिशानी अग्रमिहिपीओना नामो समान छे. (५) चंद्र नामना ज्योतिषना इंद्र-ज्योतिषना राजानी चार अग्रमिहिषीओ कहेली छे, ते आ प्रमाण-चंद्रप्रभा, ज्योत्स्नाभा, अधिचमाली अने प्रभंकरा. एवी रीते सूर्यनी पण चार अग्रमहिषीओ छे. विशेष ए के-सूर्यप्रभा, ज्योत्स्नाभा, अचिमाली अने प्रभंकरा नाम छे. अंगारक (मंगल) नामना महाग्रहनी चार अग्रमिहिषीओ कहेली छे, ते आ प्रमाण-विजया, वैजयंती, जयंती अने अपराजिता. एवी रीते बधा य महाग्रहोनी यावत भावकेतु नामना छेह्ना ग्रहनी चार अग्र-महिषीओ छे. (६) शुक्र नामना देवना इंद्र-देवना राजाना सोम नामना महाराजा(लोकपाल)नी चार अग्रमहिषीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-रोहिणी, मदना, चित्रा अने सोमा. एवी रीते यावत् वैश्रमण नामना लोकपालनी चार अग्रमहिषीओ छे. ईशान नामना देवना इंद्र-देवना राजाना [लोकपाल] सोम नामना महाराजानी चार अग्रमहिषीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-पृथ्वी, रात्री, रजनी अने विद्युत. एवी रीते यावत् वरुण नामना लोकपालनी चार अग्रमहिषाओं छे. (सू० २७३) चार गीरस (गाय प्रमुख) संबंधी रसरूप चार विकृतिओ-विगयो कहेली छे, ते आ प्रमाणे-दूध, दिहं, घी अने माखण, चार स्निग्ध (चीकणी) विगयो कहेली छे, ते आ प्रमाणे-तेल, घृत, वसा (चरबी) अने माखण. चार महाविगयो कहेली छे, ते आ

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ अग्रमहिष्य: विकृतयः कूटागाराः

1 328 1

प्रमाणे-मधु (मध), मांस, मादरा अने माखण.(सू० २७४) चार प्रकारे कूट-शिखरना आकार जेवा घरो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-कोई एक गढ विगेरेथी वींटायेछं गुप्तघर अने बंध बारणावाछं छे १, कोईएक घर गुप्त पण बारणुं खुल्छं छे २. कोईक घर प्रगट हो पण बंध बारणावाळं हो ३, अने केाईक घर प्रगट हो अने बारणुं पण खुल्छं हो ४.आ दृष्टांत प्रमाणे चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-कोईएक पुरुष गुप्त. (बस्नादिवडे ढांकेल) छे अने इंद्रियोवडे पण गुप्त छे-गुप्तेंद्रिय १, कोईएक बस्नादिवडे ढांकेल छे अने इंद्रियोवडे अगुप्त-अगुप्तेंद्रिय छे २, कोईएक वस्तादिवडे अगुप्त-खुल्लो छे पण गुप्तेंद्रिय छे ३ अने कोईएक वस्त्रादिवडे अगुप्त-प्रगट अने इंद्रियोवडे पण अगुप्तेंद्रिय छे ४. चार कूटागार-शिखरना जेवा आकारवाली शाळा (घर विशेष) कहेली छे, ते आ प्रमाणे-एक शाळा गुप्त अने गुप्त (बंध) दरवाजावाली छे, एक शाळा गुप्त पण दरवाजो अगुप्त (खुल्लो) छे, एक शाळा अगुप्त पण दरवाजो गुप्त (बंध) छे अने एक शाळा अगुप्त अने दरवाजो पण अगुप्त छे. ए दृष्टांते चार प्रकारनी स्त्रीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-कोईक स्त्री गुप्त-घरमां ज रहेनारी अने गुप्त-सुशीला छे १, कोईएक स्त्री ग्रप्त-घरमां ज रहेनारी पण अग्रत-सुशीला नथी २, कोईक स्त्री अगुप्त-घरमां निह रहेनारी पण सुशीला छे ३ अने कोईक अगुप्त-घरमां निह रहेनारी अने दु:शीला पण छे ४ (स्० २७५) चार प्रकारे अवगाहना-जेमां जीव रहे ते अर्थात काया-कहेली छे. ते आ प्रमाणे-द्रव्यअवगाहना ते अनंत द्रव्यवाळी, क्षेत्रअवगाहना ते असंख्यात प्रदेशना अवगाह(आश्रय)वाळी. कालअवगाहना ते असंख्यात समयनी स्थितिवाळी अने भावअवगाहना ते वर्णादि अनंतगुणवाळी छे. (सू० २७६) चार प्रज्ञप्तीओ (अंगबाद्यस्त्ररूप) कहेली छे, ते आ प्रमाणे-चंद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, जंबुद्धीपप्रज्ञप्ति अने द्वीपसागरप्रज्ञप्ति.

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सांजुवाद श ३८२ ॥

टीकार्थः-'चमरस्से'त्यादिकम्० अग्रमहिषी संबंधी सूत्रनो विस्तार सरळ छे. विशेष ए के-' महारत्रों'ति० लोकपालनी मुख्य राणीओ-राजानी स्त्रीओ ते अग्रमहिषीओ, 'वहरोयण' त्ति ० विविध प्रकारोवडे रोच्यंते -दीपे छे ते विरोचनो, ते ज वैरोचनो-उत्तर दिशामां रहेनारा असुरो,तेओनो इंद्र ते वैरोचनेंद्र.धरणना स्त्रमां 'एव'मिति०एम ज जाणवुं. कालवालन जेम कोलवाल,शैलपाल अने शंखपालनी एज नामवाळी चार चार अग्रमहिषीओ जाणवी.एज जणावतां कहे छे'जाव संखवालस्स'-क्ति॰(उत्तर दिशानो इंद्र) भूतानंदना सूत्रमां 'एव'मिति॰ एम ज जाणवुं. जेम कालवालनी तेम बीजाओनी पण चार चार अग्रमहिषीओ जाणवी,विशेष ए के-लोकपालोना नाममां त्रीजाने ठेकाणे चोथो कहेवो अर्थात् वरुणना स्थानमां वैश्रमण कहेवो. जेम दक्षिण दिशाना नागकुमारनिकायना इंद्र धरणना लोकपालोनी अग्रमहिषीओ जे नामवाळी छे तेम बधा दक्षिण दिशाना बाकीना-१ वेणुदेव, २ हरिकान्त, ३ अग्निशिख, ४ पूर्ण, ५ जलकान्त, ६ अमितगति, ७ वेलंब अने ८ घोष-आ आठ इंद्रोना जे लोकपालो सूत्रमां कहेला छे ते बधाओनी तेज नामवाळी अग्रमहिषीओ छे.जेम उत्तर दिशानो नागराज भृतानंद नामना इंद्रना लोकपालोनी अग्रमहिषीओना नामो कहेल छे तेम बाकीना-१ वेणुदाली, २ हरिस्स, ३ अग्रिमानव,४ विशिष्ट, ५ जलप्रभ, ६ आमतवाहन, ७ प्रभंजन अने ८ महाघोष नामना आठ इंद्रोना लोकपालोनी पण ते ज नामवाळी अग्रमहिषीओ छे.ए ज कहे छे के-'जहा धरणस्से'त्यादि० (सू० २७३) सचेतनोतुं अंतर कह्युं, हवे अंतरना अधिकारथी ज अचेतनविशेष विकृतिओतुं गोरस, स्नेह अने महत्त्वलक्षणरूप अंतरने त्रण सत्रवडे सत्रकार कहे छे-'चत्तारी'त्यादि०गायोनो रस ते गोरस, व्युत्पत्ति मात्र आ अर्थ समजवा.'गोरस'शब्दनी प्रवृत्ति तो भेंस विगरेना दूध,दिं आदि रसमां छे.श्वरीर अने मनने प्रायः विकारनो हेतु होवाथी विकृतिओ

४ स्थान-काष्ययने उद्श्वः १ अग्रमहिष्यः विकृतयः कृटागाराः स्र०२७३-

॥ ३८२ ॥

कहेवाय छे. बाकी स्पष्ट छे. विशेष ए के-सर्ष्पि-घृत, नवनीत-माखण, स्नेहरूप विकृतिओ ते स्नेहविकृतिओ (विगयो), वसा-हाडकाना मध्यभागनो रस,महारसवडे महाविकारनी करनारी होवाथी अने महान् जीवोपघात(मोटी हिंसा)नुं कारण होवाथी महाविकृतिओ कहेवाय छे. अहिं विकृतिनो प्रसंग होवाथी युद्ध (प्राचीन) गाथाओवडे विकृतिओनुं वर्णन करे छे-

> खीरं ५ देहि ४ णवैणीयं ४, घँयं ४ तहा तेर्ह्धमेव ४ गुँड २ मँ जं २। महु ३ मंसं ३ चेव तहा, ओगाहिंभैगं च दसमी उ ॥ ६६॥

१ दूध, २ दिहें, ३ माखण, ४ घृत, ५ तेल, ६ गोळ, ७ दारु, ८ मंघ, ९ मांस तथा १० अत्रगाहिम एटले घृत के तेलमां तळेल अर्थात कडाविगय छे.

गोमहिसुद्दिपसूणं, एलगखीराणि पंच चत्तारि। दहिमाइयाणं जम्हा, उद्दीणं ताणि णो हुति ॥६७॥

गाय, भेंस, उंटडी, बकरी अने गांडर संबंधी दूध ए श्वीरिविक्वात पांच भेदवाळी छे, ए सिवाय मनुष्यणि विगेरेना दूधने विगय कही नथी. दिह, माखण अने घीना चार भेद छे केमके उंटडीना दूधमांथी दिह विगेरे थता नथी, बाकी गाय विगेरे

चारना थाय छे. चत्तारि होति तेल्छा, तिलअयसिकुसुंभसरिसवाणं च । विगईओ सेसाइं, डोलाईणं न विगईओ ॥ ६८ तिल, अलसी, कुसुंभ (करडी) अने सरसव संबंधी तेल, एम चार प्रकारे विकृतिओ छे. शेष-डोला-महुडाना फूलतुं तेल

For Private and Personal Use Only

भीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद १३ ३८३ ।। अने नालीएर विगरेना तेलने विगयमां गणेल नथी.
द्वगुर्लीपडगुरा दो, मजं पुण कट्टिपट्टिनिष्फन्नं। मिच्छियकोत्तियभामर—भेयं च तिहा महुं होइ ॥६९॥ द्रव्यगुड (नरम रसरूप) अने पिंडगुड (कटण) एम वे प्रकारे गोळ छे.मद्य-दारु वे प्रकारे छे १ एक काष्ठिनिष्पन्न—शेलडी,ताडी विगरेथी थयेल अने २ पिष्टिनिष्पन्न—चोखा विगरेना पिष्टथी थयेल. मध त्रण प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे—१ माक्षिक—माखी संबंधी, २ कोंतिक—नानी माखी संबंधी अने ३ भमरी संबंधी. आ सर्व विगयस्वरूप छे.
जलथलखहयरमंसं,चम्मं वस सो।िणयं तिहेयंपि।आइछ तिन्नि चलचल, ओगाहिमगं च विगईओ ॥७०॥

जलचर, स्थलचर अने पक्षी संबंधी एम मांस त्रण भेदे छे, अथवा मांस, चरबी अने शोणित (लोही) एम पण त्रण# प्रकार छे. वळी घृत के तेल भरेल कडाईमां चळचळाट शब्दने करती थकी पूरी विगरे ज्यारे तळाय छे त्यारे एक घाण कहेवाय छे. एवी रीते त्रण वखत तळाय त्यां सुधी अवगाहिम-कडाविगय कहेवाय छे. चोथो घाण ते विगय कहेवाय नहिं.

सेसा न हेांति विगई अ, जोगवाहीण ते उ कप्पंती। परिभुज्ञांति न पायं, जं निच्छयओ न नज्जांति ॥७१॥ शेष चोथा घाणमां तळेला पकवान विगेरे विगय कहेवाय निहं पण नीवीयाता कहेवाय. दूध विगेरे दरेक विगयना पांच पांच नीवीयाता× छे ते योगने वहन करनार साधुओने कारणवशात् लेवा कल्पे छे, केमके प्रायः भोगवता नथी तेमज निश्चयथी

* दघ विगेरे छ भक्ष्य विगय छे अने तेना उत्तरभेद २१ छे. मांस विगेरे चार अभक्ष्य विगय छे. तेना उत्तरभेद बार छे.

× ए दरेक विगयना नीवीयातानं स्वरूप पच्चक्साणभाष्यणी जाणवं.

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः १ अग्रमहिष्यः विकृतयः कूटागाराः

॥ ३८३ ॥

जणाता नथी के आ केवी रीते बनेला छे अर्थात् केटला घाणथी थयेला छे तो लेवा कल्पे निहं परंतु निश्वय थाय के त्रण घाण उपरनां छे तो गाढ कारणे लेवा कल्पे.

एगेण चेव तवओ, पूरिजाति पूयएण जो ताओ।बीओवि स पुण कप्पइ, निव्विगई लेवडो नवरं॥ ७२॥

एक पूडलावडे जे तवी पुराय छे-भराय छे, तेथी बीजो पूडलो जे कराय छे ते विगयना त्याग करनार मुनिने कल्पे छे, केम के ते विगय नथी परंतु लेपकृत कहेवाय छे. (स० २७४)

अचेतन संबंधी अंतरना अधिकारथी ज घरिवशेषना अंतरने दृष्टांतवडे कहेवाने इच्छावाळा तथा पुरुष अने स्त्रीना अंतरने दार्षांतिकपणाए कहेवाने इच्छता स्त्रकार चार स्त्रने कहे छे-' चत्तारि कूडे 'त्यादि० कूट-शिखरवाळा घरो, अथवा कूट-जीवने बांधवाना स्थळ जेवा घरो ते कूटागारो, तेमां गुप्त-गढ विगरेथी वींटाये अथवा भोंपरुं विगरे. वळी वंध बारणा-वडे गुप्त अथवा पूर्वकाळनी अने पछीना काळनी अपक्षाए गुह्य छे. १, एम ज बीजा पण त्रण मांगा जाणवा. पुरुष तो वस्त्रादि-द्वारा आच्छादित होवाथी गुप्त, वळी इंद्रियोने गुप्त-वश करवावडे गुप्त छे, अथवा पहेलां पण गुप्त छे अने हमणां पण गुप्त छे १, अगुप्त पण एम ज समजवुं. तथा कूटना जेवो आकार छे जे शालानो अर्थात् गृहविशेषनो ते कूटागारशाळा. स्त्रीलक्षण दार्षीतिक अर्थना समानताना वश्यी. आ स्त्रीलिंगमां दृष्टांत छे. तत्र गुप्ता-परिवारवडे वींटायेली, घरमां रहेली, वस्त्रादिवडे आच्छा-दित अंगवाळी, गृह स्वभाववाळी अथवा गुप्त इंद्रियवाळी अथवा अनुचित प्रवृत्तिमां प्रवृत्त इंद्रियोने काबूमां राखनारी, एवी रीते

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद गा ३८४ ॥

बाकीना भांगा जाणवा. (स्० २७५) हमणां ज गुप्तेंद्रियपणुं कश्चं, अने इंद्रियो अवगाहनाना आश्रयवाळी छे माटे अवगाह-नातुं निरूपण करनारुं सूत्र कहे छे-अवगाहे छे-रहे छे जेणीने विषे, अथवा जीवो जेणीना आश्रय करे छे ते अवगाहना, अर्थात् शरीर. द्रव्यथी अवगाहना ते द्रव्यावगाहना, एम ज सर्वत्र जाणवं. तत्र द्रव्यथी अनंत द्रव्यह्रप छे, अर्थात् अनंत परमाणुमयी छे. क्षेत्रथी असंख्यात प्रदेशमां रहेनारी, कालथी असंख्यात समयनी स्थितिवाळी, भावथी वर्णीदि अनंत गुणवाळी छे. अथवा विवक्षित द्रव्यना आधारभूत आकाशप्रदेशो ते अवगाहनाः तेमां द्रव्योनी अवगाहना ते द्रव्यावगाहना, क्षेत्र ए ज अवगाहना ते क्षेत्रावगहना, कालनी अवगाहना एटले मुनुष्यक्षेत्रमां वर्तती ते कालावगाहना अने भाव(पर्याय)वाळा द्रव्योनी अवगाहना ते भावावगाहना भावनी मुख्यताथी कहेली छे. अथवा आश्रय मात्र अवगाहना, तेमां पर्यायोवडे द्रव्यनो आश्रय ते द्रव्यावगाहना, एमज क्षेत्रनो अने कालनो पर्यायोवहे आश्रय करवो-पर्यायोनो द्रव्यवहे आश्रय करवो अथवा बीजी रीते योजना करीने व्याख्या करवी. (स्व० २७६) अवगाहनानी प्ररूपणा प्रज्ञप्तिओने विषे करेली छे. माटे प्रज्ञप्तिनुं चतुःस्थानक सूत्र जणावे छे-विशेषधै जणाय छे अथीं जेणीने निषे ते प्रज्ञप्तिओ, आचारादि अंग सूत्रथी बाहिर ते अंगवाह्या, जे प्रमाणे नाम छे ते प्रमाणे तेमां वर्णन-वाळी कालिकस्त्ररूप छे, तेमां स्र्यप्रज्ञप्ति, पंचम अंगना उपांगभृत छे अने जंबुद्वीपपज्ञप्ति छटा अंगना उपांगरूप छे, बाकीनी बे प्रज्ञप्ति प्रकीर्णकरूप छे. पांचमी व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवती) छे, परंतु ते अंगप्रविष्ट छे माटे अहीं आ चार ज कहेली छे.

॥ चतःस्थानकृना प्रथम उद्देशकनी दीकान्ग्रे अनुवाद सुमाप्त ॥

४ स्थान :
३ काश्ययने
३ देशः १
अप्रमाह्व्यः
संकृतयः
कृटागाराः स०
२७३-७५

॥ ३८४ ॥

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ चतुःस्थानकाध्ययने द्वितीय उद्देशः

चोथा स्थानकना प्रथम उद्देशकतुं व्याख्यान कर्युं, हवे बीजा उद्देशकनो आरंभ करीए छीए. आनो पूर्व उद्देशकनी साथे आ प्रमाणे संबंध छे-अनंतर उद्देशकमां जीवादि द्रव्य अने पर्यायोगा चार स्थानको कह्यां, अहिं पण तेओनां ज चार स्थानको कहेवाय छे. आवी रीते संबंधविशिष्ट आ उद्देशकना पहेलां चार सूत्रो--

चत्तारि पडिसंठीणा पं० तं०-कोहपडिसंठीणे माणपडिसंठीणे मायापडिसंठीणे छोभपडिसंठीणे, चत्तारि अपडिसंठीणा पं० तं०-कोहअपडिसंठीणे जाव छोभअपडिसंठीणे, चत्तारि पडिसंठीणा पं० तं०-मणपडिसंठीणे वित्रिष्ठिसंठीणे कायपडिसंठीणे इंदियपडिसंठीणे, चतारि अपडिसंठीणा पं० तं०-मणअपडिसंठीणे जाव इंदियअपडिसंठीणे ४। सू० २७८, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-दीणे णाममेगे दीणे, दीणे णाममेगे अदीणे, अदीणे णाममेगे अदीणे णाममेगे अदीणे पाममेगे दीणे, उत्तिजाया पं० तं०-दीण णाममेगे दीणपरिणते, दीणे णामं एगे अदीण-परिणते, अदीणे णामं एगे दीणपरिणते, अदीणे णामं एगे योष्ठीण णामं एगे दीणपरिणते, अदीणे णामं एगे दीणपरिणते, अदीणे णामं एगे दीणपरिणते, अदीणे णामं एगे योष्ठीण णामं एगे योष्ठीण णामं एगे दीणपरिणते, अदीणे णामं एगे योष्ठीण णामं परिण णामं एगे योष्ठीण णामं एगे योष्ठीण णामं परिण ण

भीस्था-नाङ्गधत्र सानुवाद ।} ३८५॥

पं० तं - दीणे णाममेंगे दीणरूबे० ४ (३), एवं दीणमणे ४ (४), दीणसंकष्पे ४ (५), दीणपन्ने ४ (६), दीणदिट्ठी ४ (७), दीणसीलाचारे ४ (८), दीणववहारे ४ (९), चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-दीणे णाममेंगे दीणपरक्कमे, दीणे णाममेंगे अदीण० ४ (१०), एवं सब्वेसिं चउ-भंगो भाणियव्वो, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-दीणे णाममेंगे दीणवित्ती ४ (११), एवं दीणजाती ४ (१२), दीणभासी (१३), दीणोभासी (१४), चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-दीणे णाममेंगे दीणसेनी ०४ (१५), एवं दीणे णाममेंगे दीणपरियाए ४ (१६), दीणे णाममेंगे दीणपरियाले० १ (१७) सब्वत्थ चडभंगो। सू० २७९

मूलार्थ:-चार प्रतिसंलीनो-क्रोधादिनो निरोध करनारा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-क्रोधप्रतिसंलीन, मानप्रतिसंलीन, मायाप्रतिसंलीन अने लोभप्रतिसंलीन. चार अप्रतिसंलीनो-क्रोधादिनो निरोध न करनारा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-क्रोधा अप्रतिसंलीन यावत् लोभअप्रतिसंलीन. वळी चार प्रतिसंलीनो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-मनप्रतिसंलीन, वचनप्रतिसंलीन, कायप्रतिसंलीन अने इंद्रियप्रतिसंलीन. चार अप्रतिसंलीन कहेला छे, ते आ प्रमाणे-मनअप्रतिसंलीन यावत् इंद्रियअप्रतिसंलीन (सू० २७८) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक पुरुष पूर्वे उपार्जित लक्ष्मीथी क्षीण-दीन-गरीब अने

काध्ययने उद्देशः २ प्रतिसंलीन-तादिः दीन।दि-प्रकासः स्०२७८-90

11 364 11

पछीथी पण दिन १, एक बाह्यवृत्तिथी दीन पण अभ्यंतरवृत्तिथी अदीन २, एक बाह्यवृत्तिथी अदीन अने अंतरवृत्तिथी दीन ३ तेमज एक बाह्यवृत्तिथी अदीन अने अंतरवृत्तिथी पण अदीन ४ (१), एक पुरुष शरीरथी रांकडा जेवी अने अंतरवृत्तिथी पण दीनपणाए परिणत अर्थात दीनपणाने पामेल-कायर १. एक पुरुष बाह्यवृत्तिथी दीन पण अंतरंग परिणामथी अदीन-हिम्मतवाळी २. एक शरीरथी अदीन-प्रष्ट अने अंतरंग परिणामथी दीन-कायर ३ तेमज एक शरीरथी पण अदीन-मजबूत अने अंतरंग परिणामथी पण अदीन-ऋरवीर ४ (२), कोईएक पुरुष शरीरथी दीन अने मलिन वस्त्रादिनी अपेक्षाथी पण दीनरूप-रांकडा जेवो १. कोई-एक शरीरथी दीन पण सुंदर बस्तादिवडे अदीन रूपवाळो २, कोईएक शरीरथी अदीन पण मलिन बस्तादिवडे दीन रूपवाळो ३ तेमज कोईएक पुरुष शरीरथी अदीन अने श्रेष्ठ वस्त्रादिवडे पण अदीन रूपवाटो ४ (३), एवी रीते एक पुरुष शरीरथी दीन अने दीन मनवाळो छे १. एक शरीरथी दीन पण मनथी अदीन छे २, एक शरीरथी अदीन पण मनथी दीन छे ३ तेमज एक शरीरथी अदीन अने मनथी पण अदीन छे ४ (४), एक शरीरथी दीन अने दीन संकल्पवाळी छे १, एक शरीरथी दीन पण अदीन संकल्पवाळो छे २, एक शरीरथी अदीन पण दीन संकल्पवाळो छे ३,तेमज एक शरीर अने संकल्प बन्नेथी अदीन छे ४ (५), एक श्वरीरथी दीन अने प्रज्ञाथी पण दीन छे ?,एक श्वरीरथी दीन पण प्रज्ञाथी श्रेष्ठ छे २. एक श्वरीरथी अदीन पण प्रजाधी दीन छे ३ तेमज एक शरीर अने प्रज्ञा बकेशी अदीन (श्रेष्ठ) छे ४ (६),एक शरीरथी दीन अने चक्षुना तेजशी पण हीन छे १,एक शरीरथी दीन पण चक्षना तेजवाद्यो छे २, एक शरीरथी अदीन पण चक्षुना तेजथी हीन छे ३ तेमज एक शरीर अने चक्षुना तेज बन्नेथी अदीन (श्रेष्ठ) छे ४ (७).कोईएक शरीरथी दीन अने शीलाचारथी पण होन छे १,एक शरीरथी दीन पण शीलाचारथी श्रेष्ठ छे २, एक शरीरथी अदीन अने

भीस्था-नाङ्गधत्र सानुवाद ॥ ३८६ ॥ श्रीलाचारथी हीन छे ३, तेमज एक शरीरथी अदीन अने श्रेष्ठ शीलाचारवाळो छे ४ (८), एक शरीरथी दीन अने दानादि क्रियाथी पण हीन-दीन व्यवहारवाळो छे १. एक घरीरथी दीन पण अदीन व्यवहार वाळो-दानादि कियाथी श्रेष्ठ छे २, एक घरीरथी अदीन पण हीन व्यवहारवाळो छे ३. तेमज एक शरीरथी अदीन अने श्रेष्ठ व्यवहारवाळो छे ४ (९). चार प्रकारना पुरुषो कह्या छे, ते आ प्रमाणे -एक शरीरयी दीन अने हीन पराक्रमवाळो छे १, एक शरीरयी दीन पण पराक्रमथी अदीन २, एक शरीरयी अदीन पण पराक्रमथी दीन ३ तेमज एक शरीरथी अदीन अने पराक्रमथी पण अदीन छे ४ (१०), एवी रीते दरेक सत्रोमां चार भांगाओ कहेवा. चार प्रकारना पुरुषो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-एक शरीरथी दीन अने दीन वृत्ति -दीननी मार्कक वर्त्तन(आजी-विका)वाळो छे १, एक शरीरथी दीन पण अदीन वर्त्तनवाळो छे २,एक शरीरथी अदीन पण दीन वर्तनवाळो छे ३ तेमज एक शरीरथी अदीन अने अदीन वर्त्तनवाळो छे ४ (११), एक शरीरथी दीन अने हीन जातित्राळो छे १, एक शरीरथी दीन पण श्रेष्ठ जातिवाळो छे २. एक शरीरथी अदीन पण हीन जातिवाळो छे ३ तेमज एक शरीरथी अदीन अने श्रेष्ठ जातिवाळो छे ४ (१२), एक शरीरथी दीन अने दीनभाषी-दीन वचन बोलनार छे १. एक शरीरथी दीन पण अदीनभाषी छे २. एक शरीरथी अदीन पण दीनभाषी छे ३ तेमज एक शरीरथी अदीन अने अदीनभाषी छे ४ (१३),एक शरीरथी दीन अने दीननी माफक देखाय छे १, एक शरीरथी दीन पण अदीननी माफक देखाय छे २. एक शरीरथी अदीन पण दीननी माफक देखाय छे ३ तेमज एक शरीरथी अदीन अने अदीननी माफक देखाय छे ४ (१४), चार प्रकारे प्रकृषों कहेला छे, ते आ प्रमागे-एक शरीरथी दीन अने दीन नायकनी सेवा करनार छे १. एक शरीरथी दीन पण अदीन नायकनी सेवा करनार छे २. एक शरीरथी अदीन पण दीन

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः ३ प्रतिसंलीन-तादिः दीनादि-प्रकाराः मू० २७८-

11 3/8 11

नायकनी सेवा करनार छे २ तेमज एक श्ररीरथी अदीन अने अदीन नायकनी सेवा करनार छे ४ (१५), एक श्ररीरथी दीन अने पर्यायथी दीन-हीन संयमवाळो छे १, एक श्ररीरथी दीन पण श्रेष्ठ संयमवाळो छे २, एक श्ररीरथी अदीन पण संयमथी हीन छे २ तेमज एक श्ररीरथी अदीन अने संयमथी पण अदीन (श्रेष्ठ) छे ४ (१६),एक श्ररीरथी दीन अने दीन परिवारवाळो छे १, एक श्ररीरथी दीन पण अदीन परिवारवाळो छे २, एक श्ररीरथी अदीन पण दीन परिवारवाळो छे २ तेमज एक श्ररीरथी अदीन अने अदीन परिवारवाळो छे ४ (१७). सर्वत्र चार-चार मांगा जाणवा (स्०२७९)

टीकार्थः-'चत्तारि पडिसंलीणे'त्यादि० आनो पूर्वना सूत्र साथे आ प्रमाणे संबंध छे-अनंतर प्रत्रमां प्रज्ञप्तिओ कही. ते प्रतिसंलीन पुरुषोवडे ज समजाय छे, माटे प्रतिसंजीनो अने अप्रतिसंलीनो आ सूत्रवडे कहेवाय छे. आ प्रमाणे संबंध जाणवी. आ सूत्र सुगम छे. विशेष ए के-प्रत्येक वस्तुमां कोधादिकनो निरोध करनारा ते प्रतिसंलीनो. तेमां क्रोधना उदयने अटकाववावडे अने उदय थयेल क्रोधने निष्कळ करवावडे क्रोधने अटकाववावडे अने उदय थयेल क्रोधने निष्कळ करवावडे क्रोधने अटकावनारा ते क्रोधप्रतिसंलीनो कहेवाय. कर्ड्य छे के-

उद्यस्सेव निरोहो, उद्यव्यत्ताण वाऽफळीकरणं । जं एत्थ कसायाणं, कसायसंळीणया एसा ॥७३॥

कषायोना उदयनो ज निरोध करवो अने उदयप्राप्त कषायो निष्कल करवा ते कषायसंलीनता जाणवी.

कुशल मननी उदीरणा-प्रवृत्तिवडे अने अकुशल मननो निरोध करवावडे जेतुं मन काब्राळं छे ते प्रतिसंलीन, अथवा मनवडे निरोध करनार ते मनःप्रतिसंलीन. एम ज वचन, काया अने इंद्रियने विष पण जाणवुं. विशेष ए के-मनोज्ञ अने भीस्था-नाङ्गधत्र साजुनाद भ २८७ ।)

अमनोज्ञ शब्दादि विषयोने विषे राग-द्वेषने द्र करनार ते इंद्रियप्रितसंलीन जाणवा. आ संबंधमां गाथा दर्शावे छे के-अपसरथाण निरोहो,जोगाणमुदीरणं च कुसलाणं। कज्जंमि य विही गमणं, जोगे संलीणया भणिया।।७४

अप्रशस्त योगोनो निरोध करवो अने दुशल योगोनी प्रशृत्ति करवी, कार्यप्रसंगे विधिशी जबुं आ योग विषयक संलीनता जाणवी. सदेसु य भद्यपावएसु, सोयविसमुवगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयठवं ॥ ७५॥ श्रोत्रेद्वियना विषयने-सारा अने खराब शब्दो प्राप्त थये छते साधुए राग-द्वेष न करवो जोईए.

एम ज चक्षुःइंद्रिय विगरेमां पण कहेवुं. एवी रीते विपरीतपणाथी मन विगरेथी असंलीन थाय छे. (स्०२७८) प्रकारांतरथी असंलीनने ज चतुर्भगीरूप सत्तर दीन सत्रोवडे कहे छे—

दीन-गरीबाईवाळो, उपार्जित धनवडे क्षीण-गरीब, पहेलां अने पछी पण दीन जः अथवा बाह्यवृत्तिवडे दीन, अने अंतर्वृत्तिथी पण दीन इत्यादि *चतुर्भगी जाणवी. १, तथा दीन-बाह्यवृत्तिथी अर्थात् निस्तेज मुख विगरे पण शरीरथी गुण युक्त, एवी रीते प्रज्ञासत्र पर्यंत प्रथम दीनपदनी व्याख्या करवी. दीनपरिणत-दीन नथी छतां अंतर्वृत्तिवडे दीनपणाए परिणत अर्थात् दीन थयेल छे इत्यादि चतुर्भगी २, तथा दीनरूप-मेलां, जूनां बस्नादि पहेरवानी अपेक्षाए ३, वळी दीनमनः-स्वभावथी ज तुच्छ मनवाळो ४, हीनसंकलप-स्वाभाविक मन उदार छते पण कंईक न्यून विचारवाळो, ५, दीनप्रज्ञ-सक्ष्म अर्थना

अह टीकाकारे एक ज भंग बतावेल छे परन्तु मूलानुवाद्यी सत्तर सूत्रनीं चतुर्भंगी जाणवी.

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः २ प्रतिसंलीन-तादिः दी-नादिप्रका-सः स्र० २७८— ७९

ा ३८७ ॥

विचारमां हीनतावाळी ६, चित्त विगेरेथी दीन. एवी रीते आदि पदरूप दीन शब्दनी व्याख्या आगळना स्त्रमां करवी.दीनदृष्टि— ओछी नजरवाळो ७, दीनशीलाचार-हीन धर्मानुष्ठानवाळो ८, दीनव्यवहार—परस्पर लेबादेवामां हीन क्रियावाळो, अथवा हीन विवादवाळो ९, दीन पराक्रम—हीन उद्यमवाळो १०, दीननी माफक वृत्ति—वर्तन अर्थात् आजीविका छे जेन ते दीनवृत्ति ११, दीनतावाळा पुरुष प्रत्ये याचे छे अथवा स्वयं दीन जेवो बनीने याचे छे एवा स्वभाववाळो ते दीनयाची, अथवा दीन पुरुष प्रत्ये जाय छे ते दीनयायी अथवा दीन जाति छे जेनी ते दीनजाति १२, तथा दीननी जेम दीन पुरुष प्रत्ये बोले छे ते दीनमाषी १३, दीनना जेवो देखाय छे ते दीनावभाषी अथवा दीन जेवो थईने याचे छे एवा स्वभाववाळो ते दीनावभाषी १४, दीन नायकने सेवे छे ते दीनसेवी १५, दीननी माफक पर्याय—प्रवच्या विगेरे लक्षणवाळी अवस्था छे जेने ते दीनपर्याय १६ 'दीनपरियाले'त्ति० दीन परिवार छे जेनो ते दीनपरिवार १७, 'सञ्बत्य चउभंगो ' त्ति० बधाय स्त्रमां चार भांगा जाणवा (स० २७९) पुरुषना भेदना अधिकारवाळां अढार सत्रो कहे छे—

चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-अजे णाममेगे अजे(४)१,चत्तारि पुरिसजाता पं० तं० अजे णाममेगे अजपरिणए (४) २, एवं अजरूवे ३, अजमणे ४, अजसंकप्पे ५, अजपन्ने ६, अजदिट्टी ७, अजसीला-चारे ८, अजववहारे ९, अजपरक्रमे १०, अजवित्ती ११, अजजाती १२, अजभासी १३, अजओभासी १४, अज्ञसेवी १५, एवं अज्ञपरियाए १६, अज्ञपरियाले १७, एवं सत्तर[स] आलावगा जहा दीणेणं

श्रीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद १। ३८८॥ **

भणिया तहा अज्ञेणवि भाणियव्वा,चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अज्ञे णाम मेगे अज्ञभावे अज्ञे नाममेगे अणज्ञभावे अणज्ञे नाममेगे अज्जभावे अणज्जे नाममेगे अणज्जभावे १८। सू ०२८०, चत्तारि उसभा पं० तं०-जातिसंपन्ने कुलसंपन्ने बलसंपन्ने रूत्रसं गन्ने,एतामेव चतारि पुरिस जाया पं०तं०-जातिसंपन्ने जाव रूवसंपन्ने १, चतारि उसमा पं० तं०-जातिसंगन्ने णामं एगे नो कुलसंपन्ने, कुलसंपन्ने नामं एगे नो जाइसंपण्णे एगे जातिसंपन्नेवि कुलसंपन्नेवि, एगे नो जातिसंपन्ने, नो कुलसंपन्ने एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जाइसंपन्ने नाममेगे० ४-२,चत्तारि उसभा पं० तं०-जाइसंपन्ने नामं एगे नो बत्तसंपन्ने० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जातिसंपन्ने [नामं एगे नो बलसं-पन्ने । ४-३, चत्तारि उसमा पं० तं०-जातिसंग्ने नामं एगे नो रूबसंपन्ने० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जाइसंपन्ने नामं एगे नो रूबसंपन्ने, रूबसंपन्ने णाममेगे० ४-४, चतारि उसभा पं॰ तं॰-कुलसंपन्ने नामं एगे नो बलसंपन्ने॰ ४, एवामेव चतारि पुरिसजाया पं॰ तं॰-कुलसंपन्ने नाममेगे नोबलसंपन्ने १-५,चतारि उसमा पं॰ तं०-कुलसंपन्ने णामनेगे णो रूव-

४ स्थानः काष्ययने उद्देशः २ आर्यादि-प्रकाराः र्वभहस्ति-दृष्टान्ता

11 3// 12

संपन्ते० ४ एवामेव चतारि पुरिसजाया पं० तं०-कुलसंपन्ते णाममेगे नो रूवसंपन्ते० ४-६, चत्तारि उसमा पं० तं०-बलसंगन्ने णाममेगे नो रूबसंपण्णे० ४, एवामेव-चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-बलसंपन्ने नाममेगे नो रूबसंपन्ने० ४-७, चत्तारि हत्थी पं० तं०-भद्दे मंदे मिते संकिन्ने, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-भद्दे मंद्दे मिते संकिन्ने, चत्तारि हत्थी पं० तं०-भद्दे णाम-मेगे भइमणे, भद्दे णाममेगे मंद्रमणे, भद्दे णाममेगे मियमणे, भद्दे णाममेगे संकिन्नमणे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-भद्दे णाममेगे भद्दमणे, भद्दे णाममेगे मंद्रमणे, भद्दे णाममेगे मियमणे, भद्दे णाममेगे संकिन्नमणे, चत्तारि हत्थी पं० तं०-मंदे णाममेगे भद्दमणे मंदे नाममेगे मंदमणे मंदे णाममेगे नियमणे मदे णाममेगे संकिन्नमणे, एवामेव चत्तारि पुरिस जाया पं० तं०-मंदे णा-ममेगे भइमणे तं चेव, चतारि हत्थी पं० तं०-मिते णाममेगे मंदमणे मिते णाममेगे मंदमणे मिते णाममें भियमणे मिते णाममें संकिन्नमणे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-मिते णाममेंगे भद्दमणे तं चेव, चत्तारि हत्थी पं॰ तं॰-संकिण्णे नाममेगे भद्दमणे संकिन्ने नाममेगे मंद्रमणे

For Private and Personal Use Only

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद भ ३८९ ॥

संकिण्णे नाममेगे मियमणे संकिण्णे नाममेगे संकिण्णमणे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०— संकिण्णे नाममेगे भहमणे तं चेव जाव संकिन्ने नाममेगे संकिन्नमणे,—मधुगुलियपिंगलक्खों, अणुपुव्वसुजायदीहणंगूलो । पुरओ उद्ग्गधीरो सव्वंगसमाधितो भहो॥१॥चलबहलविसमचंभो, थूलिसरो थूलएण पेएण । थूलणहदंतवालो,हिरिपंगललोयणो मंदो ॥ २॥ तणुओ तणुतग्गीवो, तणुयततो तणुयदंतणहवालो । भीरू तर्थुव्विग्गो,तासी य भवे मिते णामं ॥३॥ एतेसिं हर्थीणं, थोवं थोवं तु जो हरित हर्थी । रूवेण व सीलेण व, सो संकिन्नोति नायव्वो ॥ ४॥ भहो मज्जइ सरए, मंदो उण मज्जते वसंतिम । मिउ मज्जति हेमंते, संकिन्नो सव्वकालंमि॥ ४॥ सू० २८१

मूलार्थ:—चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—एक क्षेत्रथी आर्य अने वली पापकर्मने न करवाथी आर्य १, एक क्षेत्रथी आर्य पण पापकर्मने करवाथी अन्य २, एक क्षेत्रथी अनार्य पण पापकर्मने करवाथी आर्य ३, तेमज एक क्षेत्रथी अनार्य अने पापकर्मने करवाथी पण अनार्य ४-१, चार प्रकारे पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—एक क्षेत्रथी आर्य अने आर्य परिणामवाळो १, एक आर्य अने अनार्यपरिणत २, एक अनार्य पण आर्यपरिणत ३ तेमज एक अनार्य अने अनार्यपरिणत ४-२, एवी रीते आर्य रूप ३, आर्य मन ४, आर्य मंकल्प ५, आर्य प्रज्ञ ६, आर्य दृष्टि ७, आर्य शीलाचार ८. आर्य द्य-

४ स्थानः काध्यय**ने** उद्देश: २ आर्यादि-प्रकाराः**:** वृषभहास्त-दृष्टान्ताः

1 3/6 11

वहार ९, आर्य प्रराक्रम १०,आर्य वृत्ति ११,आर्य जाति १२, आर्य भाषी १३, आर्य अवभासी १४,आर्य सेवी १५, आर्यपर्याय १६ अने आर्य परिवार १७, जेवी रीते दीन शब्द साथे सत्तर आलापको कहेला छे तेवी रीते आर्य शब्द साथे पण सत्तर आलापको कहेवा अर्थात् सत्तर चोर्भगीओ करवी. फक्त 'दीन' शब्दने स्थाने आर्य शब्द जोडवो अने 'अदीन'ने स्थाने अनार्य शब्द जोडवो. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक क्षेत्रथी आर्य छे अने ज्ञानादिगुण युक्त होवाथी आर्यभाववाळो छे १, कोईक क्षेत्रथी आर्य पण कोधादिकथी अनार्यभाववाळो छे २, कोईक क्षेत्रथी अनार्य पण ज्ञानादिथी आर्यभाववाळो छे ३ तमज कोईक क्षेत्रथी अनार्य अने क्रोधादिथी पण अनार्यभाववाळो छे. (स्० २८०) चार प्रकारना वृषभ-बळदो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-माताना पक्षवडे युक्त ते जातिसंपन्न, पिताना पक्षवडे युक्त ते कुलसंपन्न, भार वहन करवानी शक्ति युक्त ते बलसंपन्न तेमज शरीरना सौंदर्यवडे युक्त ते रूपसंपन्न, आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-जातिसंपन्न. यावत पद्यी कुलसंपन्न, बलसंपन्न अने रूपसंपन्न. १. चार प्रकारना बळदो कहेला छे, ते आ प्रमाण-कोईक बळद जाितसंपन्न छे पण कुलसंपन्न नथी १, कोई एक कुलसंपन्न छे पण जातिसंपन्न नथी २, कोई एक जातिसंपन्न अने कुलसंपन्न पण छे ३ तेमज कोई एक जातिसंपन्न पण नथी अने कुलसंपन्न पण नथी. ४. आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, त आ प्रमाणे-कोईएक पुरुष जातिसंपन्न छे पण कुलसंपन्न नथी १, कोई एक कुलसंपन्न छे पण जातिसंपन्न नथी २ कोईक जाति अने कुल बनेशी संपन्न छे र तेमज कोईक जाति अने कुल बनेशी संपन्न नथी.४-२,चार प्रकारना बळदो कहेला छे,ते आ प्रमाण-कोई एक बळद जातिसंपन छे पण बलसंपन नथी, कोईक बलसंपन्न छे पण जातिसंपन्न नथी, कोईक जाति अने बल

श्रीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद भ. ३९० ॥ **

बन्नेथी संपन्न छे तेमज कोईक जाति अने बल बन्नेथी संपन्न नथी.४,आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे,ते आ प्रमाणे कोई एक पुरुष जातिसंपन्न छे पण बलंसपन्न नथी एवी रीते जाति अने बल शब्दथी चतुर्भगी करवी ४-३, चार प्रकारना वृषमो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोई एक वृषभ जातिसंपन्न छे पण रूपंसपन्न नथी, कोईएक रूपसंपन्न छे पण जातिसंपन्न नथी, कोईक जाति अने रूप बन्नेथी संपन्न छे तेमज कोईक बंनेथी संपन्न नथी ४, आ दृष्टांते चार प्रकारना प्ररुपो कहेला छे, ते आ प्रमाण-कोई एक पुरुष जातिसंपन्न छे पण रूपसंपन्न नथी, एवी रीते जाति अने रूप शब्दनी चतुर्भगी करवी ४-४, चार प्रकारना वृषभो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक वृषभ कुलसंपन्न छे पण बलसपन्न नथी, कोईक कुलसंपन्न नथी पण बलंसपन्न छे, कोईक कुल अने बल बंनेथी संपन्न छे तेमज कोईक ते बंनेथी संपन्न नथी. आ द्रष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे,ते आ प्रमाणे-कोईक पुरुष कलसंप न छे पण बलसंपन्न नथी एवी रीते कुल अने बल शब्दनी चतुर्भगी करवी ४-५. चार प्रकारना वृषमो कहेला छे ते आ प्रमाणे-कोईक वृषम कुलंसपन्न छे पण रूपसंपन्न नथी, कोईक कुलंसपन्न नथी पण रूपंसपन्न छे,कोईक कुल अने रूप बंनेथी संपन्न है तेमज कोईक ते बन्नेथी संपन्न नथी.ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-कोईक पुरुष कलसंपन्न छे पण रूप संपन्न नथी एवी रीते कल अने रूप शब्दनी चोभंगी करवी ४-६ चार प्रकारना वृषमो कहेला छे ते आ प्रमाणे-कोईक वृषभ बलसंप न छे पण रूपसंप न नथी, कोईक बलसंपन नथी पण रूपसंपन्न छे, कोईक बल अने रूप बन्नेथी संपन्न छे तेमज बन्नेथी संपन्न नथी. आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक पुरुष बलसंपन्न छे पण रूपसंपन्न नथी. एवी रीते बल अने रूपशब्दवडे चतुर्भगी करवी. ४-७

४ स्थानः काश्ययने उद्देशः २ आर्यादि-**प्रकाराः** 🏖 🛚 वृषभहास्ति-दष्टान्ताः

11 390 11

દદ

चार प्रकारना हस्ती कहेल छे, ते आ प्रमाणे-भद्र, मंद, मृग अने संकीर्ण. आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुशे कहेला छे, ते आ प्रमाणे-भद्र, मंद, मृग अने संकीर्ण. चार प्रकारना हस्ती कहेल छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक हाथी जाति अने आकार-थी भद्र (प्रशस्त) छे अने भद्रमनवाळी-धैर्यवाळो छे, कोईक जाति विगेरेथी भद्र छे अने मंद मनवाळो छे-अतिथीर नहि, कोईक जाति विगेरेथी भद्र अने मृगमनवाळो-बीकण छे तेमज कोईक जाति विगेरेथी भद्र अने संकीर्णमनवाळो-विचित्र स्वभाववाळो छे. आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक पुरुष जाति विगरेथी उत्तम छे अने धैर्य मनशळो छे, कोईक जाति विगेरेथी भद्र छे पण मेंद मनवाळो छे अर्थात् बहु धैर्यवाळो नथी, कोईक जाति विगेरेथी भद्र छे पण सगमनवाळो-भीरु छे तेमज कोईक जातिथी भद्र छे पण विचित्र मनवाळो छे. चार प्रकारना हस्ती कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक हस्ती जातिथी मंद पण भद्रमनवाळो छे, कोईएक जातिथी मंद अने मंद मनवाळो छे, कोईएक जातिथी मंद पण मृग (भीरु) मनवाळो छे तेमज कोईक हाथी जातिथी मंद पण संकीर्ण मनवाळो छे. आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक पुरुष जातिथी मंद पण भद्र मनवाळो छे. हस्तीनी माफक पुरुषमां पण चार भांगा कहेवा. चार प्रकारना हाथी कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक हाथी जातिथी मृग पण भद्रमनवाळो छे-धीर छे, कोईक जातिथी मृग अने मंद मनवाळो छे, कोईक जातिथी मृग अने मृग मनत्राळो (भीरु) छे तेमज कोईएक हाथी जातिथी मृग पण संकीर्ण (विचित्र) मनत्राळो छे. आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक पुरुष जातिथी मृग पण भद्र मनवाळी छे, एवी रीते हाथीनी माफक चार भांग ५०१मां पण कहेवा. चार प्रकारना हाथी कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक हाथी जातिथी संकीर्ण पण भद्र मनवाळी छे, कोईएक

भीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद १) ३९१॥

जातिथी संकीर्ण पण मंद मनवाळो छे, कोईएक जातिथी संकीर्ण पण मृग(भीरु) मनवाळो छे तेमज कोई एक हाथी जातिथी संकीर्ण अने संकीर्ण मनवाळो छे. मधनी गुटिका जेवी पिंगल-कंईक राती अने कंईक पीळी आंखोवाळो, योग्य काळे उत्पन्न थयेलो, लांबा पूंछ डावाळो, आगळनो भाग-मस्तकनो भाग ऊंचो, धैर्यवालो अने प्रमाणोपेत सर्व अंगोपांगवाळो भद्र जातिनो हाथी होय छे १. ढीली. जाडी अने विषम (लीलरी सहित) चामडवाळो, स्थूल मस्तकवाळो, स्थूल पूंछडाना मूलवाळो, स्थूल नख, दांत तथा वाळवाळो अने सिंहना जेवा पिंगल नेत्रवाळो मंद जातिनो हाथी होय छे २, कुश शरीर अने कुश (पातळी) ग्रीवा-वादो, कुश चामडी, कुश नख, दांत अने वाद्यवारो, भीरु, त्रास पामेली, खेदवाद्यो, बीजाने त्रास उत्पन्न करनार मृग नामनो हाथी कहेवाय छे ३, आ उपर्युक्त त्रण जातिना हाथीना गुणोनुं रूपवडे अने स्वभाववडे थोडुं थोडुं अनुसरण करनार ते संकर्णि जातिनो हाथी जाणवो ४. भद्र जातिना हाथीनो मद शरद् ऋतुमां झरे छे, मंद जातिना हाथीनो मद वसंत ऋतुमां झरे छे, मृग जातिना हाथीनो मद हेमंतऋतुमां झरे छे अने संकीर्ण जातिना हाथीनो मद छए ऋतुमां झरे छे. ५ (स० २८१) टीकार्थ:- आ सूत्री गतार्थ छे. विशेष ए के-आर्य नव प्रकारना छे ते जणाववा माटे गाथा कहे छे के-

खेते जाई कुल कम्म. सिप्प भासाइ नाणचरणे य। दंसणआरिय णवहा मिच्छा सगजवणखसमाइ ।७६।

बे प्रकारना आर्य छे-१ ऋदिप्राप्त अने २ अऋदिप्राप्त. ऋदिप्राप्त छ प्रकारना छे-१ तीर्थंकर, २ चक्रवर्त्ता, ३ बलदेव, ४ वासुदेव, ५ चारणमुनि अने ६ विद्याधर. अऋध्धिप्राप्त आर्य नव प्रकारना छे-१ आर्यक्षेत्रमां उत्पन्न ते क्षेत्रार्य, २ जातिआर्य- ४ स्थान-काध्ययने उद्देश: २ आर्यादि-प्रकाराः वृषभहस्ति-दृष्टान्ताः स्र०२८०-

11 398 1

अंबष्ट विगेरे जातिमां उत्पन्न थयेल, ३ उग्र, भोग विगेरे दुलमां उत्पन्न थयेल ते दुलआर्य, ४ इतर अने रू विगेरे अनिदित कर्म— कार्यने करनार ते कर्मआर्य, ५ विगेरे कार्य करनार ते शिल्पआर्य, ६ अर्द्धमागधी भाषाने बोलनार ते भाषाआर्य, ७ मितज्ञान विगेरे ज्ञानवाळो ते ज्ञानआर्य, ८ क्षायिक विगेरे समिकतवाळो ते दर्शनआर्य अने ९ सामायिक विगेरे चारित्रवाळो ते चारित्र-आर्य. पेयापेय अने भक्ष्यामक्ष्य विगेरेना विवेक रहित अने शास्त्रादिमां अप्रसिद्ध वेषवाळा अने भाषाने बोलनारा ते म्लेच्छो— अनार्यो शक. यवन अने खस विगेरे छे.

क्षेत्रथी आर्य, वळी पापकर्मथी रहित होवाथी अपाप-निष्पाप एवो अर्थ छे. एवी रीते ज सत्तर सूत्र जाणवा. क्षायिकादि भाववाळा ज्ञानादिवडे युक्त ते आर्यभाव, क्रोधादिवाळो ते अनार्यभाव (सू० २८०). दृष्टांत अने दार्ष्टांतिक अर्थ सिहत पुरुषजात-प्रकरण विकथा सूत्रनी पहेला कहेवाय छे, ते पाठथी ज सिध्ध छे. विशेष ए के-गुणवान मातानो पक्ष ते जाति, गुणवान पितानो पक्ष ते कुल, भारने वहन करवानुं सामर्थ्य ते बळ अने शरीरनुं सौंदर्य ते रूप. पुरुषो तो स्वयं विचारी लेवा २, उपर्युक्त दृष्टांतसूत्रो पुरुषना दार्ष्टांतिक सूत्रो सिहत तो जाति विगेरे चार पदोने पृथ्वी उपर स्थापीने छ द्विकसंयोगी 'जातिसंपन्न पण कुलसंपन्न निहं' इत्यादि स्थान(भांगा)ना क्रमवडे छं ज चतुर्भंगी-वडे जाणी लेवा. हाथीना सूत्रमां भद्र जाति विगेरे हाथीना भेदी, वनादिविशेषित अने कहेवाता लक्षणवाळा छे, ते कहे छे-

^{*} जाति अने कुरुवडे १, जाति ने बळवडे २, जाति ने रूपवडे ३, कुल अने बलवडे ४, कुल ने रूपवडे ५ तेमज बल ने रूपवडे ६—आ प्रमाणे छ चोभंगीओ धाय छे.

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ∦ ३९२ ।।

"भद्र, मंद अने मृग-आ त्रण प्रकारना हाथीओ जाणवा. ते वनमां फरवाथी, आकारथी अने सन्त्र-पराक्रमना भेदथी जणाय छे." (१) तेमां भद्र हाथी धीरत्व विगेरे गुगोवडे युक्त होवाथी भद्रज छे, मंद्र हाथी धैर्य अने वेग विगेरे गुगोमां मंद्र होवाथी मंदज छे, मृग हाथी तनुत्व (पातळापणुं) अने बीक्रगपणुं विगेरे गुगोथी मृगज छे अने संक्षीं हाथी भद्र विगेरे हाथीओनां कंईक गुणोवडे मिश्रित होवाथी संक्षींग छे. पुरुष पग एवी रीते (हाथीनी माकक) विचारवी. दार्थीतिक सहित चार उत्तरस्त्रों छे, तेनी स्थापना-भद्र विगेरे चार पदो प्रथम स्थापवा, तेनी नी वे क्रमबंडे मद्रमन विगेरे स्थापीन कोईएक भद्रजातिनो अने भद्रमनवाळो छे. तेनो क्रम नी चे प्रमाणे जाणवी—

		१			ર				3				8			
भद्रः	भद्रः	भद्रः	भद्रः	मंदः	मंदः	मंदः	मंद:	मृगः	मृगः	मृगः	मृगः	संक्रीर्णः	मंकोर् <u>णः</u>	संक्रोर्णः	संकोर्णः	
												भद्र सनाः		-	संकोर्ण मनाः	

भद्र-जाति अने आकारवडे प्रशस्त तथा भद्र छे मन जेतुं अथवा भद्रनी जेम छे मन जेतुं ते भरमनवाळो अर्थात् धीर. मंद् छे मन जेतुं अथवा मंदनी जेम मन छे जेतुं ते ते मंदमनवाळो अर्थात् अत्यंत धीर नहि. एवी रीते मृगमना-भीरु. संकीर्ण-मनवाळो एटले भद्रादिना विचित्र लक्षणयुक्त-विचित्र चित्तवाळो.पुरुषो तो कहेवाता भद्रादि लक्षणना अनुसारे प्रशस्त अने अप्रशस्त

४ स्थान-काष्ययने उदेश: २ आर्यादि-प्रकाराः विष्महस्ति- **दृ**ष्टाःताः

स्वरूपवाळा मानवा. भद्रादिना लक्षण आ प्रमाणे-'महु'गाया-मधनी गोळीनी माफक पिंगळ नेत्र छे जेना ते मधुपिंगळ नेत्रवाळा , अनुपूर्ववडे-परंपरावडे सारी रीते उत्पन्न शयेल ते अनुपूर्वमुजात, पोतानी जातिने उचित काळना क्रमथी थयेल बल अने रूपादि गुणयुक्त थाय छे ते लांबा पूंछडाबाळो होय छे. अथवा अनुक्रमबडे-स्थूल, सक्ष्म अने अतिस्रक्षम स्वरूपवडे-सारी रीते थयेल लांबूं पूंछड छे जेतुं ते दीर्व पूंछडावाळी हाथी. मस्तकता अग्रभागमां उन्नत छे तथा धीर-डरनार नहीं, वळी बधा अंगो योग्य प्रमाणवाळा अने लक्षणयुक्तपणावडे व्यवस्थित छे जेना ते सर्वांगसमाहित भद्र नामवाळो हाथी विशेष छे ॥१॥ 'चल' गाहा-चल-शिथिल, बहुल-स्थूल अने विषम-लीलरी सहित चर्म छे जेतुं ते चलबहुलविषमचर्म, स्थूल मस्तकवाळो, स्थूल 'पेएण'त्ति० पूंछडाना मूलाडे युक्त, स्थूल नख, दांत अने केशवाळो, सिंहनी माफक विंगल नेत्रवाळी, मंद नामवाळी हाथी विशेष होय छे।। २।। 'तणु'गाहा -क्रुग्ने श्रीरवाळी अने क्रुग्न गरदन गळी, पातळी चामडी तथा नख, दांत अने पातळा केशवाळो, भीरु-बीकण (स्वभावथी त्रास पामेल), भवना कारणवर्शयी स्तब्ध-कानने स्थिर करवा विगेरे लक्षणयुक्त डरेलो, कष्टवाळो विहार-चालवा विगेरेमां उद्रेगवाळो एवो, पोते त्रास पामेल अने बीजाने पण त्रास आपे छे ते त्रासी, मृग नामना भेदवाळो हाथी होय छे।। ३ ॥ चोथी अने पांचमी गाथा सुगम छे. तथा-दंतेहिं हणइ भदो, मंदो हत्थेण आहणइ हत्थी। गताधरेहि य मिओ, संकिन्नो सन्त्रओ हणइ॥७७॥

For Private and Personal Use Only

भद्र जातिनो हाथी वे दांतवडे हणे छे, मंद जातिनो हाथी संहवडे हणे छे, मृग जातिना हाथी श्वरीर अने होठथी हणे छे

श्रीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ३९३॥

अने संकीर्ण जातिनो हाथी सर्वांगथी हणे छे. (स० २८१)

हमणां ज संकीर्ण जातिनो अने संकीर्ण मनवाद्यो कहेल छे, एमां मनतुं स्वरूप कह्युं छे, हवे वचनतुं स्वरूप कहेवा माटे विकथा अने कथाना प्रकरणने कहे छे—

चत्तारि विकहातो पं० तं०-इस्थिकहा भत्तकहा देसकहा रायकहा, इस्थिकहा चउविवहा पं० तं०-इरथीणं जाइकहा इरथीणं कुलकहा इरथीणं रूवकहा इरथीणं णेवरथकहा, भत्तकहा चउव्विहा पं० तं०-भत्तरस आवावकहा भत्तरस निव्वावकहा भत्तरस आरंभकहा भत्तरस निद्राणकहा, देस-कहा चउव्विहा पं० तं०-देसविहिकहा देसविकप्पकहा देसच्छंदकहा देसनेवस्थकहा, रायकहा चउविद्दा पं० तं - रन्नो अतिताणकहा रन्नो निजाणकहा रन्नो बलवाहणकहा रन्नो कोसकोट्टागार-कहा, चउिवहा धम्मकहा पं० तं०-अवखेवणी विवखेवणी संवेयणी निव्वेगणी. अवखेवणी कहा चउदिवहा पं० तं०-आयारअवस्वेवणी, ववहारअवस्वेवणी पन्नत्तिअवस्वेवणी दिद्विवातअवस्वेवणी, विवर्षेवणी कहा चउविहा पं० तं०-ससमयं कहेइ, ससमयं कहित्ता परसमयं कहेइ १, परसमयं कहेत्रा ससमयं ठावतित्रा भवति २, सम्मावातं कहेड् सम्मावातं कहेत्रा मिच्छावातं कहेड् ३, मिच्छा- ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ कथाः सु० २८२

11 393 11

वातं कहेता सम्मावातं ठावितत्ता भवित ४, संवेगणी कथा चउिवहा पं० तं०—इहलोगसंवेगणी परलोगसंवेगणी आतसरीरसंवेगणी परसरीरसंवेगणी, णिव्वेगणीकहा चउिवहा पं० तं०—इहलोगे दुिच्छा कम्मा इहलोगे दुहफलिववागसंजुत्ता भवंति १, इहलोगे दुिच्छा कम्मा परलोगे दुहफलिववागसंजुत्ता भवंति २,परलोगे दुिच्छा कम्मा इहलोगे दुहफलिववागसंजुत्ता भवंति ३,परलोगे दुिच्छा कम्मा इहलोगे सुहफलिववागसंजुत्ता भवंति ३,परलोगे दुिच्छा कम्मा परलोये दुहफलिववागसंजुत्ता भवंति ४, इहलोगे सुचिष्ठा कम्मा इहलोगे सुहफलिववागसंजुत्ता भवंति १, इहलोगे सुचिन्ना कम्मा इहलोगे सुहफलिववागसंजुत्ता भवंति १, इहलोगे सुचिन्ना कम्मा इहलोगे सुचिन्ना कम्मा परलोये ८। स्० २८२

मूलार्थ:-चार विकथाओं कहेली छे, ते आ प्रमाणे-स्वीकथा, भक्तकथा, देशकथा अने राजकथा. स्वीकथा चार प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-स्वीनी ब्राह्मणी विगेरे जाति संबंधी कथा, स्वीना इल संबंधी कथा एटले आ उत्तम कुलनी छे इत्यादि, स्वीना रूप संबंधी कथा-आ स्वीनुं रूप सारुं छे विगेरे, स्वीना नेपथ्य (वेष) संबंधी कथा १, भक्त-भोजन संबंधी कथा चार प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-आवापकथा-अग्रुक रसवर्तीमां अग्रुक शाक, घृत विगेरे चीजो जोईए, निर्वापकथा-आटला पक्वान्नना भेदो अने आटला व्यंजनना भेदो उपयोगमां आवे छे, भोजनना आरंभनी कथा-आ रसवर्तीमां आटला द्रव्यो-पदार्थी जोईए, भोजनना निष्टाननी कथा-आटला पैसानो खर्च आ रसोईमां थाय छे २, देशकथा चार प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-देशविधि-

श्रीस्था-नाङ्गध्त्र सानुवाद श ३९४॥

कथा-मगघादि देशनी रचना विगेरेनी कथा, देशविकल्पकथा-अग्रुक देशमां अग्रुक घान्य घणुं थाय छे विगेरे, देशच्छंदकथा-अमुक देशमां अमुक गम्य अने अमुक अगम्य छे इत्यादि, देशनेपध्यकथा—स्त्री-पुरुषोना वेशनी कथा ३, राजकथा चार प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-राजाना अतियान-नगरप्रवेशनी कथा, राजाना निर्याननी कथा-नगर बहार सवारी नीकळवानी कथा, राजाना वल अने वाहननी कथा अने राजाना भंडार तथा कोठार विगेरेनी कथा. चार प्रकारनी धर्मकथा कहेली छे, ते आ प्रमाणे-जेनावडे श्रोताने मोहथी खेंचीने तत्त्र प्रत्ये लई जवाय छे ते आक्षेपणी, श्रोताने क्रमार्गमांथी सन्मार्गमां अथरा सन्मार्गमांथी कुमार्गमां लई जवाय छे ते विक्षेपणी, श्रोताने वैराग्य उत्पन्न करावनारी ते संवेदनी अने श्रोताने संसारमांथी उदासीनता करावनारी ते निर्वेदनी कथा. आक्षेपणी कथा चार प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-साधना लोच विगरे आचारने प्रकाश करनारी कथा ते आचारआक्षेपणी, दोष टालवा माटे प्रायश्चित्तने प्रकाशनारी कथा ते व्यवहारआक्षेपणी, संशयवाळा श्रोताने मधुर वचनीवडे समजावनारी जे कथा ते प्रज्ञप्तिआक्षेपणी, श्रोतानी अपेक्षावडे नयने अनुसारे सक्ष्म तत्त्रोनुं कथन करनारी कथा ते दृष्टिवाद-आक्षेपणी. १, विश्वेपणी कथा चार प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-स्वसमय(सिद्धांत)ना गुणोने कहीने पछी परसमयना दोषोने देखांडे छे, परसमयने कहींने खसमयनुं स्थापन करे छे, परसमयमां पण जे सम्यग्राद छे तेने कहे छे, सम्यग्रादने कहींने तेमां जे मिथ्यावाद छे तेना दोषने बतावे छे तेमज प्रसमयमां जे मिथ्याबाद छे तेने कड़ीने सम्यग्बादमां स्थापनार थाय छे. २, संवेगनी कथा चार प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-आ लोकसंवेदनी-मनुष्यजीवन विगेरेनुं असारपणुं बतावीने वैराग्य उत्पन्न करावनारी कथा, परलोकसंवेगनी-देवादिनुं असारपणुं बतावनारी कथा, अमारुं शरीर अशुविषय छे इत्यादिस्बरूप बनावनारी ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ कथाः स्र०२८२

1 388 11

कथा ते आत्मशरीरसंवेगनी, एवी रीते बीजाना शरीरनुं असारपणुं बतावनारी कथा ते परशरीरसंवेगनी ३, निर्वेदनी कथा चार प्रकार कहेली छे, ते आ प्रमाणे—आ लोकमां आचरेल चोरी विगेर दुष्ट कर्मी आ लोकमां ज दुःखरूप फलना विपाकने आपनारा थाय छे, परलोक (पूर्व-आपनारा आचरेल दुष्ट कर्मी आ लोकमां आचरेल दुष्ट कर्मी परलोक—नरकादिमां दुःखरूप फलना विपाकने आपनारा थाय छे तेमज परलोकमां आचरेल दुष्ट कर्मी परलोकमां दुःखरूप फलना विपाकने आपनारा थाय छे थे. आ लोकमां आचरेल सारां कर्मी आ लोकमां सुखरूप फलना विपाकने आपनारा थाय छे २, आ लोकमां आचरेल सारां कर्मी परलोकमां सुखरूप फलना विपाकने आपनारा थाय छे २, परलोकमां आचरेल सारां कर्मी आ लोकमां सुखरूप फलना विपाकने आपनारा थाय छे २, परलोकमां आचरेल सारां कर्मी परलोकमां सुखरूप फलना विपाकने आपनारा थाय छे ३ तेमज परलोकमां आचरेल सारां कर्मी परलोकमां सुखरूप फलना विपाकने आपनारा थाय छे ३ तेमज परलोकमां आचरेल सारां कर्मी परलोकमां सुखरूप फलना विपाकने आपनारा थाय छे १ (स० २८२)

टीकार्थ: -आ सूत्र सरळ छे, विशेष ए के-संयमने बाधक होताथी विरुद्ध कथा-बचननी रीति ते विकथा, तेमां स्त्रीओनी अथवा स्त्रीविषयक जे कथा ते स्त्रीकथा. आ कथा कहेली छे तथापि स्त्रीना विषयपणाए संयमथी विरुद्ध होवाथी विकथा छे एम समज्ञ छं, एवी रीते मोजननी, देशनी अने राजानी जे कथा ते विकथा छे. ब्राह्मणी विगरेमांथी कोईपण एकनी प्रशंसा अथवा निंदा जे जातिवहें अथवा जातिनी करवामां आवे छे ते जातिकथा, दा. त. " पतिना अभावे जे ब्राह्मणी मरेलानी जेम जीवे छे तेने धिकार छे, अमे मनुष्यमां शुद्ध स्त्रीओने धन्य मानीए छीए के जे लाख पति कर्या छतां पण अनिंदित छे." एम उम्र इल

* आ चार भांगाना स्वामो टोकाना अनुवादमां कहेला छे,

श्रीस्था-बाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ३९५ ॥

विगेरमां उत्पन्न थयेली स्त्रीओमांथी कोईपण स्त्रीनी जे प्रशंसादि कराय छे ते इलकथा. दा. त. "अहो जगतमां चौछक्यवंशनी पुत्रीओनुं साहस अधिक छे, पार्तनुं मरण थये छते जे स्त्रीओ प्रेमरहित छे तो पण अग्निमां प्रवेश करे छे." तथा आंद्रदेश विगेरमां उत्पन्न थयेल स्त्रीओमांथी कोईपण स्त्रीना रूपनी जे प्रशंसादि ते रूपकथा. दा. त. "चंद्र जेवा ग्रुखवाळी, कमल जेवा नेत्रवाळी, सारा वचनवाळी, पीन अने कठण स्तनवाळी लाट देशनी स्त्री देवोने पण दुर्लभ छे तो एवी स्त्री शुं आ पुरुषने इष्ट नथी ?" ते स्त्रीओमांथी कोईपण एक स्त्रीना कच्छावंध (काछडी) विगेर पहेरवाना वस्त्रनी जे प्रशंसादि ते नपथ्यकथा. दा. त. "उत्तरदेशनी स्त्रीओने धिकार छे, केमके घणा वस्त्रवेड ढंकायेल शरीररूप लिवका होवाथी जेनुं योवन (सौंद्य) युवान पुरुषोनी आंखने हमेशां आनंद माटे थतुं नथी." स्त्रीनी कथामां दोषो आ प्रमाणे होय छे—

आयपरमोहुदीरणं, उड्डाहो सुत्तमाइपरिहाणी । बंभवयस्स अग्रुत्ती, पसंगदोसा य गमणादी ॥७८॥

स्त्रीनी कथाना करनारने पोताना आत्माने विषे अने परना आत्माने विषे मोहनी उदीरणा थाय छे, लोकोमां उड्डाह-हेलना थाय छे, सत्र विगेरेनी हानि थाय छे, ब्रह्मचर्य व्रतनी अगुप्ति होय छे अने प्रसंगथी दोषो-जावुं आववुं विगेरे थाय छे.

तथा आ रसवतीमां आटला शाक अने घृत विगेरे उपयोगी थाय छे, आवी कथा ते आवापकथा. ते रसवतीमां आटला पववाक अने अपक्व अन्न (मिष्टाक्म, भात विगेरे)नो अथवा व्यंजन (शाक, राइतुं विगेरे)ना प्रकारोनो उपयोग थाय छे, आवी जे कथा ते निर्वापकथा. आ रसवतीमां आटला तितिरादिनो उपयोग, आवी जे कथा ते आरंभकथा तेमज आटलुं द्रव्य अर्थात् सो के हजार रूपियानो खर्च आ रसवतीमां लागशे एवी जे कथा ते निष्ठान कथा. कह्युं छे के—

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ कथाः स्र० २८२

॥ ३९५ ॥

सागघयादावादो [वो ?], पक्कापक्को य होइ निव्वावो । आरंभ तित्तिराई, णिट्ठाणं जा सयसहस्सं ॥७९॥ 🛣

मोजनकथामां आ प्रमाणे दोषो छे-

आहारमंतरेणवि, गेहीओ जायए सइंगालं। अजिइंदिय ओदरिया-वाओ उ अणुन्नदोसा य ॥ ८०॥

आहार कर्या विना पण आसाक्तिवडे अंगारदोष थाय छे. आ साधु जीतेंद्रिय नथी, पेटभरा छे एम लोकमां अपवाद थाय हे अने दोषनी परंपरा थाय हे अर्थात आहारनी गृद्धिथी एषणाना दोष न टाली शके.

मगधादि देशमां विधि-भोजन, माण अने भूमिका विगेरेनी रचना अथवा अग्रुक देशमां प्रथम अग्रुक भोजन खवाय छे. आवी जे कथा अर्थात देश देशनी मोजन विगेरेनी विधिनी जे कथा करवी ते देशविधिकथा, एम ज बीजी कथाओमां पण जाणवं. विशेष ए के-अग्रुक देशमां धान्यनी उत्पत्ति, गढ, कूवा विगेरे देवकुल अने महेल विगेरेनी जे कथा ते देशविकल्पकथा, छंद-गम्य अने अगम्यनो विभाग, जेम लाट देशमां मामानी पुत्री गम्य-परणवा योज्य थाय छे, बीजा देशमां अगम्य-पर-णवा योग्य नथी, आवी जे कथा ते देशच्छंदकथा, नेपथ्य-स्त्री अने पुरुषने तो स्वाभाविक वेष अने शोभाना निमित्तरूप वेष. तेनी जे कथा ते देशनेपथ्यकथा. आ कथामां दोषो आ प्रमाणे होय छे---

रागद्दोसुप्पत्ती, सपवखपरपवखओ य अहिगरणं । बहुगुण इमोति देसो, सोउं गमणं च अन्नेसि ॥८१॥

श्रीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ३९६॥ **

जे देशनुं वर्णन करे छे तेमां राग अने बीजा देशमां देषनी उत्पत्ति थाय छे अने देशवर्णनमां पोतपोताना पक्षना आग्रहथी कजीयो थाय छे. अमुक देश बहु ज सारो छे एम सांभक्रीने कोईक साधु विचारे छे के ते देश बहु सारो छे तेथी ते साधु त्यां जाय छे.

राजानो नगरादिकमां प्रवेश, तेनी जे कथा ते अतियानकथा, दा. त.—

सियसिंधुरखंधगओ, सियचमरो सेयछत्तछन्नणहो। जणणयणाकिरणसेओ, एसो पविसइ पुरे राया ॥८२॥

श्वेत हाथीना स्कंघ उपर बेठेलो, घोळा चामरथी वीझायेलो, श्वेत छत्रवडे ढंकायेल आकाश्ववाळो अने मनुष्योना नयन-किरणोवडे उज्ज्वल थयेल एवो आ राजा नगरमां प्रवेश करे छे.

एवी रीते सर्वत्र जाणवुं. विशेष ए के-नगर वहार नीकळवारूप(स्वारी)नी जे कथा ते निर्वाणकथा, जेम--वर्जाताउज्जममंद्-बंदिसद्दं मिलंतसामंतं । संखुद्धसेन्नमुद्धय-चिंधं नयरा निवो नियइ ॥ ८३॥

वाजींत्रों वगाडता सता, मोटे सादे भाट-चारणी विरुदावली बोलता सता, सामंतो सहित, श्लोभ पामेल सैन्य सहित अने धारण करेल छे राजिचह जेणे एवो राजा नगरथी बहार नीकळे छे बल-हाथी विगेरे, अश्व विगेरे वाहन, तेनी जे कथा ते बलवाहन कथा, जेमके—

४ स्थान-काच्ययने उद्देशः २ कथाः स्र० २८२

॥ ३९६ ॥

हेसंतहयं गर्जात–मयगलं घणघणंतरहलक्खं। कस्सऽन्नस्सवि सेन्नं, णिन्नासियसत्त्रुसिन्नं भो !॥८४॥

हे मित्र ! लाखोगमे घोडाओना हणहणाट शब्दवाळं, लाखोगमे हाथीओना गर्जारववाळं, लाखोगमे रथना धणधणाटवाळं अने शत्रुना लक्करनो नाश करनारुं आवुं सैन्य शुं कोईपण बीजा राजातुं छे ?

कोश-भंडार, कोष्ठागार-धान्यनुं घर, तेनी जे कथा ते कोशकोष्ठागारकथा. जेम के-

पुरिसपरंपरपत्तेण, भरियविस्संभरेण कोसेणं। णिज्जियवेसमणेणं, तेण समो को निवो अन्नो ? ।।८५॥ पुरुषनी परंपरावडे प्राप्त करेल अर्थात् विडिलोपार्जित भंडारवडे समग्र विश्व-जगतनुं पोषण करवाथी वैश्रमणने जीतवावडे ते राजा समान बीजो कयो छे ? राजकथामां आ प्रमाणे दोषो होय छे—

चारिय चोरा १ भिमरे २, हिय १ मारिय २ संक काउकामा वा । भुत्ताभुत्तोहाणे, करेज वा आससपओगं ॥ ८६॥

राजकथाने करनार साधुओ जोईने राजपुरुषोने शंका थाय छे, ते आ प्रमाण-वेष बदलावीने आ गुष्तचरो छे अथवा चोरो छे, अथवा छानी रीते घात करनारा छे. आ स्थले पहेलां पण राजाना अश्वरत्ननुं हरण करेल हतुं अने कोईके राजा के तेना स्वजनने मारेल हतो तेमांथी ते ज कोईक छे. अथवा पूर्वोक्त कार्यने करवा माटे आवेल छे, आवा प्रकारनी शंका थाय. वळी राजकथाने सांमळनार भुक्तभोगी दीक्षित राजाने पूर्व सुखनी स्मृति थाय तथा अभुक्तभोगी अन्य साधुने नियाणुं करवानी

ઇક

भीस्था-नाङ्गध्त्र सानुवाद ॥ ३९७॥

इच्छा थाय, अथवा दीक्षानी त्याग करे.

***** जे कथावडे श्रोता मोहथी तन्त्र प्रत्ये आकर्षाय छे ते आक्षेपणी १, तथा जे कथावडे श्रोता सन्मार्गमांथी कुमार्गमां अथवा कुमार्गमांथी सन्मार्गमां लई जवाय छे ते विश्लेषणी २, जे कथा संवेग-वैराग्यने प्रगटावे अथवा जे कथावडे श्रोता सारी रीते बोध पामे छे. अथवा श्रोतान जे कथावडे संवेग थाय अथवा श्रोता संवेगने प्राप्त थाय ते संवेदनी अथवा संवेजनी ३ तेमज जे कथावडे संसार विगरेथी श्रोता उदासीन कराय छे ते निर्वेदनी ४. लोच अने अस्नान विगरे आचारना प्रकाशनवडे आचारआक्षेपणी, एवी रीते बीजा भेदोमां पण जाणवं. विशेष ए के-कंईक थयेल दोषना ानवारण माटे प्रायश्चित्तलक्षण जे कथन ते व्यवहारआक्षेपणी, संशयने प्राप्त थयेल श्रोताने मधुर वचनोवडे समजाववुं ते प्रज्ञप्तिआक्षेपणी, श्रोतानी अपेक्षाथी नयने अनुसरीने जीवादि सक्ष्मभावनं जे कथन ते दृष्टिवादआक्षेपणी. आ संबंधमां बीजा आचार्यो एम कहे छे के-आचार, च्यवहार विगेरे नामथी आचार विगेरे ग्रंथो ग्रहण कराय छे. कथानो आ प्रमाणे सार छे-

विजाचरणं च तवो, पुरिसक्कारो य समिइगुत्तीओ। उवइस्सइ खळु जं सो, कहाऍ अक्खेवणीइ रसो ।८७।

ज्ञान, चारित्र, तप, पुरस्कार-वीर्योत्कर्षरूप अने समिति-गुप्तिनो श्रोतानी अपेक्षाए जे उपदेश कराय छे ते आक्षेपणी-कथानो सार छे.

प्रथम स्वसिद्धांत कहे छे अने तेना गुणोनुं विशेष स्वरूप प्रगट करे छे, ते कहीने त्यारबाद परसमयने कहे छे अने तेना

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ कथाः स॰ २८२

दोषोने देखाडे छे, आ विक्षेपणी कथानो प्रथम भेद. एम ज परसमयना कथनपूर्वक खसमयनो स्थापनार-स्वसमयना गुणोतुं स्थापन करनार होय छे, आ बीजो भेद. 'सम्माबाय 'मित्यादि० तेनो अर्थ ए छे के-परसमयोने विषे पण घुणाक्षरन्यायवडे जिनागमना तत्त्वने मळतापणाथी आवपरीततत्त्वोनो वाद-सम्यग्वाद छे, तेने कहे छे. तेटला प्रमाणना सम्यग्वादने कहीने परसमयोने विषे जिनप्रणीत तत्त्वोथी विरुद्ध होवाथी जे मिथ्यावाद छे तेना दोष देखाडवापूर्वक कथन करे छे, आ श्रीजो भेद. परसमयान विष मिथ्याबादनुं कथन करीने सम्यगवादने स्थापनार होय छे, आ चोथो भेद. अथवा सम्यग्वाद-अस्तिपर्णं, मिथ्यावाद-नास्तिपणुं. तेमां आस्तिकवादीनी दृष्टिओ(दर्शनो)ने कहीने नास्तिकवादीनी दृष्टिओने कहे छे ते प्रकारांतरे त्रीजो भेद छे अने नास्तिकवादीनी दृष्टिए कहीने पछी आस्तिकवादीनी दृष्टिए कहे छे ते चोथो भेद छे. इहलोक-मनुष्यजन्मना स्वरूपनुं कथन करवावडे संवेगनी ते इहलोकसंवेगनी, आ सर्व मनुष्यपणुं असार छे, अधुव छे, केळना स्तंभ जेवुं छे इत्यादि स्वरूपवाळी जाणवी, एमज देवादि भवना स्वरूपना कथनरूप परलोकसंवेदनी, अर्थात् देवो पण ईर्ष्या, खेद, भय अने वियोग विगरे दुःखोवडे पराभव पामेला छे, तो तिर्यंच विगरेनुं कहेवुं शुं े जे आ मारुं शरीर ते पण अशुचि-अपवित्र छे, अशुचिरूप कारणथी उत्पन्न थये छुं छे, अशुचिद्वारथी जन्मे छुं छः माटे शरीरमां प्रतिबंध करवा जेवुं कोई स्थान नथी इत्यादि कथनरूप आत्मश्रीरसंवेगनी कथा, एमज परश्रीरसंवेगनी अथवा मृतक श्रीरना कथनरूप परश्रीरसंवेगनी. आ लोकमां दुष्कृत्यो-चोरी विगेरे कर्मो आ लोकमां दुःख, ए ज कर्मरूप दृक्षथी उत्पन्न थयेल होवाथी फल अर्थात् दुःखफल, तेनो विपाक-अनुभव ते दुःखफलविपाकवडे संयुक्त, ते दुःखफलविपाकसंयुक्त थाय छे. चोरो विगेरेनी माफक आ निर्वेदनी

श्रीस्थाः नाङ्गस्त्र सानुवाद ॥ ३९८ ॥

कथानो पहेलो भेद. एवी रीते नारकोनी माफक, आ बीजो भेद. गर्भथी आरंभीने व्याधि, दारिद्र विगेरेथी पराभव पामेलानी जेम आ त्रीजो भेद, पूर्वे करेल अशुभ कर्मथी उत्पन्न थयेल अने नरकने योग्य कर्मने बांधतां थकां कागडा अने गीध विगेरेनी जेम आ चोथो भेद छे. ' इहलोए सुचिन्ने 'त्यादि० चतुर्भगी-तीर्थंकरने दान आपनार १, सुसाधु २, तीर्थंकर ३ अने देवना भवमां रहला तीर्थंकर विगेरेनी जेम विचारवा योग्य छे. (स० २८२)

वचनविशेष कहो, हवे पुरुषना प्रकारनी प्रधानतावडे कायविशेषने कहे छे-

तहेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-िकसे णाममेगे किसे किसे णाममेगे दढे दढे णाममेगे किसे दढे णाममेगे दढे, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-िकसे णाममेगे किससरीरे किसे णाममेगे दढ़सरीरे दढे णाममेगे किससरीरे दढे णाममेगे दढ़सरीरे ४। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-िकस-सरीरस्स नाममेगस्स णाणदंसणे समुष्पज्जित णो दढ़सरीरस्स दढ़सरीरस्स णाम एगस्स णाणदंसणे समुष्पज्जित णो किससरीरस्स एगस्स किससरीरस्सिव णाणदंसणे समुष्पज्जित दढ़सरीरस्सिव एगस्स नो किससरीरस्स णाणदंसणे समुष्पज्जित णो दढ़सरीरस्स । सू० २८३, च उद्दिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अस्सि समयांसे अतिसेसे नाणदंसणे समुष्पज्जिउकामेवि न समुष्प-

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः २ पुरुषजात-प्रधानतया काय-विशषः द्व० २८३-98

ा ३९८ ॥

जोजा, तं०-अभिक्खणं अभिक्खणमिस्थिकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं कहेत्रा भवति १, विवेगेण विउर्सगोणं णो सम्ममप्पाणं भाविता भवति २, पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि णो धम्मजागरियं जागरतिता भवड ३. फासुयस्स एसणिजस्स उंछस्स सामुदाणियस्स णो सम्मं गवेसिता भवति ४, इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाण वा निग्गंथीण वा जाव नो समुप्पजेजा। चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेजा, तं०-इत्थीकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं नो कहेत्ता भवति, विवेगेण विउस्सग्गेणं सम्ममप्पाणं भावेता भवति. पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरतिता भवति, फासुयस्स एसणिजस्स उंछ-स्स सामुदाणियस्स सम्मं गवेसिया भवति, इचेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा जाव समुप्पजेजा । सु० २८४

मूलार्थः-तेमज चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक पुरुष पहेलां पण कुश्च-दुर्बेळ शरीरवाळो अने पछी पण दुर्बेल शरीरवाळो, कोईक पहेलां कुश शरीरवाळो अने पछी दढ-मजबूत शरीरवाळो, कोईक पहेलां दढ शरीरवाळो अने पछी कुश शरीरवाळो तेमज कोईक पहेलां दढ शरीरवाळो अने पछी पण दढ शरीरवाळो ४, चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे- भीस्था-नाङ्गदत्र सातुवाद ॥ ३९९ ॥

कोईक पुरुष भावथी कुश-दुर्वल मनवाळो अने कुश शरीरवाळो, कोईक भावथी कुश पण दढ शरीरवाळो, कोईक भावथी दढ मनवाळो पण शारीरथी कुश तेमज भावथी दृढ अने शरीरथी पण दृढ. ४. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक तपस्यादिवडे थयेल कुश शरीरवाळाने ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थाय छे, पण बहु मोहने लईने दृढ शरीरवाळाने उत्पन्न थता नथी १, कोईक अल्प मोहवाळा दढ शरीरीने ज्ञान तथादर्शन उत्पन्न थाय छ पण रागथी दुर्बल-कुश शरीरवाळाने अस्वस्थताथी उत्पन्न थता नथी २, कोईक विशिष्ट संहननादिना धणी कृश शरीरवाळाने पण ज्ञान तथा दर्शन उत्पन्न थाय छे तेम दृढ शरीर-बाळाने पण उत्पन्न थाय छे ३ तेमज कोईक बहु मोहना धणी कुश शरीरवाळाने ज्ञान तथा दर्शन उत्पन्न थता नथी तेम दृढ शररिवाळाने पण उत्पन्न थता नथी ४. (स.० २८३) चार कारणवडे निर्ग्रंथी अथवा निर्ग्रंथीओने अतिशेष-केवळज्ञान अने केवळदर्शननी उत्पत्तिनी इच्छात्राळाने पण आ समय(काळ)मां उत्पन्न थाय नहिं, ते आ प्रमाणे-वारवार स्त्रीकथा, भक्त-कथा. देशकथा अने राजकथाने कहेनार होय छे १, विवेक-अशुद्धादिना त्यागपूर्वक कायोत्सर्गवडे सम्यग् रीते आत्माने भाव-नार थता नथी २. रात्रिना पूर्वभाग अने पाछळना भागरूप काळ (समय)ने विषे धर्मजागरिकावडे जागे निर्ह ३. प्रासुक. एपणीय, उंछ(थोडुं थोडुं) भक्तपानादि ग्रहणरूप सामुदानिकी भिक्षानी सारी रीते गवेषणा करे निहं ४. उपर्धक्त चार कारण-वडे साधुने अथवा साध्वीने यावत् केवळज्ञान-दर्शन उत्पन्न थाय नहिं. चार कारणवडे निर्श्रेथोने अथवा निर्श्रेथीओने अतिशेष-केवळज्ञान अने केवळदर्शननी इच्छावाळाने उत्पन्न थाय, ते आ प्रमाणे-स्नीकथा, भक्तकथा, देशकथा अने राजकथाने कहे नहिं १, विवेकपूर्वक कायोत्सर्गवडे सारी रीते आत्माने भावनार होय छे २, रात्रिना पूर्वभाग अने पश्चिमभागरूप काळ(समय)मां धर्म-

४ स्थान काध्ययने उद्देश: २ पुरुषजात-प्रधानतया काय-विशेषः

जागरिकावडे जागता होय छे २ तेमज प्रासुक, एषणीय, उंछ-थोडुं थोडुं भक्तपानादि ग्रहणरूप सामुदानिकी भिक्षानी सारी रीते गवेषणा करनार होय छे ४. उपर्युक्त चार कारणवंडे साधुने अथवा साध्वीओने यावत् केवलज्ञान-दर्शन उत्पन्न थाय छे.(स्०२८४)

टीकार्थ:-'चत्तारि पुरिसे'त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-कुश-पातळं शरीर, ते पूर्वे अने पछी पण कुश ज अथवा भाव-थी हीन सत्त्व [बळ] विगरेपणाथी कृश, वळी शरीरादिवडे कृश, एवी रीते दढ-मजबूत पण कृशथी विपरीतपणे जाणवो १. पूर्व सूत्र-ना अर्थथी विशेष-शरीरवडे आश्रित ज आ बीजुं सूत्र छे, तेमां भावथी कुश विगेर जाणवुं, बीजुं सुगम छे २. चतुर्भगीवडे कुशना ज्ञानोत्पादने कहे छे-'चत्तारी'त्यादि० स्पष्ट छे. विशेष ए के-विचित्र तपस्यावडे भावित कुश शरीखालाने श्रभ परिणाम-ना संभववडे तद्-ज्ञानावरण विगेरेना क्षयोपशमादि भावथी ज्ञान अने दर्शन, अथवा ज्ञाननी साथे दर्शन ते ज्ञानदर्शन, ते छदमस्थ संबंधी ज्ञान अथवा केवली संबंधी ज्ञान, ते उत्पन्न थाय छे. दढ श्ररीरवाळाने नथी थतुं केम के अत्यंत मोहवडे तेने श्वरीरने) पृष्ट करेल होवाथी तथाविध श्रुभ परिणामना अभाववडे क्षयोपश्चमादिनो अभाव होय छे, आ प्रथम भंग, तथा संघर् यणविशिष्ट अल्प मोहवाला दृढ शरीरने ज ज्ञान-दर्शन उत्पन्न थाय छे, केम के स्वस्थ शरीर होवाथी मननी स्वस्थतावडे ग्रभ परिणामना क्षयोपञ्चमादि भाव होय छे परंतु कृश शरीरवालाने चित्तनी अस्वस्थताथी उत्पन्न न थाय, ते बीजो भंग, कृश अथवा दृढ शरीरवालाने ज्ञान तथा दर्शन उत्पन्न थाय छे, कारण के विशिष्ट संघयण सहित अल्प मोहवालाने श्रूभ परिणामपणाथी बंने रीते थाय छे पण कुशत्व अने दृढत्व प्रत्ये अपेक्षा नथी, आ त्रीजो भंग. चोथो भांगो स्पष्ट छे. मद् संघयणी अने बहु मोहवाला कुश के दृढ शरीरीने ज्ञान तथा दर्शन उत्पन्न न थाय. (स्० २८३) हमणा ज्ञानदर्शननो उत्पाद कह्यो, हवे तेनो व्याघात कहेवाय छै-

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद 11 800 11

'चउही' त्यादि० सत्र स्पष्ट छे. विशेष ए के-निर्प्रथीओतं ग्रहण करवाथी स्त्रीओने पण केवळज्ञान उत्पन्न थाय छे. एम सत्रकार कहे छे. 'अस्मिन्नि'ति । प्रत्यक्षनी जेम आ वर्तमान समयमां 'अइसेसे'क्ति । शेष-मत्यादि चार ज्ञान अने चक्षुः विगेरे त्रण दर्शनने अतिक्रांत-अवबोधादि सर्व गुणोवडे उल्लंघी गयेलुं अर्थात आगळ वधेलुं ने अतिशेष-अतिशयवालुं केवलज्ञान, केवल-दर्शन. अहिं ज्ञाननी इच्छावाळाने पण उत्पन्न थतुं नथी एवा अर्थ जाणवो. ज्ञान।दिनी रुचिना अभावथी (विकथाने) कहेवाना खभाववाळो, शीलार्थिक तुन् प्रत्यय थवाथी षष्ठीने बदले द्वितीया विभक्ति विरुद्ध नथी. १, विवेकेन-अशुध्धिना त्यागवडे 'विउस्सरगेणं 'ति० कायाना व्युत्सर्गवडे २, पूर्वरात्र-सात्रिनो पूर्वभाग अने अपररात्र सात्रिनो पाछला भाग, ते ज कालरूप अवसर जागरिकाना पूर्वरात्रापररात्रकालसमयमां. ते अहि कुटुंबजागरिकाना निषेध करवावडे धर्म-प्रधान जागरिका-निद्वाना त्यागथी बोध ते धर्मजागरिका अर्थात भावपूर्वक विचारणा. कह्यं छे के-

किं कयं किं वा सेसं, किं करणिजं तवं च न करोमि। पुठवावरत्तकाले, जागरओ भावपडिलेहा।।८८॥

में शुं कर्युं ? बाकी शुं छे ? शुं करवा योग्य छे ? हुं तप तो करतो नथी, एवी रीते पूर्वरात्र अने अपररात्रकालमां जागनारनी भावप्रतिलेखना (विचारणा) छे. अथवा---

को मम काले।? किम्मेयस्स उचियं? असारा विसया। नियमगामिणो विरसावसाणा भीसणो मच्चू॥८९॥ हमणा मारो शो अवसर छे ? आ अवसरने उचित शुं धर्मकृत्य करवा योग्य छे ? विषयो असार छे, आत्मानी साथे

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः २ पुरुषजात-प्रधानतया काय-विशेषः चालनारा नथी अने परिणामथी विरस (असुंदर) छे तथा मृत्यु भयंकर छे एम चिंतवे छे.

अहिं विभक्तिना परिणामथी उपर्युक्त जागरिकावडे जागनारो होय छे. अथवा धर्मजागरिका प्रत्ये जागनारो -करनारो जाणवो २. तथा प्रगत-गयेल छे असु-उच्छ्वासादि प्राणो जेमांथी ते प्रासुक-निर्जीव वस्तु, एष्ट्यते-उद्गमादि दोषरिहत-पणाए गवेषण कराय छे ते एषणीय-कल्पनीय अने थोई थोई प्रहण करवामां आवे छे ते उंछ-भक्तपान विगेरेनुं समुदानरूप याचन थयेल ते सामुदानिक, अर्थात् ऊंच, नीच अने मध्यम कुल विगेरेमां यथार्थ रीते गवेषक थतो नथी ४. उपर्युक्त चार प्रकारोवडे केवलज्ञानदर्शन उत्पन्न न थाय इत्यादि निगमन-निर्णय जाणवो. आनाथी विपरीत (ज्ञाननी प्राप्तिरूप) सूत्र सुगम छे. (स० २८४) निर्णयना प्रस्तावथी ज तेने निर्ह करवा योग्यना निषेध माटे वे सूत्रो कहे छे-

नो कप्पति निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करेत्तए, तं०-आ-साढपाडिवए इंदमहपाडिवए कत्तियपाडिवए सुगिम्हपाडिवए १, णो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चउहिं संज्झाहिं सज्झायं करेत्तए, तं०-पढमाते पिच्छमाते मज्झण्हे अहरते २, कप्पइ निग्गं-थाण वा निग्गंथीण वा चाउकालं सज्झायं करेत्तए, तं०-पुठवण्हे, अवरण्हे पओसे पच्चूसे। सृ० २८५, चउठिवहा लोगट्टिती पं० तं०-आगासपतिट्टिए वाते, वातपतिट्टिए उद्धी, उद्धिपति-

* द्वितीयामां ततीया विभक्ति करेली छे.

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४०१॥

द्विया पुढवी, पुढविपइद्विया तसा थावरा पाणा ४। सू० २८६, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-तहे नाममेगे, नोतहे नाममेगे, सोवत्थी नाममेगे, पधाणे नाममेगे ४ (१) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-आयंतकरे नाममेगे णो परंतकरे १ परंतकरे णाममेगे णो आतंतकरे २ एगे आतंतकरेवि परंतकरेवि ३ एगे णो आतंतकरे णो परंतकरे ४ (२) चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-आतंतमे नाममेगे नो आयंतमे ४ (३) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-आयंदमे नाममेगे णो परंदमे ४ (४)। सू० २८७, चउविवधा गरहा पं० त०-उवसंपज्ञामित्तेगा गरहा, वितिगिच्छामित्तेगा गरहा, जंकिंचिभिच्छामित्तेगा गरहा, एवंपि पन्नतेगा गरहा। सू० २८८

मूलार्थ:—साधुओने तथा साध्वीओने चार महापडवाने विषे स्वाध्याय करवो कल्पे निहं. ते आ प्रमाणे -आषाढ सुदि पूनम पछीना पडवामां, कार्तिक सुदि पूनम पछीना पडवामां, इंद्रमह-आसो सुदि पूनम पछीना पडवामां तथा सुप्रीष्म-चैत्र सुदि पूनम पछीना पडवामां १, साधुओने तथा साध्वीओने चार संध्याने विषे स्वाध्याय करवो कल्पे निहं, ते आ प्रमाणे-प्रथम संध्या- सूर्योदयक्ष वेलाथी एक घडी प्रथम अने एक घडी पछी, पश्चिम संध्या-सूर्यास्त समयथी एक घडी प्रथम ने एक घडी पछी,

* केटलाकनो अभिपाय एवो छे के प्रथम संध्या सूर्योदय वेलाघी बे घडी अगाउ लेवी केम के टीकामां ''अनुदिते सूर्ये' पाठ छे. बाकीनी त्रण संध्या एक घडी आगल पाछल लेवो परंतु अहिं तो टबाने अनुसारे हकीकत लखेल छे. ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ महाप्रति-पदः स्र० २८५-

11 808 11

मध्याह्वे अने मध्य रात्रे २, साधुत्रोने तथा साध्वीओने चार काले-वखते स्वाध्याय करवो कल्पे छे, ते आ प्रमाणे-पूर्वाह्वे-दिवसना प्रथम प्रहरमां, अपराह्वे दिवसना छेल्ला प्रहरमां, प्रदोसे-रात्रिना पहेला प्रहरमां अने प्रत्युषे-रात्रिना छल्ला प्रहरमां (६० २८५) चार प्रकारे लोकनी स्थिति कहेली छे, ते आ प्रमाण-आकाशने आधारे घनवायु अने तनवायु प्रतिष्ठित-रहेल छे १, वायुने आधारे घनोद्धि रहेल छे २, घनोद्धिने आधारे रत्नप्रभा विगेरे नरकपृथ्वी रहेली छे ३ अने पृथ्वीने आधारे त्रस तथा स्थावर जीवो रहेला छे ४. (सू० २८६) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-जे सेवक सतो (होईने) स्वामीना हुकम प्रमाणे वर्ते ते तथापुरुष १, जे स्वामीना हुकम प्रमाणे न वर्ते ते नोतथापुरुष २, स्वस्तिक विगेरे मांगलिक बोलनार माट-चारणादि ते सौवस्तिकपुरुष ३, आ बधाने आराधवा योग्य शेठ विगेरे ते प्रधानपुरुष ४. (१) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक पोताना भवनो अंत करनार छे पण बीजाना भवनो अंत करनार नथी ते प्रत्येकबुद्धादि १, कोईएक बीजाना भवनो अंत करनार छे पण पोताना भवनो अंत करनार नथी ते अचरमशरीरी आचार्य विगेरे २, कोईएक पोताना भवनो अंत करनार छे अने बीजाना भवनो पण अंत करनार छे ते तीर्थंकरादि ३ तेमज कोईएक पोताना भवनो अने परना भवनो अंत करनार नथी ते पांचमा आराना आचार्यादि ४. (२) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक आत्मतम-पोते खेद करे छे पण बीजाने खेद करावता नथी १, कोईएक परतम-बीजाने खेद करावे छे पण पोते खेद करता नथी २, कोईएक पोते खेद करे छे अने बीजाने पण खेद करावे छे ३ अने कोईएक पोते खेद करता नथी तेम बीजाने पण खेद करावता नथी ४. (३) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक आत्माने दमे छे-शमवाळो करे छे पण श्रीस्था-नाङ्गस्रत्र सानुवाद ।। ४०२ ॥

बीजाने दमावता नथी १, कोईएक बीजाने दमावे छे पण पोते दमता नथी २, कोईएक पोते दमे छे अने बीजाने पण दमावे छे ३ तेमज कोईएक पोते दमता नथी अने बीजाने पण दमावता नथी. ४. (४) (६० २८७) चार प्रकारे गर्हा कहेली छे, ते आ प्रमाणे-पोताना दोषना नाश माटे उचित प्रायिश्वत्त लेवा सारु हुं गुरु पासे जाउं, आ एक गर्हा १, गर्हा करवा योग्य दोषोनुं विविध प्रकारवडे हुं निराकरण करुं, आ बीजी गर्हा २, जे कांई अनुचित कर्युं होय तेनुं मिध्या दुष्कृत हुं आपुं, आ त्रीजी गर्हा ३, एवी रीते 'स्वदोषनी गर्हा करवावडे दोषनी शुध्धि थाय छे एम जिनेश्वरोए कहेलुं छे' आ प्रमाणे स्वीकारवुं, ते चोथी गर्हा ४ (६० २८८)

टीकार्थ:-'नो कप्पई'त्यादि० वे सूत्र सरल छे, परंतु महोत्सव पछी थनार उत्सवनी अनुवृत्तिवडे बीजा पडवाओथी विलक्षण स्वरूपवडे महाप्रतिपदा(पडवा)ओमां (अहिं कोईक देशनी रूढिवडे 'पाडिवय' शब्दथी कथन कराएल छे) नंदी विगेरे सूत्र विषयक वाचनादिरूप स्वाध्याय करवो कल्पे निंहें, परंतु अनुप्रेक्षा(चिंतन)नो निषेध करायेल नथी. आषाढ मासनी पूर्णिमा पछीनी प्रतिपदा ते आषाढप्रतिपदा. एवी रीते बीजा पडवाओने विषे पण जाणवुं. विशेष ए के-इंद्रमह*-आश्विन मासनी पूर्णिमा, सुग्रीष्म-चेत्रमासनी पूर्णिमा. अहिं जे देशमां जे दिवसथी महोत्सवो प्रवर्त्ते छे ते देशमां ते दिवसनी शरूआवथी

#इंद्रमह शब्दनी टीकामां, दीपिकामां तथा प्राचीन टबामां आश्विन मास अर्थ करेल छे परंतु भाद्रपद मास एवी अर्थ नोवामां आवतो नथी. ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ महाप्रति-पदः म्र० २८५-

।।। ४०२ ।।

महोत्सवनी समाप्ति पर्यंत स्वाध्याय न × करवो जोईए अने ते महोत्सव पूर्णिमा पर्यन्त ज समाप्त थाय छे. प्रतिपदाओ तो क्षणनी अनुवृत्तिवडे वर्जाय छे, अर्थात् पूर्णिमामां प्रतिपदानो स्वल्प कालनो संभव होवाथी प्रतिपदा वर्जवा योग्य छे. कह्युं छे के आसाढी इंदमहो, कत्तिय सुगिम्हए य बोद्धव्वो। एए महामहा खल्लु, सव्वेसि जाव पाडिवया ॥९०॥ भावार्थ उपर म्रजब छे.

अकालमां स्वाध्याय कर्ये छते आ प्रमाणे दोषो थाय छे-

सुयणाणंमि अभत्ती, लोगविरुद्धं पमत्तछलणा य । विज्ञासाहणवेगुन्न-धम्मया एव मा कुणसु ॥९१॥

श्रुतज्ञाननी अभक्ति-विराधना थाय छे तथा लोकविरुद्ध थाय छे, केम के लौकिकमां पण रजस्वला प्रसंगमां अने गुंमडा विगेरेना प्रसंगमां देवपूजन विगेरे कार्यो करता नथी तथा प्रमादी ग्रुनिने समीप क्षेत्रवासी देवो छळे छे. जेम विद्याना साधनथी विरुद्ध सामग्रीवडे विद्या सफळ थती नथी तेम अकाळे स्वाध्याय करवाथी श्रुतज्ञान पण सफळ थतुं नथी; माटे हे शिष्य! तं अकालमां स्वाध्याय न कर.

म्र्योदय न थये छते पहेली संध्या, म्र्य अस्त पामवाना समयमां ते पश्चिमा संध्या. हमणा कहेल म्रत्रथी विरुद्ध स्त्र

🗙 आश्विन शुक्ल पंचमोना मध्याह्न पछीथी आरंभी गुजराती आश्विन विद एकम पर्यंत स्वाध्याय न करवी, चैत्र मासमां पण ए प्रमाणे निषेध जाणवी, एम दीपिकाकार कहे छे.

86

भीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद ॥ ४०३॥

स्वाध्याय करवाना समयनं सूत्र) स्पष्ट छे, विशेष ए के-' पुठवण्हे अवरण्हे 'त्ति ० दिवसना पहेला अने छेल्ला प्रहरमां पओसे पचसे ' त्ति ॰ रात्रिना पहेला अने छेल्ला प्रहरमां. (स० २८५) स्वाध्यायमां प्रवर्त्तेलाने लोकनी स्थितितुं परि-ज्ञान थाय छे, माटे लोकनी स्थितिनुं प्रतिपादन करतां थकां कहे छे के-' चउ व्विहे 'त्यादि० क्षेत्रलक्षण लोकनी स्थिति-व्यवस्था ते लोकस्थिति. आकाशने आधारे घनवात अने तनुवातस्वरूप वायु रहेल छे. उदिध-धनोदिधि. पृथिवी एटले रत्न-प्रभा विगेरे. ऋसा-द्वींद्विय विगेरे त्रस जीवो. वळी रत्नप्रभादि पृथिवीने विषे जे नथी रहेला ते पण विमान अने पर्व-तादि पृथिवीने विषे रहेला होवाथी पृथिवीमां ज रहेला छे. विमान संबंधी पृथिवीओतं आकाश विगेरमां रहेवापणं जेम घटी शके तेम जाणबुं, अथवा अहिं विमान विगेरेमां रहेल देव प्रमुख त्रसोनी विवक्षा नथी अने स्थावर जीवो तो अहिं बादर वनस्पति विरोरे ग्रहण करवा योग्य छे, कारण के सक्ष्म जीवोतुं समग्र लोकमां रहेवापणुं छे. शेष सुगम छे (स० २८६). हमणां ज त्रस प्राणीओ कह्या, हवे त्रस प्राणीविशेषना स्वरूपने चतुर्भगीरूप चार सत्रोवडे बतावे छे-आ चार सत्रो सरळ छे. विशेष ए के-'तह ' त्ति - सेवक छतो जेम आदेश कराय छे तेम जे प्रवर्ते छे ते तथा-स्वीकारनार १. बीजो सेवक तो आदेश प्रमाणे करतो नथी परंतु बीजी रीते करे छे ते नोतथ २, वळी 'स्वस्ति ' एम कहेनार अथवा स्वस्ति कहीने आजीविका मेळवे छे ते सौवस्तिक (प्राकृतपणाथी ' क ' नो लोप अने दीर्घपणुं प्राप्त थवाथी ' सोवत्थी ') मांगलिकने बोलनार मागध विगेरे तृतीय ३, ए त्रणेने आराध्यपणाए प्रधान-स्वामी ते चतुर्थ भंग ४. ' आयंतकरे 'त्ति०-पोताना भवनो अंत करे छे ते आत्मांत-कर परंतु बीजाना भवनो अंत करतो नथी ते धर्मदेशनाने निंह कहेनार प्रत्येकबुद्ध विगेरे १, तथा मार्गने प्रवर्त्ताववावडे बीजा- ४ स्थान काष्ययने उदेश्वः २ महाप्रति-पदः स्० २८५-८८

וו צסאוו

ना भवनो अंत करे छे ते परांतकर परंतु पोताना भवनो अंत करतो नथी ते अचरमशरीरी आचार्य विगेरे २, त्रीजा भांगावाळा तीर्थंकर अथवा अन्य-चरमशरीरी आचार्य विगेरे ३ अने चोथा भांगावाला दुष्पम कालना आचार्य विगेरे ४. अथवा पोताना मरणने करे छे ते आत्मांतकर. एवी रीते बीजानुं मरण करे छे ते परांतकर. अहिं प्रथम भांगावाळो आत्मवधक, बीजा भांगा-वाळो परवधक, त्रीजो उभयवधक अने चोथो तो बन्नेनो अवधक जाणवो. अथवा पोते स्वतंत्र थको जे कार्यो करे छे ते आत्मतंत्रकर, एमज परतंत्र थको कार्यने करे ते परतंत्रकर. अहिं प्रथम भंगमां जिन, बीजा भंगमां त्रीजा भंगमां आचार्यादि अने चोथा मंगमां कार्यविशेषनी अपेक्षाए शठ–ठगारो. अथवा धन अने गच्छादिने पोताने स्वाधीन करे छे ते आत्मतंत्रकर, एवी रीते बीजा भांगा पण स्वयं विचारी लेवा. आत्माने खेद करे छे ते आत्मतम-आचार्यादि, पर-शिष्यादिकने खेद करावे छे ते परतम (अहिं सर्वत्र प्राकृतशैलीथी अनुस्वार जाणवो.) अथवा आत्माने विषे तम (अज्ञान अथवा क्रोध) जेने छे ते आत्मतम. एवी रीते बीजा+भांगामां पण जाणवुं. तथा आत्माने दमे छे-समतावाळो करे छे अथवा शिक्षा आपे छे ते आत्मदम-आचार्य अथवा अश्वनो दमक-स्वार, एम बीजा भांगाओ पण जाणवा, पर-शिष्य अथवा घोडा विगेरेने जे दमे छे ते परदम (स्० २८७), गर्हा करवा योग्य कार्यनी गर्हा करवाथी दम थाय छे माटे गहीं सूत्र कहे छे. गुरुनी साक्षीपूर्वक आत्मानी निंदा ते गही. ' उपसंपचे ' पोताना दोषनुं निवेदन करवा माट गुरुनो आश्रय करुं, अथवा उचित-प्रायश्चित्तनो स्वीकार करुं आवा प्रकारना परिणामरूप एक गर्हा छे. गर्हाना 🕂 अन्य आत्माना संबंधमां जेने अज्ञान के क्रोध छे ते परतम.

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ।। ४०४ ॥

कारणपणाने लईने कारणमां कार्यना उपचारथी अने गर्हाना जेवुं ज फल होवाथी कहेल परिणामनुं गर्होपणुं समजवुं: केमके श्री भगवती सूत्रमां कहां हे के-'निग्गंथे णं गाहावइक्कलं पिंडवायपडियाए, पविद्वेणं अन्नयरे अकिच्हाणे पिंडसेविए, तस्स णं एवं भवइ-इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलाएमि पिंडक्समामि निंदामि जाव पिंडव-जामि, तओ पच्छा थेराणं अंतियं आलोइस्सामि० से य संपद्विए असंपत्ते अप्पणा य पुटवमेव कालं करेजा से णं भंते ! किं आराहए विराहए ?, गोयमा ! आराहए नो विराहए " त्ति ० निग्रंथ गृहपतिना कुलमां आहार लेवानी प्रतिज्ञावडे गृहमां प्रवेदयो-आव्यो छतो (तेणे) कोई पण एक अकृत्य स्थान सेव्युं, पछी तेने आ प्रमाणे विचार थाय के-अहिं ज प्रथम हुं आ दोषनी आलोचना करुं, प्रतिक्रमण करुं, निंदा करुं यावत प्रायश्चित्तने स्वीकारुं. त्यारबाद स्थिवरोनी समीपे आलोचना करीश यावत प्रायश्चित्त करीश, ते साधुए प्रायश्चित्त लेवा माटे प्रयाण कर्युं परंत स्थावर पासे पहोंच्या अगाउ कदाच काल करे तो ते मुनि आराधक थाय के विराधक थाय? (आवा प्रकारनो भगवंत महावीर प्रत्ये श्री गौतमस्वामीनो प्रश्न छे) उत्तर-हे गौतम ! आराधक थाय पण विराधक न थाय. 'वितिगिच्छामि'त्ति ० विशेषवहे अथवा विविध प्रकारोधी 'चिकित्सामि'-'' उपाय करुं-निंदनीय दोषोने हुं दूर करुं, आ प्रकारनी विकल्पात्मक गर्हा होवाथी बीजी गर्हा २, तथा ' जंकिंचिमिच्छामीति ' त्ति ० जे कांई अनुचित कर्युं होय ते दुष्कृत्यनुं फळ मने मिथ्या थाओ, आवा प्रकारनी वासना-गर्भित वचनरूप त्रीजी गही, गहीना स्वरूपपणाथी ज आ प्रमाणे छे. तथा 'एवमपी 'ति० स्वदोषनी गहीना प्रकारवडे पण ' प्रज्ञप्ता ' जिनेश्वरोए दोषनी शुद्धि कहेली छे, आवुं कथन स्वीकारवारूप चोथी गर्हा छे; केम के आवा प्रकारना स्वी-

8 स्थान-काश्ययने उद्देशः २ महाप्रति-पदः य० २८५-८८

ili yay n

कारनुं गहीं कारण होय छे. 'एवंपि पन्नत्तेगा गरहै 'ति० आ पाठमां उक्त व्याख्यान छे. ' एवंपि पन्नते एगा ' ए पाठमां तो जे काई पाप कर्युं होय ते मिथ्या थाओ, आ प्रमाणे स्वीकारवा योग्य छे. एवी रीते पण प्ररूपणा कर्ये छते एक गहीं थाय छे. आवा प्रकारे वक्तानी प्ररूपणाने गहीं कारणभृत छे. अथवा 'उपसंपद्ये 'हुं अतिचारोनो निषेध करुं छुं एवी रीते पोताना दोषना स्वीकाररूप एक गही, तथा विचिकितसामि '- शंका नहिं करवा योग्य जिनेश्वरभाषित भावोन विषे अथवा गुरु विगेरेने विषे दोष देखवावडे हुं शंका करुं छुं आवा प्रकारनी जे गही (आत्मानिंदा) पोताना दोषने स्वीकारवारूप होवाथी ज बीजी गर्हा २, तथा जे कांई साधुओने करवा योग्य नथी ते हुं इच्छुं छुं अर्थात् साक्षात् न करवा छतां पण मनवडे अभिलाषा करुं छुं (अहि ' मकारनो ' आगम प्राकृतशैलीने अंगे क्षे) अथवा जे कांई साधुओना कार्यने आश्रयीने मिध्या-विषरीत थाउं छुं अथवा मिध्या-खोदुं करुं छुं. ' मिच्छामि ' म्लेच्छनी जेम आचरण करुं छुं अथवा म्लेच्छ (कर्मवडे) मलिन थाउं छुं. शेष पूर्ववत् ३, तथा अयथार्थ अनुष्ठानमां प्रवृत्त थयो सतो (थको) अथवा कोई बीजावडे प्रेरणा करायो सतो, एटले प्रश्न करायो थको पोताना चित्तना समाधान माटे अथवा अयथार्थ अनुष्ठानना समर्थन माटे क्थिए (दुष्ट) चित्तवृत्तिवडे एवी रीते प्ररूपणा करुं छुं अथवा भावना करुं छुं के-एवी पण प्रज्ञप्तिप्ररूपणा जिनागममां छे. पाठांतरमां तो एवी रीते पण आ भाव कहेल छे. ए प्रमाणे अस्थानमां अभिनिवेशी अर्थात् कदाग्रही अथवा उत्सत्रनो प्ररूपक हुं छुं, आ प्रमाणे एक (चोथी) गही. एवी रीते पोताना दोषना स्वीकाररूप गही सर्वत्र छे. (सू० २८८) गहीं तो दोषना त्याम करनारने ज सम्यग्-यथार्थ होय छे परंतु बीजाने होती नथी माटे दोषने टाळनार जीवोना श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४०५॥

स्वरूपनुं निरूपण करवा माटे सत्तर चौभंगी खत्रो कहे छे-

चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अप्पणो नाममेगे अलमंथू भवति णो परस्स, परस्स नाममेगे अलमंथू भवति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि अलमंथू भवति परस्सवि, एगे नो अप्पणो अलमंथू भवति णो परस्स (१), चत्तारि मग्गा पं० तं०-उज्जू नाममेगे उज्जू, उज्जू नाममेगे वंके, वंके नाममेगे उज्जु, वंके नाममेगे वंके (२), एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उज्जू नाममेगे उज्जू ४ (३), चत्तारि मग्गा पं० तं०-खेमे नाममेगे खेमे, खेमे णाममेगे अखेमे ह्व ४ (४), एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-खेमे णाममेगे खेमे ह ४ (५), चत्तारि मग्गा पं० तं०-खेमे णाममेगे खेमरूवे, खेमे णाममेगे अखेमरूवे ४ (६), एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं०-खेमे नाममेगे खेमरूवे ४ (७), चत्तारि संबुक्का पं० तं०-वामे नाममेगे वामावते, वामे नाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे नाममेगे वामावत्ते. दाहिणे नाममेगे दाहिणावत्ते ८। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-वामे नाममेगे वामावत्ते ह्व ४ (९), चत्तारि धूमिसहाओ पं०तं०-वामा नाममेगा वामावत्ता ४ (१०), एवामेव चत्तारित्थीओ पं॰ तं॰-वामा णाममेगा वामावत्ता ४ (११), चत्तारि अग्गिसिहाओ पं॰ तं॰-वामा णाममेगा वामा- ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ पुरुषाणा-मलमस्त्वा-दिचतुर्भगीः स्र० २८९

। ४०५ ॥

वत्ता ह्व ४ (१२), एवामेव चत्तारित्थीओ पं० तं०-वामा णाम० ह्व ४ (१३), चत्तारि वायमंडिलया पं० तं०-वामा णाममेगा वामावत्ता ४ (१४), एवामेव चत्तारित्थीओ पं० तं०-वामा णाममेगा वामावत्ता ४ (१५), चत्तारि वणसंडा पं० तं०-वामे नाममेगे वामावत्ते ४ (१६), एवामेव चत्तारि पुरिसंजाया पं० तं०-वामे णाममेगे वामावत्ते ४ (१७)। सू० २८९

मूलार्थः —चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे —कोईक पोताना आत्माने दुष्ट प्रवृत्तिथी अटकावे छे परंतु बीजाने अटकावतो नथी, कोईक बीजाने दुष्ट प्रवृत्तिथी अटकावे छे पण पोताना आत्माने अटकावतो नथी, कोईक पोताना आत्माने अने बीजाने पण दुष्ट प्रवृत्तिथी अटकावे छे तेमज कोईक पोताने के परने दुष्ट प्रवृत्तिथी अटकावतो नथी (१), चार प्रकारना मार्ग कहेला छे, ते आ प्रमाणे —कोईएक मार्ग शरूआतमां पण सरल छे पण पछी वक छे, कोईएक मार्ग शरूआतमां वक पण पछी सरल छे तेमज कोईएक मार्ग शरूआतमां पण वक अने पछी पण वक छे (२), ए द्रष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे —कोईएक पुरुष प्रथम —पूर्वकाळमां सरल छे अने पछी पण सरळ छे, कोईक प्रथम सरल अने पछी वक्र छे, कोईक प्रथम वक्र अने पछी सरल छे तथा कोईक प्रथम चक्र अने पछी पण वक्र छे (३), चार प्रकारना मार्ग कहेल छे, ते आ प्रमाणे —कोईक मार्ग आदिमां क्षेम —उपद्रव रहित अने पछी पण क्षेम छे, कोईक मार्ग आदिमां क्षेम पण पछी क्षेम छे पण पछी अक्षेम छे, कोईक मार्ग आदिमां अक्षेम पण पछी क्षेम छे

श्रीस्था नाङ्गद्धत्र सानुवाद ॥ ४०६॥

तेमज कोईक मार्ग आदिमां पण अक्षेम अने अंतमां पण अक्षेम छे (४), ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो छे, ते आ प्रमाण-कोईक पुरुष प्रथम क्षेम-क्रोधादिथी रहित अने पछी पण क्षेम छे, कोईक प्रथम क्षेम पण पछी अक्षेम छे, कोईक प्रथम अक्षेम पण पछी क्षेम छे तेमज कोईक प्रथम पण अक्षेम अने पछी पण अक्षेम छे (५), चार प्रकारना मार्ग कहेल छे, ते आ प्रमाणे-कोईक मार्ग क्षेम (उपद्रव रहित) अने क्षेमरूप-सुंदर आकारवाळो छे, कोईक मार्ग क्षेम पण अक्षेमरूप-खराव आकारवाळो छे, कोईक मार्ग अक्षेम पण क्षेमरूप (सुंदराकार) छे तेमज कोईक मार्ग अक्षेम अने अक्षेमरूप छे (६), ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक पुरुष क्षेम-भावधी साधुना गुण युक्त अने क्षेमरूप-द्रव्यथी साधुना वेष युक्त छे, कोईक साधुना गुण युक्त छे पण कारणवशात साधुना वेष रहित छे, कोईक साधुना गुणथी रहित पण वेष युक्त छे अने कोईक गुण रहित अने वेष रहित पण छे (७), चार प्रकारना शंख कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक शंख वाम-प्रतिकूल गुणवाळो अने वामावर्ष-उत्तरदिशा सन्मुख आवर्तवाळो छे, कोईक प्रतिकृत गुणवाळो पण दक्षिणावर्त छे, कोईक अनुकूळ गुणवाळो पण वाम आवर्तवाळो छे अने कोईक शंख अनुकूळ गुणवाळो अने दक्षिणावर्त छे (८), ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक वाम-प्रतिकूल स्वभाववाळो अने वामावर्त-प्रतिकूल वर्तनवाळो छे, कोईक प्रतिकूल स्वभाववाळो छे पण अनुकूल वर्तनवाळो छे, कोईक अनुकूळ स्वभाववाळो छे पण प्रति-क्ळ वर्तनवाळो छे तेमज कोईक अनुकूळ स्वभाव अने अनकूळ वर्तनवाळो छे (९), चार प्रकारनी धूम्रशिखाओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-कोई एक धूमाडानी शिखा वामा--डाबे पडखे जनारी अने वामावर्ता-डाबा आवर्त(चकर)वाली छे, कोईक

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ पुरुषाणा-मलमस्त्वा-दिचतुर्भगीः स्र० २८९

11 308 11

धुम्रशिखा वाम भागमां जनारी छे पण दक्षिण-जमणा आवर्तवाली छे, कोईक धुम्रशिखा दक्षिण भागमां जनारी छे पण डाबा आवर्तवाली है तेमज कोईक धूम्रशिखा दक्षिण भागमां जनारी अने दक्षिण आवर्तवाळी छे (१०), ए दृष्टांते चार प्रकारनी स्त्रीओं कहेली छे, ते आ प्रमाणे-कोईक स्त्री प्रतिकूल स्वभाववाली अने प्रतिकूल वर्तनवाली छे, कोईक स्त्री प्रतिकूल स्वभाववाली छे पण अनुकूल वर्तनवाली छे, कोईक स्त्री अनुकूल स्वभाववाली छे पण प्रतिकूल वर्तनवाली छे तेमज कोईक स्त्री अनुकूल स्वभाव अने अनुकूल वर्तनवाली छे (११), चार प्रकारनी अग्निशिखाओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक अग्निशिखा वामभागमां जनारी अने वाम आवर्त्तवाळी छे. कोईक अग्निशिखा वामभागमां जनारी अने दक्षिण आवर्तवाळी छे. एवी रीते धूम्रशिखानी माफक चोभंगी समजवी (१२), आ दृष्टांते चार प्रकारनी स्त्रीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-प्रतिकूल स्वभाववाळी अने प्रतिकूल वर्तनवाळी, एम चार भांगा अगियारमा सत्र प्रमाणे समजवा (१३), चार प्रकारे वातमंडिलका कहेली छे, ते आ प्रमाण-कोईक वायुनी मंडिलका (घूमरीवडे वायु ऊंचो चडवो ते) वामभागमां छे अने वाम आवर्तवाळी छे. एम पूर्वनी माफक चोभंगी जाणवी (१४), आ दृष्टांत चार प्रकारनी स्त्रीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-काईक स्त्री प्रतिकूल स्वभाव अने प्रतिकूल वर्तनवाली छे. एवी रीते पूर्वनी माफक चतुर्भेगी जाणवी (१५), चार प्रकारना वनखंडो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक वनखंड वाम (डाबा) भागमां छे अने वाम आवर्तवाळो-वायुथी उपर दिशा सन्मुख वळे छे. एंबी रीते पूर्वनी माफक चतुर्भगी समजवी (१६), आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक पुरुष प्रतिकूल स्वभाववाळो अने प्रतिकूळ वर्तनवाळो छे, कोईक प्रतिकूल स्वभाववाळो छे पण अनुकूल वर्तनवाळो छे, कोईक अनुकूल भीस्था-भाङ्गद्वत्र सातुवाद् ** १। ४०७ ॥ **

वर्तनवाळो छे पण प्रतिकूल स्वभाववाळो छे तेमज कोईक पुरुष अनुकूल स्वभाव अने अनुकूल वर्तनवालो छे (१७) (स०२८९). टीकार्थ:—आ सूत्रो स्पष्ट छे, मात्र ' निषेध थाओ ' एम जे कहे छे ते ' अलमस्त् ' कहेवाय छे अर्थात निषेधक, ते 🔀 दुष्ट कार्योमां प्रवर्तमान आत्मानो-पोतानो निषेध करनार, अथवा 'अलमंथु'त्ति० सिद्धांतनी भाषावडे ' समर्थ ' कहेवाय छे. तेथी कोईएक पोतानो निग्रह करवाभां समर्थ १. एक मार्ग शरू आतमां पण सरळ अने अंतमां पण सरळ छे अथवा सरळ जणाय छ अने तत्त्वथी पण सरळ २. पुरुष तो पूर्व अने उत्तरकालनी अपेक्षाए सरळ छे अथवा अंतःकरणनी अने बाह्य खरूपनी अपेक्षाए सरळ छे. क्यांक तो ' उज्जनामं एगे उज्जमणे ' त्ति । पाठ छे ते पण बाह्य स्वरूप अने अंतर स्वरूपनी अपेक्षाए व्याख्या करवा योग्य छे ३. कोईएक मार्ग शुरूआतमां निरुपद्रव होवावडे क्षेम छे, वळी छेवटमां पण क्षेम छे अथवा प्रसिद्धि-जाहेर अने तत्त्वथी क्षेम छे ४. एम पुरुष पण क्रोध विगेरेना उपद्रवधी रहित होवाथी क्षेम छे ५. भावथी उपद्रवना अभाववडे क्षेम अने आकार-देखाववडे सुंदर मार्ग ६, प्रथम पुरुष तो भावलिंग-साधुना गुणयुक्त अने द्रव्यलिंग-साधुना वेषयुक्त, बीजो कारणथी द्रव्यित रहित गुण युक्त साधु ज, त्रीजो निह्नत, चोथो अन्यतीर्थिक अथवा गहस्थ ७. शंवको-शंखो वाम पडखे च्यवस्थित (रहेल) होवाथी अथवा प्रतिकूळ गुणवाळो होवाथी वाम, वामावर्त प्रसिद्ध छे. एम दक्षिणावर्त पण जाणवो. दक्षिण-दक्षिण भागमां स्थापन करवाथी अथवा अनुकूळ गुणवालो होवाथी ८, पुरुष तो प्रतिकूल स्वभाववडे वाम. वाम ज जे वर्ते छे ते वामावर्त, केम के विपरीत प्रश्नति करवाथी एक, बीजो खभावथी विपरीत अने कारणवशात् दक्षिणावक-अनुकूल प्रवृत्ति करनार, त्रीजो तो अनुकूल स्वभाववडे दक्षिण परंतु कारणवशात् वामावर्त-प्रतिकूल प्रवृत्ति करनार, एम चोथो स्व-

४ स्थान काध्ययने उद्देशः २ पुरुषाणा-मलमस्त्वा-दिचतुर्भगी सू० २८९

॥ ४०७ ॥

भावथी अने प्रवृत्तिथी पण अनुकूल जाणवो ९, धूमिशिखा वामभागमां रहेवावडे अथवा प्रतिकूल स्वभाववडे वामा, अने वाम-डाबा भागथी घूमरी फरे छे ते वामावर्ता १०, स्त्रीनी व्याख्या पुरुषनी माफक करवी, अहिं शंखनुं दृष्टांत होवा छतां पण धूमिशिखा विगेरे दृष्टांतानुं स्त्रीरूप दाष्टांतिकोने विषे शब्दना समानपणाथी विशेष युक्त होवाथी भेदवडे स्वीकारेल छे ११, एम अग्निशिखानी व्याख्या पण जाणवी १२-१३, वातमंडलिका-धूमरीवडे ऊंचो जतो वायु, अहिं स्त्रीओ, मिलिनता, उपताप अने चपलताना स्वभाववाली होय छे. आ अभिप्रायवडे स्त्रीओना विषयमां धूमिशिखा विगेरे त्रण दृष्टांतो उपन्यास करेल छे. कद्युं छे के-

चवला मङ्ळणसीला, सिणेहपरिपूरियावि तावेइ । दीवयसिहव्व महिला, लध्धप्पसरा भयं देइ ॥९२॥

दीपकर्नी शिखानी जेम स्त्री भयने आपे छे, ते स्त्री चपल स्वभाववाळी, मिलनताने करनारी, स्नेहथी पूरायेली-प्रेमपात्र करायली छतां पण संतापन कर छे तेमज अवसर मळवाथी स्वच्छंदचारिणी होय छे. १४-१५

वनखंड तो शिखानी माफक जाणवुं, विशेष ए के-वाम वलणवडे उत्पन्न थवाथी अथवा वायुवडे वाम कंपमान थवाथी वामावर्त १६. पुरुषना विषयमां पूर्वनी माफक जाणवुं १७. (स्ट० २८९).

हमणां ज अनुकूल स्वभाव अने अनुकूल प्रवृत्तिवालो पुरुष कह्यो, एवा प्रकारनो निर्प्रथ, सामान्यवडे अनुचित प्रवृत्तिमां पण पोताना आचारने उल्लंघतो नथी एम दर्शावतां थका स्त्रकार कहे छे के— श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ।। ४०८॥

चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथे णिग्गंथिं आलवमाणे वा संलवमाणे वा णातिक्कमति, तं०—पंथं पुच्छ-माणे वा १ पंथं देसमाणे वा २ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दलेमाणे वा ३ दलावे-माणे वा ४। सू० २९०, तमुककायस्स णं चत्तारि नामधेजा पं० तं०—तिमति वा तमुककातेति वा अधकारेति वा महंधकारेति वा। तमुककायस्स णं चत्तारि णामधेजा पं० तं०—लोगंधगारेति वा लोगतमसेति वा देवंधगारेति वा देवतमसेति वा। तमुककायस्स णं चत्तारि नामधेजा पं० तं०—वातफिलहेति वा वातफिलहिखोभेति वा देवरन्नेति वा देववूढेति वा। तमुककाते णं चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्टति तं०—सोधम्मीसाणं सणंकुमारमाहिंदं। सू० २९१

मूलार्ध:— चार कारणवडे एकलो साधु, एकली साध्वी साथे आलाप-एक वखत बोलतो थको अथवा संलाप-वारंवार बोलतो थको आचारनुं उल्लंघन करतो नथी, ते आ प्रमाण-गृहस्थना अभावे साध्वीने मार्ग संबंधे पूछतो थको अर्थात् एम पूछे छे के-हे धर्मशीले ! क्यो मार्ग छे ११, साध्वीने मार्ग (रस्तो) बतावतो थको २, अश्चन, पान, खादिम तथा खादिम चार प्रकारना आहार, साध्वीने आपतो थको एम कहे के-हे धर्मशीले ! आ आहार ग्रहण कर ३ तेमज हे आर्थे ! हुं तमने आहारादि अपावीश, तुं अहिं आवजे एम कहेतो थको ४. (स० २९०) तमस्कायना चार नाम कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ तम, २

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ निर्गन्थ्या सहालापादि तमस्कायः स्र० २९०-९१

11 206 1

तमस्काय, ३ अंधकार अने ४ महांधकार. तमस्कायना चार नाम कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ लोकांधकार, २ लोकतमस्, ३ देवांधकार अने ४ देवतमस्. तमस्कायना चार नाम कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ वायुने रोकनार भ्रंगल समान ते वातपरिघ, २ वायुने भ्रंगलनी माफक क्षोभ पमांडे छे ते वातपरिघक्षोभ, ३ देवोने नाशवानुं स्थान ते देवारण्य अने ४ सैन्यना व्यूहनी जेम दुःखपूर्वक जेनो प्रवेशमार्ग जाणी शकाय ते देवव्यूह. तमस्काय, चार देवलोकने चोतरफ घेरी रहेलो छे, ते आ प्रमाणे- सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार अने माहेंद्र. (६० २९१)

टीकार्थ:-'चउही' त्यादि०स्पष्ट छे. विशेष ए के-आलापन-थोडं अथवा पहेली वखत बोलतो थको,संलपन-परस्पर वारं-बार बोलतो थको, निर्प्रथना आचारने उल्लंघन करतो नथी. " एगो एगित्थिए सर्द्धि, नेव चिट्टे न संलवे " एकलो साध्र एकली स्त्रीनी साथे ऊभो रहे निहं तेम बोले पण निहं. विशेषथी साध्वीनी साथे आ प्रमाणे निषेध छे परंतु मार्ग संबंधी प्रश्न विगेरेमाँ पुष्ट आलंबनपणुं होवाथी आचारनुं उल्लंघन थतुं नथी. तेमां पूछवायोग्य साधर्मिक (साधु) अने गृहस्थ पुरुषना अभावमां 'हे आर्ये! अहिथी अमोने जवानो कयो मार्ग छे?' इत्यादि क्रमवडे मार्गने पूछतो थको, अथवा 'हे धर्मशीले! तमारे जवानो आ मार्ग छे ' इत्यादि क्रमवडे साध्वीने मार्ग देखाडतो, अथवा 'हे धर्मशीले ! तुं आ अशनादिने ग्रहण कर ' एम कहीने आहारादि आपतो थको तथा 'हे आर्थे ! तुं अहिंया घर विगेरेमां आव, तारा माटे आहारादि अपावुं 'एम कहींने अपावतो थको आचारनं उल्लंघन करतो नथी. (सू० २९०) तथा तमस्कायने 'तमः ' इत्यादि शब्दवडे व्यवहार करतो थको साधु, यथार्थपणाने लईने भाषाना आचारनुं उल्लंघन करतो नथी माटे तमस्कायना नामोने कहे छे-' तमुकाये 'त्यादि० ६९

भीस्था-ना**ङ्गध्**त्र सानुवाद ॥ ४०९ ॥

त्रण सत्रो सगम छे. विशेष ए के-तमसः-अप्कायना परिणामरूप अंधकारनो काय-समृह ते तमस्काय, जे असंख्याततम अरुणवर नामना द्वीपनी बहारनी वेदिकाना अंतथी अरुणोद नामना समुद्रमां बेंतालीश हजार योजन पर्यंत अवगाहीने (जईने) पाणीना उपरना भागथी एक प्रदेशवाळी श्रेणीवडे तमस्काय नीकळीने, सत्तरसो एकवीश योजन सुधी ऊंचो जईने, त्यांथी तिच्छों-विशेष विस्तार पामतो थको, सौधर्मादि चार देवलोकने घेरीने ऊंचे पण ब्रह्मलोक कल्पना रिष्ट नामना विमान-प्रतर सुधी पहोंचेल छे. तेना नामो ए ज नामधेयो छे. 'तम' इति० तमोहूप होवाथी अथवा हूपने बताववामां तमः कहेल छे. मात्र तमखरूपने कहेनारा पहेला चार नामो विकल्पमां छे अर्थात 'तम 'ना पर्यायवाचक छे. वळी बीजा ज चार नामो अत्यंत तमखरूपने बतावनारा छे. लोकमां ए ज अंधकार छे, एवो बीजो नथी माटे 'लोकांधकार ' कहेल छे. देवोने पण ए ज अंधकार छे केम के देवोना शरीरनी प्रभानो पण त्यां प्रकाश पडतो नथी माटे देवांधकार कहेल छे. आ कारणथी ज बलवान देवोना भयथी देवो तमस्कायमां नाशी जाय छे-संताई जाय छे एम संभठाय छे. वळी अन्य चार नामो कार्यने आश्रयीने कहेला छे. वायुने चोमेर हणवाथी परिघ-अर्गला, वायुनो परिघनी माफक परिघ ते वातपरिघ, तथा वायुने परिघनी माफक क्षोम करे छे-मार्गने रोके छे ते वातपरिघक्षोभ, अथवा वायुखरूप ज परिघने जे रोके छे ते वातपरिघक्षोभ. पाठांतर-वंडे वातपरिक्षोभ छे. क्यांक देवपरिघ अने देवपरिक्षोभ आ नामो प्रथमना बे पदना स्थानमां कहेवाय छे. देवोने अरण्यनी माफक बलवान देवोना भयथी नाजवातुं स्थान होवाथी जे तमस्काय ते देवारण्य छे. सागर विगेरे संग्रामना व्यूह(रचना)नी जेम दुःखपूर्वक गमन करवा योग्य होवाथी जे देवोना च्यूह ते देवच्यूह. तमस्कायना खरूपनुं प्रतिपादन करवा माटे

४ स्थान काश्ययने उद्देशः २ निर्गन्थ्या सहालापादि तमस्कायः स्र० २९०-९१

॥ ४०८ ॥

'तमुकाये ण' मित्यादि० सत्र कहेवायेल अर्थवालुं छे, परंतु सौधर्मादि देवलाकिने आ तमस्काय आवरीने रहेल छे अने ते क्रकडाना पांजराना आकारे रहेल छे. तेना प्रतिपादन माटे कह्युं छे के-" तमुकाए णं भंते ! किं संठिए पन्नत्ते ? गोयमा ! अहे मल्लगमूलसंठिए उप्ति कुक्कुडपंजरसंठिए पन्नत्ते । "हे भगवन् ! तमस्काय केवा आकारे रहेल छे ? उत्तर-हे गौतम ! नीचे मल्लकमूल-सरावलाना मूलना आकारे अने उपर क्रकडाना पांजराना आकारे रहेल छे. (स० २९१)

हमणां वचनना पर्यायवढे तमस्काय कहो, हवे अर्थपर्यायवडे पुरुष प्रत्ये निरूपण करनार पांच सत्रो सत्रकारवडे कहेवाय छे—

चत्तारि पुरिसजाता पं॰ तं॰—संपागडपिडसेवी णाममेगे, पच्छन्नपिडसेवी णाममेगे, पडुप्पन्ननंदी नाममेगे, णिस्सरणणंदी णाममेगे ४ (१), चत्तारि सेणाओ पं॰ तं॰—जितत्ता णाममेगे णो
पराजिणित्ता, पराजिणित्ता णाममेगे णो जितत्ता, एगा जितत्तावि पराजिणित्तावि,एगा नो जितत्ता
नो पराजिणिता ४ (२),एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं॰ तं॰—जितत्ता नाममेगे नो पराजिणित्ता ४
(३), चत्तारि सेणाओ पं॰ तं॰—जितत्ता णामं एगा जयई, जइत्ता णाममेगा पराजिणित, पराजिणित्ता णाममेगा जयित, पराजिणित्ता पराजिणिति ४ (४), एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं॰ तं॰—
जइत्ता नाममेगे जयित ४ (५) सृ॰ २९२

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४१० ॥

मूलार्थः-चार प्रकारना पुरुषी कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक गच्छमां रहेल साधु, अगीतार्थ समक्ष दोषने सेने छे ते संप्रगटप्रतिसेवी, कोईएक प्रच्छन दोषने सेवे छे, कोईएक वस्त्र अने शिष्यादिना लाभवडे जे आनंदने पामे छे ते प्रत्युत्पन्न-नंदी, कोईएक गच्छमांथी पोतानो के शिष्यादिना नीकळवावडे जे आनंदित थाय छे निःसरणनंदी (१), चार प्रकारनी सेना कहेली छे, ते आ प्रमाणे-एक सेना शतुने जीतनारी छे पण पराजय पामे निह, एक सेना शतुथी पराजय पामनारी छे पण जीतनारी नथी, एक सेना जीतनारी पण छे अने पराजय पामनारी पण छे तेमज एक सेना जीतनारी पण नहि अने पराजय पामनारी पण नहि (२), आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-केईएक साधु परीपहनी सेनाने जीतनार छे परंतु तेथी श्रीमहावीरस्वामीनी जेम पराजय पामनार नथी, एक साधु परीषहथी पराभव पामनार छे पण कंडरीकवत् जीतनार नथी, एक साधु जीतनार पण छे अने शैलक राजर्षिवत पराजय पामनार पण छे तेमज एक साधु जीतनार पण नथी अने पराजय पण पामनार नथी-जेने परीषह उत्पन्न थयेल नथी ते (३), चार प्रकारनी सेना कहेली छे, ते आ प्रमाणे-एक सेना एक वखत श्रुने जीतीने फरीथी पण जीते छे, एक सेना प्रथम जीतीने फरीथी पराजय पामे छे, एक सेना प्रथम पराजय पामीने पछी जीते छे तेमज एक सेना प्रथम पण पराजय पामीने पछी पण पराजय पामे छे (४). आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक साधु प्रथम परीषहने जीतीने पछी पण परीषहने जीते छे, कोईक प्रथम जीतीने पछी हारे छे. कोईक प्रथम हारीने पछी जीते छे तेमज कोईक प्रथम पण हारे छे ने पछी पण हारे छे (५) (स्व० २९२) टीकार्थ:-आ सत्रो सुगम छे. विशेष ए के-कोईएक-गच्छमां रहेल साधु, संप्रकट अगीतार्थनी आगळ मूलगुणो अने

४ स्थान काष्ययने उद्देशः २ प्रकटसे-व्यादि स्रु० २९२

11 290 11

उत्तरगुणोमां दोषने सेवे छे, अभिमानथी अथवा कल्पवडे ते संप्रकटप्रतिसेवी, एम बीजो प्रच्छन्न-छानी रीते दोषने सेवे छे ते प्रच्छन्नप्रतिसेवी, त्रीजो तो वस्त्र अने शिष्यादिनी प्राप्तिवडे अथवा शिष्य के आचार्यादि खरूपवडे थयो थको जे बृद्धि पामे छे ते प्रत्युत्पन्ननंदी अथवा नंदनं नंदिः-आनंद, लाभवडे आनंद छे जेने ते प्रत्युत्पन्ननंदी, तथा प्राघणिक (प्राहणा) साधुनो, शिष्य विगेरेनो अथवा पोतानो, गच्छ विगेरेमांथी नीकळवावडे जे आनंद पामे छे अथवा आनंद छे जेने ते निःसरण-नंदी. पाठांतरवडे तो प्रत्युत्पन्न-जेम प्राप्त थयुं तेम सेवे छे, परंतु अनुचितने पृथक्-जुदो करतो नथी ते प्रत्युत्पन्नसेवी छे (१), 'जइत्त'त्ति० एक सेना शत्रुना बलने जीते छे ते जेत्री परंतु न पराजेत्री-शत्रुना बलथी हारती नथी, बीजी सेना पराजेत्री अर्थात् बीजाथी हार पामनारी छे आथी ज जीतनारी नथी, त्रीजी सेना कारणवशात् उभय स्वभाववाळी छे. चोथी सेना तो जीतवानी इच्छावाळी न होवाथी जीतनारी पण नथी तेम हारनारी पण नथी (२), पुरुष-साधु, परीपहोने जीतनार ते जेता. परंतु तेथी (महावीर परमात्मानी माफक) पराजय पामनार निहं, आ एक.बीजो कंडरीकवतु , त्रीजो कदाचित जीतनार अने कदाचित कर्मवशात हारनार शैलक राजर्षिवत तेमज चाथो तो नहिं उत्पन्न थयेल परीपहवाळो (३), एक वखत शत्रुना बळने जीतीने फरीथी पण जीते छे ते पहेली सेना, बीजी सेना प्रथम जीतीने पछीथी हारे छे, त्रीजी प्रथम हारीने पछीथी जीते छे अने चोथी तो पहेला हारीने पछी पण हारे छे (४), पुरुषना संबंधमां तो परीषद्व विगेरेमां एवी रीते विचारवा योग्य छे. (स्०२९२) अहिं तस्वथी तो कषायो ज जीतवा योग्य छे माटे तेना स्वरूपने देखाडवानी इच्छावाळा स्त्रकार, क्रोधने आगळ

देखाडवामां आवनार होवाथी मायादि त्रण कषायना प्रकरणने कहे छे-

श्रीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद ॥ ४११॥

चत्तारि केतणा पं॰ तं॰-वंसीमूलकेतणते, मेंढविसाणकेतणते, गोमुत्तिकेतणते, अवले-हणितकेतणते, एवामेव चउविधा माया पं॰ त०-वंसीमूलकेतणासमाणा, जाव अवलेहणितास-माणा, वंसीमूलकेतणासमाणं मायं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति णेरइएसु उववज्जति, मेंढविसाण-केतणासमाणं मायमणुष्पविद्वे जीवे कालं करेति तिरिवखजोणितेसु उववज्जति, गोमुत्ति० जाव कालं करेति मणुस्सेसु उववज्जति, अवलेहणिता जाव देवेसु उववज्जति । चत्तारि थंभा पं० तं०-सेल-थंभे अट्रिथंभे दारुथंभे, तिणिसलताथंभे, एवामेव चडाव्विधे माणे पं० तं०-सेलथंभसमाणे जाव तिणिसलताथंभसमाणे, सेलथंभसमाणं माणं अणुपिवट्टे जीवे कालं करेति नेरतिएस उवव-ज्जति, एवं जाव तिणिसलताथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति देवेसु उववज्जति । चत्तारि वत्था पं० तं०-किमिरागरत्ते, कद्दमरागरत्ते, खंजणरागरत्ते, हिलद्दरागरत्ते, एवामेव चउ-विवधे लोभे पं॰ तं॰-किमिरागरत्तवत्थसमाणे, कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे, खंजणरागरत्तवत्थसमाणे, हलिद्दरागरत्तवस्थसमाणे, किमिरागरत्तवस्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेरइएस् उववज्जइ,

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ केतनादि स्र० २९३

11 299 11

तहेव जाव हलिइरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जति । सू० २९३

मूलार्थ:-चार प्रकारना केतन-वस्तुनुं वक्रत्व कहेल छे, ते आ प्रमाणे-वांसना मूलनुं वक्रत्व, घेटाना शींगडानुं वक्रत्व, गायना मुत्रनुं वक्रत्व अने अवलेखनिका अर्थात् वांसनी झीणी छालनुं वक्रत्व (वांकपणुं). ए दृष्टांते चार प्रकारनी माया कहेली हो, ते आ प्रमाण-बांसना मूल समान अत्यंत वक्र (गूढ) माया ते अनंतानुबंधी,घेटाना शींगडा समान वक्र माया ते अप्रत्याख्यानी. गोमूत्रना समान वक्र माया ते प्रत्याख्यानावरणी अने वांसनी झीणी छाल समान वक्र माया ते संज्वलनी वांसना मूल समान वक्र मायामां प्रविष्ट (प्रवेश करेल) जीव काल करे छे तो नैरियकोमां उत्पन्न थाय छे. घेटाना शींगडा समान वक्र मायामां प्रविष्ट जीव काल करे छे तो तिर्यंचयोनिक जीवोमां उत्पन्न थाय छे. गोमूत्र समान वक्र मायामां प्रविष्ट जीव काल करे छे तो मनुष्योमां उत्पन्न थाय छे. वांसनी झीणी छाल समान वक्र मायामां प्रविष्ट जीव काल करे छे तो देवोमां उत्पन्न थाय छे. चार प्रकारना स्थंभ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-शैल-पत्थरनो स्थंभ(थांभलो), अस्थि-हाडकानो थांभलो, दारु-लाकडा-नो थांभलो अने तिनिश्चलता-नेतरना थांभलो. ए दृष्टांते चार प्रकारनो मान कहेल छे, ते आ प्रमाणे-शैलस्थंभ समान मान-अत्यंत अकड स्वभाववाळो, अस्थिस्थंभ समान मान दुःखे नमावी शकाय एवो, काष्टस्थंभ समान मान थोडा प्रयासे नमावी शकाय एवो अने नेतरना स्थंभ(छडी) समान मान सहज नमावी शकाय एवो अनुक्रमे अनंतानुबंधी विरोरे जाणी लेवो. शैलस्थंभ समान मानमां प्रविष्ट जीव काल करे छे तो नैरियकोमां उपजे छे, एवी रीते यावत नेतरना स्थंभ समान मानमां प्रविष्ट जीव काल करे छे तो देवोमां उपजे छे. चार प्रकारना वस्त्रो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-मनु- भीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४१२॥

ष्यना लोहीमां कृमि उपजे छे तेना रसथी मिश्रित रंगवडे जे वस्त रंगाय छे ते कृमिरागरक्त, कादवथी खरडायेल वस्त्र ते कईमरागरक्त, दीपक विगेरेना मेलथी खरडायेल वस्त्र ते खंजनरागरक्त अने इलदरना रंगथी रंगित वस्त्र ते इरिद्रारागरक्त. ए दृष्टांते चार प्रकारनो लोभ कहेल छे, ते आ प्रमाणे−कृमिरागरक्त वस्त्र समान ते अनंतानुबंधी, कईमरागरक्त वस्त्र समान ते अप्रत्याख्यानावरणी, खंजनरागरक्त वस्त्र समान ते प्रत्याख्यानावरणी अने हरिद्रारागरक्त वस्त्र समान ते संज्वलनी लोभ. कृमिरागरक्त वस्त्र समान लोभमां प्रविष्ट जीव काल करे तो नैरियकोमां उत्पन्न थाय छे यावत् हरिद्रारागरक्त वस्त्र समान लोभमां प्रविष्ट जीव काल करे छे तो देवोमां उत्पन्न थाय छे. (स० २९३)

टीकार्थः—'चत्तारी'त्यादि ० प्रगट छे, विशेष ए के-केतन—सामान्यथी वक्र. वस्तु अथवा पुष्पना करंडीआ संबंधी मूटमां प्रहण करवानुं स्थान वांस विगेरेना खंडवाछं ते पण वक्र होय छे, परंतु अहिं सामान्यथी वस्तुनुं वक्रत्व (वांकापणुं) 'केतन' शब्दवडे प्रहण कराय छे. तेमां वांसना मूलरूप जे केतन ते वंशीमूलकेतन, एवी रीते सर्वत्र समजवुं. विशेष ए के-मेंढविषाण—घेटानुं शींगडुं, गोमूत्रिका तो प्रसिद्ध छे. 'अवलेहणिय'त्ति ० छोलायेली वांसनी सळी विगेरेनी जे पातळी छाल ते अवलेखनिका. वंशीमूल विगेरेना वक्रनी समान मायानुं वक्रपणुं तो मायावाळाना असरल-वक्रपणाना भेदथी छे, ते आ प्रमाणे—जेम वांसनुं मूल अत्यंत गुप्त वक्र छे एवी रीते कोईक जीवनी माया पण अत्यंत गुप्त वक्र छे. एवी रीते अल्प, अल्पतर (तेथी थोडी) अने अल्पतम (तेथी पण थोडी) असरलतावडे अन्य माया पण विचारवी. आ चारे माया अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरणी, प्रत्याख्यानावरणी अने संज्वलनीरूपे अनुक्रमे जाणवी. अन्य आचार्यो कहे छे के प्रत्येक अनंता-

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ केतनादि स्रु० २९३

1888 11

चुबंधी विगेरे मायामां अत्यंत, अल्प, अल्पतर अने अल्पतम एम चार भेदो होय छे. ते कारणथी ज अनतानुबंधी माया-नो उदय छते पण देवपणुं विगेरे विरुद्ध थतुं नथी अर्थात देवादिमां उत्पन्न थाय छे. एवी रीते मान विगेरे पण# जाणवा. वाचनां-तरमां तो प्रथम क्रोध अने मानना सत्रो छे. त्यारबाद मायाना सत्रो छे, तेमां क्रोध सत्रो "चत्तारि राइओ पन्नत्ताओ तं०-पव्वयराई पुढविराई रेणुराई जलराई, एवामेव चउव्विहे कोहे 'इत्यादि० चार प्रकारनी राइ-फाट कहेली छे. ते आ प्रमाणे-पर्वतनी फाट, पृथ्वीनी फाट, रेण़(वालुका)नी फाट अने जलनी रेखा. ए दृष्टांते चार प्रकारनो क्रोध छे इत्यादि मायास्त्रोनी जेम कहेल छे. फलस्त्रोमां तो अनुप्रविष्ट-मायाना उदयमां वर्तनार, शिलाना विकाररूप शैल, ते ज स्थंम अर्थात शैलथंभ. एवी रीते बीजा स्तंभो पण जाणवा. विशेष ए के-एक अस्थि (हाड) अने दारु (लाकडुं) प्रसिद्ध छे. तिनिश एटले वृक्षविशेषनी लता(कंबा) ते तिनिशलता अर्थात नेतरनी छडी, ते अत्यंत कोमल होय छे.माननी पण शैलस्तंभ विगेरेथी समानता छे केम के मानवालाने नमनना अभावविशेषथी समानता जाणवी. मान पण अनंतानुबंधी विगेरे क्रमथी जाणवुं. तेनुं फलसूत्र स्पष्ट छे. कृमि-रंगमां बृद्धसंप्रदाय आ प्रमाणे छे-मनुष्यादिनां रुधिरने लईने कोईपण योग(वस्तु)वडे संयुक्त करीने माजनमां राखे छे, त्यारवाद तेमां कृमिओ उत्पन्न थाय छे, ते कीडाओ वायुनी इच्छावाळा थया थका छिद्रोद्वारा नीकळीने समीपमां भ्रमण करता थका मुखथी लाळ मुके छे ते कृमिसूत्र कहेवाय छे, ते पोताना स्वाभाविक रंगवडे रंगित ज होय छे. बीजाओ कहे छे के-रुधिरमां जे कुमिओ उत्पन्न थाय छे तेओने रुधिरमां ज मसळीने, कचराना भागने दूर करीने, तेना रसमां * अनंतानुबंधी क्रोध विगेरे प्रत्येकना चार चार भेद करवाथी सोळ कषायना चोसठ भेद थाय छे.

For Private and Personal Use Only

श्रीस्था-नाङ्गद्वत्र सानुवाद ॥ ४१३ ॥ कंईक वस्तुने नाखीने पट्ट (रेशमी) सत्रने रंगे छे ते निहं उतारेल रस कृमिराग कहेवाय छे. तेमां कृमिओनो राग-रंगनार रस ते कृमिराग अने तेनावडे रंगायेलुं ते कृमिरागरक्त. एवी रीत सर्वत्र जाणवुं. विशेष ए के-कईम एटले गायना रस्ता
विगेरेनी कादव, खंजन-दीवा विगेरेनो मेल अने हलदर तो प्रसिद्ध छे. लोभनी कृमिराग विगेरेथी रंगायेल बस्ननी समानता
छे केम के अनंतानुबंधी विगेरे लोभना भेदवाळा जिवोनुं कमवडे दृढ, हीन, हीनतर अने हीनतम अनुबंधपणुं होय छे, ते आ
प्रमाण-कृमिरागवडे रंगायेल बस्न बाळवा छतां पण रंगना अनुबंधने छोडे निहं केम के तेनी भस्म रक्त होय छे. एम जे
मरवा छतां पण लोभना अनुबंधने मूकतो नथी तेनो लोभ कृमिरागवडे रंगायेल बस्न समान अनंतानुबंधी कहेवाय छे. एम सर्वत्र
भावना करवी. फलद्यत्र स्पष्ट छे. अहिं कषायनी प्ररूपणानी गाथाओ दर्शावे छे—

जलरेणुपुढविपव्वयराईसरिसो चउविवहो कोहो। तिणिसलयाकट्टट्विय-सेलत्थंभोवमो माणो॥ ९३॥

जलनी रेखा समान, रेतीनी रेखा समान, पृथ्वीनी (फाट) समान अने पर्वतनी फाट समान संज्वलन विगेरे चार प्रकारनो क्रोध छे नेतरनी लता (छडी) समान, काष्ठना स्तंभ समान, हाडकाना स्तंभ समान अने पत्थरना स्तंभ समान संज्वलन विगेरे चार प्रकारनो मान छे.

मायाऽवलेहिगोमुत्ति-मेंढसिंगघणवंसिमूलसमा। लोभो हलिद्खंजण-कद्दमिकिमिरागसारिच्छो।।९४॥ बांसनी झीणी छाल समान, गायना मूत्र समान, मेंढाना शींगडा समान अने वांसना मूल समान क्रमशः संज्वलन

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ केतनादि स्० २९३

11 883 11

विगेरे चार प्रकारनी माया छे. हळद्रना रंग समान, खंजनना रंग समान, काद्यना रंग समान अने कृमिरागना रंग समान क्रमशः संज्वलनादि चार प्रकारनो लोभ छे.

प्वख्चउमासवच्छर-जावज्जीवाणुगामिणो कमसो । देवनरतिरियनारय-गइसाहणहेयवो भणिया॥९५

संज्वलननो कषाय एक पक्ष पर्यंत रहे छे अने देवनी गतिने साधवानो हेतु छे. प्रत्याख्यानावरण कषाय चार मास पर्यंत रहे छे तथा मनुष्यगतिने साधवाना हेतुभूत छे. अप्रत्याख्यानावरण कषाय एक वर्ष पर्यंत रहे छे अने तिर्यंचनी गतिने साधवाना हेतुभूत छे. अनंतानुवंधी कषाय यावत् जीव पर्यंत रहे छे अने नरकगति साधवाना कारणभूत छे (स्०२९३)

हमणा ज कषायो कहा अने कषायोवडे संसार थाय छे माटे संसारनुं स्वरूप कहे छे-

चउविवहे संसारे पं० तं०-णेरितयसंसारे जाव देवसंसारे। चउविवहे आउते पं० तं०-णेरितआउते जाव देवाउते। चउविवहे भवे पं० तं०-नेरितयभवे जाव देवभवे। सू० २९४, चउ-विवहे आहारे पं० तं०-असणे पाणे खाइमे साइमे। चउविवहे आहारे पं० तं०-उवक्खरसंपन्ने उवक्खडसंपन्ने सभावसंपन्ने परिजुसियसंपन्ने। सू० २९५

* आ स्थितिनुं कथन सामान्यतः व्यवहारनयने आश्रयीने छे; निश्चयधी तो बाहुबल्टि मुनिने संज्वलन मान एक वर्ष पर्यंत रहेल छे तथा प्रसन्नचंद्र राजर्षिने अनंतानुबंधीनो क्रोध अंतर्भुहर्त मात्र रहेल छे. श्रीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद ॥ ४१४ । मूलार्थः-चार प्रकारे संसार कहेल छे, ते आ प्रमाण-नरकभूमिमां जवुं तद्रूप नैरियकसंसार यावत् देवलोकमां जवुं ते देवसंसार. चार प्रकारे आयुष्य कहेल छे, ते आ प्रमाण-नैरियकनुं आयुष्य यावत् देवनुं आयुष्य. चार प्रकारे भव कहेल छे, ते आ प्रमाण-नैरियकना भवमां उत्पन्न थवुं ते नैरियकभव यावत् देवना भवमां उत्पन्न थवुं ते देवभव. (६० २९४) चार प्रकारे आहार कहेल छे, ते आ प्रमाण-अञ्चन, पान, खादिम अने स्वादिम. चार प्रकारे आहार कहेल छे, ते आ प्रमाण-उपस्कर-संपन्न-हिंग विगरेथी संस्कार करायेलो आहार, उपस्कृतसंपन्न-आग्रवडे पकावेलो आहार, स्वभावसंपन्न-पचाव्या सिवाय स्वभावथी सिद्ध द्राक्ष विगरे तेमज परियुषितसंपन्न-रात्रिमां राखवावडे बनेला दहिंवडा विगरे आहार. (६० २९५)

टीकार्थ:-'चडिवहे 'इत्यादि० स्पष्ट छे. विशेष ए के-संसरबुं ते संसार अर्थात् मनुष्यादि पर्यायथी नारकादि पर्यायमां जवुं. नैरियकने योग्य आयु, नाम अने गोत्रकर्मनो उदय थये छते जीव नैरियक कहेवाय छे. कह्युं छे के-'' नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ ? गोयमा ! नेरइए नेरइएसु उववज्जइ नो अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ " इति० हे भगवन् ! नैरियक, नैरियकोमां उत्पन्न थाय छे के अनैरियक नैरियकोमां उत्पन्न थाय छे ? उत्तर हे गौतम ! नैरियक नैरियकोमां उत्पन्न थाय छे परंतु अनैरियक नैरियकोमां उत्पन्न थतो नथी. ते हेतुथी नैरियकनुं संसरण-उत्पत्तिस्थानमां जवुं अथवा अन्य अन्य अवस्थाने पामवुं ते नैरियकसंसार. अथवा जीवो जेमां संसरे छे एटले भटके छे ते गितचतुष्टयहूप संसार. तेमां नैरियकनो अनुभव करातो नरक गित लक्षण अथवा परंपरा वडे चार गितहूप संसार ते नरियकसंसार. एम तिर्यंचसंसार विगेरे जाणवा. उक्त स्वहूप संसार आयुष्य छते होय छे, माटे आयुः

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ संसारादि आहारः य० २९४-९५

્રાા ક્ષ્કક્ષ્મ

सूत्र छे. तेमां जे आवे छे अने जाय छे ते आयुः -कर्मविशेष. जेनावडे नरकभवमां प्राणीने धारण कराय छे ते निरयायुः, एम भवसूत्र छे, ते स्पष्ट छे. मात्र भवनं भवः -थवुं ते भव -उत्पत्ति. नरकने विषे उत्पत्ति ते नरकभव. मनुष्योने विषे अथवा मनुष्योनो भव ते मनुष्यभव. एम तिर्यंचभव विगेरेमां पण जाणवुं. (सू० २९४) बधा भवोने विषे जीवो आहार करनारा होय छे माटे बे आहारसूत्र कहे छे-तत्र -आहारसूत्रमां, ग्रहण कराय छे ते आहार, खवाय छे ते अशन -चोखा विगेरे, पीवाय छे ते पान -सौबीर -कांजी विगेरेनुं पाणी, खावुं ए ज प्रयोजन छे जेनुं ते खादिम -विविध फळ विगेरे, स्वाद ए ज प्रयोजन छे जेनुं ते स्वादिम -तांबूल विगेरे. जेनावडे संस्कार कराय छे ते उपस्कर-हींग विगेरे, तेनाथी युक्त आहार ते उपस्करसंपन्न, संस्कारचुं ते उपस्कृत-पाक, तेनावडे बनेल भात, पूडला विगेरे ते उपस्कृतसंपन्न. पाठांतरवडे नोउपस्करसंपन्न -हींग विगेरेथी संस्कार निहं करायेल भात विगेरे. स्वाभाविक -पाक विना तैयार थयेल द्राक्ष विगेरे ते स्वभावसंपन्न, 'परिज्ञस्सिय' - रात्रिमां राखीने बनावेलुं ते पर्युपितसंपन्न इङ्करिकादि (दिहंवडा विगेरे), कारण के दिहेमां रात्रिए पलाळी राखेला खाटा रसवाळा थाय छे अथवा पाला(पराल)मां राखेला आप्रफल विगेरे जाणवा. (स. २९५)

हमणां ज कहेला संसार विगेर भावो जीवोने होय छे माटे '' चडव्विहे बंधे " इत्यादि० कर्मप्रकरणने ' चत्तारि एका' ए हवे पछी आवनारा सत्रनी पहेलां कहे छे—

चउविवहे बंधे पं० तं०-पगातिबंधे ठितीबंधे अणुभावबंधे पदेसबंधे, चउविवहे उवक्कमे पं० तं०-

Se

श्रीस्था-नाङ्गद्धत्र सातुवाद ॥ ४१५ ॥

बंधणोवक्कमे उदीरणोवक्कमे उवसमणोवक्कमे विष्परिणामणोवक्कमे । वंधणोवक्कमे चउव्विहे पं० तं०-पगतिबंधणोवक्कमे ठितिबंधणोवक्कमे अणुभाववंधणोवक्कमे पदेसवंधणोवक्कमे । उदीरणोवक्कमे चउविवहे पं॰ तं॰-पगतीउद्रिरणोवक्कमे ठितीउद्रीरणोवक्कमे अणुभावउद्रीरणोवक्कमे पदेसउद्रीरणोवक्कमे । उवसमणीवक्कमे चउविवहे पं॰ तं०-पगतिउवसामणीवक्कमे, ठिति॰ अणु॰ पदेसुवसामणीवक्कमे । विप्परिणामणोवक्कमे चउविवहे पं० तं०-पगति० ठिती० अणु० पतेसविष्प० । चउविवहे अप्पावहुए पं० तं०-पगतिअप्पाबहुए ठिति० अणु० पतेसप्पाबहुते । चउवित्रहे संकमे पं० तं०-पगतिसंकमे ठिती॰ अणु॰ पएससंकमे । चउव्विहे णिधत्ते पं॰ तं०-पगतिणिधत्ते ठिती॰ अणु॰ पएसणिधत्ते । चउव्विहे णिकायते पं० तं०-पगतिणिकायिते ठिति० अणु० पएसणिकायिते । सू० २९६ मुलार्थः-चार प्रकारे बंध कहेला छे, ते आ प्रमाण-प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, अनुभागबंध अने प्रदेशबंध, चार प्रकारे उप-

क्रम-बंधत्वादिवडे कर्मना परिणामना हेतुभूत जीवनी शक्तिविशेष कहेल छे, ते आ प्रमाणे–१ बंधनोपक्रम-जीवना प्रदेशो साथे कर्मपुद्गलनो अन्योअन्य संबंध करवारूप, २ उदयकाळमां नहिं आवेल कर्मने उदयमां लाववारूप उदीरणोपक्रम, ३ उदय, उदीरणादि करणने अयोग्यपणे कर्मने स्थापवारूप उपशमनोपक्रम अने ४ द्रव्य-क्षेत्रादि साधनवडे विविध अवस्थाने पमाडवा- ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ प्रकृतिब-न्धादि स्र० २९६

ा। ४१५ ॥

रूप-विपरिणामनोपक्रम. बंधनोपक्रम चार प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-प्रकृतिबंधनोपक्रम, स्थितिबंधनोपक्रम, अनुभागबंध-नोपक्रम अने प्रदेशवंधनोपक्रम, उद्रिणोपक्रम चार प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-प्रकृतिउद्रिणोपक्रम, स्थितिउद्रिणोपक्रम, अनुभागउदीरणोपक्रम अने प्रदेशउदीरणोपक्रम. उपशमनोपक्रम चार प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-प्रकृतिउपशमनोपक्रम, रिथतिउपशमनोपक्रम, अनुभागउपशमनोपक्रम अने प्रदेशउपशमनोपक्रम. विपरिणामनोपक्रम चार प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-प्रकृतिविपरिणामनोपक्रमः स्थितिविपरिणामनोपक्रमः,अनुभागविपरिणामनोपक्रम अने प्रदेशविपरिणामनोपक्रमः,चार प्रकारे अल्पबहत्व कहेल छे, ते आ प्रमाणे-प्रकृतिविषयक अल्पबहुत्व, स्थितिविषयक अल्पबहुत्व, अनुभागविषयक अल्पबहत्व अने प्रदेशविषयक अरुपबहुत्व. चार प्रकारे संक्रम कहेल छे, ते आ प्रमाणे-बंधाती स्वजातीय उत्तरप्रकृतिमां बीजी प्रकृतिनुं संक्रमवुं ते प्रकृतिसंक्रम, एम स्थितिना संक्रम, अनुभाग(रस)ना संक्रम अने प्रदेशना संक्रम. चार प्रकारे निधत्त(निधान)नी माफक कर्मने स्थापवुं (अर्थात उद्वर्त्तना तथा अपवर्त्तना सिवाय बीजा करण जेमां न प्रवृत्ति शके तेवुं करवुं) कहेल छे, ते आ प्रमाणे-प्रकृति-निधत्त, स्थितिनिधत्त, अनुभागनिधत्त अने प्रदेशनिधत्त. चार प्रकारे निकाचित (जे कर्म भोगव्या सिवाय छूटे ज निह) कहेल हो. ते आ प्रमाणे-प्रकृतिनिकाचित, स्थितिनिकाचित, अनुभागनिकाचित अने प्रदेशनिकाचित. (सू० २९६)

टीकार्थः-आ सूत्र स्पष्ट छे. विशेष ए के-जीवने सकषायपणाथी कर्मने योग्य पुद्गलोनुं बंधन-ग्रहण थनुं ते बंध. तेमां कर्मनी प्रकृतिओ(अंशो)ना ज्ञानावरणीय विगेरे आठ भेदो छे. प्रकृतिओनो अथवा सामान्यतः कर्मनो बंध ते प्रकृतिबंध, स्थिति-प्रकृतिओनुं ज अवस्थान-रहेवारूप जघन्यादि भेदवडे भिन्न रूप ते स्थितिनो बंध-उत्पन्न करनुं ते स्थितिबंध, अनुभाव-

श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद म ४१६ ॥

विपाक अथीत तीव्र विगेरे भेदविशिष्ट रसरूप, तेनी बंध ते अनुभावबंध, तथा जीवना प्रदेशोने विषे दरेक प्रकृति प्रत्ये चोकस परिमाणवाळा अनंतानंतकर्मप्रदेशोनो बंध-संबंध थवो ते परिमित परिमाणविशिष्ट गोळ विगेरेना मादकना बंधनी जेम प्रदेशबंध. बृद्ध पुरुषो मोदकना दृष्टांतने आ प्रमाणे वर्णवे छे-जेम चोकस मोदक, लोट, गोळ, घृत अने *कडुभांड(शूठ विगरे)थी बांध्यो थको कोईक मोदक वायुने हरनार, कोईक पित्तने हरनार अने कोईक कफने हरनार, कोईक मारनार, कोईक बुद्धिनी वृद्धि करनार अने कोईक व्यामोह-अमित करनार होय छे. एवी रीते कोईक कर्मप्रकृति ज्ञानने आवरनार छे, कोईक दर्शनने आवरण करे छे, कोईक सुख दुःख विगेरे वेदन(अनुभव)ने उत्पन्न करे छे. वळी जेम ते ज मोदकना नाश न थवारूप स्वभाववडे काळनी मर्यादारूप स्थिति होय छ एवी रीते कर्मनो पण ते स्वभाववडे नियतकाळ पर्यंत रहेवुं ते स्थिति-बंध छे. जेम ते ज मोदकनो स्निग्ध, मधुर विगेरे एकगुण, द्विगुणादि भाववडे रस होय छे तेम ज कर्मनो पण देशघाति, सर्व-घाति, शुभ-अशुभ अने तीव्र-मंदादि अनुभागबंध होय छे तथा जेम ते ज मोदकने लोट विगेरे द्रव्योनुं परिमाणपणुं छे एवी रीते कर्मना पुद्रगलोनं पण चोक्स प्रमाणरूप प्रदेशबंधपणुं छे.जेनावडे कराय छे ते उपक्रम-बंधनपणुं, उदीरणपणुं विगेरेथी कर्मना परिणमवाना हेतुभृत जीवनी शक्तिविशेषरूप. अन्य स्थले 'उपक्रम' ए करण शब्दथी रूढ थयेल छे अथवा उपक्रमण-बंधन विगेरेनो आरंभ ते उपक्रम. कहुं छे के-'स्यादारंभ उपक्रम'.तत्र बंधन-कर्मपुदुगलोना अने जीवना प्रदेशोना परस्पर संबंधरूप छे. आ

* शूंठथी मिश्रित मोदक वायु हरनार, द्राक्षादिथी पित्त हरनार,पोपर विगेरेघो कफ हरनार,सोमल विगेरेथो मारनार, ब्राह्मी, वज

विगेरेथी बुद्धि वधारनार अने धतुराना बीज विगेरेथी मिश्रित भ्रमित करनार बने छे.

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः २ प्रकृतिब-न्धादि स्० २९६

**

884 11

संबंध, सत्रमात्रथी बांधेल लोहनी शलाका(शली)ना संबंधरूप उपमावाळं जाणवं. तेनो जे उक्तार्थरूप उपाय ते बंधनोपक्रम अथवा भिन्न भिन्न अवस्थामां रहेल कर्म (कार्य) नुं बंधनरूप करवु ते ज उपक्रम अर्थात् वस्तुना संस्काररूप बंधनोपक्रम; केम के वस्तुना संस्कार अने विनाशरूप उपक्रम पण कहेल छे, एम ज बीजा उपक्रम संबंधी जाणवं. विशेष ए के-कर्मना फलोनो काळ नहिं प्राप्त थया छतां [तेने] उद्यमां लावको ते उदीरणा कहेवाय. कहुं छे के-

जं करणेणोकड्डिय, उद्ए दिज्जइ उदीरणा एसा। पगईठिइअग्रुभाग-प्पएसमूलुत्तरविभागा॥९६॥

योगसंज्ञक वीर्यवडे कपाय सहित अथवा कपाय रहित जीव, जे परमाणुओवाळं दिलक, उदयाविकानी उपरनी स्थिति-थी आकर्षीन, उदयाविकामां प्रवेश करावे ते उदीरणा कहेवाय छे. ते प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश एम चार प्रकारे छे. वळी ते प्रत्येक मूळ अने उत्तरभेदना विभागवाळा छे.

तथा उदय, उदीरणाकरण, निधत्तकरण अने निकाचनाकरणना अयोग्यपणाए कर्मनुं अवस्थापन ते उपशमना कहेवाय. कहुं छे के-'' ओवष्टणउववष्टण, संकमणाइं च तिन्नि करणाइं '' उद्वर्त्तन (स्थिति अने रसनी वृद्धि करवारूप), अपवर्तन-(स्थिति अने रसनी हानि करवारूप) अने संक्रमण (परप्रकृतिमां प्रक्षेपवारूप) आ त्रण करणो (क्ष्देश)उपशमनामां होय छे.

थति अने रसनी हानि करवारूप) अने संक्रमण (परप्रकृतिमां प्रक्षेपवारूप) आ त्रण करणा (#दश)उपशमनामा हाय छे. तथा विविधप्रकार–सत्ता, उदय, क्षय, क्षयोपशम, उद्वर्त्तन अने अपवर्त्तन विगेरे स्वरूपवडे कर्मोन्तं, पर्वत उपरथी पडती

देशउपशमनानो विशेष विस्तार अत्यारे उपलब्ध नथी. सर्वउपशमनानो विस्तार कम्मपयडोमां प्रसिद्ध छे.

भीस्था-नाङ्गपत्र सानुवाद ॥ ४१७ ।

भाग काटखूणा कींसमां उखेठ छे.

नदी संबंधी पत्थरना त्याये अथवा द्रव्यक्षेत्रादिके करण(जीवनी शक्तिविशेष)वडे बीजी अवस्थाने पमाडवुं ते विपरिणामना. अहि विपरिणामना बंधनादिने तिषे अने तेथी अन्य उदयादिने विषे होय छे ते सामान्यरूपे होताथी तिपरिणामना जुदी कही छे. बंधनोपक्रम बंधनकरण चार प्रकार छे. तेमां प्रकृतिबंधननो उपक्रम जीवनो योगरूप परिणाम छे, केम के योग ए प्रकृतिबंधनो हेतु होय छे. स्थितिबंधननो उपक्रम ते ज अर्थात् जीवनो परिणाम छे, परंतु ते कपायहूप परिणाम छे केम के स्थितिनो कपाय हेतु होय छे. अनुभागबंधननो उपक्रम पण परिणाम ज छे परंतु ते कषायरूप छे. प्रदेशबंधननो उपक्रम तो ते ज योगहर परिणाम छे. कहां छे के-''जोगा पयडिपएसं,ठिइअणुभागं कसायओ कुणइ" इति०जीव योगथी प्रकृति-बंध अने प्रदेशबंध करे छे तथा कपायथी स्थितिबंध अने अनुभागबंध करे छे. " अथवा प्रकृति विगेरे बंधनोना [अंत-र्मुहर्तन्यून अंतःकोटीकोटी सागरोपमरूप] आरंभो ते उपक्रमो.एवी रीते बीजा उपक्रमोमां पण जाणवुं. जे मूलप्रकृति अथवा प्रकृतिना दलिआ प्रत्ये, जीवना वीर्यविशेषवडे आकर्पीने उदयमां प्राप्त कराय छे ते प्रकृतिउदीरणा, जे उदयमां आवेल स्थि-तिनी साथ वीर्यथी ज उदयमां निहं आवेल स्थितिन अनुभवाय छे ते स्थितिउदीरणा, उदयमां आवेल रसनी साथ अन्नाप्त (उदयमां निहं आवेल) रसने (वीर्यवडे आकर्षीने) जे भोगवाय छे ते अनुभागउदीरणाः तथा उदयमां आवेल नियत परिमाणवाळा कर्मप्रदेशोनी साथे अप्राप्त-उदयमां नहिं आवेल नियत परिमाणवाळा कर्मप्रदेशीचुं जे भोगवबुं ते प्रदेशउदीरणा. *' आन्त्रमोहित्तीनान्तः कोटीकोटीरूपा। '' एवो पाठ आयमोदय समितिवाळी प्रतमां नयो. बाववाळी प्रतमां छे. माटे तेटलो

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ प्रकृतिव-न्धादि स्र० २९६

11 880 11

अहिं पण कषाय अने योगरूप परिणाम अथवा आरंभ ए उपक्रम छे. प्रकृति, उपश्चमन अने उपक्रम विगेरे चारे उपक्रमो, सामान्य उपश्चमनरूप उपक्रमना अनुसारे जाणवा. प्रकृति विपरिणामना उपक्रम विगेरे पण सामान्य विपरिणामनारूप उपक्रमना लक्षण अनुसारे समजवा योग्य छे. प्रकृतिपणादिवडे पुद्गलोने परिणमवावडे समर्थ जीवनुं वीर्य ते उपक्रम. 'अप्पाच हुए'त्ति ० अल्प-थोडं अने बहु-घणुं ते अल्पबहु)ते बन्नेना भाव ते अल्पबहुत्व छे.अहिं दीर्घपणुं अने असंयुक्तपणुं प्राकृतशैलीने अंगे छे.प्रकृतिना विपयवाळुं अल्पबहुत्व,वंधादिनी अपक्षाए छे. जेम सर्वथी थोडी प्रकृतिनो बंधक उपशांतमोहादिक छे,केम के ते एकविध बंधक छे. (एक सातावदनीय बांधे छे) बहुतर-अधिक प्रकृतिवंधक, उपशमक विगेरे सूक्ष्मसंपरायवाळो छे केम के ते छ प्रकारनो बंधक छे. (आयुष्य अने मोहनीय सिवाय छ) तथी अधिक बंधक सप्तविधवंधक अने तथी अधिक वंधक आठे प्रकृतिने बांधनार छे.

स्थितिना विषयवाळं अल्पबहुत्व आ प्रमाणे-" सञ्चत्थोवो संजयस्स जहन्नओ ठिइबंधो, एगंदियवायरपज्ज-त्तगस्स जहन्नओ ठिइबंधो असंखेज्जगुणो । " इत्यादि० संयत- अनवमा गुणठाणावाला मुनि विगेरेनो सर्वथी थोडो जघन्यथी कर्मनी स्थितिनो बंध होय छे तेथी बादरपर्याप्त ×एकेंद्रियन जघन्यथी असंख्यातगुणो कर्मनी स्थितिनो बंध होय छे इत्यादि. "

अनुभागनुं अल्पबहुत्व आ प्रमाणे−'' सब्बत्थोवाइं अणंतगुणवुद्धिठाणाणि, असंखङजगुणवुद्धिठाणाणि अ-

* साधने पण आठमा गुणठाणा सुधी अंत:कोटाकोटी सागरे।पमधी ओछे। कर्मबंध नथी.

× कर्मनी स्थिति, वंध विगेरेनं स्वरूप पंचन कर्मग्रंथादिथी जाणवा येएय छे.

भीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ४१८॥

संखेज्जगुणाणि, जाव अगंतभागवुड्डिटाणाणि असंखेजगुणाणि। " अनंतगुगरृद्धि अनुभागना स्थानो सर्वथी थोडा छे, तेथी असंख्यातगुण रृद्धिना स्थानो असंख्यातगुणा छे यावत् अनंत भाग रृद्धिना स्थानो असंख्यातगुणा छे. "

प्रदेशोनुं अरुपबहुत्व आ प्रमाण-"अट्टविह्बंधगस्स आउय भागो योवो नामगोयाणं तुद्धो विसेसाहिओ। नाणदं-सणावरणंतरायाणं तुह्धो विसेसाहिओ।,मोहस्स विसेसाहिओ।,वेयणीयस्स विसेसाहिओ।" इति०आठ मूल प्रकृतिना बांधनारने आयुष्यकर्मना प्रदेशनो भाग सर्वथी थोडो होय छे, तेथी नाम अने गोत्र कर्मना प्रदेशनो भाग परस्पर तुल्य अने आयुष्यथी विशेषाधिक होय छे, तेथी ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय अने अंतराय कर्मना प्रदेशनो भाग परस्पर तुल्य अने नाम, गोत्रथी विशेषाधिक छे. तेथी मोहनीय कर्मना प्रदेशनो भाग विशेषाधिक छे अने तेथी क्षेत्रदाय कर्मना प्रदेशनो भाग विशेषाधिक छे. "

जीव जे प्रकृतिने बांधे छे तंना अनुभव (रस)बडे अन्य प्रकृतिमां रहेल दलिकने वीर्यारेशेषवडे परिणमावे छे-तद्-रूप करे छे ते संक्रम कहेवाय छ. कहां छे के-

सो संकमोत्ति भन्नइ, जब्बंधणपरिणओ प्रओगेणं। प्ययंतरत्थद्तियं, परिणामइ तद्णुभावे जं॥९७॥

* कर्मना प्रदेशाना भाग कर्मनी स्थितिना अनुसारे छे तो पण वेदनीय कर्मनी स्थिति ओछो हात्रा छतां सहुयी वधु भाग हात्रानुं कारण ए छे के जा वेदनीय कर्म थाडा दलीआवाळं हाय तो ते विपाक आपी शके नहि. ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ प्रकृतिब-न्धादि स्र० २९६

॥ ४१८ ॥

कर्मबंधनने करनार जीव, प्रयोगवडे अन्य प्रकृतिना दलिकने बंधाती प्रकृतिमां तेना अनुभाववडे परिणमावे छे ते संक्रम कहेवाय छे अर्थात् वर्त्तमानमां बंधाती प्रकृतिओमां न बंधाती (सतागत) प्रकृतिओ, संक्रमती-भळती छती बंधाती प्रकृतिना स्वरूपथी परिणमे छे, जेम बंधाती सातावेदनीयमां न बंधाती असातावेदनीय, तेम बध्यमान ऊंच गोत्रमां अवध्यमान नीच गोत्र परिणमे छे एवी रीते सर्वत्र पतत्प्रह-पात्रस्वरूप स्वजातीय उत्तरप्रकृतिमां स्वजातीय उत्तरप्रकृति संक्रमे छे-तद्रूप थाय छे.

तेमां प्रकृतिनो संक्रम, सामान्य लक्षणथीज जाणवा योग्य छे. मूलप्रकृतिनी अथवा उत्तरप्रकृतिनी स्थितिनुं जे उत्कर्षण-दृद्धि अथवा अपकर्षण एटले हानि अथवा बीजी प्रकृतिनी स्थितिमां लई जवुं एम त्रण प्रकारे स्थितिसंक्रम छे. कहुं छे के-

ठिइसंकमो। ते वुच्चइ, मूल्लत्तरपगईओ उ जा हि ठिई। उठवद्या व ओवद्या व, पगई णिया वऽत्रं ॥९८॥ भावार्थ उपर ग्रजब हे.

अनुभाग रसनो संक्रम पण एम ज-स्थितिसंक्रमनी जेम छे. कह्युं छे के-

तत्थट्टपयं उव्व-द्विया व ओवद्दिया व अविभागा।अणुभागसंकमो एस,अन्नपगइं णिया वावि ॥९९॥

अनुभागनुं संक्रमना स्वरूपनुं निर्धारण कहे छे-अनुभागो-उद्वर्त्तन करायेला रसना अंशो अर्थात् थोडा रसवालाने घणा रसवाला करायेला, अपवर्त्तन करायेला-घणा रसवालाने थोडा रसवाला करायेला, अथवा बीजी प्रकृतिमां रसना अंशोने लई जई तद्रूष्टे करायेला, एम त्रण प्रकारे अनुभागसंक्रम छे. श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४१९॥

जे कर्मद्रव्य (दलीआ) अन्य प्रकृतिना स्वभाववडे परिणमन कराय छे अर्थात् तद्रूप कराय छे ते प्रदेशसंक्रम छे. कहां हे के-" जं दिलयमञ्चपगई, णिजाई सो संकमो पएसस्स "उक्तार्थ है. निपातथी भावमां के कर्ममां के प्रत्यय की ध छते निधत्त पदनं निधान अने निहित एवं रूप थाय छे. उदर्त्तन अने अपवर्त्तनरूप वे करण सिवाय शेष (उदीरणादि) करणोना अयोग्यपणाए कर्मनं स्थापनं अर्थात् उदीरणादि थई शके निहं ते निधत्त कहेनाय छे. नि-अत्यंत काचनं-बांधनं ते निकाचित अर्थात् बधाय करणना अयोग्यपणाए स्थापत्रुं ते निकाचित कर्म कहेवाय छे. बन्नेना समर्थनरूपे कहुं छे के-" संकमणंपि निहत्तीऍ, णत्थि सेसाणि वत्ति इयरस्स " निधत्तपणामां संऋमण अने उदीरणादिकरण प्रवर्तता नथी परंत उद्वर्त्तन अने अपवर्त्तनकरण होय छे, परन्तु अनिकाचितमां कोई पण करण होतुं नथी. अथवा पूर्वे बांधेल कर्मने अग्निवडे तपाववाथी मळेली लोहनी शलाका(शळी)ना संबंधनी जेम निधत्त छे अने तपाववाथी मळेली अने घणथी क्रटेली लोहनी शलाकाना संबंधना जेवुं जे कर्म ते निकाचित छे अर्थात् निकाचित कर्म भोगव्या सिवाय छटी शकतं नथी, निधत्त अने निकाचितने विषे प्रकृति, स्थिति विगेरेनुं विशेष स्वरूप, सामान्य लक्षणने अनुसारे जाणत्रं. विशेषथी बंधादिना स्वरूपना जिज्ञासुए कम्प्रकृति यंथ(कम्मपयडी)नी संग्रहणी अनुसरण करवा योग्य छे अर्थात् ते वांचवी. (सू० २९६) अहिं हमणां ज अल्पबहुत्व कहुं, तेमां अत्यंत अल्प, एक छे शेष ते अपेक्षाए बहु छे. आवी रीते अल्पबहुत्वने कहेनार एक. कति. सर्व, रूप शब्दोने चोथा स्थानमां अवतारता थका ' चत्तारि ' इत्यादि० त्रण सत्रोने कहे छे-त्वसा निकाइयंपि-तोव्र तपवडे निकाचितकर्मनी पण स्थितिरसनो हानि प्राय: थाय छे. एम अन्यत्र कहेल छे.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ प्रकृतिब-न्धादि

11888 11

11062 1

चत्तारि एका पं॰ तं॰-द्विए एकते माउ उकते पज्जते इकते संगहे इकते । सू॰ २९७, च-त्तारि कती पं॰ तं॰-द्वितकती माउयकती पज्जवकती संगहकती । सू॰ २९८, चत्तारि सञ्जा पं॰ तं॰-नामसञ्ज्ञ ठवणसञ्ज्ञ आएससञ्ज्ञते निरवसेससञ्ज्ञते । सू॰ २९९

मूलार्थ: — चार, एक संख्यावाळा कहेला छे. ते आ प्रमाणे — द्रव्य एक, ते सचित्तादि त्रण भेदे छे. उत्पादादि पदरूप मातृकापद एक छे, पर्याय एक ते वर्णादिने आश्रयीने छे अने समुदायने आश्रयीने एक वचनरूप संग्रह एक छे. (स्० २९७) चार प्रकारे कती — केटला १ एम प्रश्नगिति संख्यावाची कहेला छे, ते आ प्रमाणे — १ द्रव्य केटला छे १ २ मातृकापद केटला छे १ ३ पर्याय केटला छे १ अने ४ संग्रहकती — शाली केटला छे १ इत्यादि. (स० २९८) चार सर्वपद कहेला छे, ते आ प्रमाणे — १ जे वस्तुचुं 'सर्व ' एवं नाम होय ते नामसर्व, २ आ 'सर्व ' छे एम कल्पना करीने अक्ष विगरे द्रव्यने स्थापचं ते स्थापनासर्व, ३ अधिक वस्तुने विषे अथवा मुख्य वस्तुने विषे 'सर्व ' नो व्यवहार करवी ते आदेशसर्व अने ४ समस्त-पणाए जे कथन करवं अर्थात् कोई पण बाकी न रहे, जेम सर्व देवी अनिमेष छे एम कहेवुं ते निरवशेषसर्व. (स० २९९)

टीकार्थ:-स्वार्थिक 'क' प्रत्ययनुं ग्रहण करवाथी एक संख्यावाळा द्रव्य विगेरे एकेक कहेवाय छे, तेमां द्रव्य ज एक ते द्रव्य एक सचित्त विगेरे भेदथी त्रण* प्रकारे छे. 'माउपएकए 'त्ति ॰ मातृकापद एक एटले एक मातृकापद, ते आ

सचित्तादि भेद्शी द्रव्य त्रण प्रकारे छतां पण द्रव्यत्वरूपे एक न कहेवाय छे. अशीत् सचित्त द्रव्य कहेवाय छे परंतु सचित्त द्रव्यो एम बहुवचनवडे कहेवाता नधी एम दीपिकाकार कहे छे.

For Private and Personal Use Only

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद

प्रमाणे-' उप्पन्ने इ वा ' इत्यादि, अहिं दृष्टिवादरूप प्रवचनने विषे समस्त नयना वादने विषे बीजभूत मातृकापदो होय छे, ते आ प्रमाणे - '' उप्पन्ने इ वा विगए इ वा धुवे इ वा। '' अथवा ' आ ' मातृकापदीनी जेम अ, आ विगेरे अक्षरी, समग्र शब्दशास्त्रना अर्थना व्यापारवंडे व्यापक होवाथी मातृकापदो छे. पर्याय एकक ते एकपर्याय. पर्याय, त्रिशेष अने धर्म आ शब्दो एकार्थवाचक छे. ते अनादिष्ट-सामान्यथी वर्णादि अने आदिष्ट-विशेषथी कृष्णादि. संग्रह एकक ते शालि. भावार्थ आ प्रमाण जाणवा-संग्रह-समुदायने आश्रयीने जेम एकवचनपूर्वक शब्दनी प्रवृत्ति होय छ तेम एक पण शालि(चोखा)नो कण शालि कहेवाय छे अने घणा शालिना दाणा पण शालि कहेवाय छे, केम के लोकमां तेम जोवाय छे. 'दविए एकए' क्यांक आ पाठ छे त्यां विषयभृत द्रव्यने विषे एकक इत्यादि व्याख्यान करतुं. (स० २९७) 'कतीति '-केटला ? अर्थात् प्रश्नपूर्वक अचोकसनी जेम संख्यावाचक बहुवचनांत छे. तेमां द्रव्यो केटला ? ते द्रव्य कित अर्थात् केटला द्रव्यो छे ? अथवा द्रव्यना विषयवाळो 'कित ' शब्द ते द्रव्यकति, एम ज मातृकापद विगेरेने त्रिषे पण जाणवुं. विशेष ए के-संग्रह-शालि, यव अने घउं विगेरे. (सू० २९८) नामरूप जे ×सर्व ते नामसर्व अथवा सचित्त विगेरे बस्तुनो +सर्व एवं जे नाम ते नामसर्व अथवा नामबडे सर्व अथवा सर्व एवं नाम छे जेतुं एवा समासथी नाम शब्दनो पूर्व निपात करेल छे अर्थात् सर्वनामने बदले नाम सर्व कहेल छे. तथा स्थापनया-आ सर्व छे एवी कल्पनावडे अक्ष विगेरे द्रच्य सर्व ते स्थापनासर्व छे. अथवा स्थापना ज अक्षादि द्रव्यरूप सर्व ते स्थापनासर्व छे. आदेशनमादेश:-उपचाररूप व्यवहार ते अति घणी वस्तुना विभागमां अथवा × सर्व शब्दनो अक्षर उच्चार करवारूप. + व्यक्तिना अपेक्षाए जेम कोई पुरुषनुं सर्व एवं नाम होय तेने सर्व शब्दथी बोलाय छे.

४ स्थान• काष्ययने उद्देशः २ एक-कति सर्वश्रब्द-स्वरूपम् स्र० २९७-२९९

1 830 H

मुख्य देशविभागमां पण आदेश-उपचार कराय छे. दा. त. विविश्वित (अम्रुक प्रमाणवाछं) घृतने जोईने घणुं खाधे छते अने थोडुं शेष होते छते पण बधुं घृत खाधुं एम उपचार कराय छे. मुख्यमां पण तेवो उपचार कराय छे. दा. त. गामना मुख्य माणसो बहारगाम गये छते बधा गाम गया एम कहेवाय छे. आ कारणथी आदेशथी सर्व ते आदेशसर्व अर्थात् उपचारसर्व छे. निरवशेषपणाए समस्त ब्यक्तिना आश्रयवडे जे सर्व ते निरवशेषसर्व. दा. त. सर्व देवो अनिमेष छे-मटकुं मारता नथी. कोई पण देव एवा नथी के जे मटकुं मारे. आ स्त्रमां सर्वत्र 'क 'कार स्वार्थमां थयेल छे. (स्० २९९)

हमणां ज सर्व शब्दनी प्ररूपणा करी तेना प्रस्तावथी सर्व मनुष्यक्षेत्र पर्यंत रहेनार पर्वतनी बधी तिरछी दिशाओमां ऋट-शिखरोने कहे छे--

माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चडादिार्सि चत्तारि कूडा पं॰ तं०-रयणे रतणुच्चते सव्वरयणे रतणसंचये। सू० ३००, जंबुद्दीवे २ भरहेरवतेसु वासेसु तीताते उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था, जंबूद्दीवे २ भरहेरवते इमीसे ओसप्पिणीए दूसमसुसमाए समाए जहण्णपए णं चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था, जंबूद्दीवे २ भरहेरवएसु वासेसु आगमेस्साते उस्सप्पिणीते सुसमसुसमाते समाए चत्तारि सागरोवमकोडा-

œį

श्रीस्था-नाङ्गधत्र सानुवाद ॥ ४२१ ॥

कोडीओ कालो भविस्सइ । सृ० ३०१, जंबूदीवे २ देवक्रुरुउत्तरक्रुरुवजाओ चत्तारि अकम्मभूमीओ पं० तं०-हेमवते हेरन्नवते हरिवस्से रम्मगवासे, चत्तारि वहवेयह्वपटवता पं० तं०-सद्दावई वियडावई गंधावई मालवंतपरिताते, तत्थ णं चत्तारि देवा महि हितीया जाव पलिओवमट्रितीता परिवसंति तं०-साती पभासे अरुणे पउमे, जंबूदीवे २ महाविदेहे वासे चउिवहे पं० तं०-पुठ्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा, सञ्वेऽवि णं णिसढणीलवंतवासहरपठ्वता चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइं उठ्वेहेणं पं०, जंबूदीवे २ मंदरस्स पठ्वयस्स पुरिक्षमेणं सीताए महानदीए उत्तरे कूले चत्तारि वक्खारपव्वया पं० तं०-चित्तकूडे पम्हकूडे णिळणकूडे एगसेले, जंबू॰ मंदर॰ पुर॰ सीताए महानदीए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्यया पं० तं०-तिकूडे वेसमणकूंडे अंजणे मातंजणे, जंबू० मंद्र० पचित्थिमेणं सीओदाए महानतीए दाहिणकूळे चत्तारि वक्खारपव्वता पं० तं०-अंकावती पम्हावती आसीविसे सुहावहे, जंबू० मंदर॰ पच० सीओदाए महाणतीते उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पं० तं०-चंदपव्वते सूरपव्यते

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ मानुषोत्तर-कूटाः दुष्प-मसुषमाव-र्षादि ३०२

ીા પ્રરશા

देवपव्वते णागपव्वते, जंबू० मंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया पं० तं - सोमणसे विज्जुप्पमें गंधमायणे मालवंते, जंबूदीवे २ महाविदेहे वासे जहन्नपते चत्तारि अरहंता चत्तारि चक्कवद्दी चत्तारि बलदेवा चत्तारि वासुदेवा उप्पर्जिसु वा उप्पर्जित वा उप्पजिस्संति वा, जंबृद्दीवे २ मंद्रपञ्वते चत्तारि वणा पं० तं०-भद्दसालवणे नंदणवणे सोमणसवणे पंडगवणे. जंबू० मंदरे पव्वए पंडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ पं० तं०-पंडुकंबलसिला अइपंडुकंबलसिला रत्तकंबलिसला अतिरत्तकंबलिसला, मंदरचूलिया णं उविरं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता, एवं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेवि कालं आदिं करेत्ता जाव मंद्रचूलियात्ति, एवं जाव पुक्खरवरदीव-पचच्छिमद्धे जाव मंदरचूलियत्ति-जंबूदीवगआवस्समं तु कालाओ चूलिया जाव। धायइसंडे पुक्खरवरे य पुठवावरे पासे ॥ १ ॥ सू० ३०२

मूलार्थः-मानुषोत्तर पर्वतनी चारे अविदिशाओंने विषे चार कूट-क्षिखरो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-रत्नकूट, रत्नोचयकूट, सर्वरत्नकूट अने रत्नसंचयकूट. (स्० ३००) जंबुद्वीप नामना द्वीपमां भरत अने ऐरवतक्षेत्रने विषे अतीत (गई) उत्सार्पणी-

* मुल सूत्रमां दिशा शब्द जणावेल छे परंतु पण दश दिशानी अपेक्षाए विदिशाने दिशा कहेवाय छे.

भीस्था-नाङ्गधत्र सानुवाद १। ४२२ ॥

मां सुषमसुषम नामना छट्टा आरामां चार कोडाकोडी सागरोपमश्रमाण काळ हतो. जंबृद्वीप नामना द्वीपमां भरत अने ऐरवतक्षेत्रने विषे आ अवसर्पिणीमां सुषमसुषम नामना पहेला आराने विषे चार कोडाकोडी सागरोपमप्रमाण काळ हतो. जंबूद्वीप नामना द्वीपमां भरत अने ऐरवतक्षेत्रने विषे आगामी उत्सर्पिणीमां सुषमसुषम नामना छटा आराने विषे चार कोडाकोडी सागरोपमप्रमाण काल थशे. (सू० ३०१) जंबुद्वीप नामना द्वीपमां देवकुरु अने उत्तरकुरुने छोडीने चार अ-कर्मभूमिओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-हैमवत, हैरण्यवत, हरिवर्ष अने रम्यक्वर्ष. चार वृत्त(वाटला)वैताढ्यपर्वत कहेला छे, ते आ प्रमाण-शब्दापाती, विकटापाती, गंधापाती अने माल्ववंतपर्याय. तेमां चार महर्द्धिक देवो यावत पल्योपमनी स्थिति-वाळा वसे छे, ते आ प्रमाणे-स्वाती, प्रभास, अरुण अने पञ्च. जंबूद्वीप नामना द्वीपमां महाविदेह क्षेत्र चार प्रकारनी कहेल छे, ते आ प्रमाणे-पूर्वविदेह, अपर(पश्चिम)विदेह, देवकुरु अने उत्तरकुरु, बधा निषध अने नीलवंत नामे वर्षधर पर्वतो चार सो योजन ऊंचा अने चार सो गाउना ऊंडा कहेला छे. जंबूद्वीप नामना द्वीपमां मेरुपर्वतनी पूर्व दिशाए सीता नामनी महानदीना उत्तर किनारे चार वक्षस्कार पर्वतो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-चित्रकूट, *पक्ष्मकूट, नलिनकूट अने एककैल. जंब्द्धीप नामना द्वीपमां मेरुपर्वतनी पूर्व दिशाए सीता महानदीना दक्षिण किनारे चार वश्वस्कार पर्वतो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-ात्रेकूट, वैश्रमणकूट, अंजन अने मातंजन. जंबुद्वीप नामना द्वीपमां मरुपर्वतनी पश्चिम दिशाए सीतोदा महानदीना दक्षिण किनारे चार वश्चस्कार पर्वतो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-अंकावती, पक्ष्मावती, आशीविष अने सुखावह. जंबुद्वीप नामना द्वीपमां मेरुपर्वतनी # पद्मकृट पण कहेवाय छे.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ मानुषोत्तर-क्रूटाः दुष्प-मसुषमाव-षादि द्व०३००-३०२

। ४ररा।

पश्चिम दिशाए सीतोदा महानदीना उत्तर किनारे चार बक्षस्कार पर्वतो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-चंद्रपर्वत, सूर्यपर्वत, देवपर्वत अने नागपर्वत. जंबुद्वीप नामना द्वीपमां मेरुपर्वतनी चार विदिशाओंने विषे चार वश्वस्कार पर्वती कहेला छे, ते आ प्रमाणे-सौम-नस, विद्युत्प्रभ, गंधमादन अने माल्यवंत(आने गजदंता पण कहे छे) जबूद्वीप नामना द्वीपमां महाविदेह क्षेत्रने विषे जघन्यपणे चार अईतो, चार चक्रवर्त्ताओ, चार बलदेवो अने चार वासुदेवो उत्पन्न थया छे, उत्पन्न थाय छे अने उत्पन्न थशे. जंबुद्वीप नामना द्वीपमां मेरुपर्वतने विष चार वन कहेला छे, ते आ प्रमाण-भद्रशालवन, नंदनवन, सौमनसवन अने पांडुकवन, जंबुद्वीपमां मरुपर्वतने विष पांडुकवनमां चार अभिषकिशालाओं (तीर्थंकरना जन्मनो अभिषेक करवानी) कहेली छे, ते आ प्रमाणे-पांडुकंवल-शिला, अतिपांडुकंबलशिला, रक्तकंबलशिला अने अतिरक्तकंबलशिला. मेरुपर्वतनी चुलिका उपरना भागमां पहोळाईबडे चार योजननी कहेली छे. एवी रीते धातकीखंड द्वीपना पूर्वार्द्धने विषे अने पश्चिमार्द्धने विषे पण काळसूत्र विगेरेथी आरंभीने अर्थात अतीतकाळ विगेरे सत्रनी शरूआतथी लईने यावत मेरुपर्वतनी चूलिकाना वर्णन सुधी जंबूद्वीपनी माफक जाणवुं. एवी ज रीते यावत पुष्करवरद्वीपना पूर्वार्द्धे अने पश्चिमार्द्धमां पण यावत मेरुपर्वतनी चूलिकाना वर्णन पर्यंत जाणवु. जंबुद्वीपमां अवस्य रहेल बस्तु 'कालसूत्र 'थी आरंभीने मेरुपर्वतनी चूलिका पर्यंत जेम कहेल छे तेमज यावत धातकीखंड द्वीप अने प्रष्कर-वर द्वीपमां पूर्व अने पश्चिम बन्ने पडखाने विष जाणवुं. (सू० ३०२)

टीकार्थः-' माणुसुत्तरस्से ' त्यादि० स्पष्ट छे. विशेष ए के-' चडदिसि ' न्ति० चार दिशाओनो समूह ते चतु-र्दिशः ते चार दिशाओमां (अहिं ' दिशिं ' आ शब्दमां अनुस्वार प्राकृतशैलीथी थयेल छे.) क्रूटो-शिखरो, अहिं स्त्रमां श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४२३॥ दिशानुं ग्रहण कर्ये छते पण विदिशाओमां शिखरो छे एम समजवुं. तेमां अग्निकोण(खूणा)मां रत्नकूट छे ते गरुड-सुवर्णकुमार जातीय वेणुदेवनुं निवासस्थान छे. नैऋत्यकोणमां रत्नोचयकूट बेलंब नामना वायुकुमारेंद्र संबंधी निवासस्थान छे,
वेलंबसुखद एवं ते इंद्रनुं बीजुं नाम छे. ईशानकोणमां वेणुदालि नामना सुपर्णकुमारेंद्रनुं सर्वरत्नकूट छे तथा वायव्यकोणमां
प्रभंजन नामना वायुकुमारेंद्रनुं रत्नसंचयकूट, अपरनाम प्रभंजन छे. एवी रीते आ व्याख्या द्वीपसागरप्रज्ञित्त स्वनी संग्रहणी
अनुसार जणावेल छे. तेमां कह्यं छे के—

द्क्षिखणपुटवेण रयण-कूडं गरुलस्स वेणुदेवस्स। सटवरयणं च पुटवु-त्तरेण तं वेणुदालिस्स ॥१००॥ उक्तार्थ हे.

रयणस्त अवरपासे, तिन्निवि समइच्छिऊण कूडाइं।कूडं वेलंबस्स उ, विलंबसुहयं सया होइ॥१०१॥

रत्नक्रुटना पश्चिम भागमां दक्षिण दिशामां रहेला त्रण क्रुटोने उल्लंघीने वेलंब नामना दक्षिण दिशाना स्वामी वायुक्तमारेंद्रचं वेलंबसुखद नामनुं क्रुट छे, त्यां तेनी राजधानी छे.

सटवरयणस्स अवरेण तिन्नि समइच्छिऊण कूडाइं। कूडं पभंजणस्स उ,पभंजणं आढियं होइ॥१०२॥

सर्वरत्नकूटना पश्चिम भागवडे उत्तर दिशाना त्रण कूटने उछंघीने उत्तर दिशाना स्वामी प्रभंजन नामना वायुकुमारेंद्रनुं प्रभंजन नामनुं कूट ऋदिवाछं छे, त्यां तेनी राजधानी छे. अहिं चार स्थानना अनुरोधथी मात्र चार कूटो कहेला छे, नहिंतर

४ स्थान-काश्ययने उद्देशः २ ।मानुषोत्तर-क्टाः दुष्प-मसुषमाव-र्षादि ३०२

॥ ४२३॥

बीजा पण बार कूटो छे. पूर्व, दक्षिण पश्चिम अने उत्तर दिशामां त्रण त्रण कूटो छे अने ते बारे कूटो एकेक देववडे अधिष्ठित छे. कह्युं छे के --

पुठवेण तिन्नि कूडा, दाहिणओ तिन्नि तिन्नि अवरेणं। उत्तरओ तिन्नि भवे, चउदिसिं माणुसनगस्स ॥१०३॥ उक्तार्थ हे (४० ३००)

अनंतर मानुषोत्तर पर्वतमां शिखररूप द्रव्यो कहा, हवे तेनावडे अवरायेला क्षेत्ररूप द्रव्योनुं चतुःस्थानकना अवतारने ' जंब्र्हीवेत्यादिना० ' जंब्र्हीपमां भरत ऐरवत क्षेत्रने विषे इत्यादिथी आरंभीने 'चत्तारि मंदरचूलियाओं ' (धातकी- खंडना वे अने पुष्करद्वीपना वे मळी कुल चार) मेरुपर्वत उपर चार चूलिकाओं छे ते अंत्य (छेवटना) ग्रंथवडे कहे छे. आ वर्णन स्पष्ट छे. विशेष ए के-चित्रकृट विगेरे सोळ वक्षस्कार पर्वतोनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे-

पंचसए बाणउए, सोलस य सहस्स दो कलाओ य । विजया १ वक्खारं २ तर—नईण ३ तह वणमुहायामो ४

१ विजयो, २ वक्षस्कार पर्वतो, ३ अंतरनदीओ अने ४ सीता तथा सीतोदा नदीना बन्न पडख रहेला वनमुखोनो आयाम (लंबाई) सोळ हजार पांचसो बाणु योजन अने ब कला १६५९२% छे.

आयाम (लंबाई) सोळ हजार पांचसो बाणु योजन अने बे कला १६५९२६ छे. जत्तो वासहरगिरी, तत्तो जोयणसयं समवगाढा । चत्तारि जोयणसए, उव्विद्धा सव्वरयणमया ॥१०५॥ 💥 जत्तो पुण सिललाओ, तत्तो पंचसयगाउउव्वेहो । पंचेव जोयणसए, उव्विद्धा आसखंधणिमा ॥१०६॥ 💥 श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४२४॥ बधा बश्चस्कार पर्वतो रत्नमय छे अने ते जे दिशाए निषध अने नीलवंत नामना वर्षधर पर्वत छे ते दिशाए नतेनी पासे एक सो योजन भूमिमां ऊंडा अने चार सो योजन ऊंचा छे. त्यांथी मात्रावडे बृद्धि पामता जे दिशाए सीता अने सीतोदा नदी छे ते दिशाए-तेनी पासे पांच सो गाउ (सवासो योजन) भूमिमां ऊंडा अने पांच सो योजन ऊंचा छे. आ हेतुथी ज अश्वना स्कंध सरखा आकारवडे रहेल छे. ए विजयादिनी पहोळाई नीचे प्रमाणे छे—

विजयाणं विक्लंभो, बावीससयाइं तेरसहियाइं । पंचसए वक्लारा, पणुवीससयं च सळिळाओ । १०७॥

वधा विजयोमां प्रत्येकनो विष्कंभ (पहोळाई) वे हजार वसो अने किंचित् न्यून तेर योजन छे. वक्षस्कार पर्वतोनी पहोळाई पांच सो योजन छे अने अंतरनदीओनी पहोळाई सवा सो योजन छे. 'परंपते '—जे जणाय छे ते पद—संख्यास्थान, ते अनेक प्रकारे छे माटे जघन्य—सर्वथी हीनपद ते जघन्यपद. तेमां विचार करें छते अवश्य भाववडे अहत विगेरे चार होय छे अर्थात् ओछामां ओछा चार होय ज. मेरुपर्वतनी भूमिमां—सपाटीमां भद्रशाल वन छे. तेनी प्रथम मंखलामां नंदनवन अने बीजी मेखलामां सौमनसवन छे अने शिखर उपर पंडकवन छे. अहिं आ संबंधी गाथा जणावे छे—

बाबीससहस्साइं, पुठवावरमेरुभद्दसालवणं । अड्ढाइज्जसया उण, दाहिणपासे य उत्तरओ ॥ १०८॥

मरुपर्वतने वलयाकारे वींटी रहेल भद्रशालवन, पूर्व अने पश्चिम दिशाए (प्रत्येक दिशामां) बावीश हजार योजन लांबो छे अने दक्षिण तथा उत्तरदिशाए (प्रत्येक दिशामां) अढींसो योजन पहोळो छे.

४ स्थान-काश्ययने उद्देशः २ |मानुषोत्तर-कूटाः दुष्प मसुषमाव-३०२

पंचेव जोयणसए, उड्ढं गंतूण पंचसयपिहुलं। नंदणवणं सुमेरं, परिक्लिविता ठियं रम्मं ॥१०९॥

मेरुना समभूतलथी पांच सो योजन ऊंचे जईए, त्यां दरेक दिशाए पांच सो योजननी पहोळाईवाळुं नंदनवन, सुमेरुने चोतरक वींटीने रमणीकपणाए रहेल छे अर्थात् त्यां अनेक मणिमयक्ट, वावडी, मंडप विगेरे छे.

बासद्विसहस्साइं, पंचेव सयाइं नंदणवणाओ । उहुं गंतूण वणं, सोमणसं नंदणसरिच्छं ॥ ११०॥

नंदनवनथी साडीबासठ हजार योजन जईए त्यां नंदनवनना जेवुं सौमनस नामनुं वन छे, ते पण मेरुने चोतरफ वींटीने दरेक पडखे पांच सो योजननी पहोळाइवाळुं अने मनोहर छे.

सोमणसाओ तीसं, छच सहस्से विलागिऊण गिरिं। विमलजलकुंडगहणं, हवइ वणं पंडगं सिहरे ।१११।

सौमनस नामना वनथी उपर छत्रीस हजार योजन जईए त्यां मेरुपर्वतना शिखर पर पंडकवन छे, तेमां निर्मळ अने अगाध जळथी भरेला घणा कंडो छे.

चत्तारि जोयणसया, चउणउया चक्कवालओ रुंदं । इगतीस जोयणसया,बावट्टी परिरओ तस्स ॥१९२॥

मरुना शिखरनी चोतरफ वींटाये छुं पंडकवन, प्रत्येक दिशाए चार सो चोराणुं योजन विस्तारवाछ छे अने तेनी एकत्रीससो बासठ योजननी परिर्धि छे. तीर्थकरोना अभिषेक माटेनी शिलाओ ते अभिषेकशिलाओ, चूलिकानी पूर्व, दक्षिण, पश्चिम अने उत्तर दिशामां क्रमशः जाणवी. 'उवरिं' ति० अग्रभागमां 'विक्खं भेणं' ति० विस्तारवडे.

श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद ॥ ४२५ ॥ अर्थात् ते शिलाओ आगळना भागमां विष्कंभ(लंबाई)वाळी छे. जेम ' जंबुद्दीचं दीवं भरहेरवएसु वास्तेसु' इत्यादि स्त्रोवंड कालमान विगरेथी आरंभीने चूलिका पर्यंत कहेल छे, एवी जरीते धातकीखंडना पूर्वार्द्ध अने पिश्वमार्द्धमां पण कहेवा योग्य छे. एक मेरुना संबंधवाळी वक्तव्यतानुं अन्य चार मेरुने विषे समानपणुं छे ते ज हकीकतने सत्रकार कहे छे. ' एव 'मित्यादि० आ वर्णनरूप अतिदेशने संग्रहगाथावडे कहे छे ' जंबुद्दीचं ' त्यादि० जंबुद्दीपनुं आ वर्णन ते जंबुद्दीपक, अथवा जंबुद्दीप प्रत्ये प्राप्त थाय छे ते जंबुद्दीपगा. क्यांक एवो पाठ छे के ' जंबुद्दीप यत्'- जंबुद्दीपमां जे वर्णन, अवश्यभावीपणाथी अथवा कहेवा योग्य होवाथी आवश्यक, ते जंबुद्दीपकावश्यक अथवा जंबुद्दीपगावश्यक. वस्तुज्ञातं-वस्तुनो प्रकार (अहिं ' तु ' शब्द पूरण अर्थमां छे.) कयुं आदि स्त्र अने अंत्य स्त्र कयुं ? माटे सत्रकार कहे छे— सुपमसुपमा लक्षण काळ ' सत्र ' थी आरंभीने यावत् मेरुनी चूलिका पर्यंत जे वर्णन (जंबुद्दीप संबंधी) कर्यु छे ते वर्णन धातकीखंडमां अने पुष्करवरद्दीपमां जे पूर्व अने पश्चिम वे विभाग छे ते बन्ने द्वीपना प्रत्येक पूर्वीध्ध अने पश्चिमाध्ध संडना क्षेत्रोमां अन्युनाधिक अर्थात् समान जाणवुं. (सू० ३०२)

जंबूद्वीवस्स णं दीवस्स चत्तारि दारा पं०तं०-विजये वेजयंते जयंते अपराजिते, ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावतितं चेव पवेसेणं पं०-तत्थ णं चत्तारि देवा महिङ्घीया जाव पालि-ओवमद्वितीता परिवसंति विजते वेजयंते जयंते जपराजिते । सू०३०३, जंबूदीवे दीवे मंद्रस्स पव्व-

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः २ द्वीपद्वाराणि अन्तर-द्वीपाः पा-तालक-लशाः घात-कीविष्कं-भादि स्र० ३०६

यस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिन्नि २ जोयण-सयाइं ओगाहिता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०-एगूरूयदीवे आभासियदीवे वेसाणितदीवे णंगोलियदीवे, तेसु णंदीवेसु चउविवहा मणुस्सा परिवसंति, तं०-एगूरूता आभासिता वेसाणिता णंगोलिया, तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं चत्तारि २ जोयणसयाद्दं ओगाहेता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं॰ तं॰-हयकन्नदीवे गयकन्नदीवे गोकन्नदीवे संकुलिकन्नदीवे, तेसु णं दीवेसु चउठिवधा मणुस्सा परिवसंति तं०-इयकन्ना गयकन्ना गोकन्ना संकुलिकन्ना, तोसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं पंच २ जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं॰ त०-आयं-समुहदीवे मेंढमुहदीवे अओमुहदीवे गोमुहदीवे, तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्या. तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुदं छ छ जोयणसयाइं ओगाहेता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०-आसमुहदीवे हिथमुहदीवे सीहमुहदीवे वग्घमुहदीवे, तेसु णं दीवेसु मणुवा भाणियव्वा, तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं सत्त सत्त जोयणसयाई ओगाहेता श्रीस्था-नाङ्गमृत्र सानुवाद ॥ ४२६ ॥ Ж एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा पं॰ तं॰-आसकन्नदीवे हत्थिकन्नदीवे अकन्नदीवे कन्नपाउरणदीवे, तेसु णं दीवेसु मणुया भाणियव्या, तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं अट्टट्ठ जोयणसयाई ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०-उक्कामुहदीवे मेहमुहदीवे विज्जुमुहदीवे विज्जु-दंतदीवे, तेसु णं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा, तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं णव णव जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०-घणदंतदीवे लट्टदंतदीवे गूढदंतरीवे सुद्धदंतदीवे, तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति तं०-घणदंता लट्टदंता गृढदंता सुद्धदंता, जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं सिहारिस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिन्नि तिन्नि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०-एगूरूयदीवे सेसं तदेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव सुद्धदंता । सू० ३०४, जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिह्हाओ वेतितं-ताओ चउदिःसिं लवणसमुद्दं पंचाणउइ जोयणसहस्साइं ओगाहेचा एत्थ णं महतिमहालता महा-लंजरसंठाणसंठिता चत्तारि महापायाला पं० तं०-वलतामुहे केउते जृवए ईसरे, एत्थ णं चत्तारि देवा

४ स्थान काष्ययने उद्देशः २ द्वीपद्वाराणि अन्तर-द्वीपाः पा-तालक-लिशाः धात-कीविष्कं-भादि स्० ३०६ ४२६॥

महिड्डिया जाव पिछओवमतिद्विता परिवसंति, तं०-काले महाकाले वेलंवे पभंजणे, जंबूदीवस्स जं दीवस्स बाहिरिहाओ वेतितंताओ चउदिसिं लवणसमुद्दं वायालीसं २ जोयणसहस्साई ओगाहेता एत्थ णं चउण्हं वेलंधर क्षनागराईणं चत्तारि आवासपव्वता पं० तं०-गोथूमे उद्यभासे संखे दग-सीमे, तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पिछओवमट्टितीता परिवसंति तं०-गोथूमे सिवए संखे मणोसिलाते, जंबूदीवस्स णं दीवस्स वाहिरिह्याओ वेइयंताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं बाया-लीसं २ जोयणसहस्साइं ओगाहेत्रा एत्थ णं चउण्हं अणुवेलंधरणागरातीणं चत्तारि आवासपव्वता पं० तं०-ककोडए विजुप्पमे केलासे अरुणप्पमे, तत्थ णं चत्तारि देवा महिद्वीया जाव पिलओव-मद्भितीता परिवसंति, तं०-कक्कोडए कद्दमए केलासे अरुणप्पमे, लवणे णं समुद्दे णं चत्तारि चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्संति वा चत्तारि सूरिता तर्विसु वा तर्वेति वा तविस्संति वा, चत्तारि कत्तियाओ जाव चत्तारि भरणीओ, चत्तारि अग्गी जाव चत्तारि जमा, चत्तारि अंगारा

હ ર

अस्र प्रत्यंतरमां ' णागरायाणं ' एवो पण पाठ छे.

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४२७॥ जाव चत्तारि भावकेऊ, लवणस्स णं समुद्दस्स चत्तारि दारा पं० तं०-विजए। विजयंते जयंते अप-राजिते, ते णं दारा णं चत्तारि जोयणाइं विक्लंभेणं तावतितं चेव पवेसेणं पं०-तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पिलेओवमिट्टितिया परिवसंति त०-विजए वेजयंते जयंते अपराजिए। सू० ३०५, धायइसंडे दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालिक्लंभेणं पं०, जंबृद्दीवस्स णं दीवस्स बहिया चत्तारि भरहाइं चत्तारि एरवयाइं, एवं जहा सद्देसते तहेव निरवसेसं भाणि-यव्वं जाव चत्तारि मंद्रा चत्तारि मंद्रचूलिआओ। सू० ३०६

मूलार्थ:—जंबूद्वीप नामना द्वीपना चार द्वारों कहेला छे, ते आ प्रमाणे-विजय, वैजयंत, जयंत अने अपराजित ते दरवाजा चार योजनना पहोळा छे अने प्रवेशमार्थ पण चार योजननो छे (आठ योजन ऊंचा छे). त्यां चार महर्द्धिक यावत् एक पल्योपमनी स्थितिवाळा देवो वसे छे, ते विजय, वैजयंत, जयंत अने अपराजित नामना छे. (सू० २०२) जंबूद्वीप नामना द्वीपमां मरुपर्वतनी दक्षिण दिशाए चुछ्छिमवंत नामना वर्षधर पर्वतनी चारे विदिशाओंने विषे लवणसमुद्रमां त्रण सो त्रण सो योजन अंदर जईए त्यां चार अंतरद्विषों कहेला छे, ते आ प्रमाणे-एकोरुकद्वीप, आभाषिकद्वीप, वैषाणिक-द्वीप अने लांगुलिकद्वीप. ते द्वीपोमां चार प्रकारना मनुष्यो वसे छे, ते आ प्रमाणे-एकोरुको, आभाषिको, वैषाणिको अने

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः २ द्वीपद्वाराणि अन्तर-द्वीपाः पा-तालक लशाः धात-कीविष्कं-भादि सु० ३०३-३०६ 83011

लांगुलिको. ते पूर्वोक्त द्वीपोथी चार विदिशाओंने विषे लवणसमुद्रमां चार सो चार सो योजन अंदर जईए त्यां चार अंतरद्वीपो छे, ते आ प्रमाणे-हयकर्णद्वीप, गजकर्णद्वीप, गोकर्णद्वीप अने शब्कुलीकर्णद्वीप ते द्वीपोमां चार प्रकारना मनुष्यो वसे छे, ते आ प्रमाणे- हयकर्णो, गजकर्णो, गोकर्णो अने शब्कुलीकर्णो. ते द्वीपोथी आगळ चार विदिशाओने विषे लवणसमुद्रमां पांच सो पांच सो योजन अंदर जईए त्यां चार अंतरद्वीपो छे, ते आ प्रमाणे-आदर्शमुखद्वीप, मेंढकमुखद्वीप, अयोमुखद्वीप अने गोमुखद्वीप. ते द्वीपोने विषे चार प्रकारना मनुष्यो द्वीपना नाम प्रमाणे कहेवा. ते द्वीपोथी आगळ चार विदिशाओने विषे लवणसमुद्रमां छ सो छ सो योजन अंदर जईए त्यां चार अंतरद्वीपो छे, ते आ प्रमाणे-अश्वमुखद्वीप, हस्तिमुखद्वीप, सिंहमुखद्वीप अने व्याघ(वाघ)-मुखद्वीप. ते द्वीपोने विषे चार प्रकारना मनुष्यो द्वीपना नाम प्रमाणे कहेवा. ते द्वीपोथी आगळ चार विदिशाओने विषे लवण-समुद्रमां सात सो सात सो योजन अंदर जईए त्यां चार अंतरद्वीपो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-अश्वकर्णद्वीप, हस्तिकर्णद्वीप, अक-र्णद्वीप अने कर्णप्रावरणद्वीप. ते द्वीपोने विषे ते द्वीपोना नाम प्रमाणे मनुष्यो कहेवा. ते द्वीपोथी आगळ चार विदिशाओने विषे लगणसमुद्रमां आठ सो आठ सो योजन अंदर जईए त्यां चार अंतरद्वीपो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-उल्कामखद्वीप. मेघ-मुखद्वीप. विद्युन्मुखद्वीप अने विद्युदंतद्वीप. ते द्वीपोने विषे द्वीपोना नाम प्रमाणे मनुष्यो कहेवा. ते द्वीपोथी आगळ चार वि-दिशाओंने विषे लवणसमुद्रमां नव सो नव सो योजन अंदर जईए त्यां चार अंतरद्वीपो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-धनदंतद्वीप. लष्टदंतद्वीप, गृढदंतद्वीप अने शुद्धदंतद्वीप. ते द्वीपोने विषे चार प्रकारना मनुष्यो वसे छे, ते आ प्रमाणे-घनदंतो, लष्टदंतो, गृढदंतो अने शुद्धदंतो. जंबूढीप नामना द्वीपमां मेरुपर्वतनी उत्तर दिशाए शिखरी नामना वर्षधर पर्वतनी चारे विदिशाओंने

भीस्था-नाज्ञसत्र सानुवाद ॥ ४२८ ॥

विषे लवणसमुद्रमां त्रण सो त्रण सो योजन अंदर जईए त्यां अंतरद्वीपो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-एकोरुकद्वीप, बाकी बधुं तेमज कहे बुं यावत शुद्धदंत नामना मनुष्यो वसे छे अर्थात् पेठाना अठ्यावीश अंतरद्वीयोना नामो कहा ते ज नामो अने वर्णन पण ते प्रमाणे ज जाणवुं. (सू० ३०४) जंबूद्वीप नामना द्वीपनी बहारनी वेदिकाना अंतथी चारे दिशाओने विषे लवणसमुद्रमां पंचाणुं हजार योजन उल्लंघी जईए त्यां अत्यंत मोटा अलंजर-उदकना कुंभ जेत्रा आकारवडे रहेला चार महापातालकलशो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-पूर्व दिशामां वडवामुख, दक्षिण दिशामां केतुक, पश्चिम दिशामां युवक अने उत्तर दिशामां ईश्वर छे. त्यां महर्द्धिक यावत पल्योपमनी स्थितिवाळा चार देवो वसे छे, ते आ प्रमाणे-काल, महाकाल, वेलंब अने प्रभंजन. जंबद्वीप नामना द्वीपनी बहारनी वेदिकाना अंतथी चारे दिशाओंने विषे लगणसमुद्रमां वेंतालीश वेंतालीश हजार योजन उल्लंबीने जईए त्यां चार वेलंधर-समुद्रनी वेल(शिखा)ने धरनारा नागक्रमार जातीय प्रधान देशोना चार आवासपर्वती कहेला छे, ते आ प्रमाणे-गोस्तूप, उदक्रमास, शंख अने उदक्रसीम. त्यां चार देवी महर्द्धिक यावत् पत्यीपमनी स्थितिवाळा वसे छे, ते आ प्रमाण-गोस्तूप, शिवक, शंख अने मनःशिल. जंबूद्वीप नामना द्वीपनी बहारनी वेदिकाना अंतथी ईशानादि चारे विदिशाओंने विषे लवणसमुद्रमां बेंतालीश बेंतालीश हजार योजन उल्लंघीने जईए त्यां चार अनुवेलंघर नागकुमार देवोना आवासपर्वतो छे. ते आ प्रमाणे-कर्कोटक, विद्युत्प्रभ, कैलास अने अरुगप्रभ. त्यां चार महिंद्देक देवो यावत पर्योपमनी स्थितिवाळा वसे छे, ते आ प्रमाणे-कर्कोटक, कईम, कैलास अने अरुणप्रम. लवणसम्बद्भने विषे चार चंद्रो भूतकाले प्रकाश्या, वर्त्तमानमां प्रकाशे छे अने भविष्यमां प्रकाश करशे. चार सूर्यो तप्या छे, तपे छे अने तपशे. कृतिका नक्षत्रो चार छे यावत अठ्यावीशमो नक्षत्र

४ स्थान• काष्ययने उद्देशः २ द्वीपद्वाराणि अन्तर-द्वीपाः पा-ताल 🛪-लशाः भात-कीविष्कं-भादि स्र० ३०३-३०६

भरणी पर्यंत दरेक चार चार नक्षत्रो छे. कृतिका नक्षत्रनो देव अग्नि छ यावत् भरणी नक्षत्रनो देव यम छे. एम दरेक नक्षत्रना चार चार देवो छे. चार अंगारक (मंगल) ग्रहो छे यावत् चार भावकेतु छे अर्थात् अठ्यासी ग्रहो दरेक चार चार छे. लवण-समुद्रना चार दरवाजा कहेला छे, ते आ प्रमाण-विजय, वैजयंत, जयंत अने अपराजित. ते दरवाजाओ चार योजन पहोळाईवेडे अने चार योजन प्रवेशवंडे छे. त्यां चार महार्द्धिक देवो यावत् पल्योपमना स्थितिवाळा वसे छे, ते आ प्रमाण-विजय, वैजयंत, जयंत अने अपराजित. (सू० २०५) धातकीखंडद्वीप, चक्रवाल विष्कंभ(गोळाईना विस्तार)वडे चार लाख योजननो कहेलो छे. जंबूद्वीप नामना द्वीपनी बहार चार भरत अने चार ऐरवत क्षेत्रो छे. एवी रीते जेम शब्दोदेशक बीजा स्थानकना त्रीजा उदेशकमां कहुं छे तेम अहिं पण बधुं वर्णन कहेन्तुं यावत् चार महर्पवतनी चार चुलिका छे. (स० २०६)

टीकार्थ:-पूर्वादि चारे दिशाओमां क्रमशः विजयादि द्वारों छे. द्वारनी वे तरफनी शाखनों जे अंतर ते विष्कंभ-बन्ने शाखनी वच्चेनी पहेळाई चार योजननी छे. प्रवेश-जगतीना कोटनी बारशाख-बन्ने बाजुनी भींतनी एकेक कोशनी जाडाई अने आठ योजननी ऊंचाई छे. कहाँ छे के-

चउजायणविच्छिन्ना,अट्ठेव य जायणाणि उब्विद्धा। उभओवि कोसकोसं, कुड्डा वाह्छओ तेसिं॥ ११३॥ भागर्थ उपर म्रजब हे.

पिलओवमिट्टईया, सुरगणपरिवारिया सदेवीया । एएसु दारनामा, वसंति देवा महिद्वीया ॥ ११४ ॥

श्रीस्था-नाङ्गपत्र सानुवाद ॥ ४२९ ॥

आ चार द्वारोमां द्वारना नामवाळा, एक पल्योपमनी स्थितिवाळा, घणा देवोना परिवारवाळा अने देवीओ सहित महर्द्धिक देवो वसे छे. ' चुल्लहिमवंतस्स ' त्ति० महाहिमवाननी अपेक्षाए नानो हिमवान, पूर्व अने पश्चिमना भागने विषे तेनी दरेकनी वे वे शाखा छे माटे कहे छे-' चउसु विदिसासु 'ईशानकोण विगेरे विदिशाओमां लवणसमुद्रने त्रण सो त्रण सो योजन उल्लंघीने* जे शाखा(दाढा)रूप विभागो वर्चे छे 'एत्थ'त्ति । आ शाखाविभागोने विषे अंतरे-सम्रुद्रना मध्यमां द्वीपो अथवा अंतर-परस्पर विभागप्रधान द्वीपो ते अंतरद्वीपो. तेमां ईशानकोणमां एकोरुक नामनो द्वीप त्रण सो योजननो लांबो अने पहोळो छे. एम ज अग्निकोणमां आभाषिक, नैऋतकोणमां वैषाणिक अने वायव्यकोणमां लांगालिक द्वीप छे. सम्रदायनी अपेक्षाए चार छे, परंतु एक एक विभागमां चार चार नथी. अतः क्रमवडे द्वीपो योजवा योग्य छे. द्वीपना नामथी पुरुषोना नामो छे. ते पुरुषो तो सर्व अंगोपांगवडे सुंदर अने जोवामां स्वरूपथी मनोहर छे, परंतु एकोरुक विगेरे नथी अर्थात एक उरुवाळा विगेरे नथी. आ द्वीपोथी ज चारसो योजन उल्लंघीने प्रत्येक विदिशाए चार सो योजनना लांबा पहोळा चार द्वीपो छे. एम ज जे द्वीपोनुं (बीजा चार द्वीपोनुं) जेटछं अंतर छे तेटछं तेओनुं लंबाई-पहोळाईनुं प्रमाण छे. यावत चारे विदिशाओना सातमा अंतरद्वीपोनुं नव सो योजन अंतर छे, अने तेटछं ज तेओनुं लंबाई-पहोळाईनुं प्रमाण छे. बधा मळीने अंतरद्वीपो अठ्यावीश छे. आ द्वीपोना मनुष्यो जोडले जन्मे छे. पल्योपमना असंख्यात भागविशिष्ट आयुष्यवाळा # ' अवगाह्य ' आ पदनुं द्विकर्मकत्व होवाथी कममां सप्तमीना अर्धमां द्वितीया छे. अहि द्विकर्मक धातुगणमां जो के 'गाह' धात नथी परंत द्विकर्मक गण पठित धातुना अर्घना निबंधनधी द्विकर्मक छे. आ चिह्नवाळो पाठ बाबवाळी प्रतिमां छे.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ द्वीपद्वाराणि अन्तरद्वीपाः पातालक-|लशाः धात-कीविष्कं-भादिः ३०६

४२९॥

नामना छे.

अने आठ सो धनुष्यना ऊंचा शरीरवाळा छे. ऐरवत क्षेत्रनो विभाग करनार शिखरी नामना पर्वतना पण एमज ईशानकोण विगेरे विदिशाओमां क्रमवडे ए ज पूर्वोक्त नामवाळा अठ्यावीश अंतरद्वीपो छे. अंतरद्वीपना प्रकरण माटे संग्रहगाथाओ जणावे छे— चुछ्छहिमवंत पुठ्या—वरेण विदिसासु सागरं तिसए। गंतूणंतरदीवा, तिन्नि सए हॉति विच्छिन्ना ॥११५॥ भावार्थ उपर जणाव्या प्रमाणे छे.

अउणावन्ननवसए, किंचूणे परिहि तेसिमे नामा । एगूरुगआभासिय, वेसाणी चेव नंगूळी ॥ ११६ ॥ आ अंतरद्वीपोनी परिधि नव सो ने ओगणपच्चास योजन किंचित् न्यून अने एकोरुक, आभाषिक, वैषाणिक अने लांगूलिक

एएसिंदीवाणं, परओ चत्तारि जोयणसयाइं।ओगाहिऊण लवणं,सपिडिदिसिं च उसयपमाणा ॥११७॥ चत्तारंतरदीवा, हयगयगोकन्नसंकुलीकन्ना । एवं पंचसयाइं, छसत्तअट्ठे व नव चेव ॥११८॥ ओगाहिऊण लवणं,विक्लंभोगाहसरिसया भणिया।चउरो चउरो दीवा, इमेहिं णामेहिं णेयव्वा ॥११९॥ आयंसगमेंढमुहा, अओमुहा गोमुहा य चउरेते। अस्समुहा हित्थमुहा,सीहमुहा चेव वग्धमुहा ॥१२०॥ तत्तो अ अस्सकन्ना,हित्थयकन्ना अकन्न कन्नपाउरणा। उक्कामुहमेहमुहा,विज्जुमुहा विज्जुदंता य॥१२१॥

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ।। ४३०॥

घणदंत लट्टदंता, निगूढदंता य सुद्धदंता य । वासहरे सिहरंमित्रि एवं चिय अट्टवीसात्रि ॥ १२२ ॥ आ छ गाथाओ स्पष्ट छे. मुलना अनुवादमां आ वर्णन आबी गोयल छे.

अंतरदीवेसु नरा, धणुसयअट्टसिया सया मुइया। पार्लिति मिहुणधम्मं, पह्नस्स असंखभागाऊ॥१२३॥

अंतरद्वीपमां वसनाम मनुष्यो आठ सो धनुष्यना ऊंचा, सदा आनंदवाळा अर्थात् रोग, श्लोक विगेरे उपाधियी रहित, पर्योपमना असंख्यात भागना आयुष्यवाळा तथा युगलिक धर्मने पाळनारा होय छे.

चउसट्टि पिट्टिकरंड–याणि मगुयाणऽवच्चपालणया। अउणासीइं तु दिगा, च उत्थमत्तेण आहारो ॥१२४॥

ते मनुष्योने पृष्ठकरंडको अर्थात् पांसळीओ चोसठ होय छे. अपत्य – पुत्रपुत्रीना युगलनी पालना ७९ दिवस पर्यंत करे छे अने चतुर्थभक्ते – एकांतरे आहार करे छे. (सू० ३०४) ' एत्य णं ' ति० मध्यना दश हजार योजनमां ' महामहांत ' एम कहें चतुर्थभक्ते – एकांतरे आहार करे छे. (सू० ३०४) ' एत्य णं ' ति० मध्यना दश हजार योजनमां ' महामहांत ' एम कहें चतुर्थभक्ते – पाणीना कळश ते महालिंजर, तेना जेवा आकारवाडे रहेला ते महालिंजरसंस्थानसंस्थिता अर्थात् तेना जेवा आकारवाळा. तेनाथी बीजा नाना कळशनो निषेध करवावडे महांत शब्द कहेल छे. पातालनी जेम अगाध गंभीर होवाथी पाताळो अथवा पाताळनी अंदर रहेल होवाथी पाताळो, महान् एवा पाताळो ते महापाताळो, १ वडवामुख, २ केतुक, ३ यूवक अने ४ ईश्वर क्रमशः पूर्वादि चार दिशाओमां छे. आ चार कळशाओ सुखमां अने मूलमां दश हजार योजनना अने मध्यमां तथा ऊंचाईवडे एक लाख योजनना छे. आ कळशाओना

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ द्वीपद्वाराणि अन्तरद्वीपाः पातालक-लिशाः धात-कीविष्कं-भादि ¥ स्०३०३-¥ ३०६ 11 850 11

उपरना त्रीजा भागमां मात्र पाणी छे, मध्यना श्रीजा भागमां वायु अने जळ छे तथा मूळ(तळीआ) ना त्रीजा भागमां फक्त वायु छे. तेमां वसनारा काल विगेर वायुकुमार जातीय देवो छे. अहिं आ संबंधी गाथाओं दर्शाव छे—
पणनउइ सहस्ताइं, ओगाहित्ताण चउाद्दीसें लवणं। चउरोऽलंजरसंठाण-संठिया होंति पायाला।।
लवणसमुद्रमां चारे दिशाओने विषे पंचाणुं हजार योजन उछंघीने कलशना आकारे रहेला चार महापातालकलशो छे.
वलयामुह केऊए, जूयग तह इस्सरे य बोद्धव्वे। सव्ववइरामयाणं, कुड्डा एएसिं द्ससइया।। १२६।।
वलयमुख, केतुक, यूपक अने ईश्वर आ चारे कलशो वधाय वज्रमय छे अने तेनी ठीकरीओ जाडाईवडे एक हजार योजननी छे.

जोयणसहस्सद्सगं, मूले उविरं च होति विच्छिन्ना। मज्झे य सयसहस्सं, तित्तयमेत्तं च ओगाढा ॥१२७॥ मूलमां अने उपर दश हजार योजनना पहोळा छे, मध्यमां लाख योजनना छे अने लाख योजन भूमिमां ऊंडा छे. पित्तओवमिटिईया, एएसिं अहिवई सुरा इणमो । काले य महाकाले, वेलंब पभंजणे चेव ॥ १२८॥ उक्तार्थ छे.

अन्नेवि य पायाला, खुड्डालंजरगसंठिया लवणे। अट्टसया चुलसीया, सत्त सहस्सा य सब्वेवि ॥१२९॥ लवणसम्रद्रमां बीजा पण लघुकळश्चना आकार जेवा नाना पाताळकळशो बधाय मळीने सात हजार आठसो ने चारासी छे. श्रीस्था-नाङ्गसृत्र सानुवाद ॥ ४३१ ॥ जोयणसयविच्छित्रा,मृहुवरिं दस सयाणि मज्झंमि।ओगाढा य सहस्सं, दस जोयणिया य सिं कुड्डा ॥

ते पाताळकलशाओ, मूले-तिलयामां अने उपरना भागमां एक सो योजनना पहोळा अने मध्यभाग-पेटाळमां एक हजार योजनना पहोळा तथा एक हजार योजन भूमिमां रहेल छे अने तेनी ठीकरी दश योजननी जाडी छे.

पायालाण विभागा, सब्बाण वि तिन्नि तिन्नि बोद्धब्वा। होट्टिमभागे वाऊ, मज्झे वाऊ य उद्यं च ॥१३१॥ उविरें उद्गं भिणयं, पढमगबीएसु वाऊसंखुभिओ। वामे उद्गं तेण य, परिवड्ड जलनिही खाहिओ।। परिसंठियंमि पवणे, पुणरवि उदगं तमेव संठाणं। वच्चेइ तेण उदही, परिहायइणुक्कमेणेवं॥ १३३॥

बधा य पातालकलशोना त्रण त्रण विभाग जाणवा, नीचेना भागमां वायु, मध्यना भागमां वायु तथा पाणी अने उपरना भागमां पाणी, एम जिनेश्वरोए कहेलुं छे. प्रत्येक कलशोना पहेला अने बीजा भागमां बीजा घणा महान् पर्वनो, आमतेम चाले छे, खळभळे छे तथा परिणमे छे. ते पवनोवडे पाणी उछळे छे. तथी पहेला अने बीजा विभागमां वायु खळभळतो थको पाणीने ऊंचे काढे छे, तथा क्षोभायमान थयुं थकुं पाणी वृद्धि पामे छे अने ते वायु शांत थये छते फरीथी पाणी ते ज स्थानमां आवे छे अर्थात् फरीथी पाणी पातालकलशमां प्रवेश करे छे. ते कारणथी क्रमशः समुद्रनी वेल वधे छे अने घटे छे. अहोरात्रमां बे वखत पवन खळभळे छे तेने लईने अहेररात्रमां बे वखत वेल वधे घटे छे. विशेषथी पूर्णिमादि तिथिओमां वायुनो अतिश्लोभ थवाथी आतिशय वेल वधे छे.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ द्वीपद्वाराणि अन्तरद्वीपाः पातालक-लिशाः धात-कीविष्कं-भादि ३०६

॥ ४३१ ॥

वेला-लवणसमुद्रनी शिखाने अथवा अंतरमां प्रवेश करती अने बहार नीकळती अग्रशिखाने वेलंधर ने अनुवेलंधर देवो धारण करे छे-अटकावे छे माटे आ संज्ञा होवाथी ते वेलंधरो, नागराजो-नागकुमारमां प्रधान देवो, ते वेलंधर नागराजाओना आवास-वसवाना पर्वतो पूर्वादि दिशाओमां अनुक्रमे गोस्तूप विगेरे छे. ईशान कोण विगेरे विदिशाओमां वेलंधरोनी पाछळ वर्त्तनारा अनु(नाना)नायकपणावडे नागराजो ते अनुवेलंधर नागराजो. वेलंधरोनी वक्तव्यता आ प्रमाणे छे--

द्सजोयणसहस्सा, जवणासिहा चक्कवालओ रुंदा। सोलसहस्स उच्चा, सहस्समेगं तु ओगाढा ॥१३४॥ लवणसमदनी शिखा, चक्रवाल(गोळाई)वडे दश हजार योजननी पहोळी, सोळ हजार योजन ऊंची अने एक हजार

योजननी लवणसम्रद्रनी उपरनी सपाटीथी भूमिमां ऊंडी छे.

देसूणमद्धजोयण, लवणसिहोवरि दगं तु कालदुगे। अइरेगं अइरेगं, परिव**इ**इ हायए वावि ॥ १३५॥ आईभतरियं वेलं, धरेति लवणोदिहस्स नागाणं। वायालीससहस्सा, दुसत्तारिसहस्स बाहिरियं॥ १३६॥ सिट्ठं नागसहस्सा, धरिति अग्गोदगं समुद्दस्स। वेलंधरआवासा, लवणे य चडादीसं चडरो ॥१३७॥

उपर्युक्त शिखा उपरना भागमां किंचित् न्यून अर्ध्ययोजन अहोरात्रमां वे वखत कमशः विशेष विशेष वधे छे अने घटे छे. लवणसमुद्रनी अंदरनी वेला अर्थात् जंब्द्वीपनी सन्मुख जती वेलाने नागकुमारना बेंतालीश हजार देवी अटकावे छे अने बहारनी वेलाने अर्थात् धातकीखंड द्वीपनी सन्मुख जती वेलाने बहोंतेर हजार देवो अटकावे छे. साठ हजार श्रीस्था-ना**ङ्गद**त्र सानुवाद स ४३२॥

नागकुमार देवो सम्रुद्रनी शिखाना अग्रभागना पाणीने धारण करे छे अर्थात् तेथी उपर वृद्धि पामता जलने अटकावे छे. लवणसम्रुद्रमां चारे दिशाए वेलंघर देवोनां रहेवाना चार आवासो छे.

पुठ्वाइ अणुक्कमसो, गोथुभदगभाससंखदगसीमा। गोथुभ सिवए संखे मणोसिले नागरायाणो॥१३८॥ अणुवेलंधरवासा, लवणे विदिसासु संठिया चउरो। ककोडे विन्जुप्पभे, केलासऽरुणप्पभे चेव ॥१३९॥ ककोडय कदमए, केलासऽरुणप्पभे य रायाणो। वायालीससहस्से, गंतुं उद्हिंमि सव्वेवि॥१४०॥ उक्तार्थ छे, मुलानुवादमां अर्थ आवी गयेल छे.

चत्तारि जोयणसए, तीसे कोसं च उग्गया भूमिं। सत्तरस जोयणसए, इगवीसे ऊसिया सब्वे ॥१४१॥

बधा गोस्तूप विगेरे आठ पर्वतो, चार सो त्रीश योजन अने एक कोश भूमिमां ऊंडा छे अने प्रत्येक सतर सो एकवीश

योजन ऊंचा छे.
'पभासिंसु 'त्ति० सौम्यपणुं होवाथी चंद्रोतुं प्रभासन-प्रकाशवुं कह्युं अने तीक्ष्ण किरण होवाथी सूर्योतुं तो 'तवइंसु 'त्ति० तापन (तपवुं) कह्युं. चंद्रोनी चार संख्या होवाथी तेना परिवारभूत नक्षत्र विगेरनी चार संख्या ज छे माटे कहे छे केचार कृतिका छे ते नक्षत्रनी अपेक्षाए छे, परंतु तारानी अपेक्षाए चार नथी. एम ज अठ्यावीश नक्षत्रो पण चार चार जाणवा.

काध्ययन उद्देशः २ द्वीपद्वाराणि |अन्तरद्वीपाः पातालक लिशाः धात-कीविष्कं-***** ************

कृतिका नक्षत्रनो अग्नि नामनो देव छे यावत् भरणी नक्षत्रनो यम नामनो देव छे (ते दरेक चार चार छे). मंगळ प्रथम प्रह छे अने भावकेतु अठ्यासीमो ग्रह छे. बाकीनुं वर्णन बीजा स्थानकमां जंबूद्वीपना द्वारादि विगेरेनी जेम समुद्रना द्वार विगेरे जाणवा. (स्० ३०५) चक्रवाल-वलयनो विस्तार, जंबूद्वीपथी फरता रहेल घातडीखंड अने पुष्कराईद्वीपमां चार भरत अने चार ऐरवत क्षेत्र छे. शब्दवडे जणातो उद्देशक ते शब्दोदेशक अर्थात् बीजा स्थाननो त्रीजो उद्देशो तेनी माफक कहेवुं, परंतु वे स्थानना अनुरोधथी त्यां 'दो भरहाइं 'वे भरत इत्यादि कहेलुं छे, अहिं तो चार भरत विगेरे कहेलु छे. (स० ३०६)

मनुष्य संबंधी वस्तुओनुं चतुःस्थानक कहुं. हवे क्षेत्रना साधर्म्यथी नंदीश्वर द्वीप संबंधी वस्तुओनुं समीपना स्त्रथी चार स्थानकने ' नंदीसरस्स ' इत्यादि स्त्रवडे कहे छे.

[अथ नन्दीश्वरविचारः] णंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे चउिद्दस्तिं चत्तारि अंजणगपव्वता पं० तं०—पुरित्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, दाहिणिल्ले अंजणगपव्वते, पचित्रिं अंजणगपव्वते, उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते ४, ते णं अंजणगपव्वता चउरासीति जोयणसहस्साइं उद्वं उच्चत्तेणं एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं तद्णंतरं च णं मायाए २ परिहातेमाणा २ उविरमेगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं पण्णता, मूले

भीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४३३॥ **

इक्रतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं उपिरं तिन्नि २ जोयणसहस्साइं एगं च छावटूं जोयणसतं परिवर्षेवेणं, मूले विच्छिन्ना, मज्झे संखेता, उप्पितणुया गोपुन्छसंठाणसंठिता सव्वअंजणमया अच्छा सण्हा रुण्हा घट्टा मट्टा नीरया निम्मला निष्पंका निकंकडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाईया द्रिसणीया अभिरूवा पडिरूवा, तेसि णं अंजणगपव्वयाणं उविरं बहुसमरमणिजभूमिभागा पं०, तेसि णं बहुसमरमणिजभूमिभागाणं बहुमञ्झदेसभागे चत्तारि सिद्धाययणा पण्णेता, ते णं सिध्धाययणा एगं जोयणसयं आयामेणं पण्णेता पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं बावत्तरि जोयणाइं उड्ढं उच्चतेणं, तेसिं सिध्धाययणाणं चउदिसिं चत्तारि दारा पं॰ तं॰-देवदारे असुरदारे णागदारे सुवन्नदारे, तेसु णं दारेसु चउव्विहा देवा परिवसंति, तं०-देवा असुरा नागा सुवण्णा, तेसि णं दाराणं पुरतो चत्तारि मुहमंडवा पं , तेसि णं मुहमंडवाणं पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमंडवा पं०, तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं बहुमज्झदेसभागे चत्ताि वइरामया अक्खाडगा पं०, तेसि णं वइरामयाणं अवखाडगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि मणिपेढियातो पं०, तासि णं मणि-

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ नन्दीश्वरा-धिकारः स्रु० ३०७

॥ ४३३ ॥

पेढिताणं उवरिं चत्तारि सीहासणा पन्नता, तेसि णं सीहासणाणं उवरिं चत्तारि विजयद्रसा पन्नता. तेसि णं विजयदूसगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामता अंकुसा पं०-तेसु णं वितिरामतेसु अंकुसेसु चत्तारि कुंभिका मुत्तादामा पं०-ते णं कुंभिका मुत्तादामा पत्तेयं २ अन्नेहिं तदध्धउचत-पमाणिमत्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिकेहिं मुत्तादामेहिं, सब्वतो समंता संपरिक्खिता, तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ चत्तारि मणिपोढिताओ पण्णताओ, तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि २ चेतितथूमा पण्णता, तासि णं चेतितथूमाणं पत्तेयं २ चउिहसिं चत्तारि मणिपेढियातो पं०, तासि णं मणिपेढिताणं उवरिं चत्तारि जिणपिडिमाओ सन्वरयणामईतो संपिलयंकिणसन्नाओ थूमाभिमुहाओ चिट्टंति, तं०-रिसभा वद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा, तेसि णं चेतितथूभा णं पुरतो चत्तारि मणिपेढिताओ पं०तासि णं मणिपेढिताणं उवरिं चत्तारि चेतितरुक्खा पं० तेसि णं चेतितरुक्खा-णं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पं॰, तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि महिंदज्झया पं॰,तेसि णं महिंद्ज्झताणं पुरओ चत्तारि णंदातो पुत्रखरणीओ पं०, तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं २ चउदिासं

श्रोस्था-ना**ङ्गध्**त्र सातुवाद् ॥ ४३४ ॥

चत्तारि वणसंडा पं० तं०-पुराच्छिमेणं दाहिणेणं पच्चित्थिमेणं उत्तरेणं-पुठवेणं असोगवणं, दाहि-णओ होइ सत्तवण्णवणं । अवरेणं चंपगवणं चूतवणं उत्तरे पासे ॥ १ ॥ तत्थ णं जे से पुरिच्छ-मिल्ले अंजणगपव्वते तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्लरिणीतो पं० तं०-णंदुत्तरा णंदा आणंदा नंदिवद्धणा, ताओ णंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणं पन्नासं जोय-णसहस्साइं विक्लंभेणं दस जोयणसताइं उब्वेहेणं, तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं २ चउिहसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा, तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरतो चत्तारि तोरणा पं० तं०-पुरिच्छमेणं दाहिणेणं पचित्थमेणं उत्तरेणं तासि णं पुक्खरणीण पत्तेयं २ चउिहसिं चत्तारि वणसंडा पं० तं०-पुरतो दाहिण० पच्च० उत्तरेणं, पुठवेणं असोगवणं जाव चूयवणं उत्तरे पासे. तासि णं पुक्खरिणीणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि द्धिमुहगपव्वया पं०, तेणं द्धिमुहगपव्वया चउसिट्टं जोय-णसहस्साइं उड्डं उच्चत्तेणं एगं जोयणसहस्सं उब्वेहेणं सब्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिता दस-जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं एकतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं, सव्वर- ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ नन्दीश्वरा-धिकारः स्र० ३०७

แ หรห แ

यणामता अच्छा जाव पडिरूवा, तेसि णं दिधमुहगपव्वताणं उवरिं बहुसमरमणिजा भृमिभागा पं०, सेसं जहेव अंजणगपव्वताणं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं, जाव चूतवणं उत्तरे पासे. तत्थ णं जे से दाहिणिल्ले अजणगपव्वते तस्स णं चउदिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ पण्णताओ तं०-भदा विसाला कुमुदा पोंडरिगिणी, तातो णंदातो पुक्खरणीतो एगं जोयणसयसहस्सं सेसं तं चेव जाव दिधमुहगपव्वता जाव वणसंडा, तत्थ णं जे से पच्चित्थिमिल्ले अंजणगपव्वते तस्स णं चउिद्सिं चत्तारि णंदाओ पुक्करणीओ पं० तं०-णंदिसेणा अमोहा गोथूमा सुदंसणा सेसं तं चेव, तहेव द्धिमुहगपव्वता तहेव सिद्धाययणा जाव वणसंडा, तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले अंजण-गपव्वते तस्स णं चउिद्दसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ पं० तं०-विजया वेजयंती जयंती अप-राजिता, तातो णं पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं तं चेव पमाणं तहेव दिधमुहगपव्वता तहेव सिद्धाययणा जाव वणसंडा, णंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवाळविक्लंभस्स बहुमज्झदेसभागे चउसु विदिसासु चत्तारि रतिकरगपव्वता पं० तं०-उत्तरपुरिच्छमिल्ले रतिकरगपव्वते दाहिण-

श्रीस्था-नाङ्गसृत्र सानुवाद ॥ ४३५ ॥

पुरिच्छिमिल्ले रइकरगपव्यए दाहिणपच्चित्थिमिल्ले रातिकरगपव्यते उत्तरपच्चित्थिमिल्ले रतिकरगपव्यए, तेणं रतिकरगपञ्चता दस जोयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं दस गाउतसताइं उठ्वेहेणं सव्वत्थ समा झ्छरिसंठाणसंठिता दस जोयणसहस्साइं विक्लंभेणं एकतीसं जोयणसहस्साइं छच जोयणसते परिक्लेवेणं, सव्वरयणामता, अच्छा जाव पडिरूवा, तत्थ णं जे से उत्तरपुरच्छि-मिल्ले रातिकरग स्वतंत तस्स णं चउदिसिं ईसाणस्स देविंद्स्स देवरत्रो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबूदीव-पमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पं० तं०-णंदुत्तरा णंदा उत्तरकुरा देवकुरा, कण्हाते कण्हरातीते रामाए रामरिक्वयाते, तत्थ णं जे से दाहिणपुरिच्छामिल्ले रितकरगपटेवते, तस्स णं चउिहिसं सकस्स देविंदस्स देवरन्नो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबूदीवपमाणातो चत्तारि रायहाणीओ पं० तं०-समणा सोमणसा अचिमाली मणोरमा पउमाते सिवाते सतीते अंजूए, तत्थ णं जे से दाहिण-पच्चित्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते तत्थ णं चउदिसिं सक्कस्स देविंद्स्स देवरन्नो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबू-द्दीवपमाणमेत्तातो चत्तारि रायहाणीओ पं॰ तं०-भृता भृतवर्डिंसा गोथूभा सुदंसणा, अमलाते अच्छराते ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ नन्दीश्वरा-धिकारः स्र० ३०७

। ४३५ ॥

णवमिताते रोहिणीते, तत्थ णं जे से उत्तरपञ्चात्थामिल्ले रितकरगपव्वते तत्थ णं चउदिसिमिसाणस्स देविंद्स्स देवरक्नो चउण्हमग्गमिह्सीणं जंबृदीवप्पमाणिमत्तातो चत्तारि रायहाणीओ पं० तं०— रयणा रतणुञ्चता सव्वरतणा रतणसंचया, वसृते वसुगुत्ताते वसुमित्ताते वसुंधराए । सू० ३०७

मूलार्थ: नंदीश्वरवर नामना आठमा द्वीपना चक्रवाल विष्कंभना बहुमध्यदेशभागमां चारे दिशाए चार अंजनक पर्वतो कहेला छे, ते आ प्रमाणे – पूर्व दिशानो अंजनक पर्वत, दक्षिण दिशानो अंजनक पर्वत, पश्चिम दिशानो अंजनक पर्वत अने उत्तर दिशानो अंजनक पर्वत. ते चारे अंजनक पर्वतो चोरासी हजार योजन ऊंचा, एक हजार योजन जमीनमां ऊंडा अने मूलमां दश हजार योजन पहोळा छे. त्यारबाद थोडा थोडा प्रमाणथी हीन थता थता उपरना भागमां पहोळाईथी एक हजार योजन कहेला छे. ते चारे पर्वतो मूल(तळिया)मां एकत्रीश हजार, छ सो त्रवीश योजननी परिधिवाळा छे. उपर(शिखर)ना भागमां त्रण हजार, एक सो छासठ योजननी परिधिवाळा छे. मूलमां विस्तारवाळा, मध्यमां सांकडा अने उपर ओछी पहोळाईवाळा छे. गायना पूंछडाना आकारवडे रहेला छे. बधा अंजन(श्याम)रत्नमय छे, स्फटिक जेवा स्वच्छ छे, कोमळ वस्त्र जेवा छे, घूंटेला वस्त्र जेवा छे, घसेल पत्थरनी प्रतिमा जेवा छे, प्रतिमा जेवा छे, रज रहित छे, कठण मल रहित छे, कादव रहित छे, निरावरण शोभावाळा छे, स्वप्रभावाळा छे, किरणो सहित छे, उद्योत सहित छे, मनने आनंद करनारा छे, जोवालायक छे, मनोहर छे, दरेक जोनारने रमणीय लागे तेवा छे. ते अंजनक पर्वतोनी उपर अत्यंत सम अने रमणीय

भीस्था-नाङ्गधत्र सानुवाद ।। ४३६ ॥

भृमिना भागो छे, ते अत्यंत सम अने रमणीय भृमिभागना मध्यदेशभागमां चार सिद्धायतनो कहेला छे. ते सिद्धायतनो एक सो योजन लांबा, पचास योजन पहोळा अने बोंतेर योजन ऊर्ध्व (ऊंचपणे) छे. ते सिद्धायतनोनी चारे दिशाए चार दरवाजाओं कहेला छे, ते आ प्रमाणे-पूर्वादि दिशाना क्रमथी १ देवद्वार, २ असुरद्वार, ३ नागद्वार अने ४ सुपर्णद्वार छे. ते दरवाजाओने विषे चार प्रकारना देवो वसे छे. ते आ प्रमाणे-देवो. असुरो, नागकुमारो अने सुपर्णकुमारो. ते दरवाजाओनी आगळ चार मुखमंडप कहेला छे. ते मुखमंडपोनी आगळ चार प्रेक्षाघरमंडप (रंगमंडप) कहेला छे. ते प्रेक्षा-घरमंडपोना बहमध्यदेशभागमां चार, वज्र(हीरा)मय, जोनार लोकोना आसनभूत अखाडाओ कहेला छे. ते वजरतन-मय अखाडाओना बहुमध्यदेशभागमां चार मणिमय पीठिकाओ कहेली छे. ते मणिमय पीठिकाओनी उपर चार सिंहासनी कहेला छे. ते सिंहासनानी उपर चार विजयदृष्य (वस्त्रो) कहेला छे, ते विजयदृष्योना बहुमध्यदेशभागमां चार वज्रमय अंकुशो (आंकडाओ) कहेला छे, ते वज्रमय अंकुशोमां चार कुंभिकाप्रमाण मोतीनी माळाओ कहेली छे, ते दरेक कुंभिका-त्रमाण मोतीनी माळाओ अर्द्ध प्रमाण ऊंचाईवाळी, बीजी चार अर्द्धकुंभिका प्रमाण मोतीनी माळाओथी चोतरकथी वींटायेली छे. ते प्रेक्षाघरमंडपोनी आगळ चार मणिमय पीठिकाओ कहेली छे, ते मणिमय पीठिकाओनी उपर चार चैत्यस्तूपो कहेला हो. ते प्रत्येक चैत्यम्त्रपोनी चारे दिशाआंमां चार मणिमय पीठिकाओ कहेली हो. ते मणिमय पीठिकाओनी उपर चार जिन-प्रतिमाओ छे, ते सर्व रत्नमय, पर्यकासन एटले पद्मासने बेठेली, स्तूपोनी सन्मुख रहेली छे, ते आ प्रमाणे-ऋषभ, चंद्रानन, वर्द्धमान अने वारिषेण एवा नामवाळी छे. ते चैत्यस्तूपोनी आगळ चार मणिपीठिकाओ छे, ते मणिपीठिकाओ उपर चार चैत्य-

४ स्थानः काष्ययने उद्देशः २ नन्दीश्वरा-धिकारः स्व० ३०७

11 23E 11

बुक्षो कहेला छे. ते चैत्यबुक्षोनी आगळ चार मणिपीठिकाओ कहेली छे. ते मणिपीठिकाओनी उपर चार महेंद्र(मोटा इंद्र)-ध्वजो कहेला छे. ते महेंद्रध्वजोनी आगळ चार नंदा पुष्करणी (वावडी विशेष) कहेली छे. ते दरेक पुष्करणीओनी चारे दिशाओंने विषे चार वनखंडो कहेला छे. ते आ प्रमाण-पूर्वनो वनखंड, दक्षिणनो वनखंड, पश्चिमनो वनखंड अने उत्तरनो वनखंड, पूर्वमां अशोकवन, दक्षिणमां सप्तच्छदवन, पश्चिममां चंपकवन अने उत्तरमां आम्रवन छे. तेमां जे पूर्विदिशानो अंज-नक पर्वत छे तेनी चारे दिशामां चार नंदा पुष्करणी कहेली छे, ते आ प्रमाणे-नंदोत्तरा, नंदा, आनंदा अने नंदिवर्द्धना ते नंदा पुष्करणीओ एक लाख योजन लांबी, पचास हजार योजन पहोळी अने एक हजार योजन ऊंडी छे. ते प्रत्येक पुष्करणी-ओनी चारे दिशाओमां त्रण सोपान प्रतिरूपको छे अर्थात् एक द्वार प्रत्ये नीकळवा अने आववा माटे त्रण दिशानी सन्मुख पगिथयानी त्रण पंक्तिओं छे. ते त्रण सोपान प्रतिरूपकोनी आगळ चार तोरणो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-पूर्वमां, दक्षिणमां, पश्चिममां अने उत्तरमां. ते प्रत्येक पुष्करणीनी चार दिशाए चार वनखंडो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-पूर्वमां, दक्षिणमां, पश्चिममां अने उत्तरमां. पूर्वमां अशोकवन यावत् उत्तरमां आम्रवन छे. ते पुष्करणीओना बहुमध्यदेशभागमां चार दिधमुख पर्वतो कहेला छे. ते द्धिमुख पर्वतो चारे दिशामां चोसठ हजार योजन ऊंचा, एक हजार योजन जमीनमां ऊडा, सर्वत्र समान, पालाने आकार रहेला, द्भ हजार योजन पहोळा, एकत्रीश हजार, छ सो ने त्रेवीश योजननी परिधिवाळा छे. वळी सर्व रत्नमय, स्वच्छ यावत् प्रतिरूप छे. ते द्धिमुख पर्वतोनी उपर बहुसम रमणीयभूमिभागो कहेला छे. बाकीनुं वर्णन जेम अंजनक पर्वतोनुं कर्युं छे तेमज सघछं वर्णन आ द्धिमुख पर्वतोत्तुं पण कहेर्चुं, यावत् आम्रवेन उत्तर दिशामां छे. त्यां जे दक्षिण दिशानो अंजनक पर्वत छे तेनी चारे दिशामां चार श्रीम्थाः नाङ्गस्त्र सातुवाद ॥ ४३७ ॥

नंदापुष्करणीओ कहेली छे. ते आ प्रमाणे-भद्रा, विशाला, कुम्रदा अने पोंडरिकणी. ते नंदा पुष्करणीओ एक लाख योजन लांबी छे. बाकीनुं वर्णन पूर्ववत जाणवुं यावत दिधमुखपर्वतो यावत वनखंडो छे. त्यां जे पश्चिम दिशानो अंजनक पर्वत छे तेनी चार दिशामां चार नंदा पुष्करणीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे—नंदिषेणा, अमोघा, गोस्तूपा अने सुदर्शना. बीजुं पूर्वनी जेम जाणवुं. ते ज प्रमाणे दिधमुख पर्वतो, ते ज प्रमाणे सिद्धायतनो अने यावत वनखंडो छे. त्यां जे उत्तर दिशामां अंजनक पर्वत छे तेनी चार दिशामां चार नंदा पुष्करणी कहेली छे, ते आ प्रमाणे— विजया, वैजयंती, जयंती अने अपराजिता. ते पुष्करणीओ एक लाख योजन लांबी हो. पहाळाई विगेर पूर्वीक्त प्रमाणे हो, तेमज दिधमुख पर्वतो, सिद्धायतनो यावत वनखंडो कहेला हो. नंदीश्वरवर द्वीपना चक्रवाल विष्कंभना बहुमध्यदेशभागमां चार विदिशाओने विषे चार रतिकर पर्वतो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-ईशानकोणमां रतिकर पर्वत, अग्निकोणमां रतिकर पर्वत, नैऋतकोणमां रतिकर पर्वत अने वायव्य कोणमां रतिकर पर्वत छे. ते रति-कर पर्वतो एक हजार योजन ऊंचा, एक हजार गाउ जमीनमां ऊंडा, सर्वत्र समान, झालरने आकारे रहेला छे. दश हजार योजनना पहोळा अने एकत्रीश हजार, छ सो त्रेवीश योजननी परिधिवाळा छे. सर्वरत्नमय स्वच्छ यावत दरेकने जोवालायक छे. त्यां जे ईशानकोणमां रतिकर पर्वत छे तेनी चारे दिशाए ईशानेंद्र, देवना राजानी चार अग्रमहिषीओनी जंबूद्वीप प्रमाण (एक लाख योजननी) चार राजधानीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-नंदुत्तरा, नंदा, उत्तरकुरा अने देवकुरा नामनी छे. ते अनुक्रमे कृष्णा. कृष्णराजी. रामा अने रापरक्षिता नामनी इंद्राणीओ संबंधी छे. त्यां जे अग्निकोणमां रितकर पर्वत छे तेनी चारे दिशामां शक नामना देवेंद्र, देवना राजानी चार अग्रमहिषीओनी जंबूद्वीपना प्रमाण जेवडी चार राजधानीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे- ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ नन्दीश्वरा-धिकारः स्र० ३०७

ी। ४३७ ।

सुमना, सौमनसा, अर्चिमाली अने मनोरमा नामनी छै. ते अनुक्रमे पद्मा, शिवा, शची अने अंजु नामनी इंद्राणीओ संबंधी छे. त्यां जे नैऋत्य कोणमां रितकर पर्वत छे तेनी चारे दिशाओमां शक नामना देवेंद्र, देवना राजानी चार अग्रमहिषीओनी जंबुद्वीपना प्रमाण जेवडी चार राजधानीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-भृता, भृतावतंसा, गोस्तूपा अने सुदर्शना नामनी छे. ते
अनुक्रमे अमला, अप्सरा, नविमका अने रोहिणी नामनी इंद्राणीओ संबंधी छे. त्यां जे वायव्य कोणमां रितकर पर्वत छे त्यां
चारे दिशाए ईशानेंद्र, देवना राजानी चार अग्रमहिषीओनी जंबुद्वीपना प्रमाण जेवडी चार राजधानीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणेरत्ना, रत्नोचया, सर्वरत्ना अने रत्नसंचया. ते अनुक्रमे वसु, वसुगुप्ता, वसुमित्रा अने वसुंधरा नामनी इंद्राणीओनी छे. (सू० ३०७)
टीकार्थ:-आ सत्र स्पष्ट छे. विशेष ए के-

जंबू १ लवणे धायइ २, कालेाए पुक्खराइ ३ जुयलाइं । वारुणि ४ खीर ५ घय ६ इक्खू ७, नंदीसर ८ अरुण ९ दीवुदही ॥ १४२ ॥

१ जंबूद्वीप अने लवणसमुद्र, २ धातकीखंड द्वीप अने कालोदिधि, ३ पुष्करवरद्वीपथी आरंभीने ४ वारुणी, ५ क्षीर, ६ घृत, ७ इक्षु, ८ नंदीश्वर अने ९ अरुण नामना द्वीप अने समुद्रो छे यावत स्वयंभूरमण पर्यंत द्वीपना नाम प्रमाणे समुद्रना नाम छे. आ गणना प्रमाणे नंदीश्वर द्वीप आठमो छे. ते ज प्रधान छे, केमके मनुष्यद्वीप सिवाय बीजा द्वीपोनी अपेक्षाए अहिं घणा जिनभवन विगेरेना सद्भावने लईने तेनुं प्रधानपणुं छे. तेना चक्रवाल विष्कंभ(पहोळाई)नुं प्रमाण १६३८४००००० योजन छे. कह्यं छे के—

श्रीस्था-ना**ङ्गध्**त्र सानुवाद ।। ४३८॥

तेवट्ठं कोडिसयं, चउरासीइं च सयसहस्साइं । नंदीसरवरदीवे, विक्खंभो चक्कवालेणं ॥ १४३ ॥ एक अबज, त्रेसठ क्रोड अने चोराशी लाख योजन नंदीश्वर द्वीपतुं चक्रवाल विष्कंभ छे.

मध्यह्रपदेशमाग-देशनो अवयव ते मध्यदेशभाग. ते खास मध्यभाग निहं, प्रदेश विगेरनी चोकस गणनावडे निक करेल नथी, परंतु प्रायः बहुमध्यदेशभाग छे. अथवा अत्यंतमध्यदेशभाग ते बहुमध्यदेशभाग जाणवो. अहि अंजनक पर्वतो मूल(भृतळ)मां दश हजार योजन पहोळा छे एम कह्युं, अने द्वीपसागरप्रज्ञप्तिनी संग्रहणीमां तो कहे छं छे के-

चुलसीति सहस्साइं, उठिवद्धा ओगया सहस्समहे । धरणितले विच्छिन्ना य ऊणगा ते दससहस्सा ॥१४४ चोराशी हजार योजन ऊंचा, एक हजार योजन भूमिमां ऊंडा अने कंईक न्यून दश हजार योजनना भूमितलमां पहोळा छे.

नव चेव सहस्साइं, पंचेव य होंति जोयणसयाइं। अंजणगपठवयाणं, मूलम्मि उ होइ विक्लंभो॥१४५ अंजनक पर्वतोतुं मूल-जमीनना अंदरना भागरूप कंदमां साडानव हजार योजननी पहोळाई छे.

नव चेव सहस्साइं,चत्तारि य होति जोयणसयाइं। अंजणगपव्वयाणं, धरणियले होइ विक्खंभो ॥१४६॥ अंजनक पर्वतोनी भूमितल-सपाटीमां नव हजार ने चार सो योजननी पहोळाई छे.

आ मतांतर जाणवी. एवी रीते बीजे स्थले पण छे. ते मतांतरोना कारणी केवलीगम्य छे 'गोपुच्छसंठाण 'त्ति०

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ नन्दीश्वरा-धिकारः द्यु० ३०७

h 03/ 1

गायनुं पूंछडुं, आदिमां स्थूल (जाडुं) अने अंतमां सूक्ष्म (झीणुं) छे तेना जेवा अंजनक पर्वतो पण छे. 'सव्वंजणमय 'त्ति ० अंजन-कृष्णरत्न विशेष तन्मय छे. बधा य अनन्यपणावडे अथवा सर्वधा अंजनमय एटले परम कृष्ण(काळा) छे. कह्युं छे के-भिंगंगरुइलकज्जल-अंजणभाउसरिसा विरायंति। गगणतलमणुलिहंता, अंजणगा पव्वया रम्मा॥१४७॥

काळो भमरो, भेंसनुं शींगडुं, काळो सुरमो तेना जेवा काळा सुंदर अंजनक पर्वतो, गगनतलने जाणे स्पर्श करता होय निह ? तेम शोभे छे.

आकाश अने स्फटिकनी जेम स्वच्छ, 'सण्हा '-कोमळ तंतुथी बनेला बस्ननी जेम कोमळ परमाणुना स्कंधथी बनेला, 'लण्हा ' चूंटेला वस्ननी जेम श्रक्षण (लीसा), तथा तीक्ष्ण शाण(श्रराण) वहे घसेल पाषाणनी प्रतिमानी जेम घसायेला, सुकुमाल शाणवहे पाषाणनी प्रतिमानी जेम पालीस करायेला अथवा प्रमार्जनिकावहे जेम शुद्ध कराय तेम शुद्ध करायेला, आ कारणथी ज रज रहित होवाथी नीरज (रज वगरना), कठण मलना अभावधी अथवा घोयेला वस्ननी जेम निर्मल (मेल वगरना), आर्द्र मल काद्य)ना अभावधी अथवा कलंक रहित होवाथी निष्पंक, 'निकंकडच्छाया' निष्कंकट-निष्कवच अर्थात आवरण रहित छाया-शोभा छे जे पर्वतीनी ते निष्कंकटछाया अथवा अकलंक शोभावाळा, सप्रभा-देवोने आनंद करनार विगेरे प्रभाववाळा अथवा स्वप्रभा-पोताना स्वरूपवहे दीपे छे परंतु बीजाथी नहि एवा, जेथी समिरीया-किरणो सहित, आने लईने ज 'सडज्जोया ' उद्योत सहित एटले वस्तुना प्रकाशवहे वर्तता, 'पासाईय ' क्ति० मनने आह्लाद करनारा,

int

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४३९ ॥ दर्शनीय-कोईक नेत्रबढ़े जोतो थको पण श्रम पामतो नथी, अभिरूप-मनोहर, प्रतिरूप-दरेक जोनारने रमणीय लागे एवा छे. आ (वर्णन) यावत् शब्दथी संग्रह करेल छे. ते अंजनिगरि पर्वत पर बहुसम-अत्यंत समान रमणीय भूमिभागो छे. तेनी मध्यमां 'सिद्धानि'-शाश्वता अथवा शाश्वती अईतुप्रतिमाओना आयतन-स्थानो ते सिद्धायतनो छे. कहुं छे के-अंजणगपव्ययाणं, सिहरतलेसुं हवंति पत्तेयं । अरहंताययणाईं, सीहणिसायाईं तुंगाईं ॥ १४८ ॥ दरेक अंजनक पर्वतोना शिखरनी उपर बेठेला सिंहनी जेवा आकारवाळा अने ऊंचा अईंतना आयतनो होय छे. मुख-अग्रद्वारने निषे आयतनना मंडपो ते मुखमंडपो-पद्दशालो (पडशाळरूप), प्रेक्षणक-नाटक माटे घररूप मंडपो ते प्रेक्षागृहमंडपो प्रसिद्ध स्वरूपवाळा अर्थात् रंगमंडपो, 'वैरं' वज्ररत्नमय अखाडाओ, जोनार मनुष्यना बेठकभूत प्रसिद्ध छे. विजयदृष्य-चंदरवारूप वस्त्रो, तेना मध्य भागमां ज अवलंबन माटे अंकुशो अर्थात् आंकडाओ छे. मोतीओना परिमाणवडे कुंभ छे विद्यमान जे दामोने ते कुंभिकारूप मोतीओनी माळाओ. कुंभनुं प्रमाण आ प्रमाणे जाणवं -दो असतीओ पसती. दो पसतीओ सेतिया, चत्तारि सेतियाओं कुडवो, चत्तारि कुडवा पत्थो, चत्तारि पत्था आढयं, चत्तारि आढया दोणो सही आढयाई जहन्नो कुंभो, असीइ मज्झिमो सयमुक्कोसो " वे असतीथी एक पसली (खोबो), वे पसलीथी एक सेतिका (धोबो), चार सेतिकाथी कुडव (मापिविशेष), चार कुडवे एक प्रस्थ, चार प्रस्थथी एक आढक, चार आढकथी एक द्रोण, साठ आढकथी एक अजघन्यक्रंभ, एंशी आढकथी एक मध्यमक्रंभ अने एक सो आढकथी एक उत्कृष्ट # मागध परिभाषामां घान्य भरवानं मापविशेष छे.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ नन्दीश्वरा-धिकारः स्र० ३०७

॥ ४३९ ॥

कुंभ थाय छे. 'तदद्धे' ति० ते मोतीनी माळाओनुं ज अर्द्ध ऊंचपणानुं प्रमाण छे. पूर्वोक्तथी जे माळाओ अर्द्ध उचत्व प्रमाणवाळी अने अर्द्धकुंभवाळा मुक्ताफळवाळी छे तेवी माळाओवडे सर्वतः—सर्व दिशाओमां वींटायेली छे. चैत्य-सिद्धायतननी नजीक रहेला स्तूपो ते चैत्यस्तूपो अथवा चित्तने आह्लादक होवाथी चैत्योवाळा स्तूपो ते चैत्यस्तूपो 'संपर्यङ्कानिषण्णाः" पद्मासने बेठेली जिनप्रतिमावाळा, एवी रीते चैत्यवृक्षो पण जाणवा. तेनी पछी 'महेन्द्रा '—सिद्धांतनी भाषावडे अतिशय मोटा एवा ध्वजो ते महेंद्रध्वजो अथवा शकादि मोटा इंद्रना ध्वजोनी जेवा ध्वजो ते महेंद्रध्वजो. तेना पछी बधी य शाश्वती पुष्करिणीओ सामान्यथी नंदा कहेवाय छे. ते पुष्करणीओनी फरतुं 'सत्तपन्नवणं' ति० सप्तच्छदवन जाणवुं. 'तिसोवाणपहिस्त्वगं' क्ति० ते वावोमां नीकळवा अने प्रवेश करवा माटे दिशाओमां त्रण-त्रण पगिथियानी पंक्तिओ छे. ते वावोनी अंदर रूपा- (चांदी)मय होवाथी दहींनी जेम श्रेत मुख-शिखर छे जेओना ते दिशमुख पर्वतो जाणवा. कर्धु छे के—

संखदलविमलनिम्मल-दिहघणगोखीरहारसंकासा । गगणतलमणुलिहंता, सोहंते दिहमुद्दा रम्मा ॥ १४९ ॥

मल रहित शंखदल, निर्मळ दहीं, गायनुं घाढुं दूध अने मोतीना हार जेवा ऊजळा अने जाणे गगनतलने स्पर्शीने रहेला होय तेवा मनोहर दिधमुख पर्वतो शोभे छे.

अंजनिंगिरिना बहुमध्यदेशभागमां ईशान विगेरे कोणमां रितने करनारा होवाथी चार चार रितकर पर्वतो कहेवाय छे. ते

भीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद सारु४०॥ पर्वती पासे कृष्णादि इंद्राणीओनी क्रमशः राजधानीओ छे, तेमां दक्षिण विभागरूप लोकाईनो नायक शकेंद्र होवाथी अग्नि अने नैक्सतकोणमां रहेल वे रितकर पर्वतो पासे शकेंद्रनी इंद्राणीओनी राजधानीओ छे. उत्तर विभागरूप लोकाईनो स्वामी ईशानेंद्र होवाथी वायच्य अने ईशानकोणमां रहेल ते पर्वतोनी पासे ईशानेंद्रनी इंद्राणीओनी राजधानीओ छे. एमज नंदीश्वर द्वीपमां अंजनक पर्वत पर चार अने दिधमुख पर्वतो पर सोल मळीने वीश जिनालयो छे. आ जिनालयोमां चातुर्मासिक प्रतिपदाओने विषे, सांवत्सिरकोने विषे अने बीजा घणा तीर्थकरना जन्म(कल्याणक) विगेरेना प्रसंगरूप देवकार्योमां समुदाय सहित देवो अष्टाहिका (अद्वाई) महोत्सवो करता थका सुखपूर्वक विचरे छे, एम जीवाभिगम स्त्रमां कहें छे. बीजा पण तथाप्रकारना सिद्धायतनो होय तो विरोध जेवं नथी. विजयनगरीमां जेम सिद्धायतनो छे तेम कहेल राजधानीओमां पण सिद्धायतनो संभवे छे. वळी पंचदशस्थानोद्धार नामना ग्रंथमां कहें छे के—

सोलसद्हिमुहसेला,कुंदामलसंखचंदसंकासा। कणयनिभा बत्तीसं, रइकरगिरि बाहिरा तेसिं ॥ १५०॥

सोळ दिधमुख पर्वतो श्वेत मचकुंद पुष्प, निर्मळ शंख अने चंद्र सदश घोळा छे. तेनी बहार वे वे वावडीओनी वचमां बहारना वे कोणनी नजीकमां सुवर्णनी कांति जेवा वे वे रितकर पर्वतो छे. सर्व मळीने बत्रीश रितकर पर्वतो छे.

अंजणगाइगिरीणं, णाणामणिपज्जलंतसिहरेसु। बावन्नं जिणणिलया, मणिरयणसहस्स कूडवरा॥१५१॥

अंजनक विगेरे पर्वतोना विविध मणिओवडे कांतिवाळा शिखरोने विषे बावन जिनगृहो छे, ते मणिरत्नमय हजार योजन

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ नन्दीश्वरा-धिकारः स्व० ३०७

וו פעע וו

ऊंचा शिखरेवाळा छे. तन्व तो बहुश्रुत जाणे. (सू० ३०७)

आ बधुं य जणावेल वर्णन जिनेश्वरोए कहेलुं होताथी सत्य छ माटे सत्यना संबंधने लईने सत्यनुं स्त्र दर्शावतां कहे छ के—
च उिवहे सच्चे पं० तं०—णामसच्चे ठवणसच्चे द्व्वसच्चे भावसच्चे। सू० ३०८, आजीवियाणं
च उिवहे तवे पं० तं०—उग्गतवे घोरतवे रसणि जूहणता जि हिंभदियपि हसंलीणता। सू० ३०९, च उिवहे संजमे पं० तं०—मणसंजमे वितसंजमे कायसंजमे उवगरणसंजमे। च उिव्वधे चिताते पं० तं०—मणचिताये वितिचताये कायचिताये उवगरणचिताये। च उिव्वहा अर्किचणता पं० तं०—मणअर्किचणता वितिआर्किचणता कायआर्किचणता उवगरणअर्किचणता। सू० ३१०। इति द्वितीयोहेशकः सम्पूर्णः॥

मूलार्थ:— चार प्रकारनुं सत्य कहेलुं छे, ते आ प्रमाणे—१ नामसत्य-कोईकनुं 'सत्य 'एवुं नाम होय ते, २ स्थापना-सत्य-सत्य नामवाळानी अक्षादिमां स्थापना कराय ते, ३ द्रव्यसत्य—उपयोग रहित सत्य बोलवारूप अने ४ भावसत्य-उपयोगपूर्वक सत्य बोलवारूप छे. (स० ३०८) आजीविक—गोशालाना मतवालाओनुं तप चार प्रकारनुं कहेलुं छे, ते आ प्रमाणे—उग्रतप—ते अष्टम भक्त विगेरे, घोरतप—देहनी पण दरकार कर्या सिवाय जे तप करनुं ते, घृत विगेरे रसनो त्याग श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद ॥ ४४१॥

करवारूप तप अने मनोज्ञ अमनोज्ञ आहारादिमां रागद्वेषना त्यागरूप तप (स०३०९) चार प्रकारनो संयम कहेल छे, ते आ प्रमाणे-अकुशल मनने। निरोध करवो ते मनसंयम, अकुशल वाणीनो निरोध करवो ते वचनसंयम, शरीरनी अकुशल प्रवृत्तिनो त्याग करवो ते कायसंयम अने बहुमूल्यवाळा वस्त्रादिनो परिहार करवो ते उपकरणसंयम. चार प्रकारनो त्याग (दान) कहेल छे, ते आ प्रमाणे-मनवडे साधुने दान देवारूप मनत्याग, एम ज वाणीवडे आपवारूप वचनत्याग, काया-वडे प्रतिलाभवारूप कायत्याग अने पात्रादि उपकरणतुं दान आपवारूप उपकरणत्याग छे. चार प्रकारनी अर्कचनता-निष्परिग्रहता कहेली छे, ते आ प्रमाणे-मनथी अर्किचनता, वचनथी अर्किचनता, कायाथी अर्कचनता अने उपकरणथी अर्किचनता. (स०३१०)

टीकार्थः-नामसत्य अने स्थापनासत्य सुगम छे. उपयोग राहित वक्तानुं सत्य पण द्रव्यसत्य छे. स्व के परना उपरोध सिवाय उपयोग युक्त वक्तानुं जे सत्य ते भावसत्य छे. (सू० ३०८) सत्य ते चारित्रविशेष छे, माटे चारित्रना विशेषोने यावत् उद्देशकना अंत पर्यन्त कहे छे-'आजीविए' त्यादि० आजीविक-गोशालकना शिष्योनो अहम विगेरे तप ते उप्रतप, क्यांक ' उदारं ' एवो पाठ छे. त्यां उदार-आ लोक विगेरेनी आशंसा(वांछा) रहितपणाने लईने शोभन तप, घोर-पोतानी अपेक्षा विना अर्थात् पोताना शरीरनी पण दरकार कर्या सिवायनो तप, "रसनिज्जूहणया" घृतादि रसना त्यागरूप तप अने जिह्नेंद्रियप्रतिसंलीनता-मनोज्ञ के अमनोज्ञ आहारोने विषे रागद्वेषनो त्याग. आ चार प्रकारनो तप छे. अर्हत्ना शिष्योनो तो बार प्रकारनो तप छे. (स०३०९) मन, वचन अने कायानो अकुशलपणाए निरोधरूप अने कुशलपणाए उदिरणा-

 %
 %

 %
 काष्ययंने

 अद्देशः
 २

 नामसत्या दिआजी

 विकतपः संयमः स्०

 *
 ३०८-१०

11 888 11

(प्रवृत्ति) करवारूप मन विगेरे संयमो छे. उपकरणसंयम तो बहुमूल्यवाळा वस्त्र विगेरेनो त्याग करवारूप छे. अथवा पुस्तक-पंचक, वस्त्रपंचक, तृणपंचक अने चर्मपंचकना त्यागरूप छे. हवे पुस्तकपंचक जणावे छे-

गंडी कच्छिव मुट्ठी, संपुडफलए तहा छिवाडीय । एयं पोत्थयपणगं, पन्नत्तं वीयरागेहिं ॥ १५२ ॥ गंडी पुस्तक, कच्छपी पुस्तक, मुष्टि पुस्तक, संपुटफलक पुस्तक अने सृपाटिका (छेदपाटी) – आ पांच प्रकारना पुस्तको वीतराग परमात्माए कहेला छे.

बाह्र पुरुत्ते हिं, गंडी पोत्थो उ तु छओ दीहो। कच्छिव अंते तणुओ, मज्झे पिहुलो मुणेयव्वो ॥ १५३॥ जाडाई, पहोळाई अने लंबाईवंडे समान जे छे ते गंडी पुस्तक, बन्ने पडखाना भागमां छेडामां झीणुं, मध्य भागमां पहोळुं अने जाडाईमां थोडुं होय ते कच्छपी पुस्तक जाणवुं.

चउरंगुलदीहो वा, वहागिति मुद्रिपोत्थओ अहवा। चउरंगुलदीहोचिय, चउरंसो होइ विन्नेओ ॥१५४॥ चार आंगळ लांबुं अथवा वृत्त (गोळाकार) अथवा चार अंगुल लांबुं अने पहोळं एटले चतुष्कोण (चोख्णावाळं) ते म्रष्टि पुस्तक.

संपुडगो दुगमाइ, फलगा वोच्छं छिवाडित्ताहे । तणुपत्तृसियरूवा, होइ छिवाडी बुहा बेंति ॥ १५५ ॥ बे फलक विगेरे जे पुस्तकमां होय ते संपुटफलक पुस्तक. हवे सुपाटिकान्नं स्वरूप जणावे छे-थोडा पत्र(कागळ)वडे कांईक श्रीस्था-नाङ्गसूत्र साजुवाद १। ४४२ ॥ ऊंचुं होय छे तेने पंडिता मृपाटिका (छेदपाटि) पुस्तक कहे छे. दीहो वा हस्सो वा, जो पिहुलो होइ अप्पबाहक्को। तं मुणियसमयसारा, छिवाडिपोरथं भणंतीह ।१५६। पहोबाईमां मोटुं होय के नानुं होय पण जे पुस्तक जाडाईमां थोडुं होय तेने सिद्धांतना सारने जाणनार पुरुषो छिवाडी (छेदपाटि) पुस्तक कहे छे.

वस्त्रपंचक, अप्रत्युपेक्षित अने दुष्प्रत्युपेक्षितना भेदथी वे प्रकारे छ--

अप्पडिलेहियदुसे, तुलि उवहाणगं च नायव्वं । गंडुवहाणार्लिगिणि, मसूरए चेव पोत्तमए ॥ १५७ ॥

जेनुं सर्वथा पहिलेहण न करी शकाय ते अप्रत्युपेक्षित वस्त्र कहेवाय, ते पांच प्रकारनुं छे, ते आ प्रमाणे-१ रुथी अथवा आकडाना तुल विगेरेथी भरेली तळाई-शय्या विशेष, २ हंसना रुंबाटा विगेरेथी भरेल औशीक्रं, ३ आशीका उपर राखवानुं गालमसुरियुं, ४ ढींचण तथा कोणीनी नीचे राखवा माटे आलिंगिनि अने ५ छगडामां अथवा चामडामां चींथरां भरीने मोढुं शीवेछुं होय ते गोळ आसन-चाकळो.

पर्हित कोयव पावार, नवयए तह य दाढिगालीओ। दुप्पाडिलेहियदूसे, एयं बीयं भवे पणगं ॥१५८॥
पर्हित, क्रुत्प, प्रावरक, नवत्वक् अने दृढगाली-आ पांच प्रकारना वस्रो दुष्पत्युपेक्षित छे.

%
%
काष्ययने
उद्देशः २
नामसत्यादिआजीविकतपःसंयमः स॰
३०८-१०

॥ ४४२ ॥

पल्हिव हत्थुत्थरणं, तु कोयवो रूयपृरिओ पडओ। द्ढिगालि धोयपोत्ती, सेस पिसद्धा भवे भेया॥१५९॥

१ हाथीनी पीठ उपर नाखवानुं आस्तरण विशेष, उपलक्षणथी थोडा रोमधी अथवा घणा रोमथी भरेल, उंट विगेरेनी पीठ उपर राखवानुं वस्त्रविशेष ते पल्हवी. २ रुए भरेलुं वस्त्र ते क्रुतुप, उपलक्षणथी शाल, दुशाल अने कंबल विगेरे. ३ दशीओ सिहत ब्राह्मणने पहेरवा योग्य अवोटियारूप घोतपोतिका ते दृढगाली. बाकीना वे भेद प्रावरक अने नवत्वक् प्रसिद्ध छे, ते आ प्रमाणे-४ प्रावारक-रुंडाळवाळुं ओढवानुं वस्त्र, तेने कोईक मोडुं कंबल पण कहे छे अने ५ नवत्वक्-बहु जीर्ण वस्त्र.

हवे नृणपंचक कहे छे--

तणपणगं पुण भणियं, जिणेहिं कम्मट्टगंठिमहणेहिं। साली वीही कोदव, रालग रन्ने तणाइं च॥१६०॥

अष्ट कर्मरूप ग्रंथिनुं मंथन करनार जिनेश्वरोए पांच प्रकारना तृणो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ शाली-कलमशाली प्रमुखनो पराळ,२ ब्रीहि-साठी चोखा विगेरेनो पराल,३ कोद्रवानो पराळ,४ कांगनो पराळ अने५ जंगलनो स्यामाक विगेरे घास. हवे चर्मपंचक कहे छे-

अयएलगावि महिसी, मिगाण अजिणं तु पंचमं होइ। तलिया खल्लगवज्झो,कोसग कत्ती य बीयं तु ।१६१।

बकरानुं चामडुं, घेटानुं चामडुं, गायनुं चामडुं, भेंसनुं चामडुं अने हरणनुं चामडुं-एम पांच प्रकारनुं चामडुं छे. बीजी रीते पण चर्मपंचक कहे छे-१ तलिका (चंपल) ते एक तळवाळी अथवा बे तळवाळी, २ पगरखां, ३ वाप्र-सामान्य चामडुं,

श्रीस्था-नाङ्गपत्र सानुवाद ॥ ४४३ ॥

४ कोशकविशेष-अंगुलि विगेरेमां पहेरवानुं चामडानुं उपकरण अने ५ कृतिका-दव प्रसंगे आहुं देवामां अथवा पाथरवा विगेरेमां उपयोगी चामडं.

'चियाए 'त्ति ० अशुभ मन विगेरेनो त्याग(रोध) अथवा मन विगेरेथी आहारादिनुं साधुओ माटे जे दान ते त्याग. एवी रीते पात्रादि उपकरणवडे अन्न विगेरेनुं दान ते उपकरणत्याग. कंई पण विद्यमान नथी किंचन—सुवर्ण विगेरे द्रव्यनो प्रकार जेने ते अकिंचन, तेनो भाव ते अकिंचनता अर्थीत् निष्परिग्रहपणुं. ते मन विगेरेथी अने उपकरणनी अपेक्षाए होय छे माटे चार प्रकारे अकिंचनता कहेली छे. (स० ३१०)

॥ चतुःस्थानकना द्वितीय उद्देशानी टीकानो अनुवाद समाप्त ॥



४ स्थान-काष्ययने उद्देशः २ नामसत्या-दिआजी-विकतपः-संयमः स्र० ३०८-१०

ાા ૪૪૨ ાા

अथ चतुःस्थानकाध्ययनके तृतीय उद्देशः।

बीजो उद्देशक कहेवायो, हवे त्रीजो उद्देशक शरू कराय छे. आ उद्देशकनो पूर्वना उद्देशकनी साथे आ प्रमाणे संबंध छे. पूर्वना उद्देशकमां जीव अने क्षेत्रना पर्यायो कहा, अहिं तो जीवना पर्यायो कहेवाय छे. आ संबंधवडे प्राप्त थयेल आ उद्देशकना प्रथम वे सत्र कहे छे-

चत्तारि रातीओ पं० तं०-पव्वयराती पुढिवराति वालुयराती उद्गराती, एवामेव चडिवहें कोहे पं० तं०-पव्वयरातिसमाणे पुढिवरातिसमाणे वालुयरातिसमाणे उद्गरातिसमाणे, पव्वय-रातिसमाणं कोहं अणुपिवेट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइतेसु उववज्जति, पुढिवरातिसमाणं कोहमणुप्प-विट्ठे तिरिक्खजोणितेसु उववज्जति, वालुयरातिसमाणं कोहं अणुपिवेट्ठे समाणे मणुस्सेसु उव-वज्जति, उद्गरातिसमाणं कोहमणुपिवेट्ठे समाणे देवेसु उववज्जति १ । चत्तारि उद्गा पं० तं०-कहमोद् ए खंजणोद् ए वालुओद् ए सेलोद ए, एवामेव चउिवहें भावे पं० तं०-कहमोद्गसमाणे खंजणो-द्गसमाणे वालुओद्गसमाणे सेलोद्गसमाणे, कहमोद्गसमाणं भावमणुपिवेट्ठे जीवे कालं करेइ श्रीस्था-नाङ्गद्यत्र सानुवाद ॥ ४४४ ॥ %

णेरइएसु उनवजाति, एवं जान सेलोद्गसमाणं भानमणुपनिट्ठे जीने कालं करेइ देनेसु उननजड़। सू॰ ३११, चत्तारि पक्ली पं०तं०-रुयसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने, रूवसंपन्ने नाममेगे नो रुत-संपन्ने, एगे रूवसंपन्नेवि रतसंपन्नेवि, एगे नो रुतसंपन्ने णो रूवसंपन्ने, एवामेव चत्तारि पुरिस-जाया पं॰ तं०-हयसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने ४, चत्तारि पुरिसर्जाया पं॰ तं०-पत्तियं करेमी-तेगे पत्तियं करेइ पत्तियं करेमीतेगे अपत्तितं करेति, अप्पत्तियं करेमीतेगे पत्तितं करेइ, अप्पत्तियं करे-मीतेगे अप्पत्तितं करेति, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अप्पणो णाममेगे पत्तितं करेति णो परस्स, परस्स नाममेगे पत्तियं करेति णो अप्पणो (४) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पत्तियं पवेसामीतेगे पत्तितं पवेसेइ, पत्तियं पवेसामीतेगे अप्पत्तितं पवेसेति ४। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अप्पणो नाममेगे पत्तितं पवेसेइ णो परस्स परस्स० ४। सृ० ३१२

मूलार्थः-चार प्रकारनी रेखाओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-पर्वतनी रेखा, पृथिवीनी रेखा, वाछुका(रेती)नी रेखा अने उदकनी रेखा. ए दृष्टांते चार प्रकारनो कोध कहेलो छे, ते आ प्रमाणे-पर्वतनी रेखा (फाट) समान क्रोध-यावत जीव- ४ स्थान-काष्ययने उदेशः ३ क्रोधः प-क्षिद्यान्तः द्व०३११-३१२

HI 888 II

पर्यंत रहे, पृथिवीनी रेखा समान क्रोध-बार मास पर्यंत रहे, वालुकानी रेखा समान क्रोध-चार मास पर्यंत रहे अने उदकनी रेखा समान क्रोध-एक पक्षपर्यंत रहे, पर्वतनी रेखा समान अनंतानुबंधी क्रोधमां प्रविष्ट थयेल जे जीव काळ करे छे ते नारकोमां उत्पन्न थाय छे, पृथिवीनी रेखा समान अप्रत्याख्यानी क्रोधमां प्रविष्ट थयेल जे जीव काळ करे छे ते तिर्यंचयोनिकोमां उत्पन्न थाय छे, वालुकानी रेखा समान प्रत्याख्यानी क्रोधमां प्रविष्ट थयेल जे जीव काळ करे छे ते मनुष्योमां उत्पन्न थाय छे अने उदकनी रेखा समान संज्वलन क्रोधमां प्रविष्ट थयेल जे जीव काळ करे छे ते देवोमां उत्पन्न थाय छे. चार प्रकारे उदक-पाणी कहेल छे, ते आ प्रमाणे-कादववाळुं पाणी, खंजन-मेश जेवुं पाणी, धूळवाळुं पाणी अने कांकरावाळुं पाणी. आ दृष्टांते चार प्रकारना माव (जीवना परिणाम) कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कर्दम उदक समान, खंजन उदक समान, वाखका उदक समान अने शैल उदक समान. कर्दम उदक समान भाव(परिणाम)ने प्राप्त थयेल जे जीव काळ करे छे ते नैरियकोने विषे उत्पन्न थाय छे, खंजन उदक समान भावने प्राप्त थयेल जे जीव काळ करे छे ते तिर्यचयोनिकोमां उत्पन्न थाय छे, वालुका उदक समान भावने प्राप्त थयेल जे जीव काळ करे छे ते मनुष्योने विषे उत्पन्न थाय छे अने शैल उदक समान भावने प्राप्त थयेल जे जीव काळ करे छे ते देवोने विषे उत्पन्न थाय छे. (सू० ३११) चार प्रकारना पक्षी कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोई एक पक्षी शब्दसंपन्न-मनोहर स्वरवाळो छे पण रूपसंपन्न नथी-कोकिलनी जेम, कोईक रूपसंपन्न छे पण शब्दसंपन्न नथी (मनोहर शब्द नथी)-अभण पोपटनी जेम, कोईक पक्षी शब्दसंपन्न छे अने रूपसंपन्न पण छे-मोरनी जेम, कोईक शब्दसंपन्न पण नथी अने रूपसंपन पण नथी-कागडानी जेम. आ दष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईएक पुरुष मिष्ट वचनसंपन्न छे पण

6,4

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४४५ ॥ रूपसंपनन नथी अर्थात काळो के कुबड़ो छे, कोईक रूपसंपन्न छे पण मनोज्ञ शब्दसंपन्न नथी, कोईक उभय संपन्न छे अने कोईक उभय संपन्न नथी. चार प्रकारना पुरुषों कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष एम चिंतवे के-हुं अम्रुकनी साथे प्रीति करुं अने प्रीति पण करे छे, २ कोईक प्रथम एम चिंतवे के-हुं आनी साथे प्रीति करुं पण पछी करे नीहें, २ कोईक प्रथम एम चिंतने के-हुं अमुक साथे अप्रीति करुं पण पछी प्रीति करें छे, ४ कोईक एम चिंतने के-हुं आनी साथे अप्रीति करुं अने अप्रीतिने करे छे. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष भोजन विगेरेथी पोताना आत्माने आनंद उपजावे छे, पण बीजाने निहं, २ कोईक बीजाने उपकार करे छे पण पोताने निह केम के बीजा पर उपकार करवामां रिसक होय छे. ३ कोईक पोताने अने बीजाने पण आनंद उपजावे छे अने ४ कोईक पोताने के परने पण आनंद उपजावतो नथी. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष एम चिंतवे के-हुं परना चित्तमां प्रीति के विश्वास उपजावुं अने तेमज विश्वास उपजावे छे. २ कोईक एम चिंतवे के-हुं बीजाने विश्वास उपजावुं पण विश्वास उत्पन्न करी शके नहि, ३ कोईक एम चितवे के-हं विश्वास उपजावी शकीश निह पण विश्वास उत्पन्न करे, अने ४ कोईक एम चितवे के-हं विश्वास उपजावी शकीश निह अने उपजावे पण निह. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष पोताना आत्मामां विश्वास उपजावे छे, परंत बीजाने विषे विश्वास उपजावतो नथी, २ कोईक, बीजाने विषे विश्वास उपजावे छे पण पोताना आत्मामां विश्वास उपजावतो नथी, ३ कोईक पुरुष पोताना तथा बीजाना आत्मामां पण विश्वास उपजावे छे अने ४ कोईक पोताना के परना आत्मामां विश्वास उपजावतो नथी. (स्० ३१२)

४ स्थान काष्ययने उद्देशः ३ क्रोधः पक्षिद्दष्टा-न्तः स्र॰ ३११-१२

॥ ४४५ ॥

टीकार्थ:-'चत्तारी'त्यादि० आ सत्रनो आ प्रमाणे संबंध छे. पूर्वे चारित्र कह्युं, तेनो प्रतिबंध करनार क्रोधादि भाव छे. माटे क्रोधना स्वरूपतुं निरूपण करवा माटे आ सूत्र कहेवाय छे. आ प्रमाणे संबंधवाळा आ दष्टांतभूत विगेरे सूत्रनी व्याख्या कराय छे-'राजी' रेखा. क्रोधनुं बाकीनुं व्याख्यान माया* विगेरेनी जेम जाणवुं. मायादिना प्रकरण(विषय)थी अन्यत्र क्रोधनो विचार करवामां आवेल छे कारण के सत्रनी गति विचित्र होय छे. बीजुं सत्र पण सगम छे. आ क्रोध भावविद्येष ज छे माटे भावनी प्ररूपणा करवा माटे दृष्टांत विशेर वे सूत्रने कहे छे-'चत्तारी' त्यादि० प्रसिद्ध छे. विशेष ए के-जेमां खंचेल पग विगेरे खेंची न शकाय अथवा कष्टवडे खेंची शकाय (काढी शकाय) ते कईम (कादव). दीपक विगेरेनी मेशना जेवो पग विगेरमां लेप करनार-चेंाटी जाय तेवो ते खंजन, कर्दम विशेष ज छे. वालुका(रेती) प्रसिद्ध छे. ते भींजेली पग विगेरेने लागी होय तो पण पाणी सकाई जवाथी अल्प प्रयासे दूर थाय छे माटे अल्प लेप करनारी छे. शैल एटले कोमळ पाषाणो. ते पग विगेरेने स्पर्शवडे ज कंईक दुःख उपजावे छे, परंतु तथाविध लेपने उत्पन्न करता नथी. कादव विगेरेनी प्रधानतावाळा उदकी ते कईमोदक विगेरे कहेवाय छे. जीवनो जे रागादि परिणाम ते भाव, तेनुं कईमोदक विगेरेनी साथे समानपणुं तेना स्वरूपने अनुसारे कर्मना लेपने अंगीकार करीने मानवुं. (स० ३११) हमणा ज भावनुं स्वरूप कहां, हवे भाववाळा दृष्टांत सहित पुरुषने 'चत्तारि पक्ली 'त्यादि० सत्रथी लईने 'अत्यमियत्थिमये ' ति० छेवटना सत्रवडे कहे छे-तेनो माव स्पष्ट छे. विशेष ए के-शब्द अने रूप बधा पक्षीओने होय छे, अतः विशिष्ट शब्द अने रूप ग्रहण करवा योग्य छे. १ रुत-* चोथा ठाणाना बीजा उद्देशकमां माया विगेरे त्रण कषायनुं स्वरूप कहेल छे.

श्रीस्था-नाङ्गपत्र साजुनाद ।। ४४६ ।।

मनोज्ञ शब्दवहे संपन्न एक पक्षी छे परंतु मनोज्ञ रूपवडे संपन्न नथी-क्रोकिलनी जेम, २ रूपसंपन्न छे पण शब्दसंपन्न नथी-सामान्य शुक्र(पोपट)वत्, ३ उभयसंपन्न-मयूरवत् . ४ अतुभयसंपन्न-शब्दसंपन्न अने रूपसंपन्न पण निहं-कागडा-नी जेम. अहि पुरुष यथायोग्य योजवो, ते आ प्रमाणे-प्रिय बोलवावडे मनोज्ञ शब्द अने संदर वेषवडे रूपसंपन्न अथवा साधु, चोकस करेल सिद्धांतमां प्रसिद्ध, शुद्ध धर्मदेशनादि स्वाध्यायना प्रबंधवाळो (शब्दसंपन्न), लोचवडे अल्प केशवाळं उत्तमांगपणुं अर्थात् मस्तकनी सुंदरता, तपवडे कायानी क्रशता, मेलवडे मिलन काया अने अल्प उपकरणपणुं विगेर लक्षणवडे सुविहित साधुना रूपने धरनार ते रूपसंपन्न छे. 'पत्तियं' ति० स्वाधिक 'क' प्रत्ययनुं ग्रहण करवामां पण प्रीति ए ज प्रीतिक, रूढिथी नपुंसकपणुं जाणवुं. १ हुं प्रीति करुं अथवा हुं विश्वास करुं एवा परिणामवाळी थयो थको प्रीतिने अथवा विधासने करे छे, केम के स्थिर परिणामवाळी अथवा उचित्त प्रवृत्ति करवामां चतुर के सौभाग्यवाळो होय छे. २ बीजो तो प्रीति करवामां परिणत थयो थको पण अप्रीतिने ज करे छे, केम के स्थिरपरिणामादि गुणथी विपरीत होय छे. ३ त्रीजो अप्रीतिमां परिणत थयो थको प्रीतिने ज करे छे, केम के उत्पन्न थयेला पूर्वना परिणामथी निवृत्त थवाथी अथवा बीजानी अप्रीतिनो हेतु छतां पण प्रीतिनी उत्पत्तिना स्वभाववाळो होवाथी प्रीतिने करे छे. ४ चोथो प्ररुप तो सुगम छे. १ कोईक पुरुष भोजन, वस्त्रादिवडे पोताना आत्माने प्रीति-आनंद उत्पन्न करे छे, केमके स्वार्थमां तत्पर होवाथी बीजाने आनंद उत्पन्न करतो नथी. २ बीजो परमार्थमां तत्पर होवाथी बीजाने आनंद आपे छे पण पोताने नहिं, ३ त्रीजो बन्ने(स्वपर)ने आनंद आपे छे, केम के स्वार्थ अने परमार्थ बन्नेमां तत्पर होय छे, तेमज ४ चोथो-स्वपरने आनंद उपजावती ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ क्रोधः ५-क्षिद्दशन्तः स्०३११-३१२

11 39E 11

नथी, केम के स्वार्थ-परमार्थमां शून्य होय छे. कोईक पुरुष पोतानो विश्वास करे छे पण बीजानो करतो नथी इत्यादि चतुर्भगीनी व्याख्या करती. 'पित्तयं पवेसेमि 'त्ति० आ पुरुषे मारा उपर प्रीति अथवा विश्वास करे छे, आ प्रमाणे बीजाना चित्तमां हुं ठसाबुं-खात्री कराबुं. एवी रीते परिणामबाळो थयो थको ते ज प्रमाणे बीजाना चित्तमां प्रीति के विश्वासने करावे छे. बाकीतुं (त्रण भंग) सूत्र अने अनंतर सूत्र पूर्वनी जेम जाणवुं. (सू० ३१२)

चत्तारि रुक्खा पं० तं०-पत्तोवए पुष्कोवए फलोवए छायोवए, एवामेव चतारि पुरिसजाया पं० तं०-पत्तोवारुक्वतमाणे पुष्कोवारुक्वसमाणे फलोवारुक्वसमागे छ।तोवारुक्वतमाणे । स्० ३१३, भारण्णं वहमाणस्स चत्तारि आसासा पं० तं०-जत्थ णं अंसातो अंसं साहरइ तत्थिवय से एगे आसासे पण्णते १ जत्थविय णं उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठावेति तत्थिविय से एगे आसासे पण्णत्ते २, जत्थिवय णं णागकुमारावासंसि वा सुवन्नकुमारावासंसि वा वासं उवेति तत्थ-विय से एगे आसासे पन्नते ३, जत्थिविय णं आवकधाते चिट्टति तत्थिविय से एगे आसासे पन्नते ४, एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा पं० तं०-जत्थ णं सीलडवतगुणडवतवेरमणपद्य-क्खाणपोसहोववासाइं पडिवजेति तत्थविय से एगे आसासे पण्णते १, जत्थविय णं सामाइयं श्रीस्था-नाङ्गस्रत्र सातुवाद श ४४७॥

देसावगासियं सम्ममणुपालेइ तत्थिवय से एगे आसासे पण्णते २, जत्थिवय णं चाउदसटुमुिहटु-पुन्नमासिणीसु पिडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेइ तत्थिव य से एगे आसासे पन्नते ३, जत्थिव य णं अपच्छिममारणंतितसंलेहणाजूसणाजूसिते भत्तपाणपिडतातिक्किते पाओवगते कालमणवकंखमाणे विहरति तत्थिवय से एगे आसासे पन्नते ४। सू० ३१४

मूलार्था-चार प्रकारना वक्ष कहेल छे, ते आ प्रमाण-घणा पत्र (पांदडां)वाछं, घणा पुष्पवाछं, घणा फळवाछं अने गाउ छायावाछं. ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ तथाविध उपकारने निर्ह करनार पत्र सहित वृक्ष समान, २ स्त्रदान विगेरेथी उपकार करनार ते पुष्प सहित वृक्ष समान, ३ अर्थदान विगेरेथी महान उपकार ते फल सहित वृक्ष समान अने ४ अन्ध्यी रक्षण करनार ते छाया सहित वृक्ष समान. (स्व० ३१३) भार प्रत्ये वृहन करनार पुरुषने चार विश्राम (वीसामा) कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ जे समये एक स्वभाधी लईने बीजा स्वभा उपर भारने मूके छे ते अवसरे तेने एक विश्राम कहेल छे, २ जे अवसरे भार उतारीने वडीनीत के लघुनीत करे छे ते अवसरे तेने एक विश्राम कहेल छे, ३ जे अवसरे नागकुमारना आवास(देवळ)मां अथवा सुपर्णकुमारना मंदिरमां रात्रिए वसे छे ते अवसरे तेने एक विश्राम कहेल छे अने ४ जे अवसरे भार उतारीने पोताने घर यावजीव पर्यंत रहे छे ते अवसरे तेने एक विश्राम कहेल छे. ए दृष्टांते श्रमणो-पासकने-सावद्यव्यापाररूप भारथी द्वायेलाने चार विश्राम कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ जे अवसरे शील-सदाचार, अणुवत,

काष्ययने उद्देशः ३ पत्राद्यपग-चतुर्भगिका आश्वास-चतुष्कं \$8

11 889 11

गुणव्रत, अनर्थदंडादिथी निवर्त्तनहर विरमण, नवकारसी प्रमुख प्रत्याख्यान, पौषध सहित उपवासने प्रहण करे छे त्यारे तेने एक विश्राम कहेल छे, २ जे अवसरे सामायिक अने देशावणासिकने सारी रीते पाळे छे त्यारे तेने एक विश्राम कहेल छे, ३ जे अवसरे चौद्श, आठम, अमावास्या अने पूर्णिमारूप तिथिओने विषे परिपूर्ण पौषधने सारी रीते पाळे छे त्यारे तेने एक विश्राम कहेल छे, ४ जे अवसरे अपश्चिम(छेछी) मारणांतिकहप संलेखनाने स्वीकारीने अने भक्तपाननुं प्रत्याख्यान करीने पादप-छेदेली दृक्षनी डाळनी माफक स्थिर थईने काळ(मरण)नी वांछाने नहिं करतो थको विचरे छे त्यारे तेने एक विश्राम कहेल छे. (६० ३१४)

टीकार्थः—पत्र—पांदडांने प्राप्त थाय छे ते पत्रोपग अर्थात् घणा पत्रवाळो, एम ज पुष्पोपग विगेरे जाणवा. लोकोत्तर अने लौकिक पुरुषोनी पत्रवाळा विगेरे बुक्षनी साथे समानता तो कमशः जाणवी, ते आ प्रमाणे—१ अभिलाषीओने विषे तथाविध उपकार निहं करवावडे पोताना स्वभावमां ज समाप्त थवाथी, २ सत्र भणावतुं विगेरेथी उपकारक होवाथी, ३ सत्रना अर्थने आपवा विगेरेवडे महान् उपकारक होवाथी अने ४ ज्ञानादि कार्यमां प्रवर्त्तावतुं अने दोषथी बचावतुं विगेरेथी निरंतर सेवा करवा योग्य होवाथी. (स० ३१३) भार-धान्य भरवाना आधारभूत(कोठी विगेरे)ने एक स्थानथी बीजा स्थान प्रत्ये वहन करनार—लई जनार पुरुषने आश्वासो—विश्रामो कहेला छे, तेओना अवसरना भेदवडे विश्रामना भेदो छे. १ जे अवसरमां अंश—एक स्कंधथी बीजा स्कंध प्रत्ये भारने संहरे छे—लई जाय छे ते अवसरमां, ' से ' ते वहन करनारने एक विश्राम कहेल छे, २ 'परिष्ठापयित ' भार तजी दईने मृत्रपुरुषादि त्याग करे छे ते बीजो विश्राम. ३ नाग-

भीस्था-नाङ्गसत्र सानुनाद ॥ ४४८ ॥

कुमारना आवासो विगेरे उपलक्षणमात्र छे एथी बीजा आयतन(स्थान)ने विषे पण वासने प्राप्त थाय छे अर्थात् रात्रिए वास करे छे ते ४ यावती—उयां सुधी आ मनुष्य अथवा देवदत्तादि छे एम कथनरूप यावत् कथावडे अर्थात् यावज्जीव सुधी ते रहे छे—वसे छे ते 'एवमेवे 'त्यादि० एमज दार्षांतिक सत्र छे. अमणान्—साधुओनी जे सेवा करे छे ते अमणोपासक—आवक तेने (सावद्य व्यापाररूप भारथी दबायलाने) आश्वासो—सावद्य कार्यने छोडवावडे चित्तने आश्वासन—स्वास्थ्यरूप विश्वामो छे, परलोकथी भय पामेल मने आत्राण—ग्ररण छे एवा आ विश्वामो छे. ते आवक जिनागमना परिचयथी स्वच्छ बुद्धिः वहे आरंभ अने परिग्रह ए बन्ने दु:खनी परंपराने करनार अने संसाररूप कांतारना कारणभूत होवाथी छोडवा योग्य छे एम जाणतो थको इंद्रियरूप सुभटना वद्याथी आरंभ अने परिग्रहने विषे प्रवर्त्ततो छतो महान् खेद, संताप अने भयने वहन करे छे अने नीचे प्रमाणे भावना भावे छे—

हियए जिणाण आणा, चरियं मह एरिसं अउन्नस्त । एयं आलप्पालं, अन्दो दूरं विसंवयइ ॥१६२॥ हयमम्हाणं नाणं, हयमम्हागं मणुस्तमाहप्पं । जे किल लद्धविवेया, विचेद्विमो बालबालन्व ॥१६३॥

मारा हृदयमां जिनेश्वरनी आज्ञा छतां पण पुण्य रहित मारुं चरित्र -वर्त्तन तो आवुं छे अयौत् संवार संबंधी वस्तु मने प्रिय लागे छे तो हवे श्चं विश्लेष कहुं ? आ आश्वर्ष छे, अत्यंत विरोध छे. अमारुं सद् असद्ना विवेकह्रप ज्ञान हणायुं ! अमारुं मतुष्य संबंधी माहात्म्य हणायुं ! निश्लय विवेकने प्राप्त थया छतां पण नाना बाळकीनी जेम अमे प्रवृत्तिने करीए छीए.

४ स्थान-काष्ययने उदेशः ३ पत्राद्युपग-चतुर्भगिका आश्वास-चतुष्क स्०३१३-

11 888 11

१ जे अवसरमां शील-सदाचार विशेष अथवा ब्रह्मचर्य विशेष, व्रत-स्थूल प्राणातिपातनुं विरमण विगेरे, बीजे स्थळे तो शील एटले पांच अणुव्रत अने व्रत-सात शिक्षाव्रत कहेल छे, परंतु गुणव्रता वेगेरेतुं स्वत्रमां साक्षात ग्रहण जुदं करवाथी अहिं ते व्याख्या करी नथी.गुणव्रत-दिशाव्रत अने उपभोगपरिभोगव्रतस्वरूप छे तथा विरमण-अन्धेदंडनी विरतिना प्रकारो अथवा रागादिनी विरतिओ जाणवी. प्रत्याख्यान नवकारसी विगेरे, पाषध-अष्टमी विगेरे पर्वना दिवसामां उपवसन-आहारना त्याग ते पाषधाप-वास. (शीलादि बधाय पदोनो द्वंद्व समास छे) शील विगेरेने अंगीकार करे छे ते अवसरने विषे तेने एक विश्राम कहेल छे. २ जे अवसरमां सावद्ययोगना त्यागपूर्वक निरवद्य योगना सेवनरूप सामायिकमां जे व्यवस्थित श्रावक होय छे ते श्रमण-भूत थाय छे. वळी देशे-दिशा परिमाणव्रत ग्रहण करेल श्रावकने दिशाना परिमाणना विभागमां अवकाश-अवतार विषयक अवस्थान छे जे व्रतने विषे ते देशावकाश ते ज देशावकाशिक अर्थात दिशाव्रतमां ग्रहण करेल दिशाना परिमाणने दररोज संक्षेपवा-रूप अथवा बधा य व्रतोतुं संक्षेप करवारूप व्रतनं अनुपालन करे छे अर्थात व्रत ग्रहण कर्या पछी अखंड रीते पाळे छे ते अव-सरे पण तेने एक विश्राम कहेल छे. ३ उद्दिष्टा-अमाबास्या परिपूर्ण-अहोरात्र पर्यंत १ आहारनो त्याग, २ श्वरीरना सत्कारनो त्याग, ३ ब्रह्मचर्यनुं पालन अने ४ अच्यापार-सावद्य प्रवृत्तिना त्यागरूप चार भेदयुक्त पौषधने करे छे त्यारे एक विश्राम छे, ४ जे अवसरे वळी पश्चिम ज−छेछी परंतु अमंगलना परिहारने माटे #अपश्चिमा एवी, मरण ज अंत ते मरणांत, तेमां जे थयेली ते मारणांतिकी-ते अपश्चिममारणांतिक एवी, जेनावडे शरीर अने कषायादि कृश कराय छे ते संलेखना-तपविशेष

* पश्चिम शब्द अमंगलरूप छे माटे अपश्चिम शब्द कहेल छे.

मीस्था-वाङ्कधत्र बाबुवाद ॥ ४४९ ॥

ते अपश्चिममारणांतिक संलेखनानी ' जूसण ' क्ति० जोषणा-सेवारूप धर्मवडे ' जूसिय' क्ति०-सेवा करनार अथवा देहने खपावनार-शोषनार ते जोषणा-जुष्ट, तथा भक्तपाननुं प्रत्याख्यान करेल छे जेणे ते भक्तपानप्रत्याख्यात, पादप-बुक्षनी माफक उपगत-निश्चेष्टपणाए रहेल ते पादपोपगत अर्थात् अनशन विशेषने स्वीकारेल, काळ-मरणना समयने न इच्छतो थको-तेमां उत्सुक नहिं थयो थको विचरे छे-रहे छे. (स० ३१४)

चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उदितोदिते णाममेगे उदितत्थिमिते णाममेगे अत्थिमितोदिते णाममेगे अत्थमियत्थमिते णाममेगे, भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी णं उदितोदिते, बंभद्ते णं राया चाउरंतचक्कवद्दी उदिअत्थमिते, हरितेसबले णमणगारे णमत्थमिओदिते, काले णं सोयरिये अत्थ-मितस्थमिते। सू॰ ३१५, चत्तारि जुम्मा पं॰ तं०-कडजुम्मे तेयोए दावरजुम्मे कलिओए. नेरतिताणं चत्तारि जुम्मा पं॰ तं॰-कडजुम्मे तेओए दावरजुम्मे कितोए एवं अधुरकुमाराणं जाव थणिय-क्रमाराणं, एवं पुढविकाइयाणं आउ॰ तेउ॰ वाउ॰ वणस्तिति॰ बेंदिताणं तेंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वाणमंतरजोइसियाणं वेमाणियाणं सब्वेसि जहा णेरइ-याणं स् ० ३१६. चत्तिर सूरा पं ० तं ० - खंतिसूरे तवसूरे दाणसूरे जुड़ सूरे, खंतिसूरा अरहंता तवसूरा

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः ३ उदितोदि-तादिचतुर्भे-गिका युग्म-शूरचतुष्कं उचादिचतु-ष्कं लेखा-चतुष्कं० स्० ३१५-३१९ ₹ ** || 888 || |*

अणगारा दाणसूरे वेसमणे जुद्धसूरे वासुदेवे। सू० ३१७, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उच्चे णाममेगे उच्चच्छंदे उच्चे णाममेगे णीतच्छंदे णीते णाममेगे उच्चच्छंदे नीए णाममेगे णीयच्छंदे। स० ३१८. असुरकुमाराणं चत्तारि लेसातो पं० तं०-कण्हलेसा णीललेसा काउलेसा तेउलेसा एवं जाव थाणिय-कुमाराणं एवं पुढविकाइयाणं आउवणस्सइकाइयाणं वाणमंतराणं सव्वेसि जहा असुरकुमाराणं। स्०३१९ मलार्थ:-चार प्रकारना पुरुष कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ कुल, बळ, ऋदि विगेरेथी प्रथम उदयने पामेला अने पछी परम सुखने पामेला ते उदितोदित, र कुल विगेरेथी प्रथम उदयने पामेला अने पछी दुर्गतिमां जवाथी अस्तने पामेला ते उदित-अस्तिमित, ३ नीच कुल विगेरेथी प्रथम अस्तने पामेला अने पछी सद्गतिमां जवाथी उदयने पामेला ते अस्तिमितोदित अने ४ नीच कुलादिथी प्रथम अस्त पामेल अने दुर्गतिमां जवाथी पछी पण अस्त पामेल ते अस्तमितअस्तमित. हवे उक्त चार भांगाना स्वामीने कहे छे-१ चातुरंग चक्रवर्ची भरतमहाराजा प्रथम पण उदयने पामेला अने पछी पण उदयने पामेला, २ चातुरंत चक्रवर्त्ती ब्रह्मदत्त राजा प्रथम उदयने पामीने पछी अस्तने पामेला, ३ हरिकेशीबल ग्रुनि प्रथम नीच कुलमां अवतार लईने अस्त पामेला अने पछीथी उदयने पामेला अने ४ कालसौकरिक(कसाई) प्रथम पण अस्त पामीने पछी पण नरकगमनवडे अस्तने पाम्यो. (स्० ३१५) चार प्रकारना युग्म-राशिविशेष कहेल छे, ते आ प्रमाणे-जे संख्याने चारथी भागतां शेष चार रहे ते कृतयुग्म, शेष त्रण रहे ते त्र्योज, शेष वे रहे ते द्वापर अने शेष एक रहे ते कल्योज. नैरियकोना चार युग्म कहेला छे. ते

भीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद ॥ ४५०॥

आ प्रमाणे-कृतयुग्म, त्र्योज, द्वापर अने कल्योज, एवी रीते असुरकुमारोना यावत् स्तनितकुमारोना, एम ज पृथ्वीकायिकोना अप्कायिकोना, तेजस्कायिकोना, वायुकायिकोना, वनस्पतिकायोना, द्वीद्रियोना, त्रीद्रियोना, चतुरिद्रियना, पंचेद्रियतिर्यचयो-निकोना, मनुष्योना, व्यंतर अने ज्योतिष्कोना तथा वैमानिकोना एम बधायना जेम नैरियकोना चार युग्म कहेला छे तेम जाणवा. (स॰ ३१६) चार प्रकारना ऋरा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-क्षमामां ऋर, तपने विषे ऋर, दानमां शूर अने युद्धने विषे शूर. क्षमामां भूरा अर्हतो, तपमां भूरा मुनिओ, दानमां भूरा वैश्रमण अने युद्धमां भूर वासुदेव छे. (६० ३१७) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक पुरुष भरीर, कुल अने धन विगेरेथी ऊंच अने ऊंचच्छंद-श्रेष्ठ अभिप्रायवाळो उदार हे, २ एक भरीर विगेरेथी ऊंच पण नीचच्छंद-नीच अभिप्रायवाळो छे, ३ एक शरीर विगेरेथी नीच पण ऊंचच्छंद-श्रेष्ठ अभिप्रायवाळो छे अने ४ एक शरीर, कुल विगेरेथी नीच अने नीचच्छंद-नीच अभिप्रायवाळी छे. (६० ३१८) असुरक्कमारोने चार लेक्याओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-कृष्णलक्या, नीललेक्या, कापोतलेक्या अने तेजोलेक्या. एवी रीते यावत् स्तनितकुमारोने एमज पृथिवी-कायिकोने, अप्कायिकोने, वनस्पतिकायिको अने व्यंतरोने, आ बधायने असुरक्कमारोनी माफक चार लेक्याओ छे. (स. ३१९) टीकार्थः-उच कुल, बल, समृद्धि अने निर्दोष कार्योवडे उदित-अभ्युदयवाळो, अने परम सुखना समृहना उदयवेडे उदित-उदय पामेल माटे उदितोदित, जेम भरत महाराजा अने एनं उदितोदितपणुं प्रसिद्ध छे १, तथा प्रथम उदय पामेल, अने पछी अस्त पामेल-सूर्यनी जेम; केम के सर्व समृद्धिवडे भ्रष्ट थवाथी अने दुर्गतिमां जवाथी उदितअस्तमित-उदय पामीने

४ स्थान-काध्ययने उद्दशः ३ उदितोदि-तादिचतुर्भे गिकां युग्म-शूरचतुष्क उचादिचतु-ष्कं लेश्या-चतुष्कं० स० ३१५-३१९ 840 H

अस्त पामेल ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तीनी माफक, ते उत्तम क्रुळमां उत्पन्न थवा विगेरेथी अने स्वभुजानां बळथी मेळवेल साम्राज्यवडे

ક્રશ

प्रथम उदय पामेल अने पाछळथी खास कारण सिवाय क्रोधित ब्राह्मणद्वारा प्रेरणा करायेल गोवाळवडे छोडायेल धनुष्यनी गोळीथी फूटी गयेल आंखनी कीकीवडे अने मरण पछी अप्रतिधान नामना महानरकावास संबंधी वेदनानी प्राप्तिवडे अस्त पामेल २, हीन कुलमां उत्पत्ति, दुर्भाग्य अने दारिद्रच विगेरेथी प्रथम अस्तमित अने पछीथी समृद्धि, कीर्ति अने सदुगतिनी प्राप्ति विगेरेथी उदित-उदय पामेल ते अस्तमितोदित-जेम हरिकेशबल नामना मुनि, ते जन्मांतरमां बांधेल नीच गोत्रकर्मना वश्रथी प्राप्त करेल हरिकेश नामना चांडालकुलपणाथी, दुर्भाग्यपणाथी अने दरिद्रपणाथी प्रथम अस्त पामेल. परन्त पाछळथी तो दीक्षित थयो थको निश्वल चारित्रना गुणोवडे, मेळवेल देवकृत सहायवडे, प्रसिद्धि मेळववावडे अने सद्गतिमां जवावडे उदित ३. तथा सर्यनी जेम प्रथम अस्त पामेल केमके नीचकुलपणुं अने दुष्ट कर्म करवापणाथी कीर्ति, समृद्धिलक्षण तेजथी वर्जित होय छे अने पछीथी दुर्गितिमां जवाथी अस्त पामेल ते अस्तमितास्तमित-जेम काळ नामनो सौकरिक. ' स्करैः सुवरोवडे चरति मृगया-शिकारने करे छे माटे सौकरिक नाम यथार्थ छे. दुष्ट कुलमां उत्पन्न थयेल अने दररोज पांच सो पाडाने मारनार माटे प्रथम अस्त पामेल, अने पछीथी पण सातमी नरकपृथिवीने विषे गयेल माटे अस्त पामेल. ४. ' भरहे 'त्यादि॰ उदाहरणधूत्र तो भावितार्थ छे. (स० ३१५) जे जीवो आ प्रमाणे विचित्र भावीवडे चिंतन कराय छे ते बधा य चार राशिओमां अवतरे छे, माटे तेओने दर्शावतां थका सत्रकार कहे छे-' चत्तारि जुम्मे 'त्यादि० युग्म-राशिविशेष. जे राशिने चारनी संख्यावडे अपहरण करवाथी (भांगवावडे) शेष चार रहे ते कृतयुग्म कहेवाय छे. जे राशिना छेवटमां शेष त्रण रहे ते त्र्योज, वे शेष रहे तो द्वापरयुग्म अने एक शेष रहे ते कल्योज कहेवाय. अहिं गणितनी परिभाषामां श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४५१ ॥

समराशि(२-४) युग्म कहेवाय छे अने विषमराशि (१-३) ते ओज कहेवाय छे. आ जैनसिद्धांतनी मर्यादा छे. लोकमां तो कृतयुग्म विगेरे आ प्रमाणे कहेवाय छे—''कलियुगमां चार लाख ने बत्रीश हजार वर्ष होय छे. द्वापरयुगमां आठ लाख ने चोसठ हजार, त्रेतायुगमां बार लाख ने छन्तु हजार अने कृतयुगमां सत्तर लाख अठ्यावीश हजार वर्ष होय छे. '' पूर्वोक्त राशियोनुं नारकादिने विषे निरूपण करता थका सत्रकार कहे छे—'नेरइए'त्यादि० सुगम छे. नारक विगेरे चार प्रकारनी राशिवाळा पण होय केम के जन्म अने मरणवडे हीन या अधिकपणानो संभव होय छे. (स० ३१६) वळी जीवोने ज भावोबडे निरूपतां थका सूत्रकार कहे छे—' चत्तारि सूरे 'त्यादि० वे सूत्र सुगम छे. विशेष ए के—शूर—वीरपुरुषो. क्षमामां शूरा अईतो—श्रीमहावीर परमात्मानी माफक, तपमां शूरा अनगारो—हढप्रहारी मुनिवत्, दानमां शूर वैश्रमण—उत्तर दिशानो लोकपाल(कुबेर) ते तीर्थकर विगेरेना जन्मना समयमां अने बारणा विगेरेना समयमां रत्न विगेरेनी वृष्टि करवावडे दानमां शूर छे. कर्धु छे के—

वेसमणवयणसंचो-इया उ ते तिरियजंभगा देवा। कोडिग्गसो हिरस्ना,रयणाणि य तत्थ उवणेंति ॥१६४॥ वैश्रमणना वचनथी प्रेराया थका ते तियग्जृंभकदेवो, क्रोडोगमे सुवर्णोने अने रत्नोने तत्र-तीर्थंकरगृहने विषे लई जाय छे. युद्धमां श्रूर वासुदेव-कृष्णवत् केम के तेने त्रण सो साठ संग्राममां जय मेळववानो होय छे. (स० ३१७) *शरीर, कुल

मूल अनुवादमां चार भांगा स्पष्ट लखेल छे.

४ स्थान-काध्ययने उद्देश: ३ तादिचतुर्भ-ंशिका युग्म-शूरचतुष्कं उचादिचत-ष्कं लेखा-॥ ४५१ ॥

अने वंभव विगेरेथी उच पुरुष, तथा औदार्यादि गुणयुक्त होवाथी उच अभिप्रायवाळो ते उच्च छंद. नीच छंद तो पूर्वोक्तथी विपरीत अर्थात् नीच अभिप्रायवाळो, नीच पण उच कुलादिथी विपरीत छे. (स० ३१८) हमणा ज ऊंच अने नीच आभिप्राय कहो ते लेक्याविशेषथी थाय छे माटे लेक्यासूत्रो कहेल छे, ते सुगम छे. विशेष ए के—असुरादिने द्रव्यना + आश्रयवडे चार लेक्याओ होय छे अने भावथी तो बधा य देवोने छ लेक्या होय छे, मनुष्य अने पंचेंद्रियतिर्यंचोने तो द्रव्यथी अने भावथी पण छ लेक्या होय छे. पृथिवी, अप अने वनस्पतिना जीवोने ज तेजोलेक्या होय छे केम के तेओमां देवोनी उत्पत्ति होवाथी ते जीवोने चार लेक्या होय छे. (स० ३१९) कहेल लेक्याविशेषथी विचित्र परिणामवाळो मनुष्य थाय माटे वाहन विगेरे हष्टांतरूप चतुर्भंगीओवडे अने बीजी रीते पुरुषनी चतुर्भंगी यानसूत्रादिना आरंभथी श्रावक सूत्रपर्यंत ग्रंथवडे बतावता थका सत्रकार कहे छे के—

चत्तारि जाणा पं॰ तं॰-जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अ-जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं॰-जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे

⁺ देव अने नारकोने द्रव्यलेश्या तेना आयुष्य पर्यंत अवस्थित होय छे ते द्रव्यो साथे बोना द्रव्योनो संपर्क थवाथी भावलेश्या छए होय छे, परंतु मूल द्रव्यो बदलाता नधी, तदाकार मात्र भजे छे अने मनुष्य तिर्यंचानी द्रव्यलेश्याओं अंतर्मुहर्त्त अवस्थित रहे छे, पछीथी बदलाय छे, केवलीने अवस्थित रहे छे.

भीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद श **४**५२॥

अजुत्ते० ४, चत्तारि जाणा पं० तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते० ४, चत्तारि जाणा पं० तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्त णाममेगे जुत्तरूवे० ४, एवामेव चतारि पुरिसजाया पं॰ तं॰-जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे० ४, चतारि जाणा पं॰ तं॰-जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्तसोमे॰ ४। चत्तारि जुग्गा पं॰ तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्ते० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४. एवं जाणेण चत्तारि आलावगा तहा जुग्गेण वि, पडिवक्लो तहेव पुरिसजाता जाव सोभोत्ति । चत्तारि सारही पं० तं०-जोयावइत्ता णामं एगे नो विजोयावइत्ता, विजोयावइत्ता नामं एगे नो जोया-वइत्ता, एगे जोयावइत्ता वि विजोयावइत्ता वि, एगे नो जोयावइत्ता नो विजोयावइत्ता, ऋएवामेव चत्तारि हया पं० तं०-जुत्ते णामं एगे जुत्ते जुत्ते णाममेगे अजुत्ते ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया

* चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-आ पाठ प्रत्यंतरमां छे. आगमोदय समितिवाळी प्रतिमां नधी.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ यान-युग्य-सारथिप्र-भृतिचतु-भँगिका ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩

॥ ४५२ ॥

For Private and Personal Use Only

(米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米

पं० तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४, एवं जुत्तपरिणते जुत्तरूवे जुत्तसोभे सव्वेसिं पडिवक्वो पुरिसजाता। चत्तारि गया पं० तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४, एवामेव चत्तारि युरिसजाया पं० तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४, एवं जहा हयाणं तहा गयाण वि भाणियव्वं, पडिवक्त्वो तहेव पुरिसजाया। चत्तारि जुग्गारिता पं० तं०-पंथजाती णाममेगे नो उप्पहजाती उप्यथजाती णाममेगे णो पंथजाती, एगे पंथजाती वि उप्पहजाती वि, एगे णो पंथजाती णो उप्पहजाती, एवामेव चत्तारि पुरिस-जाया । चत्तारि पुष्फा पं० तं०-रूवसंपन्ने नाममेगे नो गंधसंपन्ने, गंधसंपन्ने णाममेगे नो रूव-संपन्ने, एगे रूवसंपन्ने वि गंधसंपन्ने वि, एगे णो रूवसंपन्ने णो गंधसंपन्ने, एवामेव चत्तारि पुरिस-जाया पं० तं०-रूवसंपन्ने णाममेगे णो सीलसंपन्ने ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जातिसंपन्ने नाम-मेगे नो कुलसंपन्ने ४ (१), चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं॰-जातिसंपन्ने नामं एगे णो वलसंपन्ने, वल-संपन्ने नामं एगे णो जातिसंपन्ने ४ (२), एवं जातीते रूवेण ४ चत्तारि आलावगा (३), एवं जातीते सुएण ४ (४), एवं जातीते सीलेण ४ (५), एवं जातीते चरित्तेण ४ (६), एवं कुलेण बलेण ४

श्रीस्था-नाज्ञपत्र **पा**नुवाद ॥ ४५३॥

(७), एवं कुलेण रूवेण ४ (८), कुलेण सुतेण ४ (९), कुलेण सीलेण ४ (१०), कुलेण चरित्तेण ४ (११), चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-वलसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने ४ (१२), एवं बलेण सुत्तेण ४ (१३), एवं बलेण सीलेण ४ (१४), एवं बलेण चरित्तेण ४ (१५), चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-रूवसंपन्ने नाममेगे णो सुयसंपण्णे ४ (१६), एवं रूवेण सीलेण ४ (१७), रूवेण चारित्तेण ४ (१८), चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-सुयसंपन्ने नाममेगे णो सीलसंपन्ने ४ (१९), एवं सुतेण चरित्तेण य ४ (२०), चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-सीलसंपन्ने नाममेगे नो चरित्तसंपन्ने ४ (२१), एते एक-वीसं भंगा भाणितव्वा, चत्तारि फला पं० तं०-आमलगमहुरे मुद्दितामहुरे खीरमहुरे खंडमहुरे, एवामेव चत्तारि आयरिया पं॰ तं॰-आमलगमहूरफलसमाणे जाव खंडमहुरफलसमाणे, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-आतवेतावचकरे नाममेगे नो परवेतावचकरे ४, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-करेति नाममेगे वेयावचं णो पिडच्छइ, पिडच्छइ नाममेगे वेयावचं नो करेइ ४, चत्तारि पुरिस-जाता पं० तं०-अट्टकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो अट्टकरे, एगे अट्टकरेवि

काश्ययने उद्देशः ३

माणकरे वि, एगे णो अडुकरे णो माणकरे, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-गणटुकरे नाममेगे णो माणकरे ४, चत्तारि पुरिसजाता पं॰ तं०-गणसंगाहकरे णाममेगे णो माणकरे ४. चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-गणसोभकरे णामं एगे णो माणकरे ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-गणसोहिकरे णाममेगे णो माणकरे ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-रूवं नाममेगे जहित नो धम्मं धम्मं नाममेगे जहति नो रूवं, एगे रूवं पि जहति धम्मं पि जहति, एगे नो रूवं जहति नो धम्मं, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० धम्मं नाममेगे जहति जो गणसंठितिं ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पियधम्मे नाममेगे नो द्ढधम्मे, द्ढधम्मे नाममेगे नो पितधम्मे एगे पियधम्मे वि दृढधम्मे वि, एगे नो पियधम्मे नो दृढधम्मे, चत्तारि आगरिया पं॰ तं०-पव्वायणायरिते नाममेगे णो उवट्टावणायरिते, उवट्टावणायरिए णाममेगे णो पव्वायणायारिए, एगे पव्वा-यणातरितेवि उवट्टावणातरिते वि, एगे नो पव्वायणातरिते नो उट्टावणातरिते धम्मायरिए, चत्तारि आयरिया पं० तं०-उद्देसणायरिए णाममेगे णो वायणायरिए ४ धम्मायरिए, चत्तारि श्रीस्था-नाङ्गदत्र सानुवाद ॥ ४५४ ॥

अंतेवासी पं॰ तं॰-पटवायणंतेवासी नामं एगे जो उवट्टावणंतेवासी ४, धम्मंतेवासी, चत्तारि अंतेवासी पं॰ तं॰-उद्देसणंतेवासी नामं एगे नो वायणंतेवासी १ [वायणंतेवासी] ४ धम्मंते-वासी, चत्तारि निग्गंथा पं० तं०-रातिणिये समणे निग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिते धम्मस्स अणाराधते भवति १, राइणिते समणे निग्गंधे अप्वकम्मे अप्पिकरिते आताबी समिए धम्मस्स आराहते भवति २, ओमरातिणिते समणे निग्गंथे महाकम्मे महाकिरिते अणातावी असमिते धम्मस्स अणाराहते भवति ३. ओमरातिणिते समणे निग्गंधे अप्पकम्मे अप्पकिरिते आतावी समिते धम्मस्स आराहते भवति ४, चत्तारि णिग्गंथीओ पं० तं०-रातिणिया समणी निग्गंथी एवं चेव ४, चत्तारि समणोवासगा पं० तं०-रायिंगते समणोवासए महाकम्मे तहेव ५,चत्तारि समणोवासियाओ पं० तं०-रायणिता समणोवासिता महाकम्मा तहेव चत्तारि गमा । सू० ३२०

मूलार्थ:-चार प्रकारना यान-शकटादि कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक गाइं विगेरे यान बळद जोडेल छे अने सर्व सामग्री युक्त छे, २ एक यान बळद विगेरेथी युक्त(जोडेल) पण सर्व सामग्रीथी अयुक्त छे, ३ एक यान

米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米 ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ यान-युग्य-सारथिप्र-भृतिचतु-भँगिका

1 848 1

***XX

बळद विगेरेथी अयुक्त छे पण सर्व सामग्रीथी युक्त छे तेम ज ४ एक यान बळद विगेरेथी अयुक्त अने सामग्रीथी पण अयुक्त छे. ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक पुरुष धनादिवडे युक्त छे अने वळी उचित अनुष्ठानवडे युक्त छे, २ एक पुरुष धनादिवडे युक्त छे पण उचित अनुष्ठानवडे युक्त नथी, ३ एक पुरुष धनादिवडे अयुक्त छे पण उचित अनुष्ठानवडे युक्त छे तेमज ४ एक पुरुष धनादिवडे अयुक्त छे अने उचित्त अनुष्ठानवडे पण अयुक्त छे. चार प्रकारना यान कहेला छे, ते आ प्रमाण-१ एक यान बळद विगेरेथी युक्त छे अने युक्तपरिणत छ-प्रथम सामग्रीवडे अयुक्त छतो युक्तपणाए परिणत छ, २ एक यान बळद विगेरेथी युक्त छे पण सामग्रीवडे युक्तपरिणत थयेल नथी ३, एक यान बळद विगेरवडे अयुक्त (निर्ह जोडायेल) छे पण सामग्रीवडे परिणत छे तेमज ४ एक यान बळद विगेरेथी अयुक्त अने सामग्रीवडे पण अपरिणत छे. ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ पुरुष धनादिवडे युक्त अने उचित्त प्रवृत्तिवडे परिणत छे, २ एक पुरुष धनादिवडे युक्त छे पण उचित प्रवृत्तिवडे परिणत नथी, ३ एक पुरुष धनादिवडे अयुक्त छे पण उचित प्रवृत्तिवडे परिणत छे अने ४ एक पुरुष धनादिवडे अयुक्त अने उचित ब्रवृत्तिवडे पण अपरिणत छे. चार प्रकारना यान-गाडा विगेरे कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक यान बेळदावडे युक्त छे अने युक्तरूप-सुंदर आकारवाछं छे, २ एक यान-गाडा विगेरे बळदोबडे युक्त छे पण सुंदर आकारवाछं नथी, ३ एक यान बळदोवडे अयुक्त छे पण सुंदर आकारवाळं छे तेमज ४ एक यान बळदोवडे अयुक्त छे अने सुंदर आकारवाळं पण नथी. आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोई एक पुरुष धनादिवडे युक्त छे अने सुंदर आकृतिवाळो छे, २ केई श्रीस्था-नाङ्गद्धत्र साजुनाद ॥ ४५५ ॥

एक पुरुष धनादिवडे युक्त छे पण सुंदर आकृतिवाळो नथी. ३ कोईक धनादिवडे अयुक्त छे पण सृंदर आकृतिवाळो छे तेमज ४ कोईक धनादिवडे युक्त नथी अने सुंदर आकृतिवाळो पण नथी. चार प्रकारना गाडा विगेरे यान कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक यान बळदोवडे युक्त छे, वळी युक्तशोभ-उचित शोभावाळं छे, २ एक यान बळदोवडे युक्त छे पण उचित शोभावाळं नथी, ३ एक यान बळदोवडे अयुक्त (जोडेळं नथी) पण उचित शोभावाळं छे तेमज ४ एक यान बळदोवडे जोडेळं नथी अने उचित शोभावाळ पण नथी. आ दर्धांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोई एक पुरुष उचित गुणवंड युक्त छे, वळी उचित शोभायुक्त छे, २ कोईक उचित गुणवंडे युक्त छे पण उचित शोभावंडे युक्त नथी, ३ कोईक उचित गुणवडे अयुक्त छे पण उचित शोभावडे युक्त छे अने ४ कोईक उचित गुणवडे अयुक्त अने उचित शोभावडे पण अयुक्त छे. चार प्रकारना युग्य-अश्वादि वाहनो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ कोईक अश्व युक्त-पलाण संयुक्त छे. अने युक्त वेगवाळो छे, २ पलाण युक्त छे पण वेगवाळो नथी, ३ पलाण युक्त नथी पण वेगवाळो छे तेमज ४ पलाण युक्त नथी अने वेग युक्त पण नथी. आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष धनधान्यादिवडे युक्त, वळी उत्साह गुणवडे युक्त छे, २ कोईक धनादिवडे युक्त पण उत्साह गुणवडे युक्त नथी, ३ कोईक धनादि-अयुक्त पण उत्साह गुण युक्त छे तेमज ४ कोईक धनादिवडे अयुक्त अने उत्साह गुणवडे पण युक्त नथी. एवी रीते जेम यान शब्द साथे चार आलापको कहेला छे तेम युग्य शब्द साथे पण चार आलापको कहेवा. प्रतिपक्ष-दार्ष्टीतिक स्त्रोना पण चार प्रकारना पुरुषो यावत एक पुरुष, उचित गुणवडे युक्त अने युक्त श्रोभावाळो छ इत्यादि चार

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ यान-युग्य-सार्थिप्र-भृतिचतु-भंगिका स्व० ३२०

li 066 ii

भांगा सुधी चार आलापको कहेवा. चार प्रकारना सारथी कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक सारथी गाडामां बळद विगेरेने जोडनार छे पण छोडनार नथी, २ एक छोडनार छे पण जोडनार नथी, ३ एक जोडनार छे अने छोडनार पण छ तेमज ४ एक जोडनार पण नथी अने छोडनार पण नथी अर्थात खेडनार छे. साधु आश्रयीने १ एक संयमयोगमां प्रवर्त्तावनार छे, २ अनुचितथी निवारनार छे, ३ प्रवर्त्तावनार अने निवारनार पण छे अने ४ बनेथी रहित छे. चार प्रकारना घोडाओं कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक घोडो पलाण विगेरेथी युक्त, तेमज वेग विगेरेथी युक्त छे, २ एक पलाण विगेरेथी युक्त छे पण वेगवाळो नथी, ३ पलाण विगेरेथी युक्त नथी पण वेगवाळो छे तेमज ४ पलाण युक्त नथी अने वेग युक्त पण नथी. ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष धनादिवडे युक्त अने वळी उत्साह विगेरे गुण युक्त छे, २ कोईक धनादिवडे युक्त छे पण उत्साहादि गुण युक्त नथी, २ कोईक धनादि युक्त अने उत्साहादि युक्त पण छे तेमज ४ कोईक उभय युक्त नथी. एवी रीते युक्तपरिणत, युक्तरूप अने युक्तशोमा साथे चार भांगा युक्त शब्द-पूर्वक ' हय ' ना पण करवा. बधा स्त्रना प्रतिपक्ष-दार्ष्टौतिक स्त्रमां पुरुष स्त्रोना चार आलापको कहेवा. चार प्रकारना हाथी कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक हाथी अंबाडी रहित छे पण वेग सहित छे, २ कोईक अंबाडी सहित छे पण वेग सहित नथी, ३ कोईक बने सहित छे अने ४ कोईक बने सहित नथी. ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष धनादि युक्त छे अने उत्साहादि युक्त नथी, २ कोईक धनादि युक्त नथी पण उत्साहादि युक्त छे, ३ कोईक उभय युक्त छे तेमज ४ कोईक उभय युक्त नथी. एवी रीते जेम घोडाओना चार आलापको कहा तेम हाथीओना श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४५६॥

पण चार आलापको कहेवा. प्रतिपक्ष-दार्ष्टीतिकमां पुरुषोना चार आलापको कहेवा. चार प्रकारनी युग्य(अश्वादि वाहन)नी गति कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक अश्वादि मार्गमां चाले छे पण उन्मार्गमां चालतो नथी, २ कोईक उन्मार्गमां चाले छे पण मार्गमां चालतो नथी, ३ कोईक मार्गमां अने उन्मार्गमां पण चाले छे अने ४ कोईक मार्गमां के उन्मार्गमां पण चालतो नथी. आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईएक युग्य-संयमना भारने वहन करनार साधु संयममार्गने विषे चाले छे पण उन्मार्गमां चालतो नथी ते अप्रमत्त मुनि, २ कोईक साधु असंयममार्गमां चाले छे पण संयममार्गमां चालतो-वर्त्ततो नथी ते द्रव्यिलगी साधु, ३ कोईक साधु मार्गमां अने उन्मार्गमां पण चाले हे ते प्रमत्त साधु तेमज ४ कोईक मार्गमां के उन्मार्गमां पण चालतो नथी ते सिद्ध. चार प्रकारना पुष्पो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक पुष्प रूपसंपन-सुंद-राकार छे पण गंधसंपन्न (सुगंधी) नथी-आवळना फूलनी जेम, २ एक पुष्प गंधसंपन्न छे पण रूपसंपन्न नथी-चंपाना फूलनी जेम, ३ एक पुष्प रूपसंपन्न छे अने गंधसंपन्न पण छे-जाईना फूलनी जेम अने ४ एक पुष्प रूप के गंध बन्नेथी संपन्न नथी-बोरडीना कूलनी जेम. ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक पुरुष सुंदर रूपवाळो छे पण शील-सदाचारवाळो नथी, २ एक पुरुष शीलसंपन्न छे पण रूपसंपन्न नथी, ३ एक बने गुणयुक्त छे अने ४ एक बन्नेथी रहित छे. चार प्रकारना पुरुषों कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक जातिसंपन्न-उत्तम जातिवाळो छे पण कुलसंपन्न नथी, २ एक कुलसंपन्न छे पण जातिसंपन्न नथी, ३ एक उभयसंपन्न छे अने ४ एक उभय-संपन्न नथी. (१), चार प्रकारना पुरुष कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक जातिसंपन्न छे पण बलसंपन्न नथी, २ एक बल-

४ स्थान
काष्ययने
उदेशः ३
यान-ग्रुग्यसारिथप्रभृतिचतुभंगिका
स० ३२०

II SEE II

संपन्न छे पण जातिसंपन्न नथी, ३ एक उभयसंपन्न छे अने ४ एक उभयसंपन्न नथी. (२), एवी रीते जातिथी रूपनी साथे चतु-र्भंगी करवी (३), एमज जातिथी श्रुतनी साथे चतुर्भंगी (४), एमज जातिथी शीलनी साथे चतुर्भंगी (५), एम जातिथी चारित्रनी साथे चतुर्भंगी (६), एम कुलथी बलनी साथे चतुर्भंगी (७), कुल अने रूपनी साथे चतुर्भंगी (८), कुल अने श्रुतनी साथे चतुर्भंगी (९), कुल अने शीलनी साथे चतुर्भंगी (१०), कुल अने चारित्रनी साथे चतुर्भंगी (११), चार प्रकारना पुरुष कहेला छे, ते आ प्रमाणे-एक पुरुष बलसंपन्न छे पण रूपसंपन्न नथी, एम बल अने रूपनी चतुर्भंगी जाणवी. (१२), एम बल अने श्रुतनी साथे चतुर्भंगी (१३), एम बल अने शीलनी साथे (१४), एमज बल अने चारित्रनी साथे चतुर्भंगी कहेबी. (१५) चार प्रकारना पुरुष कहेला छे, ते आ प्रमाणे-एक पुरुष रूपसंपन्न छे पण श्रुत(ज्ञान)संपन्न नथी, एम रूप अने श्रुतनी चत्र-भैगी (१६), एम रूप अने शीलनी साथे चतुर्भगी (१७), रूप अने चारित्रनी साथे चतुर्भगी (१८), चार प्रकारना पुरुष कहेला हे, ते आ प्रमाणे-एक पुरुष अतसंपन्न हे पण शीलसंपन्न नथी, एम श्रुत अने शीलनी चतुर्भगी (१९), एम श्रुत अने चारित्रनी चतुर्भंगी (२०), चार प्रकारना पुरुष कहेला छे, ते आ प्रमाणे-एक पुरुष शीलसंपन्न छे पण चारित्रसंपन्न नथी, एम शील अने चारित्रनी चतुर्भगी करवी (२१). आ बधा मळीने २१ मांगाओ (चतुर्भगीरूप) कहेवा. चार प्रकारना फळो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ कोई एक फळ आमळाना जेवुं मधुर छे, २ कोईक द्राक्षना जेवुं मधुर छे, ३ कोईक द्धना जेवं मधुर हे अने ४ कोईक खांडना जेवं मधुर हे. आ दृष्टांते चार प्रकारना आचार्यो कहेला हे, ते आ प्रमाणे-रे कोईक आचार्य आमळाना फळ समान मधुर अर्थात् कंईक मधुर वचन अने उपश्चमादि गुणवान छे, २ कोईक द्राक्ष समान श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४५७ ॥ मधुर अर्थात् अधिक मिष्टवचन अने उपश्चमादि गुणवान छे, ३ कोईक आचार्य दृध समान मधुर अर्थात् अधिकतर मिष्ट वचन अने उपश्रमादि गुणवान छे अने ४ कोईक आचार्य खांड समान मधुर अर्थात् अधिकतम मिष्ट वचन अने उपश्रमादि गुणसंपन्न छे. चार प्रकारना पुरुष कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष-साधु, आहारादिवडे पोतानी वैयावच्च करे छे पण बीजानी करतो नथी-ते आळसु अथवा असंभोगी साधु, २ कोईक साधु बीजानी वैयावच्च करे छे पण पोतानी करनो नथी-ते परोपकारी साधु, ३ कोईक पोतानी अने परनी वैयावच्च करे छे-ते स्थिविरकल्पी साधु अने ४ कोईक पोतानी के परनी वैयावच्च करतो नथी-ते अनशन विशेष करनार साधु. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष-साधु अन्य मुनिनी वैयावच्च करे छे पण पोते निःस्पृह होवाथी पोतानी इच्छतो नथी, २ कोईक साधु पोते वैयावच्च इच्छे छे परंतु अन्यनी वैयावच्च करतो नथी-ते ग्लान साधु अथवा आचार्य, ३ कोईक अन्यनी वैयावच्च करे छे अने पोते पण इच्छे छे-ते ते स्थिवरकल्पी मुनि तेमज ४ कोईक अन्यनी वैयावच करतो नथी अने पोतानी इच्छतो पण नर्था-ते जिनकल्पी मुनि चार प्रकारना पुरुष कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष अर्थकर-राजादिने दिग्यात्रादिना प्रसंगमां हितनी प्राप्ति अने अहितनो परिहार विगेरे करे छे पण मान करतो नथी ते मंत्री अथवा नैमित्तिक, २ कोईक मानने करे छे पण अर्थकर नथी, ३ कोईक अर्थने पण करे छे अने मानने पण करे छे तेमज ४ कोईक अर्थकर पण नथी अने मानकर पण नथी. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष-साधु गण-साधुसम्रुदायना अर्थ-कार्यने करे छे ते गणार्थकर छे, परंतु मान करतो नथी, २ कोईक मान करे छे पण साधुसमुदायना कार्यने करतो नथी, ३ कोईक साधुसमुदायना कार्यने ४ स्थान-काध्ययने उद्देशः ३ यान-युग्य-सार्श्विप्र-भृतिचतु-भंगिका स्व० ३२०

11 0610 1

अने मानने पण करे छे अने ४ कोईक साधु बन्ने करतो नथी. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक साधु गणसंग्रहकर-गच्छने माटे आहारादि अने ज्ञानादिवडे संग्रह करे छे एण मानने करतो नथी, २ कोईक मान करे छे पण गच्छने माटे संग्रह करतो नथी, ३ कोईक संग्रह पण करे छे अने मान पण करे छे अने ४ कोईक गणसंग्रह के मान बन्ने करती नथी. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ कोईक साधु निर्दोष साधुसामाचारी विगेरेथी गच्छनी शोभा करे छे पण मान करतो नथी, २ कोईक मान करे छे पण गच्छनी शोभा करतो नथी, २ कोईक गच्छनी शोभा अने मान बन्ने करे छे अने ४ कोईक बन्ने करतो नथी. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक साधु गणशोधि-कर अर्थात् यथायोग्य प्रायश्चित्त आपवुं विगेरेथी गच्छनी शुद्धि करें छे, पण मान करतो नथी, २ कोईक मान करे छे पण गच्छनी शुद्धि करतो नथी, ३ कोईक उभय करे छे अने ४ कोईक उभय करतो नथी. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक साधु कारणवशात् रूप-साधुना वेषने छोडे छे पण चारित्रलक्षण धर्मने छोडतो नथी-वेष छोडीने भणवा माटे बौद्धमतमां गयेल हरिभद्रस्वरिना शिष्यनी जेम, २ कोईक चारित्ररूप धर्मने छोडे छे पण वेपने छोडतो नथी, जमाली प्रमुख निह्नववत, ३ कोईक साधु वेषने पण छोडे छे अने धर्मने पण छोडे छे-ते दीक्षा छोडीने घर गयेल कंडरीक विगेरेनी जैम तेमज ४ कोईक बनेने छोडतो नथी ते सुसाधुनी जैम. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक साधु जिनाज्ञालक्षण धर्मने छोडे छे पण गणस्थिति-स्वगच्छनी मर्यादाने छोडतो नथी, २ कोईक गच्छनी मर्यादाने छोडे छे पण धर्मने छोडता नथी, ३ कोईक बन्नेने छोडे छे अने ४ कोईक बन्नेने छोडता नथी. चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद ॥ ४५८ ॥ प्रमाण-१ कोईक पुरुष प्रियधर्मी छे पण दृढधर्मी नथी-कष्ट पडवाथी धर्मने छोडी दे छे, २ कोईक दृढधर्मी छे पण प्रियधर्मी नथी, केमके कष्ट पडवाथी धर्मने स्वीकारे छे, ३ कोईक प्रियधर्मी छे अने दृढधर्मी पण छे अने ४ कोईक प्रियधर्मी नथी तेमज दृढधर्मी पण नथी. चार प्रकारना आचार्यो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ कोईक प्रवाजनाचार्य-दीक्षा आपनार छे पण उपस्थापना-चार्य नथी केम के स्वयं सर्व सिद्धांतना योगने वहन करेल न होवाथी महाव्रतोतुं आरोपण करावता नथी, २ कोईक उपस्थाप-नाचार्य छे पण प्रव्राजनाचार्य नथी, ३ कोईक प्रवाजनाचार्य छे अने उपस्थानापचार्य पण छे तेमज ४ कोईक प्रवाजनाचार्य पण नथी अने उपस्थापनाचार्य पण नथी परंतु धर्माचार्य छे अर्थातु जेमनी पासेथी बोध प्राप्त थयो होय ते साधु अथवा श्रावक. चार प्रकारना आचार्यो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक आचार्य अंग विगेरे सूत्रने भणवामां शिष्यने अधिकारी करनार छे ते उद्देशनाचार्य छे पण वाचनाचार्य नथी अर्थात वाचना आपता नथी, २ कोईक वाचनाचार्य छे-भणावे छे पण उद्देशनाचार्य नथी, ३ कोईक बन्ने रीते आचार्य छे अने ४ कोईक बन्ने रीते आचार्य नथी परंत धर्माचार्य छे. चार प्रकारना अंतेवासी (शिष्य) कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक प्रवाजना शिष्य-जेने दीक्षा आपेल होय ते, परंतु उपस्थापना शिष्य नथी अर्थात वडी-दीक्षा आपेल नथी, २ एक उपस्थापनावडे शिष्य छे पण प्रवाजनावडे शिष्य नथी, ३ एक उभयप्रकारे शिष्य छे अने ४ कोईक उभयप्रकारे शिष्य नथी पण धर्मशिष्य छे अर्थात तेने प्रतिबोधेल छे. ? एक उद्देशनवडे शिष्य छे अर्यात तेने सत्र भणाववामां अधिकारी करेल छे पण वाचना शिष्य नथी-तेने वाचना आपी नथी, २ एक वाचनावडे शिष्य छे पण उद्देशनवडे शिष्य नथी, ३ कोईक उभय प्रकारे शिष्य छे अने ४ कोईक उभय प्रकारे शिष्य नथी, धर्मशिष्य छे-प्रतिबोधेल छे. चार प्रकारना ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ यान-युग्य-सार्थिप्र-भृतिचतु-भैगिका स्र० ३२०

11 242 1

निर्प्रथो कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ एक रात्निक [दीक्षापर्यायथी ज्येष्ठ] श्रमण-निर्प्रथ, महाकर्भवाळो, कायिकी विगेर महा-कियावाळो, आतापनाने निहं लेनारो अने समिति रहित ते धर्मनो आराधक थतो नथी. २ एक रात्निक श्रमण-निर्धेथ, लघुकर्मी, कायिकी विगेरे अल्प क्रियावाळो, आतापनाने लेनारो अने समितियुक्त छे ते धर्मनो आराधक थाय छे. ३ एक लघुरात्निक दीक्षापर्यायमां लघु) श्रमण-निर्श्रंथ. महाकर्मवाळो, महान् क्रियावाळो, आतापनाने निहं लेनारो अने सिमिति रहित छे ते धर्मनो आराधक थतो नथी अने ४ एक लघुरात्निक श्रमण-निर्ग्रंथ, लघुकर्मी, अल्प क्रियावाळी, आतापनाने लेनारी अने समिति सहित छे ते धर्मनो आराधक थाय छे. चार प्रकारनी साध्वीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-रात्निका (दीक्षापर्याये मोटी) श्रमणी-निर्ग्रंथीओ साधुओनी जेम चार प्रकारे कहेवी. चार प्रकारना श्रमणोपासको कहेला छे, ते आ प्रमाण-रात्निक (मोटो) श्रमणोपासक, महाकर्मवाळो इत्यादि चार प्रकारे चार भांगा कहेवा. चार प्रकारनी श्रमणोपासिका कहेली छे, ते आ प्रमाणे-रात्निका (मोटी) श्रमणोपासिका, महाकर्मवाळी इत्यादि पूर्वोक्त प्रकारे चार गमा (भांगा) कहेवा. (स्० ३२०) टीकार्थः-'चत्तारी' त्यादि० आ सरळ छे. विशेष ए के-यान(गाडा)विगेरे, ते बळद विगेरेथी जोडेलुं. वळी युक्त-

टाकाथ:—'चत्तारा' त्यादि० आ सरळ छ. विशेष ए क—यान(गोडा)विगर, त बळद विगरथा जाडेलु. वळा युक्त— समग्र सामग्रीवडे सिंहत अथवा प्रथम पण जोडेलुं अने पछी पण जोडेलुं आ एक, बीजुं बळदवडे जोडेलुं परंतु सामग्रीवडे रिहत होवाथी अयुक्त, एम त्रीजो अने चोथो भांगो पण जाणवो. पुरुष तो धनादिवडे युक्त, वळी योग्य अनुष्ठानवडे युक्त अथवा सज्जनोवडे युक्त अथवा प्रथम पण धन अने धर्मना अनुष्ठान विगरेथी युक्त अने पछी पण युक्त १, एम चार भांगा करवा. अथवा द्रव्यलिंगवडे युक्त अने भावलिंग(चारित्र)वडे युक्त ते प्रथम साधु, द्रव्यलिंगवडे युक्त पण भावलिंगवडे

भास्या-नाज्ञपत्र **पा**नुवाद 11 849 11

युक्त नहिं ते बीजो निह्नवादि, द्रव्यिलगवडे रहित परंतु भावलिंगवडे युक्त ते त्रीजो प्रत्येकबुद्ध विगरे अने बन्ने लिंगथी रहित ते चोथो गृहस्थादि. एवी रीते बीजा सत्रो पण जाणी लेवा. विशेष ए के-बळदोवडे युक्त (जोडेछं) अने युक्तपरिणत सामग्रीवडे प्रथम रहित थको युक्तपणाए परिणत (तैयार) पुरुष पूर्ववत् जाणवो. युक्तरूप-संगत स्वभाववाछं अथवा प्रशस्त(सुंदर) युक्त ते युक्तरूप छे. पुरुषपक्षमां धनादिवडे युक्त अथवा ज्ञानादि गुणवडे युक्त, अने युक्तरूप-उचित वेष अथवा सुविहित साधुना वेषवडे युक्त. तथा युक्त पूर्ववत तेमज जोडेलुं छतुं शोभे छे अथवा जोडेलानी शोभा छे जेने ते युक्त-शोभ. पुरुष तो गुणोवडे युक्त अने उचित छे शोभा जेने ते युक्तशोभ. युग्य-अश्वादिवाहन अथवा गौडदेशमां चोग्स वे हाथना प्रमाणवाळ अने वेदिका सहित शोभतं ते युग्यक कहेवाय छे. ते वडे युक्त बेसवानी सामग्रीवडे पर्याण(पलाण)वडे सहित, वळी वेग विगरेथी युक्त, एवी रीते यान(गाडा विगरे)नी जेम व्याख्या करवा योग्य छे. ए ज कहे छे ' एवं जहे 'त्यादि ॰ प्रतिपक्ष-दार्ष्टांतिक तेमज जाणवो. कोण ? ते कहे छे-' पुरिस्तजाय ' त्ति ० पुरुषना प्रकारो परिणत, रूप अने शोभाना सूत्रवडे दार्षंतिक सहित चतुर्भंगी कहेवी. यावत् शोभास्त्रनी चतुर्भंगी आ प्रमाणे-'अजुत्ते नामं एगे अजुत्तसोभे' त्ति ० आ चतुर्भगीनो चतुर्थ भंग छे. सारथी-खेडनार, गाडामां बळद विगेरेने योजयिता-जोडनार पण वियोजयिता-छोडनार नहिं ते प्रथम, बीजो तो छोडनार छे पण जोडनार नथी, एवी रीते शेष वे भांगा पण जाणवा. विशेष ए के-चोथो खेडे छे. अथवा गाडा विरोरेने जोतरवानी तैयारी करनार प्रत्ये जोडावनार-प्रेरणा करनार ते योत्क्रापयिता अने छोडनाराओने जे प्रेरणा कर-नार ते वियोत्क्रापयिता. लोकोत्तरपुरुषनी विवक्षामां तो सारथीनी जेम सारथी-साधुओने संयमयोगोने विषे प्रवर्तावनार ते

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः ३ यान-युग्य-सारथिप्र-भृतिचतु-भीगिका सु० ३२० **XXXXXXXXXX**

॥ ४५९ ॥

योजियता अने वियोजियता तो अनुचित्त प्रवृत्ति करनार मुनिओने अटकावनार छे. यानसूत्रनी जेम अश्व अने गज(हाथी)ना सत्रो पण जाणवा. ' जुरुगारिय ' त्ति ॰ युरुय (अश्वादि)नी चर्या-गति. क्वचित् 'जुरुगायरिय ' त्ति ॰ एवा पण पाठ छे त्यां युग्याचर्या एटले अश्वादिनी गति जाणवी. एक वाहन (अश्वादि) मार्गमां जनार होय छे परंतु उन्मार्गमां जवावाळं होतं नथी, इत्यादि चतुर्भंगी जाणवी. अहिं वाहननी गतिवडे ज निर्देश-कथन चार प्रकारवडे कहेल होवाथी तेनी चर्या(गति)ने ज उद्देशवडे कहेळुं चार प्रकारपणुं जाणवुं. भावयुग्य पक्षमां तो वाहननी माफक युग्य-संयमयोगना भारने वहन करनार साधु, मार्गमां जनार ते अप्रमत्त सुनि, उन्मार्गमां जनार द्रव्यिलंगी, बन्नेमां जनार ते प्रमत्त यति अने चोथा भंगमां सिद्ध छे. क्रमशः १ सत्, २ असत्, ३ उभय-सत् तथा असत् अने ४ बन्नेथी रहित अनुष्ठानवाळा होवाथी अथवा पथ अने उत्पथनुं स्वसमय अने परसमयस्वरूप होवाथी अने 'यायि' शब्दनो गतिरूप अर्थवडे बोधपर्याय होवाथी स्वसमय अने परसमयबोधनी अपेक्षाए आ चतुर्भंगी जाणवी. अर्थात एक स्वसमयने जाणे छे पण परसमयने जाणतो नथी, एक परसमयने जाणे छे पण स्वसमयने जाणतो नथी, एक उभय समय(शास्त्र)ने जाणे छे अने एक बन्नेने जाणतो नथी. एक पुष्प रूपसंपन्न-सुंदराकार छे पण गंधसंपन्न(सुगंधी) नथी-आवळना फूलनी जेम, बीखुं फूल बक्कलना फूलनी जेम, त्रीखुं जाईना फूलनी जेम अने चोथुं बोरडी विगेरेना फूलनी जेम. पुरुष रूपसंपन्न-रूपाठो अथवा सुविहित साधुना रूपवाठो १ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ५ श्रुत, ६ ज्ञील अने ७ चारित्रलक्षण आ सात पदोने विषे द्विकसंयोगी एकवीश चोमंगी करवी सुगम छै. [ते आ प्रमाणे-जाति पद साथे कुलादिथी चारित्रपद पर्यंत छ चोभंगी, कुल पद साथे बलादिपदथी पांच चोभंगी, बलपद साथे रूपादि पदथी

भीस्था-नाङ्गसत्र साजुवाद ॥४६० ॥ चार चोभंगी, रूप पद साथे श्रुतादिथी त्रण चोभंगी, श्रुतपद साथे शील अने चारित्रथी वे चोभंगी अने शीलपद साथे चारित्रपद्थी एक चोभंगी थाय छे.] आमळानी जेम मधुर अथवा जे आमळो ज मधुर ते आमलकमधुर, ' मुद्दिय ' ति॰ द्राक्षनी माफक मधुर अथवा द्राक्षज मधुर ते मृद्दिकामधुर, श्लीरनी जेम मधुर फळ ते श्लीरमधुर अने खांडनी जेम मधुर फळ ते खांडमधुर. जेम आमळा विगेरे फळो क्रमशः अल्प मधुरता, बहु मधुरता, बहुतर मधुरता अने बहुतम मधुरतावाळा होय छे तेम जे आचार्यो अल्प. बहु, बहुतर अने बहुतम उपश्रमादि गुणरूप मधुरतावाँका छ ते उन्त फळोँनी समानतावडे कह्या छे. १ आत्म-पोतानी वैयावृत्त्य करनार ते आळसु सुनि अथवा विसंभोगी-भिन्न सामाचारीवाळो साधु, २ अन्यनी वैया-बृत्य करनार ते पोतानी अपेक्षा निहं, करनार ३ स्वपर वैयावृत्य करनार ते कोई पण स्थविरकल्पी मुनि तेमज ४ बन्ने प्रकारथी निवृत्त थयेल ते अन्ञन विगेरे स्वीकारेल ग्रुनि. १ निःस्पृह होताथी वैयावृत्यने करे छ ज, २ आचार्य अथवा ग्लान-पणाने लईने वैयावच इच्छे छे ज. ३ करे छे अने इच्छे पण छे ते स्थविरविशेष, ४ बन्नेथी निवृत्त ते जिनकल्पी विगेरे मुनि. 'अड्डकरे'क्ति० अर्थान्-दिग्यात्रादिने विषे राजादिने हितनी प्राप्ति अने अहितना परिहाररूप अर्थने तथाप्रकारना उपदेशथी जे कहे छे ते अर्थकर, ते मंत्री अथवा नैमित्तिक. ते अर्थकर छे परंतु मान करतो नथी, ' हुं वगर पूछचे केम कहुं ?' एम मान करतो नथी ए प्रथम. बीजा त्रण भांगा पण सुगम होवाथी जाणी लेवा. आ संबंधमां व्यवहारभाष्यंनी गाथाओं आ प्रमाणे छे-पुट्ठापुट्टो पढमो, जत्ताइ हियाहियं परिकहेइ । तइओ पुट्टो सेसा उ, णिप्फला एव गच्छेवि ॥१६५॥ यात्राना विषयमां राजाए पूछेल होय के न पूछेल होय तो पण श्रूम, अश्रुभने कहे छे पण मानने करतो नथी ते प्रथम

४ स्थान-काभ्ययने उद्देशः 🤻 यान-युग्य-सारथिप्र-भृतिचतु-र्भगिका

11 080 H

भंग, पूछवाथी कहे पण मानवडे वगर पूछ्ये न कहे ते तृतीय भंग अने बीजो भंग निष्फल छे; केम के मान करे छे पण कई कहेतो नथी, तथा चोथो भंग पण निष्फळ छे कारण के ते बन्ने करतो नथी. फक्त राजानी सेवा करे छे. एवी रीते गच्छनी अंदर पण साधुविषयक चतुर्भगी जाणवी.

गण-साधुसमुदायना अर्थ-कार्योने करे छे ते गणार्थकर-आहार विगेरेवडे साहाय्य करनार पण मान करतो नथी, केम के ते प्रार्थनानी अपेक्षावाळो होतो नथी. एम बीजा त्रण भांगा पण जाणी लेवा. कह्युं छे के-

आहारउवहिसयणा–इएहिं गच्छस्सुवग्गहं कुणइ। बीओ न जाइ माणं, दोन्निवि तइओ न उ चउत्थो।१६६

आहार, उपिध, शय्या विगेरेथी गच्छने मदद करे छे पण मान करतो नथी ते प्रथम, बीजी मदद करतो नथी पण मान करे छे. त्रीजो बन्ने करे छे अने चोथो बन्ने करतो नथी.

अथवा ' नो माणकरो ' त्ति ० हुं गच्छना कार्यनो करनार छुं एम अभिमान करतो नथी. हमणा ज गच्छनुं कार्य कहुं ते संग्रह, माटे कहे छे- ' गणसंगहकरे ' त्ति ० आहारादिवडे अने ज्ञानादिवडे गच्छ संबंधी संग्रहने करे ते गणसंग्रहकर. बाकीनुं पूर्वनी माफक जाणवुं. कहुं छे के-

सो पुण गच्छस्सं उट्टो उ, संगहो तत्थ संगहो दुविहो। द्वेव भावे नियमाउ, होति आहारणाणादी॥१६७ गच्छने माटे संग्रह द्रव्य अने भावथी वे प्रकारनो कहेल छे. तेमां द्रव्यथी आहार, उपिध अने शय्या तथा श्रीस्था-नाङ्गधत्र सानुवाद श ४६१ ॥

भावथी ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप संग्रह करे छे परंतु मान करतो नथी. गच्छने निर्दोष साधुनी सामाचारीमां प्रवर्त्ताववावडे अथवा वादी, धर्मकथी, नैमित्तिक, विद्या अने सिद्ध# विगेरेपणाथी गच्छनी श्लोभा करवाना स्वभाववाळी ते गणशोभाकर हे पण मानने करतो नथी केमके प्रार्थनानो अभिलाषी होतो नथी अथवा मदनो अभाव होय छे. गणने यथायोग्य प्रायश्चित्त विगेरे देवाथी शोधि-शुद्धिने जे करे छे ते गणशोधिकर अथवा आहारादिने विषे दोषनी शंका थये छते गृहस्थना कुलमां ्घरे) जईने तेनी प्रार्थना सिवाय जे आहारनी शुद्धि करे छे ते प्रथम पुरुष, जे मानथी शुद्धिने माटे जता नथी ते द्वितीय, मृहस्थनी प्रार्थनाथी जे जाय ते तृतीय अने जे प्रार्थनानी अपेक्षा पण करतो नथी अने जतो पण नथी ते चतुर्थ. रूप-साधना वेषने कारणवशात छोडे छे पण चारित्रलक्षण धर्मने छोडतो नथी, बोटिकमतमां रहेल म्रुनिवत, बीजो तो धर्मने छोडे छे पण वेषने छोडतो नथी ते निह्वववत, त्रीजो बन्नेने छोडे छे ते दीक्षाने छोडनारनी जेम अने चोथो बन्नेने छोडतो नथी ते सुसाधुनी जेम. कोईक जिनाज्ञारूप धर्मने छोडे छे पण स्वगच्छमां करायेली मर्यादारूप गणनी संस्थितिने छोडतो नथी. अहिं केटलाएक आचार्योए तीर्थंकरना उपदेश विना गच्छनी व्यवस्था आ प्रमाणे करेली के-अतिशयवाळं महाकल्पादि श्रुत अन्य गच्छवाळाओ माटे आपणे आपवुं नहिं. आ मर्यादाने लईने जे अन्य गणवाळा(योग्य साधु)ने श्रुत न आप्युं तेथी जिनाज्ञानं पालन करवाथी धर्मने छोडे छे पण गणनी स्थितिने छोडतो नथी, केम के तीर्थंकरनो उपदेश ए छे के-बधा योग्य मुनिओने श्रुत आपवुं-आ प्रथम पुरुष. जे योग्यने श्रुत आपे छे ते द्वितीय, जे अयोग्य पुरुषोने आपे छे ते * अंजन, चूर्ण विगेरे प्रयोगवडे सिद्ध.

४ स्थान-काष्ययने उदेशः ३ यान-युग्य-सार्थिप्र-भृतिचतु-र्भगिका ****

॥ ४६१ ॥

तृतीय अने श्रुतनो नाश न थाय ते माटे श्रुतनी रक्षा(ग्रहण) करवामां समर्थ अन्य गच्छना शिष्यने स्वकीयदिग्बंध (पोताना गच्छनी क्रिया) करीने अर्थात् तेने पण भणावनारना गच्छनी क्रियाचुं पालन करबुं पडे ए प्रमाणे विधि करीने श्रुतने आपे छे, तेथी धर्म अने गच्छनी मर्यादाने छोडतो नथी ते चतुर्थ. कह्युं छे के—

संयमेव दिसाबंधं, काऊण पडिच्छगस्स जो देइ । उभयमवलंबमाणं, कामं तु तयंपि पूएमो ॥ १६८॥

'जो अन्य गच्छवाळाने श्रुत निहं आपीए तो श्रुतनो नाश थशे' एम विचारीने कोईक अन्य गच्छना बुद्धिमान साधुने जोईने पोतानी मेळे ज तेने दिग्बंध (आच्छोटन प्रच्छोटनादि क्रियारूप खगच्छनी विधि) करीने श्रुतने आपे छे. ते स्वगच्छनी मर्यादानो तेमज जिनाज्ञानो पण पालक होवाथी तेने अमे विशेषतः पूजीए छीए. धर्ममां प्रीतिने लईने अने सुखपूर्वक धर्म स्वीकारेल होवाथी प्रिय छे धर्म जेने ते प्रियधम्मा छे पण दृढधम्मी नथी, केमके आपदामां पण धर्मना परिणामथी चलायमान न थाय अर्थात् क्षोभ न पामे ते दृढधम्मी होय छे. तेवो न होवाथी दृढधम्मी नथी १. कह्यं छे के—
दूसविहवेयावचे, अन्नतरे खिप्पमुज्जमं छुणित । अचंतमणेटवाणि, धिइविरियिकसो पढमभंगो ॥१६९॥

दश प्रकारना वैयावृत्यमांथी केाई पण एक प्रकारमां प्रियधमींपणाने लईने तरत उद्यमने करे छे परंतु दृढधमी न होवाथी

द्भ प्रकारना वैयावृत्यमार्थी कोई पण एक प्रकारमा प्रियधमीपणान लड्डन तरत उद्यमन कर छ परंतु दृढधमा न हावार्था धैर्य अने वीर्यबलवडे कुश–नबळो होईने परिपूर्ण निर्वाह करी शकतो नथी, आ प्रथम भंग छे. बीजो पुरुष तो दृढधमी छे

* अयोग्यने आपवुं ते जिनाइ। नधी तेथी धर्म अने गच्छनी मर्यादाने उल्लंघे छे.

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४६२॥

केमके अंगीकार करेल कार्यनुं पालन करे छे परंतु प्रियधर्मी नथी केमके कष्टवडे धर्मने स्वीकारे छे. तृतीय अने चतुर्थ मंग स्पष्ट छे. कह्युं छे—

दुक्खेण उगाहिजाइ, बीओ गहियं तु नेइ जा तीरं। उभयं तो कल्लाणो, तइओ चरिमो उपिडकुट्टो ॥१७०॥

प्रियधर्मी न होवाथी जेने महाकष्टवडे धर्म ग्रहण करी शकाय छे परंतु ग्रहण करेल धर्मनुं बराबर पालन करतो होवाथी हटधर्मी ते बीजो. त्रीजो उभय प्रकारवडे कल्याणरूप छे अने उभयथी प्रतिकूल चोथो पुरुष छे. आचार्य सत्रना चोथा भांगामां जे दीक्षावडे अने उत्थापनावडे आचार्य नथी ते कोण ? ते संबंधमां कहे छे-धर्मीचार्य-प्रतिबोधक. कह्युं छे के-

धम्मो जेणुवइट्टो, सो धम्मगुरू गिही व समणो वा। कोवि तिर्हि संपउत्तो, दोहिवि एकेकगेणेव ॥१७१॥ जेणे धर्मनो उपदेश करेल छे ते गृहस्थ अथवा साधु धर्मगुरु-धर्माचार्य छे. कोईक त्रण प्रकारे-१ धर्माचार्य, २ दीक्षा-

चार्य अने ३ उपस्थापनाचार्य होय छे. कोईक बे प्रकारे-धर्माचार्य अने दक्षिाचार्य अथवा दीक्षाचार्य अने उपस्थापनाचार्य छे अथवा कोईक धर्माचार्यादि एक एक प्रकारवडे आचार्य होय छे.

उदेशन-अंगादि स्त्रने भणाववामां शिष्यने अधिकारी करवी तेमां अथवा तेनावडे जे आचार्य-गुरु ते उदेशनाचार्य. उभयशून्य कोण होय १ ते कहे छे-धर्माचार्य. अंते-गुरुनी समीपे वसवा माटे स्वभाव छे जेनी ते अंतेवासी-शिष्य. प्रवा-जना-दीक्षावडे अंतेवासी ते प्रवाजनांतेवासी अर्थात् दीक्षित शिष्य अने महाव्रतोत्तुं आरोपण करवाथी शिष्य ते उपस्थापनांतेवासी

※
※
काष्ययने
※
अहेकः ३
यान-युःयसारिषप्रभृ
तिचतुर्भश्र्
श्र्
श्रु
श्र्
श्रु
श्र्
श्र
श्
श
श
श
श
श

1 888 1

कहेवाय छे. चोथा भांगावाळो कोण १ ते कहे छे-धर्मनो प्रतिबोध आपवाथी अथवा धर्मनी इच्छाथी आवेल शिष्य ते धर्मांते-वासी. ज उद्देशनांतेवासी पण निहं अने वाचनांतेवासी पण निहं ते चोथा भांगावाळो कोण १ ते कहे छे-धर्मांतेवासी. बाह्य अने अभ्यंतर परिग्रहथी मुक्त थयेला ते निर्ग्रथ-साधुओ, भावधी ज्ञानादि रत्नोवडे विचरे-व्यवहार करे छे ते रात्निक-दक्षिापर्याग्यवडे ज्येष्ठ अमण-निर्ग्रथ. स्थिति विगरेथी महान् अने तथाविध प्रमादादिवडे प्रगट जणातां कर्मो छे जेने ते महा-कर्मी (भारेकर्मी), कर्मवंधना हेतुभूत कायिक्यादि महाक्रियादि छे जेने ते महाक्रियावाळो, शीतादिने सहन करवाह्य आतापनाने जे नथी करतो ते अनातापी केम के ते मंदश्रद्धावाळो होय छे, आ हेतुथी पांच समितिवडे असमित-आवा प्रकारनो ज्येष्ठ साधुधर्मनो आराधक थतो नथी. बीजो पर्यायज्येष्ठ मुनि तो अल्पकर्मा, अल्पिकेय होवाथी धर्मनो आराधक थाय छे. त्रीजो लघुपर्यायवाळो रात्निक ते अवमरात्निक (आ त्रीजो भांगो प्रथम भंगवत् अने चतुर्थ भंग द्वितीय भंगवत् जाणवो) आ रीते निर्ग्रथी (साध्वी), श्रावक अने श्राविकाना 'चत्तारि गम' ति० आ त्रण स्त्रोमां पण चार चार आलापको थाय छे. (स०३२०)

चत्तारि समणोवासगा पं० तं०-अम्मापितिसमाणे भातिसमाणे मित्तसमाणे सवित्तसमाणे, चत्तारि समणोवासगा पं० तं०-अद्दागसमाणे पडागसमाणे खाणुसमाणे खरकंटयसमाणे ४।सू० ३२१, समणस्स णं भगवतो महावीरस्स समणोवासगाणं सोधम्मकप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि पिळओवमाइं ठिती पन्नत्ता। सू० ३२२, चडिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवळोगेसु इच्छेजा

92

भीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४६३ ॥

माणुसं लोगं हव्वमागिच्छत्तते णो चेव णं संचातेति हव्वमागिच्छत्तते, तं०-अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने से णं माणुस्सए कामभोगे नो आढाइ नो परियाणाति णो अटुं बंधइ णो णिताणं पगरेति णो ठितिपगप्पं पग-रेति १, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते (४) तस्स णं माणुस्सते पेमे वोच्छिन्ने दिँ वे संकंते भवति २, अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते (४) तस्स णं एवं भवति-इणिंह गच्छं मुहुत्तेणं गच्छं,तेणं कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति ३ अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छित्ते (४) तस्स णं माणुस्सए गंधे पडिकूले पडिलोमे तावि भवति, उड्ढांपिय णं माणुस्सए गंधे जाव चत्तारि पंच जोयणसताई हव्व-मागच्छति ४, इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेजा माणुसं लोगं हव्व-मागच्छित्तए णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तए । चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेजा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए संचातेति हव्वमागच्छितए।तं०-अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ मातापित्रा-दिस**माः** श्रावकाः, वीरश्रावक-देवत्वं, दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते जाव अणज्झोववन्ने, तस्सणं एवं भवति-अत्थि खलु मम माणुस्तए भवे आयरितेति वा उवज्झाएति वा पवत्तीति वा थेरेति वा गणीति वा गणधरेति वा गणावच्छेएति वा जेसिं प्रभावेणं मए इमा एतारूवा दिव्वा देविङ्घी दिव्वा देवजुत्ती लङ्घा पत्ता अभिसमन्नागया,तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि १, अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति-एस णं माणुस्सए भवे णाणीति वा तवस्सीति वा अइद्रकरश्कारते, तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि २, अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति-अत्थि णं मम माणुस्सए भवे माताति वा जाव सुण्हाति वा, तं गच्छामि णं तेसि-मंतितं पाउब्भवामि पासंतु ता में इममेतारूवं दिव्वं देविड्डिं दिव्वं देवजुत्तिं लद्धं पत्त अभिस-मन्नागतं ३, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु जाव अणज्झोववन्ने तस्त णभवं भवति-अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मित्तेति वा, सहीति वा सुहीति वा सहाएति वा संगएति वा. तोसं च णं अम्हे अन्तमन्त्रस्स संगारे पडिसुते भवति, जो मे पुटिंव चयति से संबोहेतव्वे, इच्चेतेहिं जाव संचातेति भीस्था-नाङ्गपत्र पानुनाद ॥ ४६४ ॥

हव्यमागच्छित्तते १। सू० ६२३

म्बलार्थः - चार प्रकारना श्रावको कहेला छे, ते आ प्रमागे -१ कोईक श्रावक मातापिता समान छे -साधुने एकांत हितकारी छे, २ भाई समान-मातापिताथी ओछा स्नेहवाळो होईने शिखामग आपवा माटे साधुने निष्ठुर वचन कहे परंतु कार्यना प्रसंगमां वात्सल्यभिक्त करे छे, ३ मित्र समान-साधुए कोई प्रसंगने लईने कठोर वचन कहेल होय तथी प्रीतिनो क्षय थवाथी आप-त्तिमां साधुनी उपेक्षा करे छे अने ४ सपत्नी (श्रोक) समान-साधुओना केवळ छिद्रने ज जीनारी होय छे. वळी चार प्रकारना श्रावको कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ आदर्श (आरीसा) समान-साधु जे स्वरूप कहे ते हृदयमां स्वीकारे, २ पताका समान-विचित्र देशनावडे अस्थिर मनवाळो, ३ स्थाणु समान-गीतार्थथी पण समजावी न शकाय तेवी कदाबही अन ४ खरकंटक समान-शिखामण आपनार साधुने दुर्वचनरूप कांटाथी वींधनारो. (स्० ३२१) श्रमण भगत्रान् महात्रीरस्त्रामीना दश्च श्रात्रक्रोनी सौंधर्म देवलोकमां अरुणाभ विमानने त्रिपे चार पल्योपमनी स्थिति कहेली छे. (स्व० ३२२) चार कारणोवडे देवलोकमां तत्काल उत्पन्न थयेल देव मनुष्यलोकमां शीघ्र आववा माटे इच्छे परंतु आववाने समर्थ न थाय, ते आ प्रमाणे-१ देवलोकमां तत्काळ उत्पन्न थयेल देव, दिव्य कामभोगने विषे मृचिंछत थयेल, गृद्ध थयेल, ग्रथित-बंधायेल अने आसक्त थयेल एवा ते देव मनुष्य संबंधी कामभोगमां आदरवाळी थतो नथी, वस्तुभूत-सारहृप मानतो नथी, एनं मने प्रयोजन नथी, एम निश्रय करे छे अने 'मने मळो' एम नियाणुं करतो नथी अर्थात् मनुष्यविषयक कामभोगोमां हुं रहुं एम विचारतो नथी, २ देवलोकमां तत्काल उत्पन्न

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ₹ मातापित्रा-दिसमाःश्रा-वकाः, वीर-श्रावकदेव-त्वं, देवाग-मानागम-कारणानि **Ж य०३२१**− ३२६ ** ** ** ** ** ** ** ** **

थयेल देव, दिव्य कामभागने विषे मूर्चिंछत, गृद्ध, ग्रथित अने आसक्त थयेल तेने मनुष्यना भव संबंधी मातापितादि उपरना प्रेमनो अभाव थाय छे अने देव संबंधी प्रेमनो संक्रम-प्रवेश थाय छे, ३ देवलोकमां तत्काल उत्पन्न थयेल देव, दिव्य काम-भोगने विषे मूर्विछत, गृद्ध, प्रथित अने आसक्त थयेल, तेने एम विचार थाय छे के-हमणा जाउं छुं, आ नाटक जोईने मुहूर्त्तमां जाउं छुं परंतु एक दिव्य नाटक जोतां वे हजार वर्ष चाल्या जाय छे तेटला काळमां अल्प आयुष्यवाळा तेना संबंधी मनुष्यो काळधर्म संयुक्त थाय छे अर्थात् मरण पामे छे, ४ देवलाकमां तत्काल उत्पन्न थयेल देव, दिव्य कामभोगने विवे मूर्चिछत, गृह्व, ग्रथित अने आसक्त थयेल तेने मनुष्यलोक संबंधी गंध, दिन्य गंधथी विपरीत अने इंद्रियादिने अमनोज्ञ थाय छ. ऊंचे पण मनुष्यलोक संबंधी गंध चारसो पांचसो योजन पर्यंत देवने आवे छे. आ जणावेल चार कारणवडे देवलोकमां तत्काल उत्पन्न थयेल देव मनुष्यलोकमां आववा माटे इच्छे छे छतां शीघ्र आववा माटे समर्थ थतो नथी. चार कारणवडे देवलोकमां तत्काल उत्पन्न थयेल देव, मनुष्यलेकिमां शीघ्र आववा माटे इच्छे छे अने आववा माटे समर्थ पण थाय छे, ते आ प्रमाणे १–देवलोकमां तत्काल उत्पन्न थयेल देव, दिव्य कामभागने विषे अमूर्विछत, अगृद्ध, अग्रथित अने अनासक्त एवा तेने आ प्रमाणे विचार थाय छे के-मनुष्यभवने विषे मारा आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्त्तक, स्थविर, गणी, गणधर अथवा गणावच्छेदक छे, जेना प्रभावथी में आवा प्रकारनी प्रत्यक्ष दिव्य देव संबंधी ऋद्धि, देव संबंधी कांति, पूर्व उपाजी, हमणा प्राप्त करी, भोग्य अवस्थाने सन्मुख आवी माटे हुं जाउं, ते भगवंतो प्रत्ये वंदन करुं यावत पर्श्वपायना (सेवा) करुं, २ देवलोकमां तत्काल उत्पन्न थयेल देव यावत् अनासक्त तेने एवा विचार थाय छे के-आ मनुष्यभवमां वर्तता ज्ञानी, तपस्त्री अथवा अति दुष्करकारक श्रीस्या-नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ४६५ ॥

(ब्रह्मचर्यादि क्रियाने करनार) छे ते कारणथी हुं त्यां जाउं, ते भगवंतोने वंदन करुं यावत् सेवा करुं. ३ देवलोकमां तत्काल उत्पन्न थयेल देव यावत् अनासक्त तेने एवो विचार थाय छे के-मनुष्यभवने विषे मारी माता अथवा यावत् पुत्रवध् छे तेथी त्यां जाउं अने तेनी पासे प्रगट थाउं, ते माता विगेरे मारी आवा प्रकारनी देव संबंधी, पूर्वभवमां मेळवेली. वर्चमानभवमां प्राप्त थयेली अने भोगमां सन्मुख आवेली दिव्य, देवनी ऋद्धि अने दिव्य देवनी कांतिने जुओ, ४ देवलोकमां उत्पन्न थयेल देव यावत् अनासक्त तेने एवो विचार थाय छे के-मनुष्यभवने विषे मारा मित्र, सखा, सुहुद (स्वजन), सहायक अथवा सांगतिक (अतिपिचित) छे तेथोनो अने अमारो परस्पर संकेत करायेल छे अर्थात् कब्रूलात आपेल छे के-आपणामांथी देवलोकथी जे प्रथम च्यवे तेन पाछळ रहेला देवे प्रतिबोध आपवो (भेतार्यनी जेम). आ प्रमाणे चार कारणोवडे देव शीघ्र मनुष्यलोकमां आववा माटे समर्थ थाय छे. (छ० ३२३)

टीकार्थः-'अम्मापिइसमाणे '-१ मातापिता समान, केम के उपचार विना-साधुए कह्या सिवाय पण साधुओने विषे एकांते वात्सल्यभक्तिभाववाळा होय छे. २ तत्त्वना विचार विगेरेमां कठण वचनवडे अप्रीतिने लईने अल्पतर प्रेम होय छ परंतु तथाप्रकारना प्रयोजनने विषे तो अल्यंत वात्सल्यवाळा होवाथी भाई समान छे, ३ उपचार सहित वचन विगेरेवडे प्रीतिनी क्षति(नाक्ष) थवाथी अने ते प्रीतिनो नाक्ष थये छते आपदाना समयमां पण उपेक्षा करनार होवाथी मित्र समान छ अने ४ जेणीनो समान-(बन्नेनो एक) पति छे ते सपत्नी. जेम शोक्य पोतानी शोक्य प्रत्येनी ईन्यीने लईने तेना छिद्रोने जुए छे एम जे श्रावक साधुओने विषे दूषण जोवामां तत्पर होय अने उपकारने करनारो न होय ते सपत्नी (शोक्य) समान

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः ३ माता पित्रा-🕱 दिसमाःश्रा-∣वकाः, वीर-श्रावकदेव-त्वं, देवाग-मानागम-कारणानि ३२३

कहेवाय छे. ' अद्दाग ' त्ति ० १ जे श्रावक साधुओद्वारा वर्णन कराता उत्सर्ग अने अपवादादि आगमना भावोने यथावत-जेम छे तेम ग्रहण करे छे अर्थात समीपमां रहेला पदार्थीने जेम आरीसी ग्रहण करे छे तेम जे(तत्त्वने) ग्रहण करे छे ते आदर्श समान, २ पताकानी माफक विचित्र देशनादिरूप वायुवडे चोतरफथी खेंचातो होवाथी जेनो अस्थिर-अनिश्चित बोध छे ते पताका समान, ३ जे श्रावक गीतार्थ मुनिनी देशनावडे पण कोई पण कदाग्रहथी चळावी शकातो नथी, अनमन स्व-भावरूप बोधने लईने समजाववा योग्य नथी अर्थात् दुराग्रही स्थाणु(दुंठा) समान छे, ४ जे श्रावक समजान्यो छतो मात्र पोताना कदाग्रहथी चलित थतो नथी एटछं ज नहिं परंतु प्रज्ञापक(समजावनार)ने दुर्वचनरूप कंटकवडे वींधे छे ते खरकंटक समान छे. अर्थात् खर निरंतर अथवा निष्ठुर, कांटा छे जेने विषे ते खरकंटक-बावळ विगेरेनी डाळ, जे लोकमां ' खरण ' कहेवाय छे ते कपडांने वळगवाथी मात्र वस्त्रने फाडवा मात्रथी छोडे छे एटछं ज निहं परंतु तेने मुकावनार पुरुष विगेरेना हाथ पण कांटाओवडे वींघाय छे अथवा बीजाओने जे खरडे छे-लेपवाळो करे छे ते खरंट-अञ्चि विगेरे तेना जेवी, तेना कुबोधने दूर करवा माटे जे पुरुष तैयार थाय छे तेने जे संसर्ग(संबंध) मात्रथी ज दूषणवाळी करे छे. कुबोध, कुशीलता अने अपकीत्तिने उत्पन्न करवाथी अथवा आ उत्सन्नप्ररूपक छे एम असत् दृषणनी उद्भावक-प्रचार करवावडे खरंट समान छे. (स्व॰ ३२१) श्रमणोपासकना अधिकारधी कहे छे-' समणस्से 'त्यादि॰ स्त्र सरळ छे. विशेष ए के-उपासकद्शांगस्त्रमां कहेला आनंदादि दश श्रावकोनी सौधर्मदेवलोकमां चार पत्योपमंनी स्थिति कहेली छे. (स्० ३२२) देवना अधिकारथी ज कहे छे-' चउही 'त्यादि० त्रीजा स्थानकना त्रीजा उद्देशाने विषे प्रायः आ व्याख्यान करायेलुं छे श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद स ४६६ ॥

तथापि कंईक कहेवाय छे-' चउहिं ठाणेहिं नो संचाएइचि' अहिं संबंध ए छे के-देवलोकने विषे-देवोनी अंदर ' हठवं'-शीघ्र ' संचाएइत्ति'-समर्थ छे. मनोज्ञ शब्दादिरूप काममोगोने विषे मूर्व्छितनी जेम मृढ, केम के-अनित्यादि स्वरूपवाळा कामभोगना बोधमां समर्थ न होवाथी ' गृद्धः '-तेनी आकांक्षावाळो अर्थात् अनुप्तः ' प्रथित '(बंधायेल)नी जेम प्रथित अर्थात् शब्दादि विषयमां स्नेहरूप दोरडीवडे गुंथायेल 'अध्युपपन्नः'-अत्यंत तन्मय (उक्त कारणने लईने मनुष्य संबंधी) कामभोगने विषे आदरवाळो थतो नथी. आ वस्तुभृत छ एम पण मानतो नथी अर्थात तुच्छ गणे छ तथा तेओने विषे अर्थ बंधन करतो नथी अर्थात एओनी साथे मारे कांईपण प्रयोजन नथी एम निश्चय करे छे, आ मने प्राप्त थाओ एवी रीते तेओने विषे निदान करतो नथी तथा तेओने विषे स्थितिप्रकल्प-रहेवारूप विकल्प अर्थात एओने विषे हुं रहुं के मने ए रहो-स्थिर थाओ, आबा प्रकारना विकल्पने अथवा स्थिति-मर्यादावडे प्रकृष्ट कल्प-आचाररूप स्थितिप्रकल्पने करतो नथी अर्थात करवा माटे आरंभ करतो नथी. 'प्रकरोति ' क्रियापदमां 'प्र 'शब्दनो शरुआतरूप अर्थ छे. एवी रीते दिच्य देव संबंधी विषयने विषे आसक्तिरूप एक कारण छे जेथी तत्काल उत्पन्न थयेल कामभोगने विषे मुर्चिछतादि विशेषणवाळो आ देव छे तथा तेने मनुष्य संबंधी प्रेम विच्छिन्न थयेल छे माटे दिन्य प्रेमनुं संक्रमण थयेल छे आ बीज़ं कारण छे. तथा आ देव जे हेतुथी कामभोगने विषे मृचिंछतादि विशेषणवाळो होय छे तेथी तेना प्रतिबंधने लईने 'तस्स ण 'मिल्यादि० देवना कार्यने विषे आधीन थवार्थी मनुष्यना कार्यमां आधीनपणुं नथी. आ त्रीजं कारण छे. तथा दिन्यभोगने विषे मूर्न्छितादि विशेषणथी तेने मनुष्य संबंधी आ गंध प्रतिकूल-दिन्य गंधथी

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ मातापित्रा-दिसमाःश्रा-विकाः, वीर-श्रावकदेव-त्वं, देवाग मानागम-कारणानि स्रु० ३२१-३२३ 11 854 11 विपरीत छे अने प्रतिलोम पण छे केमके ते इंद्रिय अने मनने आह्लाद करनार नथी अथवा आ बन्ने शब्द एकार्थ वाचक छे, परंतु अत्यंत अमनोज्ञपणाने सूचववा माटे वे शब्द कहेला छे. यावत् शब्द परिमाणना अर्थमां छे. ' चत्तारि पंचे ' ति० आ शब्द विकल्प बताववा माटे छे. कदाचित भरतादि क्षेत्रने विषे एकांत सुषमादि समय(आरा)मां चारसो योजन ज, अने अन्य काळमां तो पांचसो योजन पण होय छे, केमके मनुष्य अने पंचेंद्रियतिर्यंचोनी बहुलताने लईने औदारिक शरीरोनी बहुलता होवाथी तेना अवयवो अने तेना मळोनी पुष्कळताथी दुरभिगंधनी प्रचुरता होय छे. मनुष्यक्षेत्रमां आववानी इच्छावाळा देवोने मनुष्यक्षेत्रथी गंध आवे छे, आम मनुष्यक्षेत्रं अशुभस्वरूप ज कह्युं, परंतु देव अथवा अन्य मनुष्यादि नव योजन करतां विशेष दूरथी आवती गंधने जाणता नथी. अथवा आ उक्त(आगम)वचनथी जे इंद्रियना विषयनुं प्रमाण कहुं छे ते औदारिक शरीर संबंधी इंद्रियोनी अपेक्षाए संभवित छे, नहिंतर लक्षादि योजन प्रमाण-वाळा विमानोने विषे दूर रहेला देवो (सुघोषा)घंटाना शब्दने केम सांभळी शके ? जे बीजाने संभळाय छे ते प्रतिशब्द॰ द्वारा अथवा बीजी रीते. नरभवतुं अशुभपणुं आ मतुष्यलोकमां न आववातुं चोथुं कारण कह्युं. शेष सुगम छे. आववाना कारणो प्रायः पूर्वनी माफक छे तथापि कंईक विशेष कहेवामां आवे छे के-कामभोगने विषे अमुर्च्छितादि विशेषणवाळो जे देव, तेने ' एव 'मिति ॰ आवा प्रकारतुं मन थाय छे के-मारा उपकारक कोण छे ? ते कहे छे-आचार्य छे. अहिं ' इति ' शब्द सभीपपणुं बताववामां अने 'वा ' शब्द विकल्पना अर्थमां छे. एम आगळना सूत्रमां पण जाणवुं. क्यांक इति शब्द नथी देखातो त्यां तो सूत्र सुगम ज छे. अहिं आचार्य-प्रतिबोधक, दीक्षा आपनार अथवा अनुयोगाचार्य-वाचना आपनार, उपाध्याय-

भीस्था-नाङ्गद्धत्र साजुवाद ॥ ४६७॥

सूत्र भणावनार, आचार्यद्वारा उपदेश करायेल वैयावृत्यादिने विषे साधुओने जे प्रवर्त्तावे छे ते प्रवर्ती-प्रवर्त्तकद्वारा जोडा-येल संयमयोगने विष सीदाता(खेद पामता) साधुओने जे स्थिर करे ते स्थिवर, गण है विद्यमान जेने ते गणी-गणाचार्य. गणधर-जिनेश्वरना शिष्यविशेष अथवा आर्थिका साध्वीओ प्रत्ये सावधान रहेनार(रक्षा करनार) सिद्धांतमां प्रसिद्ध साधु विशेष,* 'गणस्यावच्छेदो'-गच्छनो देश-विभाग, अम्रुक मुनिओना सम्रुदाय छे जैने ते गणावच्छेदक, ते अम्रुक साधुओने लईने गच्छना आधारने माटे उपिध विगेरेनी गवेषणाने माटे विचरे छे 'इम 'त्ति ०आ प्रत्यक्ष रहेल रूपवाळी अर्थात काळांतरने विषे पण अन्य स्वरूपने निहं भजनारी तेवी दिव्या-स्वर्गने विषे थयेली अथवा प्रधान(श्रेष्ठ) विमान, रत्नादि रूप देवनी ऋद्धि, द्यत-शरीर-थी उत्पन्न थयेली कांति अथवा युति-इष्ट परिवारादि संयोगलक्षण युक्ति, 'लब्धा '-जन्मांतरमां उपार्जन करेली. ' प्राप्ता'-वर्त्तमानमां मळेली, ' अभिसमन्वागता '-भोग्यअवस्थाने प्राप्त थयेली, ' तं 'ति० ते कारणथी ते भगवंतो-पूज्योने स्तुतिओवडे वंदन करुं, प्रणामवडे नमन करुं, आदर करवावडे अथवा वस्त्रादिवडे सत्कार करुं, उचित प्रतिपत्ति-उपचाररूप सेवावडे सन्मान करुं, कल्याणस्वरूप, मंगलस्वरूप, देवस्वरूप अने चैत्यस्वरूप आवी बुद्धिवडे सेवा करुं-आ देवने आववातुं एक कारण. श्रुतज्ञानादिवडे ज्ञानी इत्यादि बिजुं कारण. तथा ' भाया इ वा भज्जा इ वा भइणी इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वे 'ति॰ अर्थात् भाई, भार्या, भगिनी, पुत्र अने पुत्री. स्तुषा पुत्रनी भार्या 'तं ' उपरोक्त मारा # कोई साध्वी रूपसंपन्न होय अने तेनुं शील भंग करवा माटे दुष्ट राजादि तत्पर थयेल होय तेवी साध्वीओनी संभाळ करनार

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ ¥ ¥ मातापित्रा-दिसमाः श्रावकाः, 🗩 वीरश्रावक-🗶 देवत्वं,देवा-गमानाग-मकारणानि स्र० ३२१-३२३ ॥ ४६७ ॥

इषुशास्त्रविशारद सहस्रयोधी मुनि (शशकभसकादि मुनिनो जेम) तेओने अन्यत्र रुई नईने पण तेना शीलनो रक्षा करे छे.

संबंधीओं छे तेथी तेओनी समीपे हुं प्रगट थाउं. 'ता ' तावत 'मे ' मम (मारी) ऋदिने तेओ जुओ इमे ' आ पाठांतर छे–आ त्रीजुं कारण. तथा मित्र–पाछळथी स्नेही थयेल, सखा–बालपणथी स्नेही, ' सुहृत '–सज्जन हितेषी, सहाय-सहचारी अथवा एक कार्यमां बन्ने प्रवर्तनार, संगत-सोबत छ विद्यमान जेने ते सांगतिक-परिचित, तेओने 'अम्हे 'त्ति अमारी साथे 'अन्नमन्नस्स 'त्ति परस्पर 'संगारे 'त्ति अंतेत, प्रतिश्रुत-अंगीकार करेल छे (कब्र-लात आपेल छे) ' जे मो(मे)'ित्ति वेवलोकमांथी आपणा बन्नेमां जे प्रथम च्यवे तेने पाछळ रहेलाए प्रतिबोध आपवो ते चोधं कारण छे. आ मनुष्यभवने विषे संकेत करेल बने जणमांना पूर्व लक्षादि आयुष्यवाळो एक भवनपति विगेरेमां उत्पन्न थईने अने त्यांथी च्यवीने मनुष्यपणाए उत्पन्न थाय तेने बीजो पुरुष अहिं मनुष्यमां पूर्वलक्षादि जीवीने, सौधर्मादि कल्पमां उत्पन्न थईने संबोधन करवा माटे ज्यारे अहिं आवे छे त्यारे आ संकेतरूप चोशुं कारण जाणवुं. इत्येतैः इत्यादि निगमन सत्र हे (सू० ३२३) हमणा ज आगमन कहुं, तेमां तेओनावडे उद्योत थाय छे माटे लोकमां तेना विपक्षभृत अंधकारने कहे छे-चउहिं ठाणेहिं लोगंधगारे सिया, तं०-अरहंतेहिं वोच्छिजमाणेहिं, अरहंतपन्नत्ते धम्मे वोच्छिजमाणे, पुव्वगते वोच्छिजमाणे, जायतेते वोच्छिजमाणे चउहिं ठाणेहिं लोउजोते सिता, तं - अरहं ते हिं जायमाणे हिं अरहं ते हिं पव्वतमाणे हिं अरहं ताणं णाणु प्यमहिमासु अरहं ताणं परिनिव्वाणमहिमासु ४, एवं देवंधगारे देवुज्ञोते देवसन्निवाते देवुक्कलिताते देवकहकहते. चउहिं

भीस्था-नाङ्ग सत्र सानुवाद 11 845 11 ठाणेहिं देविंदा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छंति एवं जहा तिठाणे जाव लोगंतिता देवा माणुस्सं लोगं हव्यमागच्छेजा, तं०-अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव अरिहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु। सू० ३२४

मूलार्थः-चार कारणवडे लोकमां द्रव्यथी अने भावथी पण अंधकार थाय छे, ते आ प्रमाणे-१ अरिहंतोनो विच्छेद थये छते-मोक्ष गये छते, २ अरिहंते कहेल धर्मनो विच्छेद थये छते, ३ पूर्वगत-उत्पाद विगेरे पूर्वनो विच्छेद थये छते, ४ अमिनो विच्छेद थये छते-अग्निना विच्छेदमां प्रायः द्रव्यथी अंधकार थाय छे. चार कारणवडे लोकमां द्रव्यथी अने भावथी उद्योत थाय छे, ते आ प्रमाणे--१ अरिहंतोनो जन्म थये छते, २ अरिहंतोए दीक्षा लीधे छते, ३ अरिहंतोने केवलज्ञान उत्पन्न थवाना महोत्सवोने विषे अने ४ अरिइंतोना निर्वाणना महोत्सवोने विषे. एवी रीते लोक अंधकारनी जेम देवना स्थानमां अरि-हतादिना विच्छेदकालमां अंधकार थाय छे, अने अरिहंतादिना जन्म विगेरेने विषे देवना स्थानमां उद्योत थाय छे, देवनी समुदाय एकत्र थाय छे, देवोने उत्साह थाय छे अने देवोने विषे आनंदजन्य कोळाहळ थाय छे. चार कारणवडे देवेंद्रो मतु-ब्यलोकने विषे शीघ्र आवे छे. एवी रीते जेम त्रीजा ठाणामां कह्युं छे तेम यावत् लोकांतिक देवो मनुष्यलोकमां शीघ्र आवे छे त्यां सुधी कहेबुं, ते आ प्रमाणे-अरिहंतोनी जन्म थये छते यावत् अरिहंतोना निर्वाण महोत्सवीने विषे. (स॰ ३२४)

टीकार्थ:-'चउही'त्यादि० स्पष्ट छे. विशेष ए के-लोकने विषे द्रव्यथी अने भावथी अंधकार ज्यां जे थाय ते जाणवुं. संभावना कराय छे के-अरिहतादिना विच्छेदमां द्रव्यथी अंधकार थाय छे केम के तेना उत्पादरूप छे. छत्रभंग विगेरे थये

४ स्थान-काभ्ययने उदेशः ३ लोकान्ध-कारादिः स० ३२४

रजोद्घात-आंधी चडवानी जेम. अग्निना विच्छेदमां द्रव्यथी ज अंधकार थाय छे केमके तथाप्रकारनो स्वभाव होय छे अथवा दीपक विगेरेनो अभाव छे अथवा भावथी पण अंधकार थाय छे केमके एकांत दुषम विगेरे काळमां आगम विगेरेनो अभाव होय छे. पूर्वे देवतुं आगमन कहुं, हवे दुःखशय्या सूत्रनी पहेला देवाधिकारविशिष्ट सूत्रना विस्तारने कहे छे-'चउही'त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-चार स्थानकोने विषे पण देवोना आगमनथी लोकमां उद्योत थाय छे. जन्म, दीक्षा अने ज्ञानोत्पादने विषे तो स्वरूपथी पण उद्योत थाय छे. 'एविमिति' जेम लोकांधकार कह्यो तेम देवांधकार पण चार कारणोवडे थाय छे. देवोनां स्था-नोमां पण अरिहंतादिना विच्छेदकाळमां वस्तुना माहात्म्यथी क्षणमात्र अंधकार थाय छे. एवी रीते अईतोना जन्म विगेरेने विषे देवोना स्थानोमां उद्योत थाय छे. देवसनिपात-देवोनो समवाय(मिलाप), एवी ज रीते देवोत्कलिका-देवोनी लहेरी (आनंद-जन्य कछोल), ' देवकहकहोत्ति ' देवोनो प्रमोदपूर्वक कलकल (महाध्वनि) एमज देवेंद्रो, मनुष्यलोकमां अरिहंतादिना जन्म विगेरेमां आवे, जेम त्रीजा स्थानकना प्रथम उद्देशकमां कह्युं छे तेम देवेंद्रोना आगमन सत्रथी आरंभीने लोकांतिकसूत्र पर्यंत कहेवुं. मात्र अहिं परिनिर्वाणना महोत्सवने विषे आवे छे ते चोधुं कारण विशेष छे. (सू० ३२४) प्रथम अरिहंतीना जन्म विगरेना व्यतिकरद्वारा देवोतुं आगमन कहुं, हवे अरिहंतीना ज प्रवचनना अर्थने विषे दुःस्थित-दुष्ट रीते रहेल साधुने दु:खशय्याओ अने सुस्थित-सारी रीते रहेलने सुखशय्याओ होय छे ते हेतुथी बंने सूत्र कहे छे.

चत्तारि दुहसेजाओ पं० तं०-तत्थ खलु इमा पढमा दुहसेजा तं०-से णं मुंडे भविता अगारातो

હજ

भीस्था नाङ्गदत्र सानुवाद ॥ ४६९ ॥

अणगारियं पव्वतिते निगांथे पावयणे संकिते कंखिते वितिगिच्छिते भेयसमावन्ने कलुससमावन्ने नि-गांथं पावयणं णो सदद्दति णो पत्तियति णो रोएइ, निगांथं पावयणं असद्द्वमाणे अपत्तितमाणे अ-रोएमाणे मणं उच्चावतं नियच्छति विणिघातमावज्जति पढमा दुहसेज्जा १, अहावरा दोचा दुहसेज्जा से ण मुंडे भवित्ता अगारातो जाव पव्वतिते सएणं लाभेणं णो तुस्सति परस्स लाभमासाएति पीहेति पत्थेति अभिलसति परस्स लाभामासाएमाणे जाव अभिलसमाणे मणं उच्चावयं नियच्छइ विणिघातमावज्ञति दोच्चा दुहसेजा २, अहावरा तचा दुहसेज्ञा-से णं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएइ जाव अभिलसति दिव्वमाणुस्सए कामभोगे आसाएमाणे जाव अभिलसमाणे मणं उच्चावयं नियच्छति विणिघातमावज्ञति तच्चा दुहसेजा ३, अहावरा चउत्था दुह-सेजा-से ण मुंडे जाव पव्वइए तस्स णमेवं भवति जया णं अहमगारवासमावसामि तदा णमहं संवाहणपरिमद्दणगातब्भंगगातुच्छोलणाइं लभामि जप्पभिइं च णं अहं मुंडे जाव पव्वतिते तप्पभिइं च णं अहं संवाहण जाव गातुच्छोलणाइं णो लभामि, से णं संबाहण जाव गातुच्छोलणाइं

४ स्थान-काष्ययने उद्देश: ३ दुःखसुख-शय्याः, वाचनीया-वाचनीयाः Ж सु० ३२५-

॥ ४६९ ॥

आसाएति जाव अभिलसति से णं संबाहण जाव गातुच्छोलणाई आसाएमाणे जाव मणं उच्चावतं नियच्छति विणिघायमावज्जति चउत्था दुहसेज्जा ४। चत्तारि सुहसेज्जाओ पं० तं०-तत्थ खळु इमा पढमा सुहसेजा, से णं मुंडे भिवता अगारातो अणगारियं पव्वतिए निग्गंथे पावयणे निस्संकिते णिक्कंखिते निव्वितिगिच्छिए नो भेदसमावन्ने नो कलुससमावन्ने निग्गंथं पावयणं सद्दइ पत्तीयइ रोतेति निगांथं पावयणं सद्दहमाणे पत्तितमाणे रोएमाणे नो मणं उच्चावतं नियच्छति णो विणिघातमावज्जित पढमा सुहसेजा १, अहावरा दोचा सुहसेजा, से णं मुंडे जाव पव्वतिते सतेणं लाभेणं तुस्सति परस्स लाभं णो आसाएति णो पीहेति णो पत्थेइ णो अभिलसति परस्स लाभ-मणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे नो मणं उच्चावतं णियच्छति णो विणिघातमावज्जति, दोचा सुहसेजा २, अहावरा तचा सुहसेजा-से णं मुंडे जाव पव्वइए दिव्वमाणुस्सए कामभोगे शो आसा-एति जाव नो अभिलसति दिव्वमाणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे नो मणं उच्चावतं नियच्छति णो विणिघातमावज्ञति तच्चा सुहसेज्ञा ३, अहावरा चउतथा सुहसेज्ञा-से

भीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद ॥ ४७०॥ Ж

णं मुंडे जाव पट्वतिते तस्स णं एवं भवति-जइ ताव अरहंता भगवंतो हट्टा आरोग्गा बिळया कछसरीरा अन्नयराइं ओरालाइं कछाणाइं विउलाइं पयताइं पगाहिताइं महाणुभागाइं कम्मक्ख-यकारणाई तवोकम्माई पडिवज्जंति किमंग पुण अहं अव्भोवगिमओवक्कमियं वेयणं नो सम्मं स-हामि खमामि तितिक्खेभि अहियासेमि ममं च णं अब्भोवगमिओवक्कमियं सम्ममसहमाणस्स अक्खममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणिहयासेमाणस्स किं मन्ने कज्जति ?, एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जति. ममं च णं अब्भोवगमिओ जाव सम्मं सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स किं मन्ने कजाति ? एगंतसो मे निजरा कजाति, चउत्था सुहसेजा ४ । सू० ३२५, चत्तारि अवायणिजा पं० तं - अविणीए वीगईपडिबद्धे अविओसावितपाहुडे माई । चत्तारि वातणिजा पं० तं०-विणीते अविगतीपाडिबन्धे वितोसवितपाहुडे अमाती। सृ० ३२६

मूलार्थः – चार प्रकारनी दुःख देनारी दुःखशय्याओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे -पहेली दुःखशय्या आन्कोईक भारे -कर्मी जीव, द्रव्य तथा भावथी मुंड थईने, गृहवासथी नीकळीने दीक्षित थयेल, ते निर्प्रंथ प्रश्चनमां संका सहित, आकांक्षा सहित, ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ दुःखसुख-शय्याः, वाचनीया-वाचनीयाः स्० ३२५-

X X X X 11 800 11

विचिकित्सा (धर्मना फळनो संदेह) सहित, आ साचुं के ते साचुं ? एम भेद (द्विधा)भावने पामेल अने धर्ममां विपरीत बुद्धिवाळो थयो थको निर्मेथ प्रवचनने सद्हतो नथी, प्रतीति करतो नथी, रुचि करतो नथी, निर्मेथ प्रवचनने विषे श्रद्धा न करतो थको, प्रतीति न करतो थको अने रुचि न करतो थको मनने ऊंचुंनीचुं (डामाडोळ) करे छे अने धर्मथी अष्ट थाय छे, आ प्रथम दुःखशय्या कही. हवे बीजी दुःखशय्या कहे छे-कोईक मुंड थईने, गृहवासथी नीकळीने यावत् दीक्षित थयेल, ते स्वकीय अञ्चनादिना लाभवंड संताप पामतो नथी परंतु अन्य द्वारा लाभ मेळववानी आञा करे छे, स्पृही करे छे, प्रार्थना करे छे, अभिलापा-अधिक इच्छा करे छे, बीजाद्वारा लाभनी आज्ञा करतो थको यावत् अभिलापा करतो थको मनने ऊंचुंनीचुं करे छे अने धर्मथी अष्ट थाय छे, आ बीजी दुःखशच्या कही. हवे त्रीजी दुःखशच्या कहे छे-कोईक मुंड थईने यावत् दीक्षित थयेल, ते दिव्य(श्रेष्ठ) मनुष्य संबंधी कामभोगनी आज्ञा करे छे यावत् अभिलापा करे छे, दिव्य मनुष्य संबंधी कामभोगने विषे आज्ञा करतो थको यावत् अभिलाषा करतो थको मनने ऊंचुं नीचुं करे छे अने धर्मथी अष्ट थाय छे, आ त्रीजी दुःखशय्या कही. हवे चोथी दुःखशय्या कहे छे-कोईक मुंड थईने यावत् दीक्षित थयेल, तेने एवा विचार थाय छे के-ज्यारे हुं गृहवासमां वसतो हतो त्यारे संवाहण-हाडकाने सुखरूप मईनविशेष (चंपी), पीठी विगेरेनुं मर्दन मात्र, श्चरीरने तेल विगरेथी चोपडवुं अने श्वरीरना प्रक्षालन(स्नान)ने हुं मेळवतो हतो परंतु ने दिवसथी हुं मुंड धईने दीक्षित थया बाद संबाहण (चंपी) यावत् शरीरना पक्षालनने हुं पामतो नथी, ते साधु संबाधन(चंपी) यावत् गात्र-प्रक्षालननी आशा करे छे यावत् अभिलाषा करे छे, ते संबाधन यावत गात्रप्रक्षालननी आशाने करतो थको यावत् मनने श्रीस्था-नाङ्गस्त्र साजुवाद ॥ ४७१ ॥

ऊंचुंनीचुं करे छे अने धर्मथी अष्ट थाय छे, आ चोथी दुःखशय्या कही. चार प्रकारनी सुख देनारी सुखशय्याओ कहेली हो, ते आ प्रमाणे-तेमां निश्चे आ प्रथम सुखशय्या-कोईक लघुकर्मा जीव, सुंड थईने, गृहवासथी नीकळीने दीक्षित थयेल, ते साधु निर्मेथ प्रवचनने विषे शंका रहित, आकांक्षा रहित, विचिकित्सा रहित द्विधाभावने नहिं पामेल-निश्चित, कळपभावने नहिं पामेल अर्थात् निर्मेळ बुद्धिवाळो निर्प्रथ प्रवचनने सद्दे छे, प्रतीति करे छे, रुचि करे छे, निर्प्रथ प्रवचनने सद्दतो थको, प्रतीति करतो थको अने रुचि करतो थको मनने ऊंचुंनीचुं करतो नथी-स्थिर राखे छे अने धर्मथी अष्ट थतो नथी-धर्मने पाळे है, आ प्रथम सुखश्चरया कही. हवे बीजी सुखश्चरया कहे छे-कोईक मुंड थईने यावत् दीक्षित थयेल, ते पोते मेळवेल अञ्चनादिना लाभवडे संतोष पामे छे. बीजाद्वारा लाभ मेळववानी आञा करतो नथी, इच्छा करतो नथी, प्रार्थना करतो नथी. अधिक अभिलाषा करतो नथी, परना लाभनी आञ्चाने न करतो थको यावत अभिलाषा न करतो थको मनने ऊंचुंनीचुं करतो नथी अने धर्मथी अष्ट थतो नथी, आ बीजी सुखशय्या कही. हवे त्रीजी सुखशय्या कहे छे-कोईक मुंड यावत दीक्षित थयेल, ते दिव्य(श्रेष्ठ) मनुष्य संबंधी कामभोगने विषे आज्ञा करतो नथी यावत अभिलाषा करतो नथी. दिव्य मनुष्य संबंधी कामभोगने विषे आशा न करतो थको यावत अभिलाषा न करतो थको मनने ऊंचंनीचं करतो अने धर्मथी पतित थतो नथी, आ त्रीजी सुखश्रया कही. हवे चोथी सुखश्रया कहे छे-कोईक मुंड थईने यावत दीक्षित थयेल, तेने एवो विचार थाय छे के-जो ते आनंदित, रोग रहित, बळवान अने श्रेष्ठ शरीरवाळा एवा अरिहंत भगवंतो बार प्रकारना तपमांथी कोई पण एक, उदार, कल्याणकारी, घणा दिवस सुधी उत्कृष्ट संयमयुक्त, आदरपूर्वक, अचित्य शक्तियुक्त

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ दुःखसुख-शय्याः, वाचनीया-वाचनीयाः स् २ ३ २ ५-३ २ ६

॥ ४७१ ॥

अने कर्मक्षयना कारणभृत एवा तपरूप कर्म (क्रिया)ने करे छे, तो पछी हुं आभ्युपगिमकी (स्वयं स्वीकारेली लोचादि क्रिया) अने औपक्रमिकी (कर्मना उदयने लईने थयेली) ज्वरादि वेदनाक्रियाने हुं सम्यक् सहन करतो नथी, क्षमा करतो नथी, तितिक्षा-अदीनपणे सहन करतो नथी अने वेदनामां स्वस्थ रहेतो नथी. आभ्युपगिमक अने औपक्रमिक वेदनाने सम्यक् रीते सहन निह करनार, क्षमा निह करनार, तितिक्षा निह करनार अने स्वस्थ निह रहेनार एवा मने हुं प्राप्त थाय है ? एकांतथी मने पापकर्म प्राप्त थाय छे. आभ्युपगिमक यावत् सम्यक् सहन करनार यावत् अध्यासन करनार-स्वस्थ रहेनार एवा मने शुं प्राप्त थाय छे ? एकांतथी मने निर्क्तरा थाय छे. आ चोथी सुखशय्या छे. (स० ३२५) चार प्रकारना पुरुषो सिद्धांतनी वाचनाने अयोग्य छे, ते आ प्रमाणे-१ अविनीत, २ दूध विगेर विगयमां प्रतिबद्ध (बंधायेल), लालची, ३ अनुपन्नांत अधिकरणवाळो-क्रोधी अने ४ कपटी। चार प्रकारना पुरुषो सिद्धांतनी वाचनाने योग्य छे,ते आ प्रमाणे-१ विनीत, २ विगयमां अप्रतिबद्ध-आसक्ति रहित, ३ उपशांत अधिकरणवाळी-क्रोध रहित अने ४ कपट रहित. (स० ३२६) टीकार्थ:-'चत्तारी'त्यादि० दुःख आपनारी चार संख्यावाळी शय्याओ ते दुःखशय्याओ. द्रव्यथी तथा-

प्रकारनी निहं (अयोग्य) खट्वा (ढोलणी) विगेरे शच्या, भावशी तो दुष्ट चित्तवृत्तिवडे दुष्ट श्रमणपणाना स्वभाववाळी शच्याओ. १ प्रवचनअश्रद्धान, २ परलाभप्रार्थन, ३ कामाशंसन अने ४ स्नानादिप्रार्थनरूप भदवाळी स्वत्रमां कहेली छे. 'तन्त्रे'ति० ते चार शच्याना मध्यमां 'से 'इति० कोईक बहुलकर्मी ('से 'शब्द 'अथ ' ना अर्थवाळो छे. 'अयं ''स ''च'वाक्यना उपक्षेपमां छे) 'प्रवचने'-शासनने विषे (अहिं दीर्घपणुं प्रकटादि गणथी थयेल छे)शंकित- भीस्था-नाङ्गस्त्रत्र सानुवाद श ४७२ ॥

एकभाव विषयक संशय सहित, कांक्षित-मतांतर (अन्य मत) पण सारो छे एवी बुद्धिवाळो,विचिकित्सित-फळ प्रत्ये शंकावाळो, मेदसमापन-बुद्धिवंडे द्विधाभावने पामेल अर्थात जिनशासनने विषे कहेलुं आ बधुं आ प्रमाणे छे के बीजी रीते छे ? कलुप-समापन-'आ एम नथी ज' एवी रीते विपरीत बुद्धिवाळो, 'न श्रद्धते '-'आ एम छ' एवी रीते सामान्यथी श्रद्धा करतो नथी, ' नो प्रत्येति '-प्रीतियंडे अंगीकार करतो नथी, ' नो रोचयति '-अतिशय अभिलापवंडे आसेवनाना सन्मुखपणाए रुचि करतो नथी. मनने ' उच्चावचम् '-असमंजस (समजण वगरनुं) करे छे.तेथी विनिधात-धर्मेनाश अथवा संसारने प्राप्त थाय छे. एवी रीते आ साधु शय्यामां दुः खपूर्वक रहे छे. आ पहेली दुः खशय्या.तथा पोतानावडे जे मेळवाय छे अथवा मेळवतुं ते लाभ-अन्नादि अथवा रत्नादिनो लाम, तेनावडे आञा करे छे, ते अवस्य मने आपसे एवी रीते आस्वादे छे अर्थात् बीजाथी जो मळे तो ज खाय,स्पृह्यति -वांछे छे, प्रार्थयति'-याचना करे छे, 'अभिलवति'-प्राप्त थये छते पण अधिकतर लाभने इच्छे छे. शेष स्पष्टार्थवाछं छे. एवी रीते पण आ दुःखमां रहे छे तेथी बीजी दुःखशय्या. त्रीजी सुगम छे. अगारवास-घरवास, तेमां वर्ततो हतो (त्यारे) संवाधन-शरीरना हाडकांने सुखत्वादिवडे निपुणताथी मर्दनिविशेष, परिमर्दन -लोट विगेरेथी मसळवा मात्र, केम के 'परि' शब्दनी अहिं धातु अर्थमां मात्र वृत्ति छे (विशेष अर्थमां नथी, ' गात्राभ्यंग '-तेलादिवडे अंगने चोषडवुं, 'गात्रोत्क्षालन'-अंगने घोतुं.आ उक्त वस्तुना लाभने हुं (गृहवासमां) मेळवतो हतो परंतु कोई निषेध करनार न हतो. शेप स्वरूप सुगम छे.आ चोथी दुःखशस्या छे. द खशस्याथी विषरीत रूपवाळी सुखशस्याओ पूर्वनी जेम जाणवी.विशेष ए के--'हट्ट'ित्त० शोकना अभावधी हिंपतनी जेम आनंदित, 'अरोगा ' ज्वरादिथी रहित, 'बलिकाः '-पुष्ट, 'कल्पदारीराः ' सुंदर

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः ३ ंदु!खसुख-श्याः, वाचनीया-वाचनीयाः स्रु० ३२५-३२६

11 803 1

शरीरवाळा, अन्यतर अनशन विगेरे कोई पण तपमांथी एक, उदार-आशंसा विगेरे दोषना अभावने लईने उदारचिचयुक्त, ' कल्याणानि '--मंगलस्वरूप होवाथी, ' विपुल '-घणा दिन पर्यंत करवाथी, प्रयत-उत्कृष्ट संयम युक्त होवाथी, प्रगृहित-आदर युक्त स्वीकारेल होवाथी, महानुभाग-अत्यंत शक्ति युक्त होवाथी, समृद्ध-ऋद्विविशेषना कारणभूत होवाथी, कर्मक्षय-ना कारणभूत मोक्षना साधक होवाथी, तपकर्म-तपरूप क्रियानो आश्रय करे हे ' किमंग पुण ' ' किम् ' प्रश्नना अर्थमां ेछे ' अंग ' शब्द आमंत्रण–संबोधनना अर्थमां अथवा अलंकारमां छे. ' पुनः ' शब्द पूर्वोक्त शब्दथी भिन्न अर्थने देखाड-वामां छे. शिरनो लोच अने ब्रह्मचर्यादिनो स्वीकार करवामां थयेल ते आस्युपगिमकी जेनावडे आयुष्यनो उपक्रम(घटाडो) थाय ते उपऋम-ज्वर अने अतिसार विगेरे व्याधिओमां थयेल ते औपऋमिकी, एवी आभ्युपगिमकी अने औपऋमिकी ते वेदना-दुःखने तेनी उत्पत्तिमां सन्मुख जवावडे हुं सहन करुं ' सिंह ' धातु सन्मुख अर्थमां छे, जेम आसुभट ते सुभटने सहन करे छे अर्थात् तेथी भागतो नथी. पोताने विषे अथवा परने विषे क्रोध विना क्षमा करुं, अदीनपणावडे: तितिक्षा करुं, अत्यंत स्वस्थतावडे ते ज वेदनामां हुं रहुं-अध्यासन करुं अथवा ' सहामि ' विगेर चारे शब्दो एकार्थवाळा छे. ' किं मन्ने 'ति० 'मन्ये' शब्द निपात छे ते वितर्के अर्थवाळो छे. ' क्रियते ' थाय छे. अर्थात् द्युं थाय छे ? ' एगंतसो ' त्ति० एकांते-सर्वथा. [वेदनाने सहन निह करनाराओने एकांते पाप थाय छे अने सहन करनाराओने एकांते निर्श्चरा थाय छे] (स्र० ३२५) दुःखश्चय्यावाळा निर्शुण अने सुखश्चय्यावाळा गुणवाळा छे आ कारणथी निर्शुण अने सद्गुणविशिष्टोने अवाचनीयत्व अने वाचनीयत्व बताववाने माटे सूत्रद्वय कहे छे जे सुगम छे. विशेष ए के-' वी यइ ' त्ति ० विकृति-दूध

श्रीस्था-नाङ्गपत्र सानुवाद ॥ ४७३ ॥

' अव्यवद्यामितप्राभृत 'इति० प्राभृत-अधिकरणनो करनार कोप (गुस्सो) (स्व० ३२६) हमणा ज वाचनाने योग्य अने वाचनाने अयोग्य पुरुषो कह्या, माटे पुरुषना अधिकारथी पुरुषविशेषने प्रतिपादन करवामां तत्पर चतुर्भगीवडे युक्त स्वत्रनो प्रवंध कहे छे—

चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-आतंभरे नाममेगे नो परंभरे, परंभरे नाममेगे नो आतंभरे, एगे आतंभरेवि परंभरेवि, एगे नो आयंभरे नो परंभरे (४) १, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-दुग्गए नाममेगे दुगाए, दुगाए नाममेगे सुगाते, सुगाते नाममेगे दुगाए, सुगाए नाममेगे सुगाए २. चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-दुग्गते नाममेगे दुव्वए, दुग्गए नाममेगे सुव्वए, सुग्गए नाममेगे दुव्वते, सुगगए नाममेगे सुव्वए ३, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-दुग्गते नाममेगे दुप्पडिताणंदे, दुगात नाममेगे सूप्पिडताणंदे ४, चतारि पुरिसजाया पं० तं०-दुग्गते नाममेगे दुग्गतिगामी, दुग्गए नाममेगे सुग्गतिगामी ५, चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं०-दुग्गते नाममेगे दुगातिं गते, दुग्गते नाममेगे सुगतिं गते ६, चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं॰-तमे नाममेगे तमे, तमे नाममेगे जोती, जोती नाममेगे तमे, जोती नाममेगे जोती ७, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-तमे नाममेगे तमबले, तमे ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ आत्मंभ-रित्नादि चतुर्भङ्ग्यः स्र० ३२७

॥ ४७३ ॥

नाममेगे जोतीबले, जोती नाममेगे तमबले, जोती नाममेगे जोतीबले ८, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-तमे नाममेगे तमबलपलज्जणे, तमे नाममेगे जोतीबलपलज्जणे ९, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-परिन्नायकम्मे नाममेगे नो परिन्नातसन्ने, परिन्नातसन्ने णाममेगे णो परिन्नातकम्मे एगे परिन्नात-कम्मेवि० १०, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-परिन्नायकम्मे णाममेगे नो परिन्नातगिहावासे. परि-न्नायगिहावासे णामं एगे णो परिन्नातकम्मे ११, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-परिण्णायसन्ने णामभेगे नो परिन्नातिगहावासे, परिन्नातिगहावासे णामं एगे० १२. चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-इहत्थे णाममेगे नो परत्थे, परत्थे नाममेगे नो इहत्थे १३, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-एगेण नाममेगे वहुति एगेणं हायति, एगेणं णाममेगे वहुइ दोहिं हायति, दोहिं णाममेगे वहुति एगेणं हातित, एगे दोहिं नाममेगे वहृति दोहिं हायित १४, चत्तारि कंथका पं० तं०-आइन्ने नाममेगे आइन्ने, आइन्ने नाममेगे खलुंके, खलुंके नाममेगे आइन्ने, खलुंके नाममेगे खलुंके १५, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-आइन्ने नाममेगे आइन्ने चउभंगो १६, चत्तारि कंथगा पं० तं०-

भीस्था-नामसत्र सानुवाद 11 808 II **

स्तारि ए ने अहर में स्वाप्त के अहर के सह के स्वाप्त के आतिन्ने नाममेगे आतिन्नताते विहरति, आइन्ने नाममेगे खलुंकत्ताए विहरति १७, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-आइन्ने नाममेगे आइन्नताए विहरइ, चउभंगो १८, चत्तारि पकंथगा पं० तं०-जातिसंपन्ने नाममेगे णो कुलसंपन्ने १९, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-जातिसंपन्ने नाममेगे चउभंगो २०, चत्तारि कंथगा पं० तं०-जातिसंपन्ने नाममेगे णो बलसंपन्ने २१, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जातिसंपन्ने नाममेगे णो बलसंपन्ने २२, चत्तारि कंथगा पं० तं०-जातिसंपन्ने णाममेगे णो रूवसंपन्ने २३, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-जातिसंपन्ने नाम-मेगे णो रूवसंपन्ने २४, चत्तारि कंथगा पं० तं०-जाइसंपन्ने णाममेगे णो जयसंपण्णे २५, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जातिसंपन्ने २६, एवं कुलसंपन्नेण य बलसंपण्णेण त २७, कुलसंपन्नेण य रूवसंपण्णेण त २८, कुलसंपण्णेण त जयसंपण्णेण त २९, एवं बलसंपन्नेण त रूवसंपन्नेण त ३०, बलसंपण्णेण त जयसंपण्णेण त ३१, सव्वत्थ पुरिसजाया पडिवक्खो (३२-३६), चत्तारि कंथगा पं॰ तं०-रूवसंपन्ने णाममेगे णो जयसंपन्ने ३७, एवामेव चत्तारि पुरिस-

जाया पं० तं०-रूवसंपन्ने नाममेगे णो जयसंपन्ने ३८, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-सीहत्ताते णाममेगे निक्खंते सीहत्ताते विहरइ, सीहत्ताते नाममेगे निक्खंते सियालत्ताए विहरइ, सीयालत्ताए नाममेगे निक्खंते सीहत्ताए विहरइ, सीयालताए नाममेगे निक्खंते सीयालताए विहरइ। सु०३२७ मूलार्थः-चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक पोताना आत्माने भरे छे-पोषे छे पण बीजाने भरतो नथी ते जिनकत्पिक मुनि, २ एक बीजाना आत्माने भरे छे पण पोताना आत्माने भरतो नथी ते अरिहंत, केम के पोते कृतकृत्य होय छे. ३ एक पोताना आत्माने भरे छे अने बीजाने पण भरे छे ते स्थविरकल्पी साधु, ४ एक पोताना आत्माने भरतो नथी अने बीजाने पण भरतो नथी ते मुग्ध बुद्धिवाळो साधु. (१) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक प्रथम पण दिरद्री अने पछी पण दिरद्री, २ कोईक प्रथम दिरद्री पण पछीथी धनवान, ३ कोईक प्रथम धनवान अने पछीथी दरिद्री, ४ कोईक प्रथम धनवान अने पछी पण धनवान. (२) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक दरिद्री अने दुर्वत-खराब आचारवाळो, २ कोईक दरिद्री पण सुव्रत-सदाचारवाळो, २ कोईक धनवान अने खराब आचार-वाळो, ४ कोईक धनवान अने सदाचारवाळो. (३) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक दरिद्री अने दुष्ट कार्यमां आनंद माननारो २ कोईक दिरद्री छे पण सत्कार्यमां आनंद माननारो ३ कोईक धनवान अने दुष्ट कार्यमां आनंद माननारो, ४ कोईक धनवान अने सत्कार्यमां आनंद माननारो. (४) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-

मीस्या-नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ४७५ ॥

कोईक दरिद्री छे अने दुर्गतिमां जवावाळो छे, २ कोईक दरिद्री छे पण सद्गतिमां जवावाळो छे, ३ कोईक धनवान छे अने दुर्गितिमां जवावाळो छे, ४ कोईक धनवान अने सद्गितिमां जवावाळो छे. (५) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाण-१ कोईक दरिद्री अने दुर्गतिमां गयेल छे-द्रमकवत्, २ कोईक दरिद्री पण सुगतिमां गयेल छे-जिनदास आवकवत्, ३ कोईक धनवान पण दुर्गतिमां गयेल छे-मम्मणशेठवत्, ४ कोईक धनवान अने सुगतिमां गयेल छे-आनंदादिवतः(६) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छ, ते आ प्रमाण-१ कोईक प्रथम पण अज्ञानी अने पछी पण अज्ञानी, २ कोईक प्रथम अज्ञानी पण पछीथी ज्ञानी, ३ कोईक प्रथम ज्ञानी अने पछीथी अज्ञानी, ४ कोईक प्रथम पण ज्ञानी अने पछी पण ज्ञानी. (७) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक मलिन स्वभाववाळो अने अज्ञानवल अथवा अंधकारना बलवाळो, ते चौर प्रमुख, २ कोईक मलिन स्वभाववाळो पण ज्ञानबलवाळो, ते असदाचारी ज्ञानी, २ कोईक निर्मळ स्वभाववाळो पण अज्ञानी छे. ४ कोईक निर्मेळ स्वभाववाळो अने ज्ञानी छे.(८) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ कोईक मलिन स्वभाववाळो अने अज्ञानरूप बळमां आनंद करनारो छे,२ कोईक मलिन स्वभाववाळो पण ज्ञानरूप बळमां आनंद करनारो छे, ३ कोईक निर्मळ स्वमाववाळो पण अज्ञानरूप बळमां आनंद करनारो छे, ४ कोईक निर्मेळ स्वभाववाळो अने ज्ञानरूप बळमां आनंद करनारो छे.(९) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक परिज्ञातकर्मज्ञ परिज्ञावडे जाणीने कृषि विगेरे कर्मनुं प्रत्याख्यान करेल छे पण अपरिज्ञातसंज्ञ-आहारसंज्ञा विगेरेने जाणेल नथी, २ कोईक परिज्ञातसंज्ञ-आहारसंज्ञा विगेरेना स्वरूपने जाणे छे पण कृषि विगेरे कर्मथी निष्टत्त थयेल नथी, ३ कोईक परिज्ञातकर्म अने परिज्ञातसंज्ञ छे, ४

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ आत्मंभ-रित्वादि चतुर्भङ्ग्यः द्यु० ३२७

। ४७५ ॥

कर्म पण नथी अने परिज्ञातसंज्ञ पण नथी. (१०) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक परिज्ञातकर्म-सावद्यकार्यथी करण, करावण अने अनुमतिथी निष्टत्त थयेल छे पण गृहवासने छोडेल नथी-शिवकुमारवत् . २ कोईक गृहवास-ने छोडेल छे पण सावद्यकार्यने छोडेल नथी-दुष्प्रव्रजित(दुष्ट साधु)वत्, ३ कोईक गृहवासने छोडेल छे अने सावद्यकार्यने छोडेल छे-ते सुसाधु, ४ कोईक गृहवासने छोडेल नथी अने सावद्यकार्यने पण छोडेल नथी-ते असंयत.(११) चार प्रकारना प्रकृषो कहेला छे. ते आ प्रमाणे−१ कोईक आहारादि संज्ञाने छोडेल छे पण गृहवासने छोडेल नथी, २ कोईक गृहवासने छोडेल छे पण आहारादि संज्ञाने छोडेल नथी, ३ कोईक गृहवासने छोडेल छे अने आहारादि संज्ञाने पण छोडेल छे, ४ कोईक आहारादि संज्ञाने छोडेल नथी अने गृहवासने पण छोडेल नथी. (१२) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ कोईक आ लोकना-मनुष्य संबंधी सुखनो अर्थी छे पण परलोकना सुखनो अर्थी नथी-ते अज्ञानी, २ कोईक परलोकना सुखनो अर्थी हे छे पण आ लोकना सुखनो अर्थी नथी−ते साधु, ३ कोईक आ लाक अने परलोक बन्नेना सुखनो अर्थी छे-ते श्रावक, ४ कोईक आ लोक अने परलोक बन्नेना सुखनो अर्थी नथी-ते मुर्ख मनुष्य.(१३)चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे.ते आ प्रमाणे-१ कोईक एकथी-श्रुतज्ञानथी वृद्धि पामे छे पण सम्यग्दर्शनथी हीन थाय छे, २ कोईक एकथी-श्रुतज्ञानथी वृद्धि पामे छे पण बेथी-सम्यग्-दर्शन अने विनयथी हीन थाय छे, ३ कोईक बेथी-श्रुतज्ञानथी अने अनुष्ठान-क्रियाथी वृद्धि पामे छे पण एकथी-सम्यग्दर्शन्थी हीन थाय छे, ४ कोईक बेथी-श्रुतज्ञानथी अने अनुष्ठानथी बृद्धि पामे छे पण बेथी-सम्यग्दर्शन अने विनयथी हीन थाय छे. (१४) चार प्रकारना जातिविशेष अश्वो कहेला छे, ते आ प्रमाण-१ कोईक पहेला पण आकीर्ण-वेग विभेरे गुण-

भस्था नाजपत्र **पा**नुवाद 11 808 11

वाळो अने पछी पण आकीर्ण छे. २ कोईक प्रथम आकीर्ण पण पछीथी खढुंक-गळीओ (अविनीत) छे, ३ कोईक प्रथम खर्खुंक अने पछीथी आकीण, ४ कोईक प्रथम खछंक अने पछी पण खछंक छे. (१५) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोई पुरुष प्रथम शांति वेगेरे गुणवाळो अने पछी पण गुणवाळो छे, २ कोईक प्रथम गुणवाळो पण पछीथी अविनीत, ३ कोईक प्रथम अविनीत अने पछीथी गुणवाळो छे, ४ कोईक प्रथम पण अविनीत अने पाछळथी पण अविनीत छे. (१६) चार प्रकारना जातिविशेष अश्वो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक अश्व आकीर्ण-वेगादि गुणवाळो छे अने विनय, वेगादिथी चाले छे, २ कोईक अश्व आकीर्ण छे पण मार्गमां चडावना दोषथी अविनीतपणाए चाले छे, ३ कोईक अविनीत छे पण स्वारना गुणथी विनीतपणाए चाले छे, ४ कोईक अविनीत छे अने अविनीतपणाए चाले छे.(१७) आ दर्शांत प्रमाणे चार प्रकारना पुरुषों कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष विनयादि गुणवाळो छे अने विनयादिपणाए प्रवर्त्ते छे इत्यादि चार भांगा जाणवा. (१८) चार प्रकारना अश्वो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक अश्व जातिसंपन्न छे पण कुल-संपन्न नथी, २ कोईक कुलसंपन्न छे पण जातिसंपन्न नथी, ३ कोईक उभयसंपन्न छे अने ४ कोईक उभयसंपन्न नथी, (१९) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष जातिसंपन्न छे पण कुलसंपन्न नथी विगेरे चार भांगा जाणवा.(२०) चार प्रकारना अश्वो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक अश्व जातिसंपन्न छे पण बलसंपन्न नथी, एम चार भांगा जाणवा.(२१) ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष जातिसंपन्न छे पण बलसंपन्न नथी, एम चार मांगा जाणवा.(२२) चार प्रकारना अश्वो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक अश्व जातिसंपन्न छे पण रूपसंपन्न नथी,

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः ३ आत्मंभरि-त्वादि चतु-भेङ्ग्य:

एम चार भांगा जाणवा.(२३) ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष जातिसंपन्न छे पण रूपसंपन्न नथी, एम चार भांगा जाणवा. (२४) चार प्रकारना अश्वो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक अश्व जातिसंपन्न छे पण जय(जीत)संपन्न नथी, २ कोईक जातिसंपन्न नथी पण जयसंपन्न छे, ३ कोईक उभयसंपन्न छे अने ४ कोईक उभय-संपन्न नथी.(२५) ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष जातिसंपन्न छे पण जयसंपन्न नथी, एम चार मांगा जाणवा.(२६) एवी रीते कुलसंपन्न अने बलसंपन्न शब्दथी चार मांगा,(२७) कुलसंपन्न अने रूपसंपन्न शब्दथी चार मांगा,(२८) कुलसंपन्न अने जयसंपन्न शब्दथी चार मांगा, (२९) एवी रीते बलसंपन्न अने रूपसंपन्न शब्दथी चार मांगा, (३०) बलसंपन्न अने जयसंपन्न शब्दथी चार भांगा अश्वमां जाणवा, (३१) सर्वत्र प्रतिपक्षरूप पुरुषमां पण एम ज चार चार भांगा जाणवा अर्थात् कोईक पुरुष कुलसंपन्न छे पण बलसंपन्न नथी एम चार भांगा जाणवा. (३२) एवी रीते पुरुषमां बीजी पण चार चोभंगी करवी. (३३-३६) चार प्रकारना अश्वो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक अश्व रूपसंपन्न छे पण जयसंपन्न नथी, एम चार मांगा करवा (३७), आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष रूपसंपन्न छे पण जयसंपन नथी एम चार भांगा करवा (३८), चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष सिंहनी पठे शौर्यपूर्वक दीक्षा लेवा नीकळेल अने सिंहनी माफक विचरे छे-पाळे छे-धन्ना अणगारनी जेम, २ कोईक सिंहनी पेठे दीक्षा लेवा नीकळेल पण कायर-पणाथी शीयाळनी माफक पाळे छे-कंडरिकवत्, ३ कोईक शीयाळनी माफक दीक्षा लेवा नीकळेल अने सिंहनी पेठे विचरे छे-पाळे छे-भवदेव(जंबुस्वामीना जीव)वत्, ४ कोईक शीयाळनी माफक दीक्षा लेवा नीकळेल अने शीयाळनी माफक पाळे छे-ते श्रीस्था-बाङ्गपत्र बाद्धवाद ॥ ४७७ ॥ मात्र उदरपोषण करनार ३९. (स्०३२७)

टीकार्थः-' चत्तारी 'त्यादि॰ आत्माने भरे छे-पोषण करे छे ते आत्मंभरी, प्राकृतपणाथी 'आयंभरे' तथा बीजाने पोषण करे छे ते परंभरी, प्राकृतपणाथी 'परंभरे ' तेमां प्रथम भंगने विषे पोताना अर्थ-कार्यने ज करनार ते जिन-कर्ली. बीजो भांगो. परना कार्यने ज करनार ते भगवान अरिहंत केमके पोताना समग्र कार्यनी समाप्ति थयेल होईने अन्य-ने मुख्य प्रयोजननी प्राप्ति कराववामां दक्षतापूर्वक कहेनार होय छे. तृतीयभंगमां स्व-परतं कार्य करनार ते स्थविरकल्पी, केमके ते शास्त्रोक्त अनुष्ठानथी पोतानं कार्य करनार होय छे अने विधिपूर्वक सिद्धांतनी देशना देव।थी अन्यना कार्यसंपादक पण होय छे. चोथा भांगामां स्व-परना कार्यने नहिं करनार ते कोईक मृढमित अथवा यथाच्छंद-स्वच्छंदाचारी. एवी रीते लौिकक पुरुषनी पण योजना करवी १, स्वपरनो उपकार नहिं करनार दुर्गत-दिरद्र ज होय, माटे दुर्गतसूत्र कहे छे-दुर्गत पूर्वे धन-वडे हीन होवाथी अथवा ज्ञानादिरत्नवडे हीन होवाथी दिरद्र छ अने पछी पण दुर्गत-दिरद्र छे अथवा दन्यथी दुर्गत-दिरद्र. वळी भावथी दुर्गत-ज्ञानादि हीन आ प्रथम भंग १, एम ज बीजा त्रण भांगा जाणवा. विशेष ए के सुगत-द्रव्यथी धनवान अने भावथी ज्ञानादिगुणवान २, कोईक दुर्गत व्रतवाळो थाय माटे दुर्वत सूत्र कहे छे-दुर्गत-दिरद्र, दुर्वत-अयथार्थ व्रतवाळो अथवा दुर्व्यय-पेदाञ्चनी अपेक्षा(विचार) कर्यो सिवाय व्यय-खर्च करनार, अथवा खराब स्थान-व्यसनादिने विषे व्यय करनार, आँ एक. बीजो दरिद्र थको सुवत-निरितचार नियमवाळो अथवा दानादि उचित कार्यनी प्रवृत्तिथी सुन्यय करनार, त्रीजो अने चोथो भांगो स्पष्ट छे ३, दुर्गत पूर्ववत् अने उपकारीए करेल उपकारने जे नथी मानतो ते दुष्प्रत्यानंद, जे उपकारीना उपकारने ४ स्थान-काष्ययवे उद्देशः ३ आत्मंभरि-त्वादि चतु-भङ्ग्यः स्र० ३२७

11 01010 11

माने छे ते सुप्रत्यानंद ४, दुर्गत-दरिद्र थको जे दुर्गतिने विषे जर्शे ते दुर्गतिगामी, एम बीजा त्रण भांगा जाणवा. विशेष ए के-सुगतिने विषे जर्शे ते सुगतिगामी, सुगत-ईश्वर अथात ऐश्वर्यवाळो ५, दुर्गत पूर्ववत् , दुर्गति प्रत्ये गयो ते यात्रिको उपर कोप थवाथी मारवा माटे तत्पर थयेल #द्रमक(भिखारी)नी जेम, एम बीजा त्रण भांगा जाणवा ६, तम-अंधकारनी जेम तम-अंधकार पहेलां अज्ञानरूप होवाथी अथवा अप्रकाश्चपणुं-अप्रसिद्धपणुं होवाथी पछी पण अंधकाररूप ज आ एक. बीजा तो प्रथम तमुद्भप अने पछीथी ज्योतिनी जेम ज्योति, केमके ज्ञान मेळववाथी अथवा प्रसिद्धि पामवाथी. शेष बे भंग सुगम छे ७, तम-कुकर्मनो करनार होवाथी मलिन स्वभाववाळो, अने तम-अज्ञान छे बल-सामध्ये जेतं ते तमःबल अथवा तमः-अंधकार, ए ज वल अथवा अंधकारमां वल छे जेतुं ते तमःवल खराव आचारवाळो अज्ञानी अथवा रात्रिमां फरनार चोर बिगेरे आ एक, तथा तमः पूर्ववत् , ज्योति-ज्ञानबल छे जेनुं ते ज्योतिबल अथवा सूर्य विगेरेनो प्रकाश, ते ज छे बल अथवा तेमां-प्रकाशमां बल छे जेतुं ते ज्योतिबल. आ असदाचारी ज्ञानवान अथवा दिवसमां फरनार चोर विगेरे, आ बीजो. ज्योति:-सत्कर्मने करनार होवाथी उज्ज्वळ स्वभाववाळा अने तमोबल पूर्वनी जेम, आ सदाचारवाळो अज्ञानी अथवा कारणवञ्चात रात्रिमां गमन करनार, आ त्रीजो भंग, चतुर्थ भंग सुगम छे. आ सदाचारवाळो ज्ञानी अथवा दिवसमां गमन करनार ८, तथा तमः पूर्ववत् ' तमवलपलज्जणे ' त्ति ० तमः-मिथ्याज्ञान अथवा अंधकार, ते ज बल अथवा तेमां छे बल अर्थात तमोबलमां अथवा उक्तरूप तममां अने बल-सामर्थ्यमां 'प्ररज्यते '-राति करे छे ते तमोबलप्ररंजन १, एवी रीते

* आ द्रमकनी कथा उपदेशमासाद ग्रंथमां छे

भीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद स ४७८ ॥

ज्योतिबलप्ररंजन पुण जाणवा. विशेष ए के-ज्योति-सम्यग्ज्ञान अथवा सूर्य विगेरेने। प्रकाश. एमज बीजा बे भंग पूण जाणवा. आ सत्रमां पण पूर्वोक्त सत्रोमां कहेला ते प्ररंजन शब्दवडे विशेषणवाळा पुरुषविशेषो समजवा अथवा तमः पूर्ववत् अथवा अप्रसिद्ध, तमोबल-अंधकारना बळवडे चालतो थको जे लज्जाय छे ते तमोबलप्रलज्जन-प्रकाशमां चालनार १, एम ज बीजा त्रण मांगा पण जाणवा. विशेष ए के-बीजो पुरुष अंधकारमां चालनारो, त्रीजो पुरुष प्रकाशमां चालनारो अने चतुर्थ पुरुष कोई पण कारणवशात् अंधकारमां चालनारो. क्यांक 'पज्जलणे' त्ति० पाठ छे त्यां तमः — अज्ञानना बळवेड अथवा अंधकारना बळवडे अने ज्योति:-ज्ञानना बळवडे अथवा प्रकाशना बळवडे 'प्रज्वलि '-मदवाळो थाय छे अर्थात् जे अहंभावने करे छे ते प्रज्वलन ९, इपरिज्ञावडे स्वरूपथी जाणेला अने प्रत्याख्यानपरिज्ञावडे छोडेला छे कृषि वगेरे कर्म जेणे ते परिज्ञात-कर्मा, अने आहारसंज्ञादिन नथी जाणेल तेम नथी छोडेल जेणे ते अपरिज्ञातसंज्ञभाव विना दीक्षा लीघेल मुनि श्रावक-आ एक भंग, परिज्ञातसंज्ञ-सद्भावनावडे भावित होवाथी आहारसंज्ञादिथी रहित, पण न परिज्ञातकर्मा-कृषि विगेरेथी निवृत्त निहं थयेल श्रावक, आ बीजो मंग, त्रीजो साधु अने चोथो असंयत छे १०, परिज्ञातकर्मा-सावद्यकार्यनुं करवुं, करावनुं अने अनुमोद्युं तेथी निवृत्त अथवा कृषि विगेरेथी निवृत्त पण गृहवासने छोडेल नथी ते अप्रवजित, आ एक, बीजो तो गृहवासने छोडेल छे पण आरंभने छोडेल नथी ते दुष्ट साधु, त्रीजो सुसाधु अने चोथो असंयत ११, विशिष्ट गुणतुं स्थानक होवाथी संज्ञाने छोडनार, पण गृहस्थ होवाथी गृहवासने छोडेल नथी-आ एक, बीजो तो यति होवाथी गृहवासने छोडेल छ पण सद्भावना-वडे भावित निह होवाथी आहारादि संज्ञाने छोडेल नथी-आ बीजो भंग. बन्नेने छोडेल छे ते त्रीजो अने बन्नेने छोडेल नथी ते

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ आत्मंभिर-त्वादि चतु-भेडग्यः यू० ३२७

चोथो मंग १२, आ जन्ममां ज अर्थ-मोगसुखादि प्रयोजन अथवा आस्था-'ए ज सारुं छे' एवी छे बुद्धि जेनी ते ईहार्थ अथवा ईहास्थ मोगपुरुष अथवा लोकमां प्रतिबंध पामेल, परत्र-जन्मांतरने विषे ज प्रयोजन अथवा आस्था छे जेने ते परार्थ अथवा परास्थ ते साधु अथवा बालतपस्वी, उभय लोकने विषे प्रयोजन अथवा आस्था छे जेने ते सुश्रावक अथवा बन्ने लोकना सुखमां बंधाएल उभयलोकना प्रयोजनथी रहित ते कालसौकरादि अथवा मृद्ध अथवा ' इहेव '-कोईक विवक्षित ग्राम विगेरेमां ज रहे ते इहस्थ, तेमां बंधाएल होवाथी 'न परस्थ'-परमां रहेल नथी १, बीजो तो परत्र-बीजे स्थले प्रतिबद्ध होवाथी परस्थ २, अन्य तो उभय स्थलमां रहेनार ते उभयस्थ ३ अने चोथो तो सर्वत्र अप्रतिबद्ध होवाथी अनुभयस्थ-साधु १३, कोईक एकवडे-श्रुतवडे वृद्धिने पामे छे अने एकथी-सम्यगुदर्शनथी हीन थाय छे. कह्यं छे के-

जह जह बहुस्सुओ सं–मओ य सीसगणसंपरिवुडो य। अविणिच्छिओ य समए,तह तह सिद्धंतपिडणीओ॥

जेम जेम बहु शास्त्रनो ज्ञाता होय, घणा लोकोवडे सम्मत होय,तथा शिष्यना सम्रुदायवडे सारी रीते परिवृत्त होय, पण सिद्धांत ना तत्त्वमां अनिश्चित-अजाण होय तो ते सिद्धांतनो प्रत्यनीक-वैरी थाय छे. आ एक

बीजो एकवडे-श्रुतवडे वृद्धिने पामे छे अने बेथी (सम्यग्दर्शन तथा विनयथी) हीन थाय छे. त्रीजो बेवडे-श्रुत अने अनुष्ठानवडे वृद्धि पामे छे पण एकथी-सम्यग्दर्शनथी हीन थाय छे. चोथो बेथी-श्रुत अने अनुष्ठानथी वृद्धि पामे छे पण बेथी सम्यग्दर्शन अने विनयथी हीन थाय छे अथवा ज्ञानवडे वृद्धि पामे छे अने रागद्वेष-बन्नेथी हीन थाय छे, त्रीजो ज्ञान भीस्था-नाष्ट्रस्त्र सातुवाद ॥ ४७९ ॥ अने संयमवडे वृद्धि पामे छे अने रागथी हीन थाय छे, चोथो ज्ञान अने संयमथी वृद्धिने पामे छे अने राग-द्वेष उभयथी हीन थाय छे अथवा क्रोधवंड वधे छे अने मायावंडे घटे छे, आ एक. बीजो क्रोधवंडे वधे छे अने माया तथा लोभवंडे घटे हो. त्रीजो क्रोध अने मानवहे वधे हो अने मायाथी घटे हो. चोथो क्रोध तथा मानवहे वधे हो अने माया-लोभधी घटे हे १४. प्रकंथको अथवा पाठांतरथी कंथको ते अश्वविशेषो, आकीर्ण-वेग विगेरे गुणोथी पूर्वे पण व्याप्त अने पछी पण तेवो ज. आ प्रथम भेद, बीजो तो प्रथम आकीर्ण पण पाछळथी खढुंक-गळिओ अविनीत, त्रीजो प्रथम खढुंक पण पाछळथी आकीर्ण-वेगादि गुणवाळो. चोथो पूर्वे अने पछी पण खलुंक-गळिओ १५, आकीर्ण-गुणवान अने आकीर्णपणावडे-विनय वेगादि गुणवान-पणाए वहें छे-प्रवर्तें छे. पाठांतरमां 'विहरती' त्ति० छे-विचरे छे. बीजो आकीर्ण, पण आरोहण-चडावना दोपवडे खुढ़ंक पणाए-गळिआपणाए वहे छे. त्रीजो खलुंक छे पण आरोहक-स्वारना गुणथी आकीर्ण गुणपणाए वहे छे. चोथो तो सुगम छे १६, बने सूत्रमां पण दार्ष्टातिकरूप पुरुषो जोडवा.सत्रमां तो क्यांक नथी कह्या, केमके सूत्रनी गति विचित्र होय छे. १७-१८. जाति ४, कुल ३, बल २, रूप अने जय १--ए पांच पदने विषे द्विकसंयोगी दश मंगवडे प्रकंथकना दृष्टांतरूप दश चतुर्भगी सूत्रों छे २८. ते प्रत्येक सत्रने ज अनुसरण करता सता दार्षातिकरूप दश पुरुषसत्रो थाय छे ३८, अर्थात् जाति अने कुल-बल-रूप-जय पदथी चार, कुल अने बल-रूप-जय पदथी त्रण, बल अने रूप-जय पदथी ब तथा रूप अने जय पदथी एक एवी रीते द्विकसंयोगी दश भांगा थाय छे. विशेष ए के--जय बीजानो पराजय करवो-बीजाने जीतवं. सिंहपणाए शौर्य-पणाए गृहवासथी नीकळेल-दीक्षित थयेल तेमज उद्यत (तत्पर) विहारवडे विचरे छे-शीयाळपणाए-दीनवृत्तिथी विचरे छे ३९.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ आत्मंभरि-त्वादि चतु-र्भङ्ग्यः यु० ३२७

11 2/98

(स० ३२७) पूर्वे जात्यादि गुणवडे अश्वादिथी पुरुषोनी समानता कही, हवे अप्रतिष्ठान विगेरेनी समानताने प्रमाणथी कहे छेन चत्तारि लोगे समा पं० तं०—अपइट्ठाणे नरए १ जंबुदीवे दीवे २ पाळते जाणविमाणे ३ सब्ब-टुसिक्ट महाविमाणे ४। चत्तारि लोगे समा सपर्विख सपिडिदिसिं पं० तं०—सीमंतए नरए १ सम-यक्लेने २ उडुविमाणे ३ ईसीपब्भारा पुढवी ४। सू० ३२८, उड्डलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पं० तं०—पुढविकाइया आउ० वणस्सइ० उराला तसा पाणा, अहो लोगे णं चत्तारि बिसरीरा पं० तं०—पवं चेव. एवं तिरियलोएवि ४। सू० ३२९

मूलार्थः-लोकने विषे चार वस्तु समान कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ सातमी नरकनो अप्रतिष्ठान नामनो नरकावास, २ जंबुद्वीप नामनो द्वीप, ३ पालक नामनुं यान विमान अने ४ सर्वार्थसिद्ध नामनुं महाविमान. आ दरेक एक लाख योजनना लांबा पहोळा छे. लोकमां चार वस्तु, दिशा अने विदिशाए समान कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ पहेली नरकभूमिनो सीमंतक नामनो नरकावास, २ समयक्षेत्र (मनुष्यलोक), ३ सौधर्म देवलोकनुं उद्घ नामनुं विमान अने ४ ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी. आ दरेक पौस्तालीश लाख योजनना लांबापहोळा छे.(६० ३२८) ऊर्ष्वलोकमां चार प्रकारना जीवो वे शरीरवाळा कहेला छे,ते आ प्रमाणे-१ पृथिवीकायिक, २ अप्कायिक, ३ वनस्पतिकायिक अने ४ स्थूल त्रस जीवो; केमके एक शरीर वर्षमान भव संबंधी अने

भीस्था-नाङ्गधत्र साजुवाद ॥ ४८० ॥

बीज़ं जन्मांतरमां थनारुं मनुष्य संबंधी, पछी मोक्षमां जवाथी केटलाएकने त्रीज़ं शरीर न होय. एवी रीते अघोलोकमां चार प्रकारना पूर्वोक्त जीवो वे शरीरवाळा कहेला छे. वळी तिर्यक्लोकमां पण एम ज जाणवुं. (स्.० ३२९)

टीकार्थः-' चत्तारी ' त्यादि० वे सूत्र प्रायः उक्तार्थ छे, तो पण कंईक कहेवाय छे. सातमी नरकपृथिवीमां कालादि पांच नरकावासोना मध्यमां रहेल अप्रतिष्ठान नामनुं नरकावास छे ते एक लाख योजन छे. पालक देवे बनावेलुं, सौषर्मेंद्र संबंधी यान(वाहन)रूप विमान अथवा जवा माटेनुं विमान, ते यान विमान परंतु ते शाश्वत नथी. पांच अनुत्तर विमानोना मध्य-सर्वार्थिसिद्ध नामनुं विमान छे. लोकने विषे चार वस्तु समान होय छे. केवी रीते १ ते कहे छे 'सपर्किंख सपिडिदि-सं' ति असमान छे दिशाओ जेने विषे ते सपश्च (अहिं 'इकार' त्राकृतपणान लईने छे) तथा समान छे विदिशाओ जेने विषे ते सप्रतिदिक् ते जेम होय छे तेम समान होय छे अथवा पक्षोवडे सरखा ते सपक्ष, अहिं अन्ययीभाव समास छे. नीचे अने उपर-ना विभागवडे रहेल, विस्तारवाळा अने सांकडा बे द्रव्य पदार्थीनी अथवा विषमताए रहेला तुल्य प्रमाणवाळा बे पदार्थी-नी दिशा अने विदिशाओं होती नथी माटे अत्यंत समानताने देखाडवा सपक्ष अने सप्रतिदिक्रूप वे विशेषण कहेल छे. प्रथम नरकभूमिमां पहेला प्रस्तर(पाथडा)ने विषे पीस्तालीश लक्ष योजनप्रमाण सीमंतक नामनो नरकावास छे. समय-काळवडे जणा-तुं क्षेत्र ते समयक्षेत्र अर्थात मनुष्यक्षेत्र. सौधर्मकल्पमां प्रथम प्रस्तारटने विषे ज उडु नामनुं विमान छे. रत्नप्रभादि पृथितीनी अपेक्षाए इपत्(अल्प) छे प्राग्भार-ऊंचाई विगेरे जेणीमां ते इपत्प्राग्भारा जाणवी. (स्० ३२८) इपत्प्राग्भारा पृथिवी ऊर्घ्व लोक-ने विषे होय छे माटे ऊर्ध्व लोकना प्रस्तावधी कहे छे-'उद्दे' त्यादि०वे छे श्वरीर जेओने ते वे श्वरीरवाळा, पृथिवीकायिक

अ स्थान अ स्थान अ स्थान इ्या स्थान अ स्थान इ्या स्थान अ स्थान इ्या स्थान इ्या स्थान अ स्थान इ्या स्थान

विगेरेनुं ज एक शरीर अने बीजुं जन्मांतरमां थनारुं मनुष्यनुं शरीर. आ बे उपरांत त्रीजुं शरीर केटलाएक जीवोने थतुं नथी; कारण के ते अंतर रहित मोक्षमां जाय छे. 'ओराला तस' ति०—उदारा—स्थूल द्वींद्रियादि जीवो, परंतु तेजस्कायिक अने वायु-कायिकरूप #स्इम जीवो निहें केम के तेओने बीजा भवमां मनुष्यभवनी प्राप्ति न थवाथी मोक्ष थतो नथी, माटे अन्य शरीरनो संभव होय छे (तेथी बनेनो निषेध करायेल छे) तथा उदार त्रसनुं ग्रहण करवावडे द्वींद्रियादिनुं प्रतिपादन छते पण आहें बे शरीरपणाथी पंचेंद्रियो ज (गर्भज) ग्रहण करवा योग्य छे, कारण के विकलेंद्रियोने अंतर रहित बीजा भवमां सिद्धिनो अभाव होय छे. कह्युं छे के—'' विगला लभेजज विरइं ण हु किंचि लभेजज सुहुमतसा "—विकलेंद्रियो अनंतर—मनुष्यादि-भवमां विरतिने प्राप्त करी शके छे परंतु सङ्म त्रसो—तेउ, वाउ अनंतर भवमां कई पण न पामे—समिकत× पण पामे निहं. लोकना संबंधथी प्राप्त थयेल अधोलोक अने तिर्यक्लोक संबंधी बे अतिदेशसत्र उक्तार्थ छे. (स० ३२९) तिर्यक्लोकना अधिकारथी तेमां उत्पन्न थयेल संयतादि पुरुषने भेदोवडे कहे छे—

चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-हिरिसत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते । सू०३३०, चत्तारि सिज-पडिमाओ पं०, चत्तारि वत्थपडिमाओ पं०, चत्तारि पायपडिमाओ पं०, चत्तारि ठाणपडिमाओ पं०। सू०

- * अहीं सक्ष्म शब्द आपेक्षिक छे माटे सक्ष्म अने बादर बन्ने तेनो, वायु लेवा अर्थात् बोना जीवोनी अपेक्षाए सूक्ष्म-झीणो कायावाळा.
- × तेउ अने वाउना शरीरथो बहु जोवोनी हिंसा थतो होवाथी तेओने समिकतनी प्राप्ति पण थतो नथी.

भीस्था-नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ ४८१ ॥

३३१, चत्तारि सरीरगा जीवफुडा पं॰ तं०-वेउविवए आहारए तेयए कम्मए, चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मी-सगा पं॰ तं०-ओरालिए वेउविवए आहारते तेउते । सू॰ ३३२. चउिं अत्थिकाएिं लोगे फुडे पं॰ तं०-धम्मत्थिकाएणं अधम्मत्थिकाएणं जीवत्थिकाएणं पुग्गलत्थिकाएणं, चउिं बाद्रकातेिं उववज्जमाणेिं लोगे फुडे पं॰ तं०-पुढिवकाइएिं आउ० वाउ० वणस्सइकाइएिं । सू॰ ३३३, चत्तारि पएसग्गेणं तुद्धा पं॰ तं०-धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए लोगागासे एगजीवे । सू॰ ३३४

मूलार्थ: —चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे- द्रीसन्त —लाजथी परिसह अथवा संग्राममां धैर्यने धरे छे. द्रीमनसन्त —लाजथी मनमां ज धैर्यने धरे छे पण कायाथी निहं, चलसन्त —परिसह विगेरे आववाथी अस्थिरसन्तवाळो छे अने
स्थिरसन्त —परिसह विगेरेने सहन करवामां निश्चल सन्त —धैर्यवाळो छे. (स०३३०) शच्या संबंधी चार प्रतिमाओ (अभिग्रहः
विशेष) कहेली छे, वस्न संबंधी चार प्रतिमाओ कहेली छे, पात्र संबंधी चार प्रतिमाओ कहेली छे अने स्थान संबंधी चार प्रतिमाओ कहेली छे. (स०३३१) चार शरीरो जीववडे स्पर्शायला छे अर्थात् जीववडे व्याप्त छे, ते आ प्रमाणे—वैक्रिय, आहारक,
तैजस अने कार्मणः चार शरीरो कार्मण शरीरथी मिश्र कहेल छे, ते आ प्रमाणे—औदारिक, वैक्रिय, आहारक अने तैजस.
(स०३३२) चार अस्तिकायवडे लोक स्पर्शायेल कहेल छे, ते आ प्रमाणे—धर्मास्तिकायवडे, अधर्मास्तिकायवडे.

XXXXXXXXXX ४ स्थान-काध्ययने उद्देश: ३ सस्वप्रति-माजीव-स्पृष्टलोक-स्पृष्टप्रदे-शाग्रतुल्याः ३३४

11 828 11

जीवास्तिकायवडे अने पुद्गलास्तिकायवडे. चार बादरकायोवडे लोक स्पर्शायेल कहेल छे, ते आ प्रमाणे-पृथ्वीकायवडे, अप्कायवडे, वायुकायवडे अने वनस्पतिकायवडे. (सू० ३३३) चार द्रव्यो प्रदेशोना प्रमाणवडे सरखा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ लोकाकाश अने ४ एक जीव. (सू० ३३४)

टीकार्थ:-'चत्तारी' त्यादि० लज्जावडे सत्त्व-परिषहादिने सहन करवामां अथवा रणांगणने विषे रहेवारूप बल छे जेतं ते हीसत्त्व. उत्तम कुळमां उत्पन्न थयेल एवा मने (मारी उपर) मनुष्यो हसशे एम मनमां ज लजावडे परंत शरीरमां सत्त्व (धैर्य) निहं; कारण के रोमहर्ष-रुंवाटी ऊभी थवारूप अने कंप विगेरे भयना चिह्न देखावाथी केवळ मनवडे जेनं सत्त्व छे ते हीमनसत्व. परिषहादिनी प्राप्ति(आववा)मां बलनो नाश थवाथी चल-अस्थिर छे सत्त्व जेतुं ते चलसत्त्व, आ प्रकारथी विपरीत अर्थात परिषहादिने विषे स्थिर(अडग) रहेवाथी स्थिरसत्त्व. (स्० ३३०) हमणा ज स्थिर सत्त्ववाळो कह्यो, ते अभिग्रहोने स्वीका रीने पाळे छे माटे ते बताववा सारु आ चार सूत्रो 'चत्तारि सिज्ञें व्यादि० सुगम छे. विशेष ए के जेना उपर सूत्राय छे ते श्चया-संथारो, तेनी प्रतिमा-अभिग्रहो ते शच्याप्रतिमाओ. तेमां फलक(पाटियुं) विगेरेमां कोईपण एक उदिष्ट-चोकस करेल ज लईश, बीजुं निह-आ पहेली. जे प्रथम चोकस करेल छे तेने ज ज्यारे हुं जोईश त्यारे ते ज लईश, पण बीजुं निहं-आ बीजी. ते पण जो ते श्रुट्यातरना ज घरमां होय तो तेनी पासेथी लईश, पण बीजे स्थलेथी लाबीने तेनी उपर शयन करीश निह-आ त्रीजी, ते फलक विगेरे जेम जोईए तेम जो पाथरेखं होय तो तेनी पासेथी हुं ग्रहण करीश, पण बीजी रीते नहि-आ चोथी. आ चार प्रतिमाओमां पहेली वे प्रतिमाओ गच्छथी नीकळेला साधुओने ग्रहण करवा योग्य नथी. पाछली वे प्रतिमामांथी कोईपण भीस्था नाङ्गधत्र सानुनाद १। ४८२ ॥ एक प्रतिमाने विषे अभिग्रह करे. गच्छांतर-अन्य गच्छमां गयेला साधुओने तो चारे कल्पे छे. वस्नना ग्रहणविषयमां जे प्रतिज्ञा ते वस्त्रप्रतिमा. प्रथम चेकिस करेल कोईपण एक कपास विगेरेतं वस्त हुं याचीश-आ पहेली. जोयेल वस्त्रने याचीश, पण बीजं नहिं-आ बीजी, नीचे पहेरवावडे अथवा उपर पहेरवाबडे शय्यातरे प्रायः सारी रीते (बहु ज) वापरेल होय एवा वस्नने हुं ग्रहण करीश-आ त्रीजी तेमज फेंकवा योग्य वस्त्रने ग्रहण करीश-आ चोथी. पात्रनी प्रतिमा-चोकस करेल काष्ट्रना पात्र विगेरेने हुं याचीश-आ पहेली. जोयेल पात्रने याचीश-आ बीजी. दातारनी मालिकीतं अने ते प्रायः वापरेलं अथवा वे त्रण पात्रने विषे क्रमशः वपरातुं एवा पात्रने याचीश-आ त्रीजी. फेंकी देवा योग्य पात्रने याचीश-आ चोथी. स्थान-कायोत्सर्गादि माटे आश्रय, तेने विषे प्रतिमाओ ते स्थानप्रतिमाओ. तेमां कोईक साधुने आवा प्रकारनो अभिग्रह होय छे-हुं अचित्त स्थान प्रत्ये आश्रय करीश अने त्यां पग विगेरे-तुं संकोचन अने विस्तारवारूप क्रिया करीश तथा अचित्त भींत विगेरेतुं कंईक अवलंबन करीश, वळी त्यां ज स्तोक पादिवहार ने आश्रय करीश अर्थात थोड़ चालीश-आ पहेली प्रतिमा. संक्रंचन अने प्रसारण विगेरे क्रियाने अने भींत विगेरेना अवलंबनने करीश पण पादिवहार करीश निहं-आ बीजी. संकुंचन अने प्रसारणने करीश परंतु भींतादिनुं अवलंबन अने पादिवहार करीश निहं-आ त्रीजी. जे स्थानमां त्रणे करतो नथी अर्थात् संकुंचनादि क्रिया, अत्रलंबन अने पादिवहार करतो नथी-आ चोथी स्थानप्रतिमा. (स् २३१) अनंतर शरीरनी चेष्टानो निरोध कह्यो, माटे शरीरना प्रसंगधी-'चत्तारी'त्यादि० वे सूत्र स्पष्ट छे, परंतु जीववडे स्पृष्ट-च्याप्त ते जीवस्पृष्ट शरीरी. वैक्रिय विगेरे शरीरी अवस्य जीववडे ज व्याप्त होय छे, किंतु जेम जीववडे छोडायेल छतां पण मृतावस्थामां औदारिक शरीर होय छे तेम आ वैक्रियादि शरीरो होतां नथी. ' कम्सुम्मीसग 'त्ति०

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः व स्चप्रति-माजीवन-स्पृष्टलोक-स्पृष्टप्रदे-**ञात्रतुल्याः** ३३४

וו פינט וו

कार्मण शरीरवडे औदारिकादि शरीरो विशेषमिश्रको-हमेशां मिश्र होय छे परंतु तेओ एकला न होय. जेम औदारिकादि त्रण शरीरो वैकियादि शरीरोवडे अमिश्र पण होय छे तेम कार्मण शरीरथी रहित होता नथी. (स्० ३३२) शरीरो, कार्मणवडे उन्मिश्र ज छे एम कह्युं अने उन्मिश्रको. स्पृष्ट-स्पर्शायेला ज छे माटे स्पृष्टना प्रसंगथी बे सूत्र-' चउहीं' त्यादि० उक्तार्थ छे. केवल ' फुड़े 'त्ति ० स्पृष्ट-दरेक प्रदेश प्रत्ये व्याप्त. पृथिवीकायिकादि पांचे सक्ष्मोनो सर्व लोकथी सर्व लोकमां उत्पाद-उपजवुं होवाथी बधाय लोकमांथी नीकळीने मनुष्यक्षेत्रमां ऋजुगति अने वक्रगतिवडे उत्पन्न थता वादर तेजस्कायिकोनो तो बे ऊर्ध्व कपाटने विषे बादरतेजस्कायत्वरूप व्यपदेशने इष्ट होवाथी 'चउहिं बादरकाएहिं 'एम कहुं. बादर पृथिवी, अप्, वायु अने वनस्पतिना जीवो समस्त लोकमांथी नीकळीने पृथ्वी आदि. घनोद्धि विगेरे, अने घनवातवलयादिने विषे यथा-योग्य पोताना उत्पत्तिस्थानोमां ऋज अथवा वक्रगतिबडे उत्पन्न थता अपर्याप्तक अवस्थामां अत्यंत बहुपणाथी सर्व लोकने दरेक स्पर्शे छे. आ पृथ्वीआदि पर्याप्ता बादर तेजस्कायिको अने त्रसजीवो, लोकना असंख्याता भागने ज स्पर्शे छे. श्रीपन्नवणा स्त्रमां कहुं छे के-" एत्य णं वादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइ-भागे " अहिं बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तीना स्थानी कह्या छे. उत्पत्तिवडे लोकनी असंख्यातमी भाग छे. तथा '' वादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं सव्वलोए '' बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तकोना स्थानो कहेला छे, उत्पत्तिवडे सर्व लोकमां छे. एवी रीते आ वायु अने वनस्पतिना स्थानो जाणवा. तथा-''बादरतेउ-काइयाणं पज्रत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे " बादर पर्याप्तक तेजस्कायिकोना स्थानो

श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद ॥ ४८३ ॥

कहेला छे. उत्पत्तिवहे लोकनो असंख्यातमो भाग छे. " बादरते उक्काइयाणं अपज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता. लोयस्स दोसु उड्डकवाडेसुं तिरियलोयतहे य 'त्ति॰ बादर अपर्याप्तक तेजस्कायिकोना स्थानो लोकना बे ऊर्ध्व कपाटने विषे अने ऊर्ध्व कपाटमां रहेला तिर्यक्लोकन विषे कहेल छे. कोईक आचार्यो तिर्यक्लोकरूप स्थालमां पण कहे छे. तथा-"कहिन्नं भंते! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य ठाणा पन्नता ? गोयमा ! सुहुमपुढ-विकाइया जे पजना जे य अपज्जत्तगा ते सन्वे एगविहा अविसेसमणाणता सन्वलोगपरियावनगा पन्नत्ता समणाउसो !" त्ति ० हे भगवन् ! पर्याप्तक अने अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथ्वीकायिकोना स्थानो क्यां कहेला छे ? उत्तर-हे गौतम ! जे सक्ष्म पृथ्वीकायिको पर्याप्तक अने अपर्याप्तक छे ते बधाय एक सरखा, विशेष रहित. भिन्नस्वरूपे नहि एटले सर्व लोकने विषे व्यापीने रहेला कहेला छे. हे आयुष्मान् श्रमणा ! एमज बीजा अप्कायिकादि चारे सृक्ष्मो जाणवा. " एवं बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागो " त्ति० पर्याप्त अने अपर्याप्त, द्वींद्रियोना स्थानो कहेला छे. उत्पत्तिवडे लोकनो असंख्यातमो भाग छे. एम ज शेष त्रसोना पण स्थानो जाणवा. (स्व० ३३३) चारवडे लोक स्पर्शायेल छे एम कहुं, माटे लोकना प्रस्तावथी लोकनी अने धर्मीस्ति-कायादिनी परस्पर प्रदेशथी समानता कहे छे. 'चत्तारी' त्यादि० सरळ छे. विशेष ए के-प्रदेशाग्र-प्रदेशना परिमाणवर्ड तुल्य-समान छे, केमके आ बधायना असंख्यात प्रदेश होवाथी ' लोयागासे ' त्ति० आकाशनं अनंत प्रदेशपणुं होईने धर्मा-स्तिकाय विगरेनी साथे अतुल्यतानी प्राप्ति थवाथी ' लोक ' तुं ग्रहण करेल छे. ' एगजीवे ' ति० सर्व जीवोना अनंत

४ स्थान-काष्ययने उदेशः 🤻 सच्वप्रति-¥माजीवस्पृ-¥ष्टलोकस्पृष्ट-प्रदेशा**प्र**-338

311 0/3 1

प्रदेश होवाथी विवक्षित तुल्यतामां अभावना प्रसंगने लईने 'एक ' जीवनुं ग्रहण करेल छे. (स० ३३४) पहेलां पृथ्वी विगेरेथी लोक स्पर्शीयल छे एम कहुं, माटे पृथ्वी विगेरेना प्रस्तावथी कहे छे के-

चउण्हमेगं सरीरं नो सुपस्सं भवइ, तं०-पुढिवकाइयाणं, आउ० तेउ० वणस्सइकाइयाणं। सृ० ३३५, चत्तारि इंदियत्था पुट्ठा वेदेंति तं०-सोतिंदियत्थे घाणिंदियत्थे, जिहिंभदियत्थे फासिंदियत्थे। सू० ३३६, चउिं ठाणेहिं जीवा य पोग्गला य णो संचातेंति विदया लोगंता गमणताते तं०-गतिअभावेणं णिरुवग्गहताते लुक्खताते लोगाणुभावेणं। सू० ३३७

मूलार्थः —चार प्रकारना जीवोनुं एक शरीर अति सक्ष्म होवाथी आंखे देखी शकाय निहं, ते आ प्रमाणे—पृथ्वीकायिकोनुं, अप्कायिकोनुं, तेजस्कायिकोनुं अने वनस्पतिकायिकोनुं. (स० ३३५) चार इंद्रियोना अर्थो—शब्दादि विषयो स्पृष्ट—इंद्रियोना संबंधमां आववाथी—जोडावाथी जणाय छे, ते आ प्रमाणे—श्रोत्रेद्रियनो विषय शब्द, घाणेंद्रियनो विषय गंध, जिह्वेंद्रियनो विषय रस अने स्पर्शेद्रियनो विषय स्पर्श. (स० ३३६) चार कारणवडे जीवो अने पुद्गलो लोकांतथी बहार—अलोकमां जवा माटे समर्थ नथी, ते आ प्रमाणे—गतिना अभावथी, सहायताना अभावथी, रुक्षता—लुखासथी अने लोकना अनुभावथी—लोकमर्यादाथी. (स० ३३७)

श्रीस्था-नाङ्गदन सानुवाद श्री ४८४ ॥ अ

टीकार्थः-' चडण्ह 'मित्यादि० सरळ छे. विशेष ए के-'नो परसं'ति० अत्यंत स्क्ष्म होवाथी एक *शरीर, आंखवडे जोई शकाय निहं. क्यांक ' नो सुपरसंति ' एवी पाठ छे त्यां आंखथी सुखे देखाय निहं अर्थात् आंखथी प्रत्यक्ष दृश्य नथी परंतु अनुमान विगेरे प्रमाणोथी दृश्य छे तेम समजवुं. बादर वायुकायिकोनुं तथा पांचे स्रक्ष्म जीवीना एक अथवा अनेक शरीरो पण अदृश्य छे-देखाय निह माटे वायुने छोडीने शेष चारतुं कहुं. अहि 'वनस्पति' शब्दवडे साधारण ग्रहण करवा योग्य छे केम के प्रत्येक वनस्पतिना एक शरीरनुं तो जोवापणुं छे ज. (सू० ३३५) पृथ्वी विगेरेना शरीरोनुं चक्षुइंद्रियवडे अवि-षयपणुं कहुं माटे इंद्रियना निपयना प्रस्तानथी कहे छे-'चत्तारि इंदिये'त्यादि० अर्थ स्पष्ट छे. निशेष ए के-इंद्रियोनडे 'अर्थंत' जणाय छे ते इंद्रियोना अर्थो-शब्दादि, 'पुट्ट 'त्ति० स्पृष्टा-इंद्रियो साथे संबंध पामेला, 'वेएंति 'त्ति० आत्मावडे जणाय छे केमके नेत्र अने मन सिवाय श्रोत्र विगेरे इंद्रियोनो प्राप्त थयेल विषयना बोधरूप स्वभाव होय छे. कह्युं छे के— पुटुं सुणेइ सदं, रूवं पुण पासई अपुटुं तु । गंधं रसं च फासं च, बद्धपुटुं वियागरे ॥ १८० ॥ श्रोत्रेंद्रिय स्पर्शमात्रथी शब्दने सांभळे छे, बळी स्पर्श कर्या सिवाय चक्षुइंद्रिय रूपने जुवे छे अने विशेष रीते स्प-र्यायेल अर्थात् सारी रीते एकत्र थयेल गंध, रस अने स्पर्शने घाणेंद्रिय विगेरे ग्रहण करे छे-जाणे छे. (स्० ३३६) अनंतर जीव अने पुद्गलने। इंद्रियरूप द्वारवडे ग्राहक ग्राह्यभाव कह्यो, हवे ते बन्नेना गतिधर्म प्रत्ये चिंतन करता थका सत्रकार * पृथ्वो, अप्, तेन अने साधारण वनस्पतिना अनेक श्रारीरो साथे मळवाथी देखाय छे.

४ स्थान-काध्ययने उदेशः ३ पृथ्वयादि-शरीरासुद-**इयतास्पृष्टा** इन्द्रियार्थाः जीवपुद्ग-'लानामलो-केऽगमः सू० ३३५-३३७ 11 858 11

कहे छे-'चउही'त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-धर्मास्तिकायादि द्रव्योनी गति नथी माटे 'जीवा य पुग्गला य' एम कहुं, 'नो संचाएंति' समर्थ 'बहिच' त्ति ० लोकांतथी बहार अर्थात् अलोकने विषे जवा माटे समर्थ नथी, कारण के गतिनो अभाव छे-लोकना छेडाथी आगळ गतिलक्षण स्वभावनो अभाव छे; जेम दीपकनी शिखा नीचे न जाय तेम तेओ जई शकता नथी. तथा निरुपग्रहपणाथी-धर्मास्तिकायना अभावने लईने गतिमां सहाय करनारनो अभाव होवाथी गाडी विगेरेथी रहित पांगळानी जेम गमन थतुं नथी. वळी रुक्षपणाथी-रेतीनी मूठीनी जेम लोकना छेडाओने विषे पुद्गलो, छुखाशथी अवश्य एवी रीते परिणमे छे के जेने लईने आगळ जवा माटे समर्थ थता नथी. कर्मपुद्गलोनो पण तथाभाव-रुक्षभाव थये छते जिवाथी छूटा पडी जाय छे. वळी सिद्ध परमात्माओ निरुपग्रहतावडे-धर्मास्तिकायना अभावने लईने आगळ जता नथी. लोकानुभाव-लोकनी मर्यादा-वडे पोताना विषयक्षेत्रथी बीजे स्थळे सूर्यमंडळनी जेम आगळ जई शके नहिं. (स्व २३२७) अनंतर अर्थों कहा, कहेल अर्थमां दृष्टांतथी प्रायः प्राणीओने विश्वास उत्पन्न थाय छे माटे दृष्टांतना भेदोनुं प्रतिपादन करवा माटे पांच सत्रो कहे छे— चउविवहे णाते पं० तं०-आहरणे, आहरणतदेसे, आहरणतद्दोसे, उवन्नासोवणए १, आहरणे चउव्विहे पं॰ तं॰-अवाते, उवाते, ठवणाकम्मे, पहुप्पन्नविणासी २, आहरणतद्देसे चउव्विहे पं॰ तं०-अणुसिट्टी, उवालंभे, पुच्छा, निस्सावयणे ३, आहरणतद्दोसे चउठिवहे पं० तं०-अधम्मजुत्ते, पडिलोमे, अंतोवणीते, दुरुवणीते ४, उवन्नासोवणए चउिवहे पं० तं०-तव्वरथुते, तदन्नवरथुते,

श्रीस्था-नाष्ट्रदत्र सानुवाद श ४८५ ॥ पिडिनिभे, हेतू ५, हेऊ चउिवहे पं॰ तं०-जावते थावते वंसते छूसते, अथवा हेऊ चउिवहे पं॰ तं०-पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवम्मे, आगमे, अहवा हेऊ चउिवहे पं॰ तं०-अत्थित्तं अत्थि सो हेऊ १, अत्थित्तं णित्थि सो हेऊ २, णित्थित्तं अत्थि सो हेऊ ३, णित्थित्तं णित्थि सो हेऊ ४। सू॰ ३३८

मूलार्थ:-चार प्रकारे ज्ञात-दृष्टांत कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ आहरण-जेनावडे च्याप्तिथी अप्रसिद्ध अर्थने प्रतीतिमां लवाय छे, जेम ब्रह्मद्त्तनी माफक करेलुं पाप दुःखने माटे थाय छे एम कहेवुं ते, २ देश आहरण-जेम आ स्त्रीनुं मुख चंद्र सद्दश छे एम कहेवुं ते, अहिं चंद्रनी सौम्यतारूप देशनुं समानपणुं छे, ३ दोष सहित आहरण-जेम कोईक बुद्धि-मान ईश्वरादिवडे करायेल आ जगत छे-घटपटादिनी माफक कहे चुं ते, ४ उपन्यासोपनय-कोईक वादी पोताना पक्ष चुं स्थापन करे छे अने ए स्थापेल पक्षने दूर करवा माटे प्रतिवादीए आपेलुं दृष्टांत, जेम वादीए कह्युं के-आत्मा आकाशनी जेम अमूर्त होवाथी अकर्ता छे, तेनुं निराकरण करवा माटे कहेवुं के-एम आकाशनी माफक आत्मा अभोक्ता पण थशे. (१), आहरण चार प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ अपाय-अनर्थ-ते द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी अने भावथी एम चार प्रकारे छे. तेनां उदाहरणो कहेवा ते, २ उपाय-पुरुषना व्यापारह्रप साधनवडे कार्यनी निष्पत्ति थाय छे ते, तेना द्रव्यादि भेदथी उदाहरणो कहेवा, ३ जे दृष्टांतद्वारा अन्यना मतने दृषण आपीने स्वमतनी स्थापना कराय छे ते स्थापनाकर्म, पुंडरीक अध्ययननी माफक अने ४ तत्काल उत्पन्न थयेल वस्तुनी विनाश, ते दृष्टांतनुं निरूपण करवा माटे ज्यां होय छे ते प्रत्युत्पन्न-

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः **३** आहरण-भेदाः स्• ३३८

॥ ४८५ ॥

विनाशी (२). देश आहरण चार प्रकारे कहेल छे. ते आ प्रमाणे-१ सदुगुणनी स्तुतिवडे गुणवानना गुणोनी प्रशंसा ज्यां उप-देशाय छे ते अनुशास्ति, २ अपराधने विषे प्रवृत्त थयेल ग्रुनिने दृष्टांतद्वारा जे उपालंभ देवाय छे ते उपालंभ. ३ ज्ञान विगेरेना निर्णयना अभिलाषीपणाथी गुरुने पूछवायोग्य प्रश्नो करवावडे जेमां दृष्टांतद्वारा उपदेशाय छे ते प्रच्छा तेमज ४ कोईपण सुशिष्यनो आश्रय करीने बीजाने प्रतिबोधवा माटे दृष्टांतरूपे जे कहेवुं ते निश्रावचन (३) दोष सहित आहरण चार प्रकारे कहेलुं है. ते आ प्रमाण-१ जे दृष्टांत कहेवाथी अधर्मनी बुद्धि उत्पन्न थाय ते अधर्मयुक्त, २ छुचा प्रत्ये छुचाई करवी ' दाठं प्रति द्वााट्यम् ' एम दृष्टांतद्वारा कहेवुं ते प्रतिलोम, ३ अन्यना मतने दृषण आपवा माटे जे ग्रहण करेल दृष्टांतद्वारा स्वमतने ज दृषण आपे छे ते आत्मोपनीत अने ४ दुष्ट अथवा अशुद्ध वचननी योजना जे दृष्टांतमां कराय छे ते दुरुपनीत. (४) उपन्यासोपनय चार प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ वादीए स्थापेल जे साधन(हेतु)रूप वस्तु, ते ज वस्तु उत्तररूप छे जेने विष ते तद्वस्तुक, २ वादीए स्थापेल वस्तुथी अन्य उत्तरभूत वस्तु छे जेमां ते तदन्यवस्तुक, ३ वादीए कहेल दृष्टांतना जेबुं दृष्टांत उत्तर देवा माटे कहेवानुं छे जेमां ते प्रतिनिभ अने ४ जे उपन्यासीपनयमां पूछनारनी हेतु छे ते ज हेतु उत्तररूपे कहेवाय छे ते हेतु. (५) हेतु चार प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ वादीना काळनी यापना-विलंब करे छे ते यापक. २ वादीए स्थापेल हेतुना सदद्य हेतुने जे स्थापे छे ते स्थापक, ३ शब्दना छळवडे जे बीजाने व्यामोह(अम) उत्पन्न करे छे ते व्यंसक अने ४ धूर्चवडे ग्रहण करायेल वस्तुने जे छूंटी ले छे ते खुसक. अथवा हेत चार प्रकारे कहेल छे. ते आ प्रमाणे-प्रत्यक्ष-आत्मावडे जणाय ते पारमार्थिक प्रत्यक्ष अने इंद्रियादिद्वारा जणाय ते सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष, २ हेतुना जोवा- भीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद् ॥ ४८६॥ **

रूप संबंधथी व्याप्तिना स्मरण पछी जे मान-ज्ञान थाय छे ते अनुमान, जेम धूमाडाने जोवाथी अग्निनुं ज्ञान थाय छे, ३ उप-मावडे समानपणानुं जे ज्ञान थवुं अर्थात् बळद जेवो रोझ छे ते उपमान, अने आप्तपुरुषद्वारा कहेवायछुं वचन ते आगम. अथवा हेतु चार प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ धूमादि हेतुरूप वस्तु छे तो अग्नि विगेरे साध्य वस्तु छे, ते अस्तित्व-अस्तित्व हेतु, २ जो अग्नि विगेरे वस्तु छे तो तेथी विरुद्ध शीत विगेरे वस्तु नथी ते अस्तित्वनास्तित्व हेतु, ३ अग्नि विगेरे नथी माटे शीतकाळमां ठंडी विगेरे छे ते नास्तित्वअस्तित्व हेतु अने ४ वृक्षत्वादि नथी तेथी शाखा विगेरे पण नथी ते नास्तित्व-नास्तित्व हेत. (स० ३३८)

टीकार्थः—पांच स्त्रोनी व्याख्यामां जे छते दार्षांतिक अर्थ जणाय छे ते ज्ञात—दृष्टांत, अहिं अधिकरणमां 'क्त ' प्रत्यय करवाथी 'ज्ञात ' शब्द सिद्ध थाय छे. साधन(हेतु)ना सद्मावमां साध्यनो अवश्य सद्भाव छे अथवा साध्यना अभावमां साधनने। अवश्य अभाव होय छे. आ उपदर्शन लक्षण छे. कह्युं छे के—''साध्यवडे हेतुनो बोध थाय छे अने साध्यना अभावमां साधनने। बोध थतो नथी. जेमां दृष्टांत कहेवाय छे ते साधम्य अने वैधम्यस्य बे प्रकारे छे. '' साधम्य दृष्टांत अहिं अग्नि छे, धूमधी जेम महानस—रसोडामां अने वैधम्य दृष्टांत तो अग्निनो अभाव छते धूमाडो होतो नथी, जेम जलाश्यमां अग्नि होतो नथी. अथवा आख्यानक—कथानकस्य दृष्टांत ते चरित्र अने किंपतना भेदथी बे प्रकारे छे. तेमां चरित्र आ प्रमाणे—निदान(नियाणुं) दुःखने माटे छे, ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तानी जेम. किंपत आ प्रमाणे—प्रमादवाळाओने यौवनादि अनित्य छे एम बतावचुं, जेम पांड (धोळा) पत्रे—पांदडाए किश्वलय—क्रमळां पत्रोने कह्यं, ते आ प्रमाणे—

४ स्थान-कास्ययने उद्देशः ३ आहरम-मेदाः सूक ३३८

11 856 11

जह तुब्भे तह अम्हे, तुब्भेऽविय होहिहा जहा अम्हे। अप्पाहेड् पडंतं, पंडुयपत्तं किसलयाणं ॥१८१॥

जेम हमणा तमे किशलयभावने अनुभवता थका गर्व करो छे तेम अमे षण भूतकालमां तमारा जेवा हता. हमणा अमे जेम जीर्ण-शुष्कभावने प्राप्त थया छीए तेम तमे पण भविष्यमां थशो— उक्तन्यायवडे पडता एवा पांडु (पाकी गयेला) पत्री किशलयोन बोध आपे छे.

अथवा उपमान मात्र दृष्टांत-कोमळ पत्रनी जेम सुकुमार हाथ छे, इत्यादिवत् अथवा ज्ञात-उपपत्ति मात्र दृष्टांतनो हेतु होय छे. शामाटे यव खरीदो छो ! मफत नथी मळता माटे खरीदीए छीए इत्यादि अनेक प्रकारो छे, तो पण साध्यने जणाववारूप दृष्टांत, उपाधिना भेदथी चार प्रकारे सत्रकार बतावे छे-१ ' आ ' अभिविधि(व्याप्ति)वडे ' हियते ' अप्रतीत अर्थ जेनावडे प्रतीतिमां लई जवाय छे ते आहरण, जेमां मामुदायिक ज दार्ष्टांतिक अर्थ लेवाय छे. जेम पाप दु:खेन माटे छे, ब्रह्मदत्त चक्रीनी माफक. तथा २ 'तस्य'-आहरणना अर्थनो देश(विभाग) ते तदेश, उपचारथी ते देश-रूप आहरण छे. प्राकृतशैलीथी ' आहरण ' शब्दनो पूर्व निपात कर्ये छते (मूलमां) आहरणतदेश छे. अिं तात्पर्य ए छे के-ज्यां दृष्टांतरूप अर्थना देशवडे ज दृष्टांतिक अर्थनो न्याय मेळवाय छे ते तदेशोदाहरण छे. जेम आ स्त्रीनुं चंद्र जेवुं मुख छे. अिं चंद्रने विषे सौम्यत्व लक्षणवडे ज देशथी मुखनो न्याय मेळववो, परंतु नेत्र तथा नासिकानुं रहितपणुं तेमज कलंकादि-रूप अनिष्टवडे निंह. ३ ते आहरण संबंधी साक्षात् अथवा प्रसंगथी प्राप्त थतो दोष ते तदोष, ते आ प्रमाणे-धर्मने विषे धर्मानो

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ४८७ ॥

उपचार करवाथी तद्दोषआहरण छे. अहिं प्राकृत शैलीथी आहरण शब्दनो पूर्व निपात करवाथी ' स्त्रमां ' आहरणतद्दोष प्रयोग थेयल हे अथवा ' तस्य ' आहरण संबंधी दोष छे जेमां ते आहरणतदेश, बीज़ं तेमज जाणवुं. अहिं भावार्थ आ प्रमाणे छे-साध्यनु विकलपणुं (अयोग्यत्व) विगेरे दोषथी जे दुष्ट छे ते तदोषआहरण. जेम घटनी माफक अमूर्तपणाथी शब्द नित्य छे. अहिं साध्य अने साधननी विकलता नामनो दृष्टांतदोष छे. वली जे असभ्य विगेरे वचनरूप छे ते पण तदाषआहरण छे. जेम हुं सर्वथा असत्यनी परिहार करुं छुं-गुरुना मस्तकने कापवानी माफक, अथवा साध्यनी सिद्धिने करती थको पण अन्य दोषने ठावें छे ते पण तद्दोषाहरण. जेम के-लौकिक मुनिओ सत्य धर्मने इच्छे छे पण-" सो क्रवाधी एक वावडी सारी, सो वावडीथी एक यज्ञ श्रेष्ठ, सो यज्ञथी एक पुत्र श्रेष्ठ अने सो पुत्रथी एक सत्य श्रेष्ठ छे " आ प्रमाणे नारदनी माफक बोले छे. आवा वचनवडे श्रीताने प्रायः संसारना कारणभूत पुत्र, यज्ञ विगेरेने विषे धर्मनी प्रतीति बतावेली छे तेथी आहरण-तदोषता छे. वळी जेम कोई पण बुद्धिमान पुरुष कहे के-सिक्नेवश रचना विशेषवाछं होवाथी घटनी माफक आ जगत करायेखं छे अने तेना कर्ता ईश्वर छे. उक्त वाक्यवडे ज ते विवक्षित ईश्वर बुद्धिमान कुंभार तुल्य अनिश्वर पुरुषविशेष सिद्ध थाय छे. ४ वादीए स्वसम्मत अर्थना साधन माटे वस्तुनो उपन्यास (स्थापन) कर्ये छते तेना खंडन माटे प्रतिवादीद्वारा जे विरुद्ध अर्थनो उपनय कराय छे अथवा पूर्वपक्षना स्थापनमां जे उत्तरहरूप उपनय ते उपन्यासोपनय केवळ उत्तरहरूप युक्ति मात्र छतां पण दृष्टांतनो भेद छे; कारण ज्ञात-द्रष्टांतनो हेतु होय छे. जेमके-अअत्मा अमूर्तपणाथी आकाशनी माफक अकर्ता छे, एम कहा छेत अन्य * आ सांख्य मत हो. तेओ आत्माने कर्ता मानता नथी पण भाक्ता माने हो.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ आहरण-भेदाः स्रु० ३३८

..

11 850 11

कहे छे-आकाशनी माफक आत्मा अभोक्ता पण थशे अने अभोक्तृत्व (अभोक्तापणुं) तमने पण इष्ट नथी. वळी प्राणीनुं अंग होवाथी ओदन(भात) विगेरेनी माफक ×मांसनुं भक्षण दोष रहित छे. अहिं अन्य कहे छे के-ओदन विगेरेनी माफक स्व-पोताना पुत्र विगेरेनुं मांसभक्षण पण निर्दोष थशे. वळी ऋषभदेव विगेरेनी जेम संग रहित मुनिओ वस्त्र अने पात्र विगेरेना संग्रहने करता नथी. अहिं कहे छे-कमंडल विगेरे पण तेओ वस्त्रादिनी माफक ग्रहण करता नथी. शामाटे तुं कार्य करे छे धननी इच्छावाळो छुं माटे. अहिं पहेलुं आहरण नामनुं ज्ञात संपूर्ण साधर्म्यरूप छे, बींजुं तहेशाहरण-देशथी साधर्म्यरूप छे, त्रीजुं तहेशाहरण (दोष सहित) छे अने चोथुं उपन्यासोपनय प्रतिवादीना उत्तररूप छे. आ प्रमाण चार प्रकारना ज्ञातना स्वरूपना विभाग छे. अहिं देशथी संवाद गाथा जणावे छे—

चरियं च कप्पियं वा, दुविहं तत्तो चउव्विहेकेकं। आहरणे तहेसे, तहोसे चेवुवन्नासा॥ १८२॥

उदाहरण वे प्रकारे छे-चरित्र अने कल्पित. ते दरेकना चार चार भेद छे-१ आहरण, २ तदेश, ३ तदोष अने ४ उपन्यासोपनय.

१ ' अवाये '-अपाय-अनर्थ, ते जे दृष्टांतमां द्रव्यादिने विषे कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे-आ द्रव्यादि विशेषोने विषे विवक्षित द्रव्यादि विशेषोनी जेम, अपाय-अनर्थ छे अथवा हेयता (त्यागवुं) जेमां कहेवाय छे ते अपाय नामनुं आहरण छे, ते

× निर्दय एवा पशुवधादिने करनार वाममार्गी वगेरेना मत छे. + आ दिगंबरना मत छे. तेओ वस्त्रपात्रादि उपकरणने मानता नथा.

थीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ४८८ ॥

द्रव्यादि भेद्वडे चार प्रकारे छे. तेमां द्रव्यथी अथवा द्रव्यने विषे अपाय अथवा तेनुं कारण होवाथी द्रव्य ज अपाय ते द्रव्य-अपाय, एनी हेयताना साधक अथवा अपाय-अनर्थना साधक आहरण पण तेमज कहेवाय छे. तेना प्रयोग आ प्रमाणे-द्रव्य अपाय छोडवा योग्य छे अथवा द्रव्यमां अनर्थ वर्ते छे. आ संबंधमां दृष्टांत जणावे छे-कोईक वे विणक भाईओ परदेशमां जई, धन मेळवीने पाछा वळतां मार्गमां धननी वांसळीना लोभथी परस्परने मारवानी इच्छाथी क्रमशः पोताना गाम पासे आव्या त्यारे विचार्युं के-आ द्रव्य अनर्थनुं कारण छे तेथी पश्चात्तापपूर्वक द्रहमां वांसळी फेंकी दीधी एटले मत्स्ये गळी, ते मत्स्यने घीवरे पकड्यो. बाद ते धीवर पासेथी ते बन्ने भाईओनी बहेनो मत्स्यने खरीदी लावी. पछी तेने शस्त्रथी विदारतां तेमांथी वांसळी नीकळी. त्यारे तेनी माताए पूछयुं के-आ शुं छे ? तेणीए द्रव्यना लोभथी पोतानी माताने शस्त्रवडे मारी नाखी. ते अनर्थने जोईने बन्ने भाईओए वराग्यथी *दीक्षा लीधी. अपायनो परिहार, द्रव्यना त्यागथी-प्रव्रज्यावडे थाय छे. देशवडे उपनयनी विवक्षा न करवाथी आनी आहरणता क्षेत्रथी अथवा क्षेत्रमां अथवा क्षेत्र ज अपाय ते क्षेत्र अपाय. शेष स्वरूप पूर्वनी माफक छे. आगळ पण एमज जाणवुं. तेनो प्रयोग आ प्रमाण -अपायवाळुं क्षेत्र वर्जवुं. जरासंघ नामना प्रतिवासुदेवना हेतुथी संभावित अनथे ज्यां छे एवी मथुरानगरीने जेम दशाईचक्र-यादवो छोडता हवा, अथवा दुश्मनना क्षेत्रमां सर्प सहित घरनी माफक अपाय संभवे छे. अपाय सहित-अनर्थवाळा काळना त्यागमां यत्न करे ते काळअपाय, ते आ प्रमाणे-' बार वर्ष सुधीमां द्वैपायन द्वारिकाने बाळशे' एम श्री नेमिनाथ प्रभ्रना वचन सांभळीने बार वर्षलक्षण अपाय सहित समयने छोडवानी इच्छाथी उत्तरापथने ***** आ कथा मुनिपतिचरित्रमां सुस्थित आचार्यना संबंधमां छे, त्यांथी जाणो लेवी.

४ स्थान-काष्ययने उदेशः **३** आहर**ब**-भेदाः द्य० ३३८

11 866 11

विषे गयेल द्वैपायननी जेम, अथवा रुद्र विगेरेनी जेम अपाय सहित काळ होय छे. भावअपाय आ प्रमाणे-भाव अपायने महान् सर्पनी जेम छोडवुं, अथवा नागदत्त क्षुल्लकनी माफक. ते दृष्टांत कहे छे-कोईक तपस्वी साधु, केई क्षुल्लक मुनि सहित पारणा माटे भिक्षा लेवाने फरता हता तेवामां कोईक रीते तेनाथी देडकी मरी जवाथी क्षुस्नक(लघु)म्रुनिए प्रायश्चित्तनी प्रेरणा करी, परंतु तेतुं वचन (तपस्तीए) स्वीकार्युं निहं. फरीथी आवश्यकना समयमां शिष्ये संभारी आप्युं, तेथी क्रोधित थईने शिष्यने मारवा माटे ते वेगथी दोड्यो. वचमां स्तंभ साथे अथडावाथी ते साधु मृत्यु पामीने ज्योतिष्कदेवमां उत्पन्न थयो.त्यांथी अनंतर च्यवीने जातिस्मरणज्ञान सहित दृष्टिविष सर्प थयो. ते समयमां कोईक सर्पना दंशवंडे राजानो प्रत्र मरण पामवाथी सर्पीनी उपर कोष पामेल राजाए बधा सर्पोने मारवानो आदेश करवाथी मारनाराओ पैकी कोईक मारनार मनुष्यद्वारा औषधिना बळथी आकर्षायेल तेनागे ज्ञानथी पूर्वकृत क्रोधना परिणामने जोईने विचार्युं के-मारी दृष्टिना विषयी मने मारनार पुरुषनो नाश न थाओ, आबी भावनावडे बिलमांथी पूंछडाना भागथी जेम जेम नीकळतों गयो तेम तेम तेना खंड (कटका) थता गया तो पण क्रोधलक्षण भाव अपायने छोडवा लाग्यो. बाद ते ज नाग त्यांथी अनंतर च्यवीने राजाना नागदत्त नामना पुत्र तरीके उत्पन्न थयो. ते बाळपणामां ज दीक्षा स्वीकारीने अत्यंत वैराभ्यवाळो थयो परंतु (पूर्वना) तिर्यंचभवना अभ्यासथी अत्यंत क्षुधावाळो थईने, स्यौंदयथी प्रारंभी अस्त समय पर्यंत भोजन करनार थयो, अने असाधारण गुणोने मेळववावडे देवताओद्वारा वंदन करायो. आ ज कारणथी ते मुनिना गच्छनी अंदर रहेल मासोपवास विगेरे तपस्या करनार चार तपस्वीओनी ईर्ष्याना कारणभूत थयो. (पर्छी ते साधुए) पोताने माटे लावेल आहार ते तपस्वी चार म्रुनिशोने विनयने माटे बताव्यो, परंतु मत्सरथी ते म्रुनिओ ते

मीस्था-नाष्ट्रस्त्र सानुवाद ॥ ४८९ ॥ आहारमां थूंक्या. पछी ते मुनि (ते थूंकवाळो आहार अमृत तुल्य मानीने जम्या) अत्यंत उपशांत चित्तवृत्तिथी केवळज्ञान पाम्यो, नगरना देवताओए तेमने वंदन कर्युं. वली ते चारे तपस्वीओने पण संवेगनो हेतु थवावडे केवळज्ञान—दर्शनरूप समृद्धिनो प्राप्त करावनार अने कोपरूप भाव अपायनो त्याग करावनार * थया. अथवा कोपादि लक्षणवाळो भाव अपाय क्षपक (तपस्वी मुनि)नी माफक थाय छे. अहिं आ संबंधमां वे गाथा जणावे छे—द्वावाए दुन्नि उ, वाणियगा भायरो धणानिमित्तं। वहपरिणयमेक्कमिक्कं, दहांमि मच्छेण निव्वेओ ॥१८३ वित्तांमि अवक्कमणं, दसारवग्गस्स होइ अवरेणं। दीवायणो य काले, भावे मंडुिक्कयाखमओ ॥ १८४ ॥ आ बंने गाथाओमां जणावेल दृष्टांतो उपर कहेवाई गया छे.

' उचाए ' क्ति ॰ उपेय-कार्य प्रत्ये पुरुषना न्यापारादि सामग्रीरूप ते उपाय, ते द्रव्यादि उपेयमां छे, एवी रीते जे आहरणमां कहेवाय छे ते उपाय आहरण. जेमके-आ साधवा योग्य द्रव्यादि विशेषोने विषे उपाय छे, विवक्षित द्रव्यादि विशेषनी माफक अथवा द्रव्यनी उपादेयता जेमां कहेवाय छे ते आहरणउपाय छे. ते पण द्रव्यादिवडे चार प्रकारे छे. तेमां सुवर्णादि द्रव्यनो, अथवा प्रासुक उदक विगेरेनो अथवा 'द्रव्य' ए ज उपाय ते द्रव्यउपाय. द्रव्यनुं साधन अथवा द्रव्यनी उपादेयता-

* आ कथा उपदेशप्राप्तादना प्रधम भागमां छे. मुनि कूरगडु नामधी प्रतिद्धिने पामेल छे, केम के ते निरंतर एक गडुक प्रमाण

आहार करता हता.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ आहरण-भेदाः स्र० ३३८

11 858 11

रूप साधन पण तेमज कहेवाय छे. तेनो प्रयोग आ प्रमाण-सुवर्ण विगेरेमां उपाय छे अथवा उपायवडे ज सुवर्णादि मेळववामां प्रवर्त्तवायोग्य छे, तेवा प्रकारना धातुवाद सिद्धपुरुष विगेरेनी माफक. एम क्षेत्रोपाय-क्षेत्रमां परिकर्म(संस्कार)वडे उपाय. जेम आ क्षेत्रनो क्षेत्रीकरणरूप उपाय हळ विगेरे छे अथवा तथाविध साधुना व्यापारवडे तथाविध अन्य क्षेत्रनी माफक प्रवर्त्तवुं. एम काळउपाय-काळना ज्ञाननो उपाय. जेम काळना ज्ञानमां धान्य विगेरेनी जेम उपाय छे, अथवा घटिका(घडी)नी छ।या विगेरे उपायवडे तं काळने जाणः तथाभृत गणितने जाणनारनी माफक. एम भावोपाय-जे भावने जाणवामां उपाय छे अथवा उपायथी तुं भावने जाण. मोटी कुमारिकानी कथा कहेवावडे जाणेल छे चोर विगेरेनो भाव जेणे एवा अभयकुमारनी माफक. ते कथा आ प्रमाणे-राजगृहनगरना स्वामी श्रेणिकराजानो अभयकुमार नामनो पुत्र छे. ते राजाने देवना प्रसादवडे सर्व ऋत संबंधी फळादिथी समृद्ध आराम(बगीचो) मळेल छे. त्यारबाद अकाळे उत्पन्न थयेल आम्रफल-भक्षणना दोहदवाळी पोतानी स्त्रीनो दोहद पूर्ण करवा माटे कोईएक चांडाल चोरे ते बगीचामांथी आम्रफळोनुं अपहरण कर्ये छते ते चोरने जाणवा माटे नाटक जोवाना निमित्ते एकठा थयेला घणा मनुष्योना मध्यमां अभयकुमारे बृहत्कुमारिकानी कथा कही, ते आ प्रमाणे-कोईक मोटी क्रमारिका इच्छित पतिना लाभने अर्थे कामदेवनी पूजा करवा सारु कोईकना बगीचामांथी पुष्पोने चोरती थकी बगीचाना माळीए पकडी.तेणीए सत्य हकीकत कही एटले 'परणीने पतिना समागम सिवाय तारे मारी पासे आववुं 'एम कबुलात करावीने माळीए तेने छोडी. त्यारबाद क्यारेक ते परणी छती, पतिने पूछीने रात्रिए माळी पासे जाती हती तेवामां क्रमशः चोर* अने राक्षसे पकडी. ♣ वस्त्राभूषणवडे अलंकत होव।थी लूंटवा माटे चोरे पकडी अने राक्षसे भक्षण करवा पकडी.

श्रीस्था नाङ्गद्धत्र सानुवाद ।। ४९० ।। तेणीए सत्य वृत्तांत कही छते ' ज्यारे तुं पाछी वळे त्यारे अमारी पासे आवजे ' एम नकी (कोल) करीने तेओए छोडी. पछी ते बगीचामां गई. माळीए 'आ स्त्री सत्य प्रतिज्ञावाळी छे' एम जाणीने अखंडित शील सहित तेणीने विदाय करी. तेमज चोर अने राक्षसे पण विदाय करी. त्यारबाद पित पासे आवी.'' आ प्रमाणे कथा कहीने 'अहो छोको! पित, माळी, चोर अने राक्षसमांथी दुष्कर काम करनार कोण ?' एम अभयकुमारे पूछ्युं, त्यारे इर्ष्यांछ में विगरे लोकोए पित, माळी अने राक्षसने दुष्कर काम करनार तिरके जणाच्या पगंतु चांडाल चोरे, 'चोर दुष्करकारक छे' एम कह्युं, तथी अभयकुमारे पण आ उपायवंडे भावने ओळखीने तेमज आ चोर छे एम नकी करीने चोरने बंधावी लीधो. आ संबंधमां बे गाथा दर्शांवे छे—

एमेव चउित्राप्पो, होइ उवाओऽवि तत्थ द्व्विम्म । धाउव्वाओ पढमो, णंगलकुलिएहिं खेत्तं तु ॥१८५ कालोऽवि नालियाईहिं, होइ भाविम्म पंडिओ अभओ। चोरस्स कए णिट य,वड्डकुमारिं परिकहिंसु॥१८६ आ बन्ने गाथाओ उक्तार्थ हे.

र उचणाकम्मे ' त्ति ० स्थापवुं ते स्थापना, तेवुं कर्म ते स्थापनाकर्म. जे दृष्टांतद्वारा परमतने दूपित करीने स्वमतनी स्थापना कराय छे ते स्थापनाकर्म. द्वितीय(बीजा) अंगमां बीजा श्रुतस्कंघने विषे पुंडरीक नामनुं पहेलुं अध्ययन छे तेमां कहेलुं छ के—कोईक बहुल कादव अने जळवाळी पुष्करणी छे, तेना मध्यभागमां रहेल महापुंडरीक कमळने लेवा माटे

+ इर्पाळुए पतिने दुष्कर करनार कहा।, कामातुर लोकोए माळोने अने क्षुधातुर जनोए राक्षसने दुष्करकारक जणाव्यो.

४ स्थान काध्ययने उदेशः ३ आहरण-भेदाः सु० ३३८

चार दिशाएथी चार पुरुषो कादववाळा मार्गोवडे प्रवेश करवा माटे तैयार थया परंतु तेओ कमळने मेळव्या सिवाय कईममां खुंची गया. अन्य पुरुष तो कांठा उपर रह्यो थको तेमज कईमने स्पर्क्या सिवाय ज अमोघवचनवडे पुंडरीकने मेळवतो हतो. आ दृष्टांत छे, अहिं उपनय आ प्रमाणे-कईमना स्थान जेवा विषयो, पुंडरीक समान राजादि भन्य पुरुष, चार पुरुषो समान परतीर्थिको, पंचम पुरुष समान साधु, अमोघ वचन समान धर्मदेशना अने पुष्करणी समान संसार. तेनाथी उद्घार समान निर्वाण छे. आ दृष्टांतने विषे विषयनी अभिलापाबाळा अन्यतीर्थिकोने संसार्थी तारकपणुं नथी अने साधुने तो तथी विपरीत छे अर्थात् भव्यना तारक छे. आ प्रमाणे कहेता आचार्ये परमतना दृषणवडे स्वमतनुं स्थापन कर्युं, आ दृष्टांते स्थापनाकर्म थाय छे. अथवा प्राप्त थयेल द्वणने द्र करीने पोताना अभिप्रायनी स्थापना करवी, आवा प्रकारना अर्थनी प्राप्ति जेनाथी थाय ते स्थापनाकर्म. कोईक माळीए राजमार्गमां वडीनीत करवारूप अपराधने दूर करवा माटे ते स्थानने विषे पुष्पोनो पुंज करवाथी 'आ शुं छे ?' एम पूछनारा लोकोने 'आ हिंगुशिव देव छे' एम बोलता थेका ते माळीए व्यंतरना आयतननी स्थापना करी. आ आख्यानथी अवश्य उक्त अर्थ निश्चित थाय छे माटे आ स्थापनाकर्म छे. तथा नित्यानित्य वस्तु छे एम जिनमत कहे छे माटे असंगत छे कारण के विरुद्ध धर्मनो अध्यास छे, आ प्रमाणे बादीए आपेल दूषणने दूर करवा माटे कहेवाय छे के-विरुद्ध धर्माध्यास विकल्पनी जेम मेदनुं कारण नथी. विकल्प ज ऋमवडे थनार वर्ण(अक्षर)नो उल्लेख-कथन करनार बिरुद्ध धर्म सहित होय छे. कथंचित् एक नहिं थाय एम नहिं अर्थात् एक थाय.खंडथी अलग करेल अक्षर संबंधी स्वरूपना लामनो अभाव थवाथी अर्थात् कोईपण शब्दना दरेक अक्षरोने जुरा पाडवाथी मुख्य अर्थनो अभाव थाय, प्रवृत्ति अने निवृत्तिने भीस्या-नाङ्गधत्र सातुवाद ॥ ४९१ ॥

विषे अकारणता थाय, आ प्रमाणे असमंजस थाय. एमज विरुद्ध धर्माध्यासनुं कथंचित् अभेदपणुं छते केवळ नित्यानित्य थतुं नथी. आ दूषण द्र कर्युं एटछं ज निहं परंतु सर्वे वस्तु अनेकांतात्मक छे एम विकल्पज्ञातवडे स्वमतस्थापन कर्युं. स्वमतनी स्थापनावडे विकल्पज्ञात, स्थापनाकर्म छे. अत्र निर्युक्तिनी गाथाओ जणावे छे-

ठवणाकम्मं एकं(अभेदमित्यर्थः),दिट्ठंतो तत्थ पुंडरीयं तु। अहवाऽवि सन्नढकण,हिंगुसिवक्यं उदाहरणं॥

आ गाथानो भावार्थ उपर्युक्त छे. जे सव्यभिचार-दोष सहित हेतु सहसा-तत्काल स्वयं स्थापन करेल छे तेना समर्थन माटे जे दृष्टांत फरीथी स्थपाय छे ते स्थापनाकर्म. कह्युं छे के-

सब्वभिचारं हेउं, सहसा वोत्तुं तमेव अन्नेहिं। उववृहइ सप्पसरं, सामत्थं चऽप्पणो णाउं ॥१८८॥

सन्यभिचार हेतुने तत्काल कहीने ते ज हेतुने पोतानुं प्रसंग सहित सामर्थ्य जाणीने अन्य हेतुओवडे पुष्ट करे.

ते आ प्रमाणे-शब्द कृतकत्व (करेल) होवाथी अनित्य छे. प्रतिपक्षी-वर्णात्मक शब्दने विषे कृतकत्व विद्यमान नथी, केमके वर्णी(अक्षरो)ने नित्यपणाए कहेल छे. कृतकत्व हेतु व्यभिचारी (सदोष) छे. पूर्वपक्षी फरीथी कहे छे-वर्णात्मक शब्द कृतकत्व (करायेल) छे, पोताना कारण(ताल्वादि स्थान)ना भेदवडे घट-पटनी जेम भिद्यमान(भिन्नपणुं) होय छे. घटादिना दृष्टांतवंड ज वर्णोनुं कृतकत्व स्थापन कर्युं माटे स्थापनाकर्म थाय छे. 'पञ्जपननविणासि' त्ति व तत्काल उत्पन्न

४ स्थान-काष्ययने उदेशः **३** आहरण-भेदाः स्व० ३३८

11 898 1

XXXXXX

थयेल वस्तुनो विनाश. जे दृष्टांतमां-कथनपणाए छे ते प्रत्युप्तस्रविनाशी आहरण. जेम कोईक× नगरमां एक वाणीओ वसे हे. तेने घणी पुत्री, बहेनो विगेरे स्त्रीओनो परिवार हे. तेना घरनी पासे राजगांधर्वी (गैवैयाओ) दिवसमां त्रण वार संगीत करे छे, तथी वणिकना घरनी तमाम स्त्रीओ ते संगीतना शब्दने विषे अने गांधवोंने विषे आसक्त थवाथी कंईपण घरनं काम करती नथी. आ जोईने ते वाणीआए विचार्युं के-आ स्त्रीओ बधी अष्ट थयेल छे माटे हवे एवा उपाय करुं के जेथी भविष्यमां न बगडे. एम विचारीने ते स्त्रीओना शीलनी रक्षाने माटे पोताना घरमां कुलदेवतानुं देहरुं कराच्युं अने ज्यारे गांधर्वी नाटक करे त्यारे ते वाणीओ पोताना करेला देहरामां वाजा वगडाववा लाग्यो. तेने लईने ते गांधवीन विघ थवाथी तेओए राजाने निवेदन कर्यु. राजाए विणकने तेडावीने पूछ्युं के-तुं केम विष्न करे छे? त्यारे तेणे कह्युं के-मारा घरमां कुलदेवता छे तेनी आगळ हुं वाजा वगडावुं छुं. न्यायी राजाए गांधर्वीने कहुं के-एमां शेठनो वांक नथी. तमने जो विष्ठ थतुं होय तो बीजे स्थळे गायन करो; कारण के देवनी भक्तिमां अंतराय कराय निर्हे. आवी रीते वाणीआए प्रत्युत्पन्नदोषनी विनाश करीने परि-वारना शीलनुं रक्षण कर्युं. एवी रीते गुरुए शिष्योने कोईक वस्तुमां आसक्त थयेल जोईने तेओनी आसक्तिनं निमित्तपणं नाश करवा योग्य छे. आ प्रमाणे प्रत्युत्पन्नविनाशनीयता जणावनार होवाथी प्रत्युत्पन्नविनाशीरूप ज्ञातता गांधर्विक आख्यान संबंधी जाणवा योग्य छे. कह्युं छे के-होति पद्धप्पन्नविणा-सणंमि गंधव्विया उदाहरणं। सीसोऽवि कत्थइ जई, अज्झोवजेज तो गुरुणा ।१८९। 🗙 आ दृष्टांत टीकामां संक्षिप्त होवाधी गाधावृत्तिनो भावार्ध लईने कंईक विस्तारथी लखेल छे.

श्रीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद स ४९२॥

आ गाथाना अर्थ उपर जणावेल छे

' वारेयव्वो उवाएणं '—उपायवडे गुरुए, शिष्यने आसक्तिथी वारवा योग्य छे अथवा आत्मा आकाशनी जैम अमूर्त्तपणाथी अकर्त्ता छे. आवी रीते आत्माने अकर्तृत्वनी प्राप्तिरूप दृषण उत्पन्न थये छते तेना विनाशने माटे कहेवाय छे-आत्मा कथंचित् मूर्त्तपणाथी देवदत्तनी माफक कर्ता ज छे. आहरणता अने तेना भेदोनुं देशवडे अने दोषवस्वपणाए उपनय-•यायना जभावथी आहरणनुं व्याख्यान कर्युं २. हवे आहरणतदेश कहेवाय छे, ते चार प्रकारे छे-१ अनुशासन ते अनु-शास्ति अर्थात् सद्गुणोना उत्कीर्तनवडे प्रशंसा करवा योग्य छे, आ प्रकारे जेमां उपदेशाय छे ते अनुशास्ति. जेम गुणवान् पुरुषा प्रश्नंमा करवा योग्य होय छे. जेमके-साधुना नेत्रमां पडेल रजकणने दूर करवावडे लोकोद्वारा शीलमां शंका थवाथी ते कलंकने प्रक्षालन-द्र करवा माटे आराधना करायेल देववडे सहायवाळी, चालणीवडे भरेल पाणीने छांटवाथी उघाडेल छे चंपापुरीना त्रण दरवाजा जेणीए एवी जे सुभद्रा, 'अहा शीलवती ' एम महाजन लोकवडे प्रशंसायेली छे. कह्यं छे के-आहरणं तदेसे, चउहा अणुसद्धि तह उवालंभो । पुच्छा निस्सावयणं, होइ सुभद्दाऽणुसद्घीए ॥१९०॥ १ अनुशास्ति, २ उपालंभ, ३ पृच्छा अने ४ निश्रावचन-आ चार प्रकारे आहरणतदेश छे. अनुशास्ति(प्रशंसा)मां सुभद्रानुं दृष्टांत छे.

४ स्थान-कास्ययने उद्देशः ३ आहरण-भेदाः सु० ३३८

॥ ४९२ ॥

साडुकारपुरोयं, जह सा अणुसासिया पुरजणेणं। वेयावचाईसुवि, एव जयंतेववूहेजा ॥ १९१ ॥

श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद ॥ ४९३॥

बोल्यों के-श्रं हुं चक्रवर्ती नथी ? मारे पण हस्ति विगेरे चक्रवर्ती समान रत्नो छे. स्वामीए कह्युं के-तारी पासे बीजां रत्नो अने निधानो नथी. त्यारे कृत्रिम रतनो बनावीने भरतक्षेत्र साधवाने प्रवृत्त थयेल ते कोणिक, कृतमाल नामना यक्षवडे तमिस्रा गुफाना द्वार पासे मरायो अने छही नरकमां गयो. ४ 'निस्सावयणे ' त्ति० निश्रावडे जे वचन ते निश्रावचन. कोइ पण शिसुर्ध्यने अवलंबीने बीजाने बोध करवा माटे जे वचन ते निश्रावचन छे. ते जेमां विधेयपणाए कहेवाय छे ते आहरणनिश्रावचन छे. विनयसंपन्न अन्य शिष्यने अवलंबीने निर्ह सहन करनार शिष्यो प्रत्ये किंचित कहे. जेम गौतमस्वामीने आश्रयीने भगवाने कहेल छे तेम. ते आ प्रमाणे-दीक्षित तापसादिने केवळज्ञाननी उत्पत्ति थये छते अने पोताने केवळज्ञाननी उत्पत्ति न थवाथी अधैर्यवाळा गौतमने (भगवाने वह्यं के) गौतम! तुं घणा काळथी (स्नेहवडे) संश्लिष्ट (जोडायलो) छे, चिरकाळना परिचित छे, तुं अधेर्य न कर इत्यादि वचनना समूहवडे अनुशासन करनार भगवानद्वारा बीजाओ पण अनुशासन कराया. वळी तेमना बोध माटे #द्रुमपत्रक नामनुं अध्ययन कहेल छे. कह्युं छे के−''पुच्छाए कोणिए खल्ड, निस्सावयणंमि गोयमस्सामि"− पूछवामां कोणिक राजानुं अने निश्रावचनमां श्रीगौतमस्वामीनुं उदाहरण छे. त्रीजुं तदेशोदाहरण व्याख्यान करायुं, हवे तद्दोषउदाहरणनुं व्याख्यान कराय छे-ते चार प्रकारे छे. १ ' अहम्मजुत्ते ' त्ति० कोईक अर्थने साधवा माटे जे उदाहरण केवळ पापना कथनरूप कहेवाय छे, जेना कहेवाथी प्रतिपाद्य-श्राताने अधर्मनी बुद्धि उत्पन्न थाय छे ते अधर्मयुक्त उदाहरण. ते आ प्रमाण-नलदामकोलिकनी जेम उपायवडे कार्योंने करवां. तेनी कथा कहे छे-स्वपुत्रने करडनार मंकोडानी शोध * उत्तराध्ययन सूत्रनुं दशमुं अध्ययन.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ आहरण-भेदाः स्र० ३३८ ॥

॥ ४९३॥

करवाथी जोयेल बिलमां रहेला बधा य मंकोडाओने मारवा माटे उष्ण पाणी रेडवानुं कार्य जोईने खुश थयेल चाणक्ये ते मंकोडा मारनार नलदामकोलिकने कोटवालनुं पद आप्युं. तेणे चोरीना कार्यमां सहकारी थवारूप-मददगार बनवारूप उपायवडे विश्वास उपजावीने साथे मळेला चोरोने विषमिश्रित भाजन खबरावी बधाने मारी नाख्या. आ आहरण-तद्दोषता अर्थात् दृष्टांतनी दोषता. आ दृष्टांत अधर्मयुक्त अने तेत्रा प्रकारना श्रोताने अधर्मनी बुद्धिनुं उत्पन्न करावनारुं छे. साधुपुरुषे आवा प्रकारनुं उदाहरण आपवा योग्य नथी. २ 'पृडिलोमे 'त्ति ० जेमां प्रतिकूल प्रत्ये प्रतिकूलपणुं उपदेशाय छे. 'यथा दाठं प्रति दाठत्वं कुर्यात् ' जेम शठ प्रत्ये शठता करवी; जेमके चंडप्रदीतनुं अपहरण करवा माटे तेनावडे अपहरण करायेल अभयकुमारे तेनी साथे शठता करी हती. श्रीताने अन्यनी अपकार करवामां निपुणवाद्धिने उत्पन्न करनार होवाथी आ दष्टांतने तदोषता छे. अथवा धृष्ट-धीठा प्रतिवादीए जीव अने अजीव आ बे राशि ज छे एम कही छते तेनुं खंडन करवा माटे कोईक कहे छे-गरोळी विगेरेना कपायेला पूंछडानी जेम नोजीव नामनी त्रीजी राशि पण छे. आ विपरीत सिद्धांतना कथनथी आ दृष्टांतने पण तद्देशिता छे. ३ 'अत्तोवणीए ' त्ति० पोते ज स्थापन थयेल. जेम निवेदन करेल तेम स्वयं जोडायेल छे जेने विषे ते आत्मोपनीत. जे दृष्टांत अन्यमतने दृषण आपवा माटे स्वीकारेल ते दृष्टांतद्वारा पोताना मतने दुष्टपणाए लई जाय छे. जेम पिंगले जे कहुं ते पोताना दोपने माटे थयुं. तेनी कथा कहे छे-तळाव अभेद केम थशे ? एम राजाए पूछयुं त्यारे पिंगल नामना स्थपति(कारीगर) बोल्यो के-भेदना स्थानमां कपिलादि गुणवाळो पुरुष भूमिमां दाख्ये छते अभेद थशे. प्रधाने तो तेवा गुणो पिंगलमां होवाथी तेने ज तळावमां नखाच्यो. एम पोताना वचनदीपथी

श्रीस्था-नाङ्गधत्र बाजुबाद श ४९४ ॥

पोते ज जोडायो. आ प्रमाणे पण आत्मोपनीत छे. अहिं उदाहरण कहे छे-जेम ' सर्वे जीवोने हणवा नहिं ' आ पक्षने द्वण आपवा माटे कोईक कहे छे-जेम विष्णुए दैत्योने हण्या छे तेम अन्य धर्ममां रहेलाओने हणवा. आवी रीते कहेवावडे वादीए धर्मांतरमां रहेला पुरुषोने स्व आत्मा हणवा योग्यपणाए स्थापन कयों. आ दृष्टांतनी तद्दोषता तो प्रसिद्ध छे. ४ ' दुरुव-णीए ' स्ति ० दुष्टउपनीत-निश्चित रूप योजेलुं छे जेने विषे ते दुरुपनीत-दुष्ट रीते कहेल-परिवाजकना वाक्यनी जेम, ते आ प्रमाण-[जाळवंडे व्यम्र हाथवाळो कोईक परित्राजक मत्स्यने पकडवा माटे चाल्यो. कोईक धूर्ते तेने कंईक कहुं अने तेनो तेणे असंगत उत्तर आप्यो] आ प्रसंगमां श्लोक छे के-हे आचार्य-भिश्च ! आ तारी जीर्ण कंथा केम छे ? तेणे कह्यं-मत्स्यना वध माटे जाळ छे. धूर्ते पूछयुं-श्चं तुं मत्स्योने खाय छे? तेणे कश्चं-हुं दारु साथे मांस खाउं छुं १ फरी धूर्ते पूछयुं-शुं तुं दारु पीए छे ? तेणे कश्चं-वेश्यानी साथे पीउं छुं. धूर्ते फरी पूछयुं-शुं तुं वेश्याने घर जाय छे ? हा. दुश्मनोनी गरदन उपर पग दईने जाउं छुं. धूतें कह्युं-शुं तारे शत्रुओं छे ? तेणे कह्युं-हा हुं चोरी करुं छुं माटे शत्रुओं छे. धूतें फरी पूछयुं-शुं तुं चोर छो ? तेण जवाब आप्यो - द्यूत - जुगार खेलवाने माटे. पूर्ते पुनः पूछ ुं - शुं तुं जुगारी छे ? भिक्षुए कह्युं - जे कारणथी हुं दासीपुत्र छुं तथी जुगार खेळुं छुं." आ प्रमाणे प्रकृत साध्यमां अनुपयोगी अथवा पोताना मतमां दूषण लावनारुं दृषान्त, ते दार्ष्टीन्तिकनी साथे साधम्येना अभावथी दुरुपनीत छे. जेम घटनी माफक शब्द नित्य छे, अहि घटमां नित्यत्व नथी ज, माटे घटना साधर्म्यथी शब्दनुं नित्यपणुं क्यांथी सिद्ध थाय ? परंतु घटना अनित्यपणाथी तेना साधर्म्यपणाने लईने शब्दनुं अनित्यपणुं तेमने अमान्य छतां पण सिद्ध थाय छे. आ दृष्टांत साध्यमां अनुपयोगी छे. वळी संतान-क्षणपरंपरानो

 ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ आहरण-भेदाः स्र० ३३८

11 000 11

ते दीपकनी माफक मोक्ष छे. आवी रीते (बौद्धना) स्वीकारने त्रिपे दीपकना दृष्टांतथी अनादिमान् संताननी पण अवस्तुता थाय छे, ते बतावे छे-दीप अने आत्माना संताननो नाश उत्तर क्षणनो अजनक छे. उत्तरक्षणने उत्पन्न न कर्षे छते अर्थ-कियाकारित्व (कार्य) लक्षणरूप सत्त्व(विद्यमानपणुं)नो अभाव होवाथी छेल्ला क्षणनुं अवस्तुपणुं छे केमके अंत्य क्षण अव-स्तुत्वजनक छे. पूर्व क्षणतुं पण अवस्तुत्व छे, तेथी ज पूर्वतरतुं पण, एवी रीते समस्त संतानतुं अवस्तुपणुं थशे. पूर्वपक्षी-अन्य क्षणना अनारंभमां पण स्वगोचर(प्रत्यक्ष) ज्ञान उत्पन्नरूप अर्थिक्रियानो करनार होवाथी अंत्यक्षण वस्तुरूप थशे. उत्तर ०-एम नथी. ए प्रमाणे तो भूत अने भावी पर्यायनी परंपरारूप योगिज्ञान पण पोताना विषयने उत्पन्न करे छे माटे वस्तुपणुं स्वीकारचुं एम कहेचुं योग्य नथी. क्षणांतरना अनारंभमां वस्तुत्व छे, आ कथनथी दीपनुं दृष्टांत स्वमतमां द्पण आपनारुं थाय छे. अथवा कृतकत्व होवाथी घटनी माफक शब्द अनित्य छे. आ वक्तव्यमां संभ्रमथी कृतकत्व होवाथी शब्दवत् घट अनित्य छे. आम कहेनारने विपरीत दृष्टांतथी दुरुपनीत थाय छे. आ संबंधमां जणावे छे के-पढमं अहम्मजुत्तं, पडिलोमं अत्तणो उवन्नासो। दुरुवणियं च चउत्थं, अहम्मजुत्तम्मि नलदामो। १९२।

* आ अर्धी गाथा हो.

पडिलोमे जह अभओ, पज्जोयं हरइ अवहिओ श्रमंतो। इति

नाज्ञपत्र पानुवाद 11884 11

अत्तउवन्नासंमि य, तलायभेयंमि पिंगलो थवई। अणिमिसगेण्हणभिच्छुग, दुरुवणीए उदाहरणं ॥ १९३ ॥

आ अढी गाथा प्रायः उक्तार्थ छे. आहरणतदेश कह्यो, हवे उपन्यासउपनय कहेवाय छे, ते चार प्रकारे छे-तेमां 'तब्बत्थुए'-त्ति० वादविडे स्थापन करांयेल साधनरूप वस्तु छे ते ज उत्तरभूत वस्तु छे जे उपन्यासोपनयमां ते १ तद्वस्तुक अथवा ते ज-अन्यवडे स्थपायेल वस्तु ते तद्वस्तु, ते ज तद्वस्तुक, ते वस्तुयुक्त उपन्यासउपनय पण तद्वस्तुक कहेवाय छे. आगळ पण एमज जाणवं. जेम कोईक कहे छे के-समुद्रना किनारा उपर एक महान वृक्ष छे, तेनी शाखाओ जळ अने स्थळ उपर रहेली छे. तेना जे पांदडां जळमां पडे छे ते जळचर जीवो थाय छे अने जे स्थळमां पडे छे ते स्थळचर जीवो थाय छे. अन्य (प्रतिवादी) वादीए स्थापित वृक्षना पत्र-पतनरूप वस्तुने ग्रहण करीने ज तेणे कहेला वाक्यनं खंडन करे छे. परंतु जे पत्रो मध्यमां पडे हे तेओनी भी स्थिति ? ते कहो. आ युक्तिमात्र उत्तरभूत तद्वस्तुक उपन्यासउपनय हे. ज्ञात-दृष्टांतना निमित्तपणाथी आतं ज्ञातपणुं छे. अथवा आ ज्ञात यथारूढ ज छे. ते कहे छे-आनो प्रयोग आ प्रमाणे छे-जल अने स्थलमां पडलां पत्रो, जल अने स्थलना मध्यमां पडेलां पत्रनी जेम जलचरादि जीवोरूप संभवतां नथी, जल अने स्थलमां पडेला पत्रोने जलचरत्वादिनी प्राप्तिनी जेम ते बन्नेना मध्यमां पडेला पत्रोने उभय (जलचर-स्थलचरमिश्रित) रूपना प्रसंग आवशे: परंतु उभयस्वरूप जीवो तो स्वीकारेला नथी. अथवा जीव आकाशनी जेम अमूर्तपणाथी नित्य छे. आवी रीते वादीए कहें।

न सांभळ्युं होय तो आ अपूर्व छे माटे कटोरी आप.

छते तेने उत्तर आपे छे-जीव मूर्त्तपणाथी कर्मनी माफक अनित्य ज थाओ. 'तयन्नवत्थुए ' त्ति ० अन्यवडे स्थपायेल वस्तुथी उत्तरभृत अन्य वस्तु छे जे उपन्यासउपनयमां ते २ तदन्यवस्तुक. जेम जलमां पडेलां पत्रो जलचर जीवो थाय छे एम कहो छते, एनुं निरसन करवाने माटे पतनथी अन्य उत्तर कहे छे-जे पत्रोने पडावीने खाय छे अथवा लई जाय छे ते पांदडांनुं शुं थशे ? कया रूपमां आवशे ? कंई नहि थाय. आ पण जणावनारपणाए ज्ञात कहेल छे. अथवा आ ज्ञात यथा-रूढ ज छे. ते कहे छे-जल अने स्थलमां पडेलां पत्रो मनुष्य विगेरेथी आश्रितपत्रोनी माफक जलचरादि जीवोरूपे संभवता नथी. अर्हि आ अभिप्राय छे के-जेम जलादिवडे आश्रित थवाथी पत्रो जलचरादिएणे उत्पन्न थाय छे तेम मनुष्यादिवडे आश्रित थवाथी मनुष्यादिथी उत्पन्न थयेल युका(जू) आदि स्वरूपे उत्पन्न थाओ; कारण के आश्रितपणानी समानता होय छ परंतु ते पत्रो तेम ते स्वरूपे स्वीकारेल नथीं माटे जल विगेरेमां पडेलां पत्रोतुं पण जलचरपणुं विगेरेनो असंभव छे. 'पिडिनिभे ' त्ति ॰ जे उपन्यासउपनयमां वादीए स्थापेल वस्तुनी समान वस्तु उत्तर देवा माटे स्थापन कराय छे ते ३ प्रतिनिभ, जेम कोईपण प्रतिज्ञा करे छे के-ज पुरुष मने अपूर्व वस्तु संभळावे तेन एक लाखना मूल्यवाळी कटोरी आपुं. तेने अपूर्व संभळाच्युं तो पण ते अपूर्व नथी एम स्वीकारे छे. त्यारबाद एक सिद्धपुत्रे कह्यं के— तुज्झ पिया मज्झ पिउणो, धारेइ अणूणयं सयसहस्सं। जइ सुयपुठंव दिज्जउ, न सुयं खोरयं देहि॥१९४ तारा पिताए मारा पिता पासेथी संपूर्ण एक लाख द्रव्य लीधेलुं हो, ते जो तें पूर्व सांभळ्युं होय तो लाख द्रव्य आप. अने

भीस्था-नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ ४९६ ॥

आ दृष्टांतनी सद्द्यता आ प्रमाणे के-कोईके वधुंय कहा छते पण में आ प्रथम सांभळेलुं छ एवी रीते असत्य वचन बोल-नारना निग्रह माटे " तारा पिताए मारा पिता पासेथी लाख द्रव्य लीधेल छे " आ प्रकारे वे तरफथी वंधन सूमान असत्य वचनतुं ज स्थापनपणुं होवाथी आ दृष्टांतनी प्रतिनिभता-समानपणुं छे. युक्तिमात्ररूप आ प्रतिनिभतुं पण अर्थने जणावनार होवाथी ज्ञातपणुं छे अथवा यथारूढ ज आ ज्ञात छे ते कहे छे. अहिं आ प्रयोग छे-मने कोई पण श्लोक विगेरे अश्रुतपूर्व नथी अर्थात् बधुं य सांभळेलुं छे. आवा प्रकारना अभिमानरूप धनवाळाने अमे उत्तर आपीए छीए के-तने अश्रुतपूर्व-पूर्वे निहं सांभ ळेल वचन छे. तारो पिता, मारा पितानो संपूर्ण एक लाख द्रव्यनो देवादार छे. 'हेड ' सि० जे उपन्यासउपनयमां प्रश्ननो हेतु उत्तररूपे कहेवाय छ ते ४ हेतु. कोईकवडे कोईक प्रश्न पूछायो-शुं तारावडे यव खरीदाय छे १ ते कहे छे के-फोकट नथी मळता माटे. वळी ज्ञा कारणथी तुं ब्रह्मचर्यादि अनुष्ठान करे छे ? उत्तर-तपस्या नहिं करनाराओने नरकादिने विषे बहु भारे वेदना होय छ माटे अनुष्टान करुं छुं. आ पण युक्तिमात्र छ परंतु अर्थने जणावनार होवाथी ज्ञानरूपे कहेल छे अथवा यथारूढ ज्ञात ज छे. ते कहे छे-आनो प्रयोग आ प्रमाणे-शा कारणथी तारावडे प्रवज्या-किया कराय छे १ एम कोईकवडे पूछायो थको साधु कहे छे के-प्रवज्या सिवाय मोक्ष थाय नहिं माटे किया करुं छुं. एतुं समर्थन करवा माटे ज साधु ते प्रत्ये कहे छ-अर यवन ग्रहण करनार! ज्ञामाटे तारावडे यव खरीदाय छे ? ते कहे छे के-मफत नथी मळता माटे. साधुओनो आ अभिप्राय छे-जेम फोकट मळवाना अभावथी तुं यवोने खरीदे छे एवी रीते हुं पण प्रवच्या विना मोक्षनो लाभ न थवाथी संयम क्रिया करुं छुं. अहिं खरीदवामां मफत यवना अलाभरूप हेतुने दृष्टांतरूपे आपेल होताथी हेतुउपन्यासउपनय ज्ञातता छे. अहिं ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ आहरण-भेदाः स्र० ३३८

॥ ४९६ ॥

किंचित विशेषणवह आवा प्रकारना अन्य ज्ञातभेदो एण संभवे छे, परंतु ते विवक्षित नथी अथवा गुरुओवहे कथंचित् अंतर्भाव विवक्षित छे. परंतु अमे तेने सम्यग् जाणता नथी. ५. हवे ज्ञात पछी दृष्टांतवाळा हेतुने साध्यसिद्धिनुं अंग होवाथी तेना भेदोने 'हेउ' इत्यादि त्रण सत्रवहे कहे छे-आ स्पष्ट छे. विशेष ए के-'हिनोति'-ज्ञेय वस्तुने जणावे छे माटे हेतु; अन्यथा अनुपपत्ति लक्षणरूप छे. कह्युं छे के-'' अन्यथा हेतुनुं अनुपपत्तिरूप लक्षण कहेल छे तेनी अप्रसिद्धि, संदेह अने विपर्यासवहे हेत्वाभासपणुं कहेल छे. " (१) पूर्वे कहेल हेतु प्रश्नना उत्तररूप उपपत्ति(युक्ति) मात्र छे. अने आ 'हेतु ' तो साध्य प्रत्ये अन्वय अने व्यतिरेकवाळो छे. तेवा प्रकारना दृष्टांतवहे तद्भावनुं स्मरण थाय छे ते एक लक्षणवाळो छे, परंतु किंचित् विशेषथी चार प्रकार छे. 'जावए ' त्ति वादीने काळनी यापना-विलंब करावे छे. जेम कोईक असती स्त्री 'एकेक रुपीआवहे एकेक उंटनुं लींडुं देवुं ' एवी रीते पतिने शिखामण आपीने ते लींडांने वेचवा माटे उज्जयनीमां मोकलवाना उपायवहे विट (उल्लंट) प्ररुपनी सेवामां काळनी यापना करती हती, आ १ यापकहेतु छे. कह्युं छे के-

" उन्भामिया य महिला, जावगहेउम्मि उट्टलिंडाइं " उक्तार्थ छे. अहिं बुद्धोए व्याख्यान कर्युं छे के-प्रतिवादीने जाणीने तेवा तेवा विशेषण बहुल हेतु करवा योग्य छे के जेथी

काळनी यापना (विलंब) थाय छ अने वादी प्रकृत विषयने जाणतो नथी. ते संभावना आवा प्रकार कराय छे-पवनो चेतन-वाळा छे. अन्यवडे प्रेरणा थये छते तिरछो अने अनियतपणाए गायना श्वरीरनी जेम गतिमान् होय छे. आ हेतु, विशेषणनी बहुलताए बीजाने दु:खपूर्वक जाणवारूप होवाथी वादीने काळनी यापना करे छे. हेतुना स्वरूपने न जाणतो थको वादी जल्दीथी

For Private and Personal Use Only

भीस्था नाइ एत पानुवाद 11 860 11

अनैकांतिकत्व विगेरे दूषणोने प्रगट करवा माटे समर्थ थता नथी, माटे आ हेतुथी वादीने काळनी यापना थाय छे. अथवा व्याप्तिनी प्रतीति न थवावडे व्याप्तिसाधक प्रमाणांतरनी विशेष अपेक्षा सहित होवाथी वादी जल्दीथी साध्यनी प्रतीति करतो नथी, परंतु काळक्षेप थाय छे. आ हेतु साध्यनी प्रतीति प्रत्ये विलंब करावनार होवाथी यापक छे. जेम वस्तु सन्त्व (छतापणुं) होवाथी क्षणिक छे. बौद्धना पक्षमां " सत्त्वात्" आ हेतु छे, परंतु एम अवण मात्रथी कोई अन्य क्षणिकपणा प्रत्ये प्रतीति करता नथी, आर्थी बौद्ध सन्त्व (छतापणुं) क्षणिकत्ववडे व्याप्त छे. आ अव्याप्तिने साधवा माटे प्रयत्न करे छे, ते बतावे छे- नामनुं अर्थक्रियाकारीपणुं ज सत्त्व छे अर्थात् घट नाम जळाहरण-पाणी लावनुं विगेरे क्रिया करनार थाय तो ज घटमां अर्थिकियाकारीपणुं छे; अन्यथा वंध्याना पुत्रने पण सत्त्व(छतापणा)नो प्रसंग आवशे. नित्यनुं एक स्वरूप होवाथी अर्थक्रिया क्रमवडे निहं थाय, अने यौगपद्य-एकी साथे पण निहं थाय; केम के क्षणांतर(अन्य क्षण)मां अकर्त्तापणानी प्रसंग थशे. आ हेतुथी अर्थक्रियालक्षणरूप सन्त्व, अक्षणिकथी निवर्तमान थयुं थकुं क्षणिक ज रहे छे. आवी रीते काळक्षेपवडे साध्य अने साधनने विषे काळनी यापना करनार होवाथी 'सन्त्र 'लक्षण हेतु यापक छे. 'स्थापयित ' व्याप्ति प्रसिद्ध होवाथी काळक्षेप विना पक्षतुं समर्थन करे छे. जेम कोईक धूर्त परित्राजक एम कहे छे के-' लोकना मध्यभागमां आपेछं बहुफळवाळं थाय छे, ते मध्यभागने हुं ज जाणुं छुं 'एम मायावडे दरेक गाममां भिन्न भिन्न लोकना मध्यभागने प्ररूपतो हतो. तेनो निग्रह करवा माटे कोईक श्रावके कह्युं के-' लोकना मध्यभागनुं एकपणुं होवाथी घणा गामोने विषे तेनो संभव * यत् सत् तत् क्षणिकम् ते व्याप्ति:-जे सत् छे ते क्षणिक छे, आ व्याप्ति छे.

४ स्थान-काष्ययने

केवी रीते होय ? आवी रीते युक्तिथी तारावडे बतावेल भूलोकना मध्यभाग थता नथी. ' आ प्रमाण पक्ष स्थापन कर्यं माटे २ स्थापकहेतु छे. कह्युं छे के-' लोगस्स मज्झजाणण, थावगहेऊ उदाहरणं " उक्तार्थ छे. धूम होवाथी अहिं अग्नि छे, वळी द्रव्य अने पर्यायथी वस्तु नित्यानित्य छे, ते प्रमाणे प्रतीयमानपणाथी-चोक्स थती होवाथी आ बे हेतुनी प्रसिद्ध व्या-प्तिवडे काळक्षेप विना साध्यना स्थापनथी स्थापकपणुं छे. तथा ' व्यंस्पाति ' बीजाने जे व्यामोह [अम] उत्पन्न करे छे ते शकट अने तीतरने ग्रहण करनार धूर्चनी जेम व्यंसक छे. तेनी कथा कहे छे-कोईक पुरुषे रस्ताना मध्यमां मळेल मृत तीतरयुक्त शकट(गाडुं)वडे नगरमां प्रवेश कर्यो. तेने धूर्ते कह्युं के-आ श्रशकटतीतर केम मळे छे ? ते पुरुषे-आ शकट संबंधी तीतर मांग छ एम विचारीने कहुं के-"तर्पणालोडिकया" पाणी विगरेथी मसळेल साथुआवडे मळे छे. त्यारपछी ध्रेत साक्षीओने बोलावीने तीतर सहित शकटने ग्रहण कर्युं अने कह्युं के-' आ बन्ने मारा छे, एणे ज शकटतीतर आपेल छे. में तो शकटसिंहत तीतर ते शकटितत्तरी ग्रहण करेल छे. ' आ प्रमाणे बनवाथी गांडावाळी खेद पाम्ये। कहुं छे के-" सा सगडितत्तिरी वंसगंमि हेउंमि होइ णायव्वा" उक्तार्थ छे. ते आवी रीते-"अस्ति जीवोऽस्ति घटः" जीव छे, घट छे, एम स्वीकार क्यें छते जीव अने घटने विषे अस्तित्व समानपणाए वर्त्ते छे तेथी ते बन्नेनुं एकपणुं थयुं, अभिन्न शब्दनो विषय होवाथी व्यंसक हेतु. घट शब्दनो विषय घटना स्वरूपनी जेम. वळी अस्तित्व जीवादिमां वर्त्ततुं नथी, तेथी जीवादिनो अभाव थाप, केमके अस्ति-त्वनो अभाव होवाथी व्यंसक हेतु छे केमके ते प्रतिवादीने व्यामोह करनार छे. तथा 'खूसए' ति ० व्यंसकवडे प्राप्त थयेल अनिष्ट

* अहि ' श्वकटतातर ' शब्द विभक्ति रहित है।वाथो भ्रमजनक छे.

भीस्या-नाङ्गद्धत्र सानुवाद सारु९८॥ लूंटे छे अर्थात् गयेल वस्तुने पाछी वाळे छे ते ऌषकहेतु. ते ज शाकिटके-गाडावाळाए जेम बीजा धूर्ने तेने शीखव्युं त्यारे ते धूर्त पासे जईने माम्युं के-मने तर्पणालोडिका आप. त्यारपछी ते धूर्ते पोतानी स्त्रीने कह्युं के-आने सत्कु (पात्रविशेषवडे) मसळेल पिंड आप. तेम करती थकी-साथुआना पिंडने मसळती एवी तेनी भार्याने ग्रहण करीने ते चालतो थयो अने धूर्तने कहुं के-आ स्त्री मारी छे केमके सत्कुवडे जे मसळे छे ते तर्पणालोडिका छे अने ते तें ज आपेल छे. कारण के-अस्तित्वनी वृत्तिवडे जीव अने घटने विषे तुं एकत्वनी संभावना करे छे त्यारे सर्व भावोतुं एकत्व थशे, कारण के सर्व भावोने विषे पण अस्तित्ववृत्तिनी समानता छे, परंतु एम थतुं नथी. अहिं अस्तित्ववृत्तिनी समानता होवाथी आ ऌपक हेतु छे, केमके जीव अने घटने विषे अभावनी आपत्तिरूप एकत्वना प्रतिपादक लक्षणने अथवा बीजाए उत्पन्न करेल अनिष्टने खंटेल छे. १. ' अहवे ' ति० प्रकारांतरवडे हेतुने जणावनार विकल्प अर्थवाळो ' अथवा ' शब्द छे. ' हिनोति ' प्रमेयरूप पदार्थने जे जणावे छ ते अथवा जेनावडे पदार्थ जणाय छ ते हेतु, अर्थात् प्रमेयनी प्रमिति-निर्णय करवामां जे कारण ते प्रमाण. ते स्व-रूप विगरेना भेदथी चार प्रकारे छे. तेमां ' पचक्खें ' त्ति ॰ अथीं प्रत्ये जे व्याप्त थाय छे ते अक्ष-आत्मा, ते प्रत्ये जे ज्ञान वर्ते छे ते प्रत्यक्ष ज्ञान छे. निश्चयथी अवधि, मनःपर्याय अने केवळरूप छे. अथवा अक्ष-इंद्रियो प्रत्ये जे ज्ञान वर्ते छे ते व्यव-हारथी प्रत्यक्ष छे, अने ते चक्षु विगरेथी थयेछुं छे. प्रत्यक्षनुं लक्षण कहे छे-" पदार्थनुं अपरोक्षपणाए ग्रहण करनार जे ज्ञान ते प्रत्यक्ष अने इंद्रियोवडे ग्रहणनी अपेक्षाए बीजुं परोक्ष जाणवुं. " 'अनु'-लिम(चिह्न)नुं दर्शन अने संबंधना अनुस्मरण पछी ' मान '-जे ज्ञान ते २ अनुमान छे, एतुं लक्षण आ प्रमाणे-''साध्य विना हेतुथी न थनार अने साध्यनो निश्चय करावनार ध स्थान-क्राध्ययने उद्देशः है आहरण-भेदाः सुरु ३३८

11 886 11

अनुमान छे, केम के प्रमाण होवाथी प्रत्यक्षनी माफक ते आंति रहित छे." आ साध्य विना न थनार हेतुथी उत्पन्न थवावडे पण उपचारथी हेतु छे. ३ उपमान ते उपमा, ते ज उपम्य, आधी 'रोझना जेवो आ बळद छे' एवी समानताना निर्णय-रूप छे. कहुं छे के-कोईक पुरुष बळदने जोईने जंगलमां घणा अवयशेनी समानता धारण करनार अने गोळ कंठवाळा अन्य रोझने ज्यारे जुए है त्यारे तेज अवस्थामां आ पशुना जेवो आ बळद छे एवं जे ज्ञान प्रवर्ते छे ते उपमान छे. अथवा सांभळेल अतिदेश वाक्यना समान अर्थनी प्राप्तिने विषे संज्ञा अने संज्ञी(संज्ञावाळा)ना संबंधनुं जे ज्ञान ते उपमान कहेवाय छे, 'आगम्यते' जेनावडे पदार्थी जणाय छे ते ४ आगम अर्थात् आप्तपुरुवना वचनवडे प्राप्त करवा योग्य अगम्य पदार्थना निर्णयरूप छे. कह्युं छे के-तत्त्वना ग्रहण करावनारपणाए दृष्टवाध अने इष्टवाधथी रहित तेमज परमार्थने कहेनार बाक्यवडे थतुं जे ज्ञान ते शाब्द (आगम) प्रमाण कहेल छे. आप्तपुरुषे कहेलुं निह उल्लंबन करवा योग्य, दृष्ट अने इष्टतुं विरोध निहं करनारुं, तन्वनो उपदेश कर-नारुं अने कुमार्गनो नाश करनारुं समस्त शास्त्र छे. अहिं जेना विना उत्पन्न न थवाय ते हेतुवडे जन्य होवाथी अनुमान ज छे, पण कार्यने निषे कारणनो उपचार करवाथी हेतु छे, ते चतुर्भंगीरूप होवाथी चार प्रकारे छे. १ अस्ति-निद्यमान छे तत्-लिंगभूत धूम त्रिगेरे वस्तु एम करीने ' अस्ति सः '-अग्नि विगेरे साध्य पदार्थ छ माटे आ हेतु अनुमान छे. वळी २ अग्नि विगेरे वस्तु छे, आने लईने तेनायी बिरुद्ध शीत विगेरे पदार्थ नयी, आ हेतु पण अनुमान छे. वळी ३ अग्नि विगेरे वस्तु नथी, तेथी शीतकालने विषे ते शीतादि पदार्थ छे, आ हेतु पण अनुमान छे. वळी ४ द्वक्षत्वादि नथी माटे शीशमना झाड विगेरे वस्तु नथी, आ हेतु पण अनुमान छे. अहिं १ शब्दमां कृतकत्वनुं अस्तिपणुं होवाथी घटनी जेम अनित्यपणुं छे.

भीस्था-नाष्ट्रसूत्र सानुवाद ॥ ४९९ ॥

तथा धूमना अस्तिषणाथी अहिं महानस-रसोडानी जेम अग्नि छे इत्यादि स्व(पोताना)भावनुं अनुमान अने कार्धनुं अनु-मान प्रथम भंगवडे सूचन करेल छे. तथा २ अग्निनुं अस्तित्व होवाथी अथवा धूमनुं अस्तित्व होवाथी शीतनो स्पर्भ नथी. इत्यादि विरुद्ध भावनी प्राप्तिरूप अनुमान अने विरुद्ध कार्यनी प्राप्तिरूप अनुमान छे. अग्निनुं अथवा धूमनुं अस्तित्व होवाथी श्रीतना स्पर्श्यी थयेल दांत, वेणी (केशपाश) अने रोम (रुंवाडा)नुं कंपन विगेरे महानसनी जेम पुरुषना विकारो नथी, इत्यादि कारणथी विरुद्धनी प्राप्तिनुं अनुमान अने कारणथी विरुद्ध कार्यनी प्राप्तिनुं अनुमान द्वितीयभंगवड कहेल छे. तथा ३ छत्रादिनुं अथवा अग्निनुं नास्तिपणुं होवाथी कोईक *कालादिविशेषमां आतप(तडको) अथवा शीतनो स्पर्श छे-पहेलां प्राप्त थयेल प्रदेशने विषे आतप अने शीतस्पर्शनी जेम. इत्यादिक विरुद्ध कारणानुपलंभअनुमान अने विरुद्धानुपलंभअनुमान वतीय भंगवडे स्वीकारेल छे. तथा जोवानी सामग्री छते घटनी प्राप्तिना अभावपणाथी विवक्षित प्रदेशनी जेम अहि घट नथी- इत्यादि स्वाभावातुपलब्धि अनुमान, धूमना अभावपणाथी संपूर्ण धूमनो कारणसमृह नथी-अन्य प्रदेशनी जेम, इत्यादि कार्यानुपलब्धिअनुमान. वृक्षना अभावथी शीशमनुं वृक्ष नथी इत्यादि व्यापकानुपलंभअनुमान तथा: अग्निना अभावथी धूम नथी इत्यादि कारणानुपलंभअनुमान चतुर्थभंगवडे कहेल छे. आ जैन प्रक्रिया नथी एम कहेवु निहं, केमके सर्वत्र जैनदर्शनन अभिमत अन्यथा अनुपपन्नत्वरूप हेतुना लक्षणनुं विद्यमानपणुं छे. (स्० ३३८) हमणा ज हेत् शब्दवडे ज्ञानविशेष कह्यो. तेना अधिकारथी ज्ञानविशेषनं निरूपण करवा माटे सूत्रकार कहे छे-

* उन्हाळामां छत्रना अभावथी आतपनो अने शीयाळामां अग्निना अभावधी शीतनो स्पर्श छे.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ३ आहरण-भेदाः स्र० ३३८

। ४९९ ॥

चउिवहे संखाणे पं॰ तं०-पिडकम्मं १ ववहारे २ रज्जू ३ रासी ४। अहोलोगे णं चत्तारि अंधगारं करेंति, तं०-नरगा णेरइया पावाइं कम्माइं असुभा पोग्गला १, तिरियलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति, तं०-चंदा सूरा मणि जोती २, उन्नलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति, तं०-देवा देवीओ विमाणा आभरणा ३॥ सू० ३३८॥ चउट्टाणस्स ततिओ उद्देसतो समत्तो॥

मूलार्थ:-चार प्रकारे गणित कहेल छे, ते आ प्रमाणे-? परिकर्म-पाटीगणित एक, दश विगरे, २ व्यवहार-तोल, माप विगरे, ३ रब्जु-फूट, गज विगरे अने ४ राशि-त्रिराशि विगरे (१) अधोलोकमां चार वस्तु अंधकार करे छे, ते आ प्रमाणे-नरकवासो, नरियको, पापकर्मो अने अशुभ पुद्गलो (२) तिरलालोकने विषे चार वस्तु उद्योत करे छे, ते आ प्रमाणे-चंद्रो, सूर्यो, मणि अने अग्नि (३) ऊर्ध्वलोकमां चार वस्तु उद्योत करे छे, ते आ प्रमाणे-१ देवो, २ देवीओ, ३ विमानो अने ४ आभरणो (३) (सु० ३३८)

टीकार्थ:- 'चडिवहें ' त्यादि० संख्या कराय छे-जेनावडे गणाय छे ते संख्यान अर्थात् गणित. तेमां संकलना (गोठवण) विगेरे पाटी प्रसिद्ध छे. एम व्यवहार पण मिश्रक व्यवहार विगेरे अनेक प्रकारे छे. रज्जु-रज्जुगणित अर्थात् क्षेत्र-गणित. राशि-त्रिराशि, पंचराशि विगेरे (१) रज्जु शब्दथी क्षेत्रगणित कह्यं, क्षेत्रना संबंधथी त्रण प्रकारे विभाग करायेल लोक-

भीस्था-नाङ्गध्रत सानुवाद 41 400

ह्मप क्षेत्रनी, अंधकार अने उद्योतिन आश्रयीने त्रण स्त्रबंडे, प्रह्मपण करे छे-'अहे' त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-पूर्वीक्त लक्षण-वाळा अधीलोकने विषे चार वस्तु [अंधकार करे छे]-नरकावासो, नैरियको आ वे कृष्णस्त्रह्मप होवाथी अंधकार करे छे तथा ज्ञानावरणादि पापकर्मी, मिथ्यात्व अने अज्ञानह्मप भाव अंधकारना करनारा होवाथी अंधकार करे छे एम कहेवाय छे. अथवा अंधकारस्त्रह्मप अधीलोकने विषे प्राणीओने उत्पन्न करनारा होवाथी पापकर्मीने अंधकारनुं कर्नुत्व-कर्नापणुं छे तथा अग्रुभ पुर्गलो अंधकार भाववडे परिणामने पामेला छे. 'मिणि' त्वि० चंद्रकांत विगेरे मिणिओ, 'जोइ' ति० ज्योति-अग्नि. (सू० ३३८)

॥ चतुर्थ स्थानकना तृतीय उद्देशकनी टीकानो अनुवाद समाप्त ॥



स्थान-काध्ययने उद्देशः ३ संख्या-नानि अ न्यकारो-द्योत-कारकाः स्० ३३८

॥ ५०० ॥

॥ अथ चतुर्थस्यानकाध्ययने चतुर्थ उद्देशः॥

त्तीय उद्देशकतुं व्याख्यान कर्युं, त्यारबाद चतुर्थ उद्देशकतो आरंभ कराय छे. आतो संबंध आ प्रमाणे छे-तृतीय उद्देशकने विषे चार स्थानकपणाए विविध भावो कह्या, हवे पण तेत्री ज रीते कहेवाय छे-आवा प्रकारना संबंधविशिष्ट आ उद्देशकतुं प्रथम सूत्र-

चतारि पसप्पगा पं॰ तं॰-अणुःपत्राणं भोगागं उप्पाएता एगे पसप्पए, पुटबुःपत्राणं भोगाणं अविष्पतोगेणं एगे पसप्पए, अणुपात्राणं सोक्खाणं उप्पाइता एगे पसप्पए पुटबुष्पत्राणं सोक्खाणं अविष्पओगेणं एगे पसप्पए। सू॰ ३३९, णेरतितागं चउित्रहे आहारे पं॰ तं॰-इंगालोत्रमे मुम्तुरोन्वमे सीतले हिमसीतले, तिरिक्खजोणियाणं चउित्रहे आहारे पं॰ तं॰-कंकोत्रमे विलोजने पाणमंसोत्रमे पुत्तमंसोत्रमे, मगुस्साणं चउित्रहे आहारे पं॰ तं॰-असणे जात्र सातिमे, देवागं चउित्रहे आहारे पं॰ तं॰-वत्रमंते गंधमंते रसमंते फासमंते। सू० ३४०, चतारि जातिआसीतिसा पं॰ तं॰-

भीस्था नाङ्गपत्र पातुनाद ॥ ५०१ ॥

विच्छुतजातीयासीविसे मंडुक्कजातीयासीविसे उरगजातीयासीविसे मणुस्सजातिआसीविसे विच्छुय-जातिआसीविसरस णं भंते ! केवइए विसए पन्नत्ते ? पभू णं विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्य-माणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसद्याणि करित्तए विसए से विसद्वताए नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा, मंडुककातिआसीविसस्स पुच्छा, पभूणं मंडुककातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं (विसप्०) विसद्दमाणि सेसं तं चेव जाव करेस्संति वा, उरगजाति पुच्छा, पभू णं उरगजातिआसीविसे जंबूदीवपमाणमेत्तं बोंदिं विसेण सेसं तं चेव जाव करेस्संति वा, मणुस्सजातिपुच्छा, पभू णं मणुस्सजातिआसीविसे समतखेत्रप्यमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विस-परिणतं विसद्दमाणि करेत्तए, विसते से विसद्वताते नो चेव णं जाव करिस्संति वा ॥ सू० ३४१

मूलार्थः – चार प्रकारना प्रसर्पको – एक देशथी बीजा देशमां जनारा पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे – १ कोईक पुरुष निहं उत्पन्न थयेला भोगोने मेळववा माटे संचरे छे – देशाटन करे छे, २ कोईक प्रथम मळेल भोगोनुं रक्षण करवा माटे संचरे छे, ३ कोईक अनुत्पन्न सुखोने मेळववा माटे संचरे छे अने ४ कोईक पूर्व मेळवेल सुखोनी रक्षा माटे देशांतरमां संचरे छे. (सू० ३३९) नैरियकोने चार प्रकारे आहार कहेल छे, ते आ प्रमाणे – १ अंगारा जेवो अर्थात् थोडो काळ बाळनारो, २

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ४ प्रसर्पकाः आहारः आशीवि-षाः स्र० ३३९-४१

11 40811

मुम्प्रंर-अर्द्ध बुझायेल अग्नि जेवे। अर्थात् घणा काळ सुधी बाळनारो, ३ शीतळ-ठंडीनी पीडा करनारो अने ४ हिमश्रीतळ-अत्यंत ठंडी करनारो. तिर्यंचोने चार प्रकार आहार कहेल छे,ते आ प्रमाणे-१ कंक पक्षीना आहार जेवो अर्थात दःखपूर्वक पचे तेवो आहार पण सुखपूर्वक पचे छे, २ बिलना जेवो अर्थात् बिलमां कंई पण रेडवामां आवे ते सुखपूर्वक प्रवेश करे छे तेम स्वाद विना गळामां प्रवेश थाय छे. ३ पाणमांसोपम-चंडालना मांस जेवो-दुगंच्छनीय होवाथी दुःखकारक छे अने ४ प्रत्रमांसोपम-पुत्रना मांस जेवो अर्थात् अत्यंत दुः खकारक छे. मनुष्योने चार प्रकारे आहार कहेल छे, ते आ प्रमाणे-अञ्चन, पान, खादिम अने स्वादिम, देवोने चार प्रकारे आहार कहेल छे, ते आ प्रमाणे - ग्रुम वर्णवाळो, ग्रुम गंधवाळो, ग्रुम रसवाळो अने ग्रुम स्पर्शवाळो. (६० ३४०) चार प्रकारे जातिवडे आशीविष कहेल छे. ते आ प्रमाणे-१ वींच्छ जातिनो आशीविष, २ मंडक-देडकानी जातिनो आशाविष, ३ सर्पजातिनो आशीविष अने ४ मर्जुष्यनी जातिनो आशीविष. प्रश्न-हे भगवन् ! वृश्चिक(वींछ)जातिना आशीविषनो विषय केटलो कहेल छे ? उत्तर-वृश्चिक जातिनो आशीविष स्वविषवडे अर्द्ध भरतना प्रमाणवाळा शरीरने विष-मय करे अने शरोरने विदारी नाखवा माटे समर्थ थाय छे. विषना अर्थपणाथी शक्तिमात्र छे, परंतु निश्चय पूर्वोक्त शरीरनी प्राप्तिद्वारा विषमय कर्या नथी, करता नथी अने करशे पण नहि, देडकानी जातिना आशीविष संबंधी प्रश्ननो उत्तर-मंद्रक जातिना आशीविष पोताना विषवडे भरतक्षेत्र प्रमाण शरीरने विषमय करवा माटे समर्थ छे पण कर्या नथी. करता नथी अने करेश नहि, सर्पनी जातिना आशीविष संबंधी प्रश्ननो उत्तर-सर्पनी जातिनो आशीविष पोताना विषवे जंबद्वीपः प्रमाण शरीरने विषमय करवा माटे समर्थ छे परंतु कर्या नथी, करता नथी अने करशे नहि. मनुष्य जातिना आशीविष संबंधी श्रीस्था-ना**ङ्गध्**त्र सानुदाद साप्ट्र

प्रश्ननो उत्तर-मनुष्य जातिनो आश्चीविष पोताना विषवडे समयक्षेत्र (मनुष्यक्षेत्र) प्रमाणवाळा शरीरने विषवडे परिणत करवा अने शरीरने विदारण करवा समर्थ छे, तेनो शक्तिमात्र आ विषय छे परंतु कर्या नयी, करता नयी अने करशे पण नहि. (स्०३४१) टीकार्थः—' चत्तारि पसप्पने 'त्यादि० आ सूत्रनो अनंतर सूत्र साथे आ प्रमाणे संबंध छे-अनंतर सूत्रमां देवो अने देवीओ कहा, तेओ भोगवाळा अने सुखवाळा होय छे माटे भोगो अने सुखाने आश्रयीने प्रसप्पेकता भेदो कहेवाय छे. छे. आवा प्रकारना संबंधविशिष्ट आ सूत्रनी व्याख्या आ प्रमाणे -प्रकर्ष-त्रिशेषवडे ' सद्यंन्ति ' भोगादिकने माटे एक देशथी बीजा देश प्रत्ये जाय छे-संचरे छे अथवा आरंभ अने परिग्रहथी विस्तारने प्राप्त थाय छे ते प्रसर्पिकी. 'अगुप्पन्नाणं ' ति० (अहिं द्वितीया विभक्तिना अर्थमां छड़ी छे.) प्राप्त निह धयेल शब्दादिक मोगोने अथवा तेना कारणभूत धन अने स्त्री विगेरेने 'उप्पाइत्त 'त्ति । संपादन करवा माटे, अथवा अनुत्पन्न भोगोने उत्पन्न करतो थको कोई एक े प्रसन्देन्ति '-जाय छे अथवा प्रसप्पैक (जनारो) थाय छे, भोगादिकनी इच्छावाळा प्राणीओ संचरे छे. कधुं छे के-धावेइ रोहणं तरइ,सागरं भमइ गिरिनिगुं जेसु । मारेइ बंधवं पि हु,पुरिसो जो होज(इ) धणलुद्धो ॥१९५॥ अडइ बहुं वहइ भरं,सहइ छुहं पावमायरइ धिट्ठा। कुछसील जातिपचय - हिईं व लोभरूओ चयइ ॥१९६॥ जे मनुष्य धननो लोभी होय छे ते रोहणिगिर प्रत्ये दोडे छे, समुद्र तरे छे, पर्वतनी गुफाओने विवे भटके छे अने भाईने पण मारे छे. वळी घणुं ज रखडे छे, भारने वहे छे, क्षुघाने सहे छे, पापने आचरे छे तेमज लोभमां आसक्त अने घष्ट-

४ स्थान-काश्ययने उद्देशः ४ प्रसर्पकाः आहारः आशीत्र-षाः स्र० ३३९-४१

निर्लज्ज थयो थको कुल, शील-सदाचार अने जातिनी मर्यादाने पण छोडे छे. वळी प्रथम मेळवेलानुं अथवा पाठांतरथी ' प्रत्युत्पन्नानां '-वर्तमानमां मळेला(भोगादिक)नुं रक्षण करवा माटे, सौख्यानाम् '-भोगवडे प्राप्त करवा योग्य आनंद विशेषो माटे सचरे छे शेष सुगत छे. (सू०३३९) भोग अने सौख्यने माटे संचरनारा कर्ने बांधीने नारकपणाए उत्पन्न थाय छ माटे आहारना अधिकारथी नारकोना आहारनुं नि ह्वण करतां थका सूत्रकार कहे छे-' नेरइयाण 'मित्यादि० स्पष्ट छे. विशेष ए के-अल्प काळ दाह-बळतरा होवायी अंगारानी उपमा जेवी,घणा काळ पर्यंत बळतरा थवाथी मुर्मुरना जेवो, शीतवेदनाना उत्पादक होवाथी शीतळ अने अत्यंत शीतवेदनाना उत्पादक होवाथी हिमशीतळ छे. उपर्युक्त चारे क्रमशः एक एकथी अधिक वेदनावाळा छे. आहारना अधिकारथी तिर्पेच, मतुष्य अने देव संबंधी आहारनुं निरूपण करवा मोट त्रण सूत्र 'तिरिक्खजोणियाण'मित्यादि०-स्पष्ट छे. विशेष ए के-कंक(पक्षीविशेष)नी आहारवडे उपमा छे जेमां ते मध्यम पद(आहारपद)ना लोपथी कंकोपम अर्थात् कंकपक्षीने स्वरूपवडे दुर्जर आहार पण सुखपूर्वक खात्रा योग्य अने सुखरूप परिणामवाळो थाय छे-सुस्वपूर्वक पचे छे. एवी रीते जे आहार तिर्यंचोने सुभक्ष अने सुखरूप परिणामवाळो होय छे ते कंकोपम. बिलने विषे प्रवेश करतुं द्रव्य(पदार्थ) बिल ज छे, तेनी उपमा छे जेने विषे ते बिलोपम. जेम बिलमां रसनो आस्वाद मळ्या सिवाय जर्दीथी किंचित प्रवेश थाय छे एवी रीते जे आहार, गळारूप बिलमां प्रवेशे छे ते बिलोपम कहेवाय छे. 'पाण '-चांडाल, तेतुं मांस, अस्पेर्यपणाए निंदनीय होवाथी दुःखपूर्वक खावायोग्य होय. एवी रीते तेओने दुःखाद्य (दुःखे खावायोग्य) आहार ते पाणमांसोपम. पुत्र पर तो अत्यंत स्नेह होवाथी तेतुं मांस अतिशय दुःखर्त्वेक खावा याग्य होय, एवी रीते जे दुःखाद्यत र भीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ५०३ ॥ आहार ते पुत्रमांसोपम. क्रमपूर्वक आ आहारो ग्रुभ, सम, अग्रुभ जने अग्रुभतर जाणवा. (वर्णवान् इत्यादि शब्दने विषे प्रशं-सामां अथवा अतिशय अर्थमां ' मतुप् ' प्रत्यय थयेल छे.) (छ० ३४०) आहार भक्षण करवा योग्य छे, माटे भक्षणना अधिकारथी आशीविष सृत्र कहेल छे. ते सुगम छे. विशेष ए के-' आसीविस' त्ति० आश्य(दाढाओ)ने विषे विष छे जेओने ते आशीविषो. तेओ कर्मथी अने जातिथी होय छे. तेमांथी कर्मथी तिर्यंचो अने मनुष्यो कोईपण गुणथी आशीविषो थाय. सह-स्नार देवलोक पर्यंतना देवो शापादिद्वारा अन्यनो नाश करवाथी कर्मथी आशीविषो छे. कह्युं छे के-

आसी दाहा तग्गय-महाविसाऽऽसीविसा दुविह भेया। ते कम्मजाइभेएण, णेगहा चउठिवहविग्गप्पा।

आ गाथानो अर्थ उपर जणान्या मुजब छे.

जातिथी आशीविषो दृश्चिक विगेरे छे. 'केवइय' त्ति० विषनो केटलो विषय छे १ प्रभु एटले समर्थ. अर्द्ध भरतनुं प्रमाण कंईक अधिक बसें त्रेशठ योजनरूप छे तेटला प्रमाणवाळा शरीरने पोतानी साधनभूत दाढाथी उत्पन्न थयेल विषवडे विषमय करी शके छे. अथवा क्यांक 'विषपरिगताम' एवो पाठ छे त्यां विषवडे व्याप्त छे. 'विसहमाणि'-विदारण करवा माटे समर्थ होय छे. अथवा 'से ' दृश्चिकतुं विष, ए ज अर्थनो भाव ते विषार्थता, विषार्थतानी विषनो अथवा तेमां 'नो चेव' त्ति० नहिं ज 'संपत्त्या '-एवा प्रकारनी बोंदि(शरीर)नी प्राप्तिद्वारा ' करिंसु ' त्ति० वृश्चिकोए करेल नथी. अर्थात् तेवी तेनी शक्ति होय छे छतां कदापि करता नथी. अहिं एकवचनना प्रक्रमने विषे बहुवचन निर्देश करेल छे ते आशीविष वृश्चिकोतुं बहुपणुं

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः ४ प्रसर्पकाः आहारः आशीवि-षाः सु० ३३९-४१

॥ ५०३॥

जणाववा माटे छे. एवी रीते करता नथी, करशे नहीं. दृश्चिकोतुं त्रण काळ संबंधी निर्देश-त्रिकाळपणुं जणाववा माटे छे. समयक्षेत्र ते मनुष्यक्षेत्र. (स्ट॰ ३४१) विषनो परिणाम ज व्याधि छे माटे तेना अधिकारथी व्याधिना भेदो कहे छे— चउठिवहे वाही पं॰ तं॰-वातिते पित्तिते सिंभिते सन्निवातिते । सू० ३४२, चउठिवहा तिगिच्छा

पं० तं०-विज्ञो ओसधाइं आउरे परिचारते ४ (१) सू० ३४३, चत्तारि तिगिच्छगा पं० तं०-आतिगि-च्छते नामभेगे णो परतिगिच्छते १. परतिगिच्छए नाममेगे ४ (२) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-वणकरे णाममेगे नो वणपरिमासी, वणपरिमासी नाममेगे णो वणकरे, एगे वणकरेवि वणपरिमा-सीवि, एगे णो वणकरे णो वणपरिमासीवि ४ (१) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-वणकरे नाममेगे णो वणसारविक्षी ४ (२) चतारि पुरिसजाया पं० तं-वणकरे नाममेगे णो वणसंरोही ४ (३) चतारि वणा पं० तं०-अंतोसहे नाममेगे णो बाहिंसहे ४ (१) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अंतोसहे णाममेगे णो बाहिंसहे ४ (२) चत्तारि वणा पं॰ तं०-अंतो दुट्टे नामं एगे णो बाहिं दुट्टे, बाहिं दुट्टे नामं एगे नो अंतो ४ (३) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अंतो दुट्टे नाममेगे नो श्रीस्था-नाङ्गम्रत्र सानुवाद स ५०३॥

बाहिं दुट्टे ४ (४) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-सेतंसे णाममेगे सेयंसे, सेयंसे नाममेगे पावंसे, पावंसे णाममेगे सेयंसे, पावंसे णाममेगे पावंसे ४ (१) चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-सेतंसे णाममेगे सेतं-सेत्ति सालिसए, सेतंसे णाममेगे पावंसीति सालिसते ४ (२) चतारि पुरिसजाया पं० तं०-सेतं-सेति णाममेगे सेतंसेति मण्णति, सेतंसेति णाममेगे पावंसेति मण्गति ४ (३) चतारि पुरिस जाया पं० तं - सेयंसे णाममेगे सेयंसेति साछिसते मन्नति, सेतंसे णाममेगे पात्रंसेति साछिसते मन्नति ४ (४) चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं॰-आघवतित्ता णाममेगे णो परिभावतित्ता, परिभावइत्ता णाममेगे नो आघवतिता ४ (५) चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं॰-आघवतिता णाममेगे नो उंछजीविसंपन्ने, उंछ जीविसंपन्ने णाममेगे णो आघवइत्ता ४ (६) चउविवहा रुक्खिवगुठवणा पं० तं०-पवास्त्रताए पत्तत्ताए पुष्फत्ताए फलताए। सू० ३४४

मूलार्थः-चार प्रकारे व्याधि-रोग कहेल छे, ते आ प्रमाणे-वायुथी थयेल, वित्तयी थयेल, श्लेष्म कि)थी थयेल अने सन्निपातथी थयेल. (६० ३४२) चार प्रकारे चिकित्सा-उपचार कहेल छे, ते आ प्रमाणे-वैद्य, औषघो, रोगी अने

काध्ययन उद्देशः ४ व्याधि-चिकित्सा-चिकित्स-कत्रणञ्ज-रुपश्रेय: पापाख्या-यकादि०

परिचारक-सेवा (मावजत) करनार (१) (६० ३४३) चार प्रकारना चिकित्सा-वैद्या कहेला छे, ते आ प्रमाण-कोईक पोतानी चिकित्सा करे छे पण बीजानी चिकित्सा करतो नथी, कोईक बीजानी चिकित्सा करे छे पण पोतानी करतो नथी, कोईक पोतानी अने बीजानी पण चिकित्सा करे छे अने कोईक पोतानी के परनी चिकित्सा करतो नथी. (२) चार प्रकारना प्ररुपो कहेल छे, ते आ प्रमाणे-कोईक बणकर -पाते रुधिसादि काढवा माटे शरीरमां क्षत करे छे पण बणने स्पर्श करतो नथी, कोईक व्रणने स्पर्श करे छे पण पोते व्रण करतो नथी, कोईक व्रगने करे छे अने स्पर्श पण करे छे अने कोईक व्रणने करतो नथी तेम स्पर्श पण करतो नथी. (१) चार प्रकारना पुरुशे कहेला छे, ते आ प्रमागे -१ कोईक त्रग करे छे पण पाटा न बांधवाथी व्रणनी रक्षा करतो नथी, २ कोईक व्रगनी रक्षा करे छे पण व्रग करतो नथी, ३ कोईक व्रग करे छे अने व्रणनी रक्षा करे छे अने ४ कोईक बने करता नथी. (२) चार प्रकारना पुरुशे कहेला छे, ते आ प्रमाणे -१ कोईक व्रग करे छे पण व्रणने रुझावतो नथी, २ कोईक व्रण रुझावे छे पण व्रण करतो नथी, २ कोईक व्रग करे छे अने रुझावे पण छे अने ४ कोईक बन्ने करतो नथी. (३) चार प्रकारना वर्ग (घा) के गुमहुं कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक वर्ग अंदरमां श्रन्यवाळ होय छे पण बहार देखातुं नथी, २ कोईक त्रग बहार शल्य शांळुं देखाय छ पण अंदर शल्य शांळुं होतुं नथी, ३ कोईक त्रग अंदर अने बहार श्रल्यवाळुं होय छे अने ४ कोईक अंदर के बहार श्रल्यवाळुं होतुं नथी. (१) आ द्रष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक पुरुष अंदर शल्यवाळी छे पण बहार शल्यवाळी नथी, एम त्रगती माफक चतुर्भंगी करवी. (२) चार प्रकारना त्रणो (फोडा) कहेला छे. ते आ प्रमाणे—? कोईक त्रण लुतादि दोषथी अंदर दुष्ट छे पण

भीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ५०५॥

बहार दृष्ट नथी, २ कोईक त्रण परु विगेरे निक्तवाधी बहार दृष्ट छे पण अंदर दुष्ट नथी, ३ कोईक त्रण अंदर अने बहार दुष्ट छे अने ४ कोईक त्रण अंदर के बहार दुष्ट नथी. (३) ए दर्शते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-? कोईक पुरुष अंदर्थी दृष्ट छे एण बहारथी दुष्ट नथी-सौम्य देखाय छे, २ कोईक पुरुष कारणवशात बहारथी दुष्ट देखाय छे पण अंदरथी दुष्ट नथी, ३ कोईक अंदर अने बहारथी दुष्ट छे अने ४ कोईक अंदर के बहारथी दुष्ट नथी. (४) चार प्रकारना पुरुषी कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष श्रेयांस-प्रशंसायोग्य माववाळो छे अने सदनुष्ठानवाळो छे-ते साधु, २ कोईक प्रशंसा योग्य भाववाद्यो छे पण अविरतिपणाने लईने पापवाद्यो छे-ते समिकती, ३ कोईक मिथ्यात्वी होवाथी पापवाद्यो क्छे पण कारणवद्यात् सदनुष्टानवाळो छे-उदायी नृपने मारनार कपटीनी जेम अने ४ कोई अप्रशस्य भाववाळो अने पाप अनुष्टान-वाळो छे-कालसौकरिकनी जेम. (१) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक पुरुष भावधी श्रेयांस छे अने द्रव्यथी बीजाने प्रशंसवा योग्य बुद्धि उत्पन्न करवावेड श्रेयांस तुल्य छे, २ कोई पुरुष भावथी श्रेयांस छे पण द्रव्यथी 'आ पापी छे' एवी बुद्धि बीजाने उत्पन्न करवावडे पापांशतुल्य छे, ३ कोईक भावथी पापांश छे पण द्रव्यथी श्रेयांस तुल्य छे अने ४ कोई भावथी पापांश अने द्रव्यथी पण पापांश तुल्य छे. (२) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाण-१ कोईक पुरुष प्रशंसवा याग्य के अने पोताना आत्माने श्रेष्ठ माने के, २ कोईक श्रेष्ठ के पण पोताना आत्माने पापी माने के-इढप्रहारी मुनिनी जेम, ३ कोईक पापी छे पण पोताना आत्माने श्रेष्ठ माने छे-कुतीर्थिकवत् अने ४ कोईक पापी छे अने पोताना आत्माने पापी माने छे-सद्बोधवाळो होवाथी. (३) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष भावथी श्रेष्ठ छे अने द्रव्यथी

४ स्थान-काश्ययने उदेशः ४ च्याधि-चिकित्सा-चिकित्सक-त्रणश्रुल्य-श्रेयः पापा-ख्यायका-दि० सू० ३४२-88

कंईक शुभ क्रियावाटो होवाथी लोकोवंड श्रेष्ठ तुल्य मनाय छे. र कोईक पुरुष भावथी श्रेष्ठ छ पण लोकोवंड पापी मनाय छे— कारण वशात् असदनृष्टानवाळो होवाथी, र कोईक भावथी पापी छे पण कंईक सारुं अनुष्ठान करतो होवाथी लोकोवंड श्रेष्ठ तुल्य मनाय छे अने ४ कोईक भावथी पापी छे अने लोकोवंड पण पापी मनाय छे. (४) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—१ कोईक पुरुष प्रवचननो आख्यायक—प्ररूपक छे पण शासननो प्रभावक नथी केम के ते उदार किया रहित छे, २ कोईक पुरुष शासननो प्रभावक छे पण प्रवचननो प्ररूपक नथी, र कोईक प्ररूपक छे अने प्रभावक पण छे अने ४ कोईक प्ररूपक नथी अने प्रभावक पण नथी. (५) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—१ कोईक पुरुष स्वत्रार्थनो प्ररूपक छे पण शुद्ध एषणामां तत्पर नथी, र कोईक शुद्ध प्ररूपक नथी तेम शुद्ध एषणामां तत्पर पण नथी. (६) चार प्रकार दक्षनी विकु-विणा कहेली छे, ते आ प्रमाणे—प्रवाल(नवा अंकुर)पणाए, पत्रपणाए, फूलपणाए अने फलपणाए. (स० २४४)

टीकार्थ:-' चडिवह 'त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-वायु छे निदान जे रोगतुं ते वातिक, एम सर्वत्र जाणतुं. विशेष ए के-*बे दोष अथवा त्रण दोषनो संयोग ते सिक्षपात. वायु विगेरेतुं स्वरूप आ प्रमाणे- 'वायु-१ रुक्ष, २ लघु-इलको, ३ शीत, ४ कर्कश, ५ सक्ष्म अने ६ गतिवाळो छे. पित्त-१ स्नेहल(चीकणुं), २ तीक्ष्ण, ३ उष्ण, ४ लघु, ५ काचा मांसना गंध जेबुं,६ फेलाई जनारुं अने ७ प्रवाही छे.(१) कफ-१ भारी,२ अत्यंत ठंडो,३ स्निग्ध-अतिशय

* वात अने पित्त, वात अने कफ, पित्त अने कफ ए द्विदोष सित्रपात अने वात, पित्त अने कफ त्रणेनो मिलाप ते त्रिदोष सित्रपात.

बीस्था-नाङ्गद्धत्र सानुवाद ॥ ५०६ ॥

चीकाञ्चवाळो, ४ प्रक्लेदी-मंद, ५ स्थिर अने ६ विचिछल घाटो (मलाईना थर जेवो) छे. सन्निवात तो वे दोष विगेरे मळवाथी मिश्रलक्षणवाळो छे. (२) वळी वात विगेरेना आ कार्यो छे -१ कठणपणुं, २ संकीचन, ३ पीडा, ४ शूल, ५ व्यामता, ६ हायपग विगेरे अंगमां दुःखावो, ७ चेष्टाना भंग, ८ अंगोतुं सूई जबुं-खाली चडवी, ९ शीतपणुं, १० तीक्ष्णपणुं अने ११ श्रोप-तृषा लागवी. (१) १ पाणी विगेरेनुं झरवुं, २ स्वेद्(परसेवो), ३ बळतरा, ४ रताञ्च, ५ दुर्गंधपणुं, ६ खेद, ७ पाचक, ८ कोप, ९ प्रलाप, १० मृब्र्झा, ११ अमी-चक्ररी अने १२ पीळापणुं-आ कार्यो पित्तनां छे एम वैद्यो कहे छे. (२) १ श्वेतपणुं, २ शीतपणुं, ३ गुरुता-भारेपणुं, ४ चळ-खरज, ५ चीकाश, ६ सोजो, ७ स्थिरपणुं, ८ लेप-चोटबुं. ९ उत्सेध-ऊंची अने संपात-नीची श्वास लेबी बिगेरे लांबा काळे कियानुं थवं-आ कार्यों कफनां छे. एम वैद्यो कहे छे. (३) अनंतर व्याधि कद्यो, हवे व्याधिनी ज चिकि:स अने चिकि:स क्रीने वे सूत्रवडे कहे छे-' चउ व्विहे ' त्यादि० सुगम छे. तिशेष ए के-चिकिःसा एटले रोगने। प्रतिकार, तेतुं कारगना भेदयी चनुर्वि धपणुं छे. बीजाओए [अन्य शास्त्रकारोए] पण आ सूत्रने मऊतुं कथन कहेलुं छे, जेमके '' १ वैद्य, २ औषधो, ३ सेवा करनार अने ४ रोगी आ चिकित्साना चार चरणो चिकित्साना करावनारने माटे कहेल छे अने ते दरेकना चार गुगो छे. (१) १ चतुर, २ शास्त्रना अर्थने जाणनारो, ३ जोयेल वैद्यक क्रियावाळो अने ४ पित्रत्र आचारवाळो-आ चार वैद्यना गुणो छे. १ बह कल्प-वाळं. २ बहु गुणवाळं, ३ औषधना गुणसंपन्न अने ४ योग्य-आ चार औषत्रना गुणो छे. (२) १ प्रीतिवाळो, २ पवित्र, ३ दक्ष अने ४ बुद्धिमान आ चार सेवा करनारना गुगो छे, अने १ पैसावाळो, २ वैद्यना कहेवा प्रमाणे वर्त्तनारो, ३ जणाव-

४ स्थान-* काष्ययने
* उद्देशः ४
* च्याधि* चिकित्सा* चिकित्सक* त्रणशल्य* श्रेयः पापा* ख्यायका-दि० स्र० ३४२-88

नार अने ४ हिम्मतवाको-आ चार रोगीना गुणो छे. (३)" आ द्रव्यरोगनी चिकित्सा कही परंतु मोहरूप भावरोगनी चिकि-त्सा तो आ प्रमाणे जाणवी—

निवित्रगइ निब्बलोमे, तत्र उद्धट्टाणमेत्र उब्भामे । वेयात्र द्याहिंडण, मंडलि कप्पट्टियाहरणं ॥१९८॥

१ निर्विकृति-विगय त्याग करे, २ वाल, चणा विगेरे निर्वेल आहार करे, २ ऊगादरी करे, ४ आयंबिल विगेरे तप करे, ५ कायोत्सर्ग करे, ६ भिक्षाचर्या करे, ७ वैयावृत्त्य करे, ८ भिन्न देशोने विवे विहार करे अने ९ सूत्रार्थनी मंडलीमां प्रवेश करे. आ प्रमाणे मोह रोगनी चिकित्सा छे.

आ संबंधमां कोईएक कुलपुत्री नुं उदाहरण छे. कोईक शेठनी पुत्री कंईपण काम कर्या सिवाय सुखपूर्वक घरमां रहे छे. तेनो पित देशांतरमां गयेल छे. तेणी स्नानादि शृंगारपरायण होवाथी विषयवाळी थई तेथी धावमाताने कहुं के-''कोईक पुरुषने लई आव.' त्यारे धावमाताए तेणीना मातापिताने ते बृत्तांत जगान्युं. तेशोए विचारीने स्वपुत्रीने कहुं के-'धानयने कोठारमांथी काढीने साफ कर.' इत्यादि अनेक कार्यमां जोडी आपवाथी श्रमित थयेली ते रात्रे सुखपूर्वक सई जवा लागी. एक वखत धावमा-ताए पूछयुं के-'हं कोईक पुरुषने लाखुं ?' त्यारे तेणीए कहुं के-'हं तो धाकी गई छुं, मने ऊंच आवे छे.' एवी रीते साधुशी पण सूत्रार्थ देवा विगेरेना कार्यमां न्यग्र होवाथी तेमने कामनो संकल्य थता नथी. (स० ३४३)

चिकित्सको द्रव्यथी ज्वरादि रोगो प्रत्ये अने भावथी रागादि प्रत्ये, तेमां आत्म संबंधी-ज्वरादिनी अथवा कामादिनी

भीस्था-नाज्ञध्य साजुनाद ॥ ५०७॥

चिकित्सा करनार ते आत्मचिकित्सक. हवे पोतानी।चिकित्सा करनारने भेदथी त्रण सूत्रोवडे कहे छे-' चत्तारी '-त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-त्रण(देहने विषे रुधिरादि काढवा माटे क्षत-छिद्र)ने पोते करे छे ते त्रणकर. ' नो '-व्रणने स्पर्श करतो नथी एवा स्वभाववाळो ते नोव्रणपरिमर्शी-आ एक. बीजो तो बीजाए करेल व्रणने स्पर्श करे छे परंतु त्रण करतो नथी. एवी रीते अतिचार लक्षण भावत्रणने कायावडे करे छे पण ते त्रणने ज पुनः पुनः संभारवावडे स्पर्श करतो नथी, बीजो तो अतिचारने वारंवार संभारवावडे स्पर्श करे छे परंतु कायाथी अभिलापाने करतो नथी केमके संसारनो भय विगरे होय छे. (१) एक त्रण करे छे पण तेने पाटा विगरे बांधवावडे संरक्षण करती नथी, बीजो तो करेल व्रणतुं संरक्षण करे छे परंतु व्रणने करतो नथी. भावव्रणने आश्रयीने तो अतिचारने करे छे परंतु अनुबंधने थनारो कुशीला-दिनों संसर्ग अने तेनुं निदान-मूलना परिहारथी रक्षण करतो नथी-आ एक अने बीजो तो पूर्वे करेल अतिचारने निदानना परिहारथी रक्षण करे छे अने नवीन अतिचार करतो नथी. (२) औषधादिना देवावडे व्रणना संरोह-अटकाव करतो नथी ते नो त्रणसंरोही [अन्य औषधादिना देवावडे त्रणनो संरोह करे छे-रुझावे छे ते त्रणसंरोही], भावत्रणनी अपेक्षाए तो प्रायश्चित्तने नहि स्वीकारवाथी व्रणसंरोही नथी, अन्य पूर्वे करेल अतिचार संबंधी प्रायश्चित्तनो स्वीकार करवावडे व्रणसंरोही-अतिचारने टाळनार छे केमके नोत्रणकर-नवीन अतिचारने करनार नथी. (३) आत्माचिकित्सको कह्या, हवे चिकित्सा करवा योग्य त्रणने दृष्टांतरूपे करीने पुरुषना भेदोने कहे छे-' चत्तारी ' त्यादि० चार सत्रो सुगम छे. विश्वेष ए के-अंदर शस्य छे जेनुं अर्थात जोवामां निहं आवतुं ते १ अंतःशस्य. 'बाहिं सहे ' त्ति ॰ जे शस्य व्रणनी अंदर अस्प छे

४ स्थान-काश्ययवे उद्देशः ४ व्याधि-चिकित्सा-चिकित्सक-व्रणशस्य-श्रेयः पापा-ख्यायका-दि० स्० **३४२**-88

अने बहार तो घणुं छे एटले अंदर अल्प अने बहार बहु शल्य छे जेनुं ते बाह्यशल्य कहेवाय छे. जो वळी सर्वथा व्रणथी बहार होय तो शल्यपणुं ज न होय, अथवा शल्यनो उद्धार कर्ये छते पण भूतकाळनुं शल्य भविष्यमां पण होय. जे व्रणमां अंदर घणुं श्रन्य छे अने बहार पण देखाय छे ते ३ उभयशन्य अने चतुर्थ भंग शून्य छे अर्थात् अंतर्बाह्य शल्य नथी. (१) गुरुनी समक्ष आलोचना करवावडे अतिचाररूप अंतःशल्य छे जेने ते अंतःशल्य, आलोचना करवावडे बहार श्रुल्य छे जेने ते २ बहिश्चल्य, आलोचना करवावडे अने न करवावडे अंतः अने बाह्य श्रुल्य छे जेने ते ३ अंतःबहिश्चल्य. चतुर्थ भंग शून्य छे-शल्य रहित छे. (२) छुतादिरोगना दोषथी जे त्रण छे ते अंतर्दृष्ट त्रण छे-रताश विगेरेना अभावने लईने सौम्यपणुं #होवाथी बाह्य दृष्ट नथी. (३) पुरुष तो शठताथी अंतरमां दुष्ट छे पण आकारने छुपाववाथी बहार दृष्ट नथी आ एक, बीजो तो कारणवशात वचननुं कठोरपणुं विगेरे देखाडवाथी बहारथी दुष्ट छे (पण अंतर्दृष्ट नथी). (४) पुरुषना अधिकारथी तेना भेदोनुं प्रतिपादन करवा माटे छ धत्रो छे अने ते सरळ छे, परंतु १ कोईएक अत्यंत प्रशस्य श्रेयानेक-प्रशंसा करवा योग्य छे-सद्बोधवाळो होवाथी प्रशस्य भाववाळो छे. वळी प्रशस्त अनुष्ठान करवाथी श्रेष्ठ छे-साधुनी जेम, २ बीजो तो पूर्वनी जेम प्रशस्य भाववाळो छे पण अविरतिपणाने लईने दुष्ट अनुष्ठान करनार होवाथी अत्यंत पापी छै, ३ त्रीजो तो मिथ्योत्वादिवडे हणायेल होवाथी भावथी अत्यंत पापी छ अने कारणवैद्यात सारा अनुष्ठाननी करनार होवाथी श्रेष्ठ छे-उदायीनप-मारकवत्, चोथो तो ते ज नृपने मारवाथी पापनो करनारो कृत्रिम साधु. अथवा १ गृहस्थपणामां * अहि एक भंग कहा, तदनुसार शेष त्रण भंग मूल अनुवादमां आपेल छे ते परथी समनी लेवा.

For Private and Personal Use Only

श्रीस्था-ना**ङ्गस्**त्र सानुवाद् ा ५०८ ॥

अत्यंत श्रेष्ठ के दीक्षा लेवाना समयमां, वळी प्रवज्यामां के विहारना समयमां श्रेष्ठ छे. एवी रीते अन्य ३ भांगा पण जाणवा. (१) कोईक भावधी अत्यंत श्रेष्ठ छ अने द्रव्यथी तो श्रेष्ठ अत्यंत प्रश्नंसा करवा योग्य छे. आवा प्रकारनी बुद्धि लोकने उत्पन्न करवावडे सहज्ञक-अन्य श्रेष्ठ पुरुष तुरुय छे पण सर्वया श्रेष्ठ नयी आ एक, बीजो तो भावयी श्रेष्ठ छे पण द्रव्यथी अत्यंत पापी छे. आबो रीते लोकने बुद्धि उत्पन्न करबाबडे अन्य पापी तुल्य छे, त्रीजो तो भावयी अत्यंत पापी छे पण द्रव्यथी आकारने छुवाववावडे बीजा श्रेष्ठ पुरुष तुल्य छे, चोथो तो पुजात छे. (२) १ कोईक सद्युतियाळो होवाथी अत्यंत श्रेष्ठ छे अने पाताना आत्माने श्रेष्ठ माने छे. अथवा लोकोबडे श्रेष्ठ मताय छे केमक निर्मेळ सदनुष्ठानवाळो होय छे. अहि 'मन्निज्ञ हु' त्ति ० वक्तव्यमां प्राकृतशैलीवडे 'मन्नई' एम कद्यं, २ वीजो अत्यंत श्रेष्ठ छे पग पोताना आत्माने विषे अरुचिपरायण होवाथी स्वात्माने अत्यंत पापी माने छे अथवा पूर्वना जाणेल तेना दोषद्वारा लोकोवडे ते पापी मनाय छे-इढप्रहारीनी जेम. त्रीजो मिथ्यात्वादिवडे हणायेल होवाथी अत्यंत पापी छे पण स्वात्माने श्रेष्ठ माने छे-क्कृतीर्थिक-नी जेम. ४ अविरतिक होवाथी अत्यंत पापी छे पण सद्बेधवाळी होवाथी स्वात्माने पापी माने छे, अथवा संयत लोकोवडे असंयत मनाय छे. (३) १ कोईक भात्रथी अत्यंत श्रेष्ठ छे अने द्रव्यथी तो किंचित् सद्दुष्ठान गळी होत्रायी श्रेष्ठ छ एम (लोकोने) त्रिकल्प उत्पन्न करबाबडे बीजा अत्यंत श्रेष्ठ तुल्प मनाय छे. मनुष्पवडे श्रेष्ठ जणाय छे अथवा विभक्तिना परिणामथी अन्य श्रेष्ठ पुरुष समान पोताना आत्माने माने छे. एम बीजा ३ भांगा पग जागरा. (४) 'आघवइत्ते'ति॰ १ कोईएक प्रवचननो प्रह्मपक छ पण शासननो प्रभावक नथी, कारण के उदार किया अने प्रतिभादिवडे

४ स्वान-**काश्ययने** उद्देशः ४ च्याधि-चिकित्सा-चिकित्सक-व्रगश्च-श्रेयः पापा-ख्यायका-दि० सू० 382-88 11 406 11

रहित होय छे अथवा# प्रविभाजियता-सिद्धांतन। अर्थने नय अने उत्सर्गादिवडे विवेचन करनार, अथवा आख्याक-स्त्रनों कहेनार अने प्रविभावियता के प्रविभाजियता ते अर्थने कहेनार. (५) कोईएक स्त्रार्थनों कहेनार छे, परंतु उंच्छजीविका-संपन्न-एपणा माटे तत्वर नथी. ते दुर्भिक्षादि प्रसंगरूप आपित्तमां प्राप्त थयेल साधु अथवा संविज्ञपाक्षिक छे. कह्युं छे के-होज्ज हु वसणं पत्तो, सरीरदु ब्वछयाए असमत्थों। चरणकरणे असुद्धे, सुद्धं मग्गं परू वेज्ञा ॥१९९॥ कोईक साधु कष्ट प्राप्त थवायी अथवा शरीरनी दुर्वलताथी साधुना आचाररूप चरणितत्तरी अने करणितत्तरीने पाल-वामां असमर्थ छे तो पण शुद्ध साधुना मार्गनी प्ररूपणा करे, कारण के शुद्ध प्ररूपकतुं आराधकपणुं होय छे. ओसन्नोऽवि विहारे, कम्मं सिढिलेइ सुलहबोही य। चरणकरणं विसुद्धं, उवबूहंतो पह्नेंतो ॥२००॥

साधुना आचार पाळवामां असमर्थ छतां पण चरणकरणवडे विशुद्ध साधुना मार्गनी प्रशंसा अने प्ररूपणाने करतो थको कर्मने शिथिल करे छे अने सुलभवोधि थाय छे. बीजो यथाच्छंदक, त्रीजो साधु अने चोथो गृहस्थ विगेरे. पूर्वना सूत्रमां साधुरूप पुरुषना आख्यायकत्व अने एषणा-

* अहि फक्त शब्दना अर्थो कहेला छे परंतु भांगा बतावेला नथी, ते आ प्रमाणे-१ कोई एक सिद्धांतनो प्रस्ताक छे पण नयादि-वडे विवेचक नथी, २ कोई एक विवेचन करनार छे पण प्रस्पक नथो, ३ कोईक उभययुक्त छे तेमन ४ उभयशून्य छे. अथवा १ कोईक सूत्रनो बक्ता छे पण अर्थनो कहेनार नथो, २ सूत्रवक्ता नथी पण अर्थने कहेनार छे, ३ उभय युक्ता छे, ४ उभयशून्य छे. श्रीस्था-नाङ्गध्त्र सानुनाद ॥ ५०९॥

शुद्धित्वरूप गुणनी विभूषा कही, हवे तेनी समानताथी वृक्षनी विभूषाने कहे छे-' चडिन्बहे 'त्यादि० अथवा पूर्वे उंच्छ-जीविकासंपन्न साधुपुरुष कहो। ते वैक्रिय लिब्धवाळा साधुने तथाप्रकारना प्रयोजनने विषे-वृक्षनी विकुर्वणा करनारने जे प्रकारे तेनी विकुर्वणा थाय ते कहे छे-' चडिन्बहे 'त्यादि० स्पष्ट छे. विशेष ए के-'प्रवालतये' ति० नवीन अंकुर-पणाए एवा अर्थ छे. (स० ३४४) आ पूर्वे कहेल आख्यायक विगेरे तीर्थिको छे, माट तेथोनुं स्वरूप कहे छे-

चत्तारि वातिसमोसरणा पं० तं०-किरियावादी अकिरियावादी अन्नाणितावादी वेणतियावादी। णेरइयाणं चत्तारि वादिसमोसरणा पं० तं०-किरियावादी जाव वेणतियवादी एवमसुरकुमाराणिव जाव थिणयकुमाराणं एवं विगार्छिदियवज्ञं जाव वेमाणियाणं। सृ० ३४५

मूलार्थ: - चार प्रकारना वादीना समवसरणो - विविध मतना मिलापो कहेला छे, ते आ प्रमाणे - १ कियावादी, तेना एक सो ऐशी भेदो छे, २ अकियावादी, तेना चोराशी भेदो छे. ३ अज्ञानिकवादी, तेना सडसठ भेदो छे, ४ वैनियकवादी, तेना बत्रीश भेदो छे. सर्व मळीने त्रण सो त्रेशठ भेद थाय छे. दैरियकोने चार वादीना समवसरणो कहेला छे, ते आ प्रमाणे - कियावादी यावत् वैनियकवादी. एम असुरकुमारोना पण चार समवसरणो छे यावत् स्तिनितकुमारोना पण चार छे. एवी रीते एकेंद्रिय अने विकलेंद्रियने छोडीने यावत् वैमानिकोना चार वादीना समवसरणो छे. (स्० ३४५)

टीकार्थः-वादिनः-तीर्थिको समवतार थाय छे जेओने विषे ते समवसरणो-विविध मतना मिलापो. तेओना समवस-

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः **४** क्रिया-बाद्याः स्र० ३४५

11 400 1

रणों ते वादी समवसरणों. क्रिया-जीव, अजीवादि पदार्थ छे, आवी रीते अस्तित्वरूप क्रियाने कहे छे ते क्रियावादीओ अर्थात् आस्तिकों. तेओनुं जे समवसरण ते अभेद होवाथी ते क्रियावादीओं ज कहेवाय छे. जीव, अजीवादि पदार्थथी अस्तित्वरूप क्रियाना निषेधथी अक्रियावादीओं नास्तिकों छे. स्वीकारद्वाराए अज्ञान छे जेओने ते अज्ञानिकों, ते ज वादीओं-अज्ञानिक वादीओं अर्थात् अज्ञान ज श्रेय छे एवी प्रतिज्ञावाळा छे. विनय ज वैनयिक, ते ज मोक्षने माटे छे एवी रीते कहेनारा ते वैनयिकवादीओं. आ चारेना भेदोनी संख्या आ प्रमाणे जाणवी.

असियसयं किरियाणं, अकिरियवाईण होइ चुलसीई। अन्नाणिय सत्तद्वी, वेणइयाणं च बत्तीसा।

क्रियावादीना १८० भेद, अक्रियावादीना ८४ भेद, अज्ञानिकवादीना ६७ भेद अने वैनियकवादीना ३२ भेद छे.
तेमां एक सो ने एंशी भेद क्रियावादीना थाय छे, ते आ उपायवडे जाणवा—जीव, अजीव, आश्रव, संवर, बंध, निर्जरा,
पुण्य, पाप अने मोक्ष—ए नव पदार्थोंने विरचीने—पद्धत्तिसर एक पाटी पर रुखीने जीव पदार्थनी नीच स्व अने पर भेदो स्थापन करवा, तेनी निच नित्य अने अनित्य भेदो स्थापवा, तेनी पण नीचे काळ, ईश्वर, आत्म, नियति अने स्वभाव आ पांच
भेदो स्थापवा. बाद आवी रीते विकल्पो करवा—'अस्ति जीवः स्वतो नित्यः कारुतः'—कारुथी नित्य अने स्वतः जीव छे. आ
एक विकल्प. विकल्पनो अर्थ आ प्रमाणे—आ आत्मा निश्चये पोताना रूपवडे विद्यमान छे पण परनी अपेक्षाए नहिं—*हस्व अने

अं जेम हस्वपणुं के दोर्घपणुं स्वतः छे परंतु आपिश्चिक नथी.

र्भास्था-नाङ्गध्त्र सानुवाद 1 490 11

दीर्घत्वनी जेम नित्य छे. ×काळवादीओनो आ विकल्प छे. कहेल अभिलापवडे ज बीजो विऋल्प +ईश्वरने कारण मानवावाळा वादीओनो छे. 'पुरुष एवेदं ग्निम्' आ बधुं य पुरुष ज छे एम स्वीकारनारा आत्मवादीओनो त्रीजो विकल्प छे. नियति, पदार्थीने अवस्यपणे जे जेम थवानं होय तेमां प्रेरणा - करनारी छे. आवी चीथी विकल्प नियतगदीओनी छे. पांचमी विकल्प #स्वभाववादीओनो हे. एवी रीते 'स्वतः 'पदने निहं छोडवावडे पांच विकल्पो प्राप्त थाय छे. तेमज [स्वतःने बदले] परतः आ पदबहे पण पांच ज विकल्पो प्राप्त थाय छे. तेमां परतः ए पदनो अर्थ आ प्रमाणे-अहिं बधा पदार्थीनो परहूपनी अपेक्षावाळो स्वरूपनो परिच्छेद-ज्ञान छे. जेम हस्वत्वादिनी अपेक्षावाळो दीर्घत्वादि परिच्छेद छे. ए प्रमाणे ज आत्मा प्रत्ये स्तंभ अने कंभादिने जोईने तेनाथी जुदी वस्तुमां ज आत्मबुद्धि प्रवर्ते छे. आ हेतुथी जे आत्मानुं स्वरूप छे ते परतः (बीजाथी) ज निश्चय कराय छे पण स्वतः नहि. अहिं नित्य पदनो त्याग न करवावडे आ दश विकल्पो छे. एवी रीते अनित्य पदवडे पण दश विकल्पो थाय छे, एम बीश विकल्पो जीश पदार्थवडे प्राप्त थाय छे. बीजा अजीव विगेरे आठ पदाने विषे पण एवी रीते ज दरेक पदमां वीश विकल्पो थाय छे-आ कारणथी वीशने नवगुणा करवाथी एक सो एंशी भेदो क्रियाचादीओना थाय छे. आ विकल्पो एकेकमां शीलांग(ना भेद)नी जेम प्राप्त थता नथी. अक्रियाचादीओना तो चोराशी भेदो जाणवा. तेनी स्थापना आ प्रमाणे-पुण्य अने पाप सिवाय शेष जीवादि सात पदार्थनो तेमज उपन्यास करवी.

🗴 काळवादीओ कहे छे के दरेक परार्थ काळकत छे. 🕂 सर्व पदार्थ ईश्वरकत छे एम ईश्वरवादीओनुं कथन छे. 🛨 गोशा-लकादि नियतवादीओ नियतिने ज कारण माने छे. * स्वभाववादीओ दरेक पदार्थ मयूरिपच्छवत् स्वभावणो ज थाय छे एम माने छे.

४ स्थान-काष्ययन उद्देशः ४ क्रिया-वाद्याः स्ट० ३४५

५१० lt

जीवपदनी नीचे स्व अन पर्रूष वे विकल्पना उपन्यास करवाे. आत्माना अअसच्व(अविद्यमानपणा)थी नित्य अने अनित्य भेदनुं स्थापन नथी. काळ विगेरे पांच पदोने विषे छट्टी यदच्छा स्थपाय छे. अनिच्छापूर्वक पदार्थनी प्राप्ति ते यदच्छा. त्यारबाद विकल्पोनो अभिलाप आ प्रमाणे- ' नास्ति जीवः स्वतः कालतः "-जीव स्वतः अने कालतः नथी-आ एक विकल्प. एवी रीते ईश्वरादि विगेरे यदच्छा पर्यंत पदोवडे बधा मळीने छ विकल्पो थाय छे. तथा ''जीव परतः अने कालतः नथी" आ छ विकल्प, एकंदर बार विकल्पो जीव पदथी थया. एवी रीते अजीवादि शेष छ पदोने विष पण दरेकना बार विकल्पो थाय छे. एम बारने सातगुणा करवाथी चोराशी विकल्पो नास्तिकोना थाय छे. अज्ञानिकोना तो सडसठ विकल्पो थाय छे, ते आ प्रमाणे जाणवा-तेनी स्थापनामां जीव, अजीव विगेरे नव पदार्थीने पूर्वनी माफक क्रमशः स्थापीने छेवटमां उत्पत्ति पद स्थापीने जीवादि पदनी नीचे सत विगेरे सात पदो स्थापवा, ते आ प्रमाणे-१ सत्त्व, २ असत्त्व, ३ सद-सत्त्व, ४ अवाच्यत्व, ५ सदवाच्यत्व, ६ असदवाच्यत्व अने ७ सदसदवाच्यत्व, तेथी आ जीवादि नव पदने सत्त्व विगेरे सात पदोवडे गुणवाथी त्रेशठ विकल्पो थाय छे. उत्पत्तिना तो प्रथमना ज चार विकल्पो १ सन्त्व, २ असन्त्व, ३ सदसन्त्व अने ४ अवार च्यत्व-आ चार विकल्पो त्रेशठ विकल्पोमां उमेरवाथी सहसठ थाय हे. विकल्पनो अभिलाप आ प्रमाणे-जीव विद्यमान हे एम कोण जाणे छे ? अथवा तेने जाणवावडे हुं ? आ एक विकल्प. एवी रीते असत विगरे पदो पण कहेवा. वळी 'भावोनी उत्पत्ति १ छती छे एम कोण जाणे छे १ अथवा एने जाणवावडे शुं १ एवी रीते २ अछती, ३ छती-अछती अने ४ अवक्तव्य

* अक्रियावादीओ आत्मानुं अस्तित्व मानता नथी तेथी नित्य-अनित्य पद्नुं स्थापन नथी.

भीस्था-राष्ट्र हार सानुवाद ॥ ५११ ॥

उत्पत्ति छे एम कोण जाणे छे ? अथवा एने जाणवावडे शुं ? सन्वादि सप्तभंगीनो आ प्रमाणे अर्थ छे-१ स्वरूपमात्रनी अपेक्षाए *वस्तुनुं विद्यमानपणुं छे. २ पररूपमात्रनी अपेक्षाए +असच्व-अविद्यमानपणुं छे. ३ वळी घट विगेरे द्रव्यना एक देशरूप ग्रीवादिना सद्भावपर्यायरूप ग्रीवात्वादिवडे विशेषित घटनुं विद्यमानपणुं होवाथी तथा घटादि द्रव्यना अपर बुध्नादि देशने ज असदुभावपर्यायरूप वृत्तत्वादिवडे अथवा परगत(बीजामां रहेल) पर्यायवेड ज विशेषित घटनं अविद्यमानपणुं होवाथी वस्तुनुं सदसत्पणुं छे. ४ समस्त अखंडित ज घटादि वस्तुने अर्थान्तरभूत(भिन्नह्रप) पटादि पर्यायोवहे अने पोताना ऊर्ध्व, कुंडल, ओप्ट, आयत्(दीर्घ), वृत्त अने ग्रीवादि पर्यायोवहे युगपत विवक्षित वस्तुनुं सन्त्र के असन्त्रवहे कहेवा माटे 🗴 अशक्य होवाथी ते घटादि द्रव्यतुं अवक्तव्यपणुं छे. ५ सद्भावपर्यायवडे आदेश(विवक्षा) करायेल घटादि द्रव्यना एक देशनं सत्त्व होवाथी अने अपर(बीजा) देशनुं स्व-परपर्यायोवडे युगपत विवक्षित करवाथी सत्त्ववडे के असत्त्ववडे कहेवा माटे अशक्य होवाथी घटादि द्रव्यनं सद्अवक्तव्यपणुं छे अर्थात एक देशमां सत्पणुं छे अने अन्य देशमां अवक्तव्यपणुं छे. ६ ते ज घटादि द्रव्यना एक देशनुं परपर्यायवडे विशेषित करायेल घटनुं असत्पणुं होवाथी अने अपरदेशनुं स्वपरपर्यायथी युगपत विवक्षित करवावडे तेमज कहेवाने अशक्य होवाथी ते घटादिनुं असद्अवक्तव्यपणुं छे अर्थात एक देशमां असतपणुं अने अन्य देशमां अन्यक्तपणुं छे. ७ घटादि द्रन्यना एक देशनुं स्वपर्यायोथी विशेषित करवावडे सन्त्व होवाथी अने बीजा *घट वस्तु मृत्तिकादि स्वरूपवडे सत् छे. +वस्त्रादि पररूपनी अपेक्षाए घटनुं असत्पणुं छे. ×घटादि द्रव्यमां सत्त्व अने असत्त्व

एक समयमां विद्यमान छे अने वचनवडे एक अक्षरनो उचार करतां असंख्य समय लागे माटे अवक्तव्य छे.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ४ क्रिया-वाद्याद्याः स्र० ३४५

॥ ५११ ॥

देशनुं परपर्यायोधी विशेषित करवावडे असन्त्र होवाधी अने अन्य(त्रीजा) देशनुं ख-परपर्यायोवडे युगपत् विशेषित घटनुं तेमज कहेवा माटे अशक्यपणाने लईने अवक्तव्य होवाथी ते घटादि द्रव्यनुं सत्असत्अवक्तव्यपणुं छे. अहिं प्रथम, द्वितीय अने चतुर्थ भंग ए त्रणे अखंडित वस्तु(द्रव्य)ने आश्रित छे अर्थात सकलादेशी छे. शेष त्रीजो, पांचमो, छहा अने सातमो आ चार भांगा वस्तुना देशने(पर्यायने) आश्रयवाळा कहेला छे. वळी तृतीय भंग पण अखंड वस्तुने आश्रितज हे एम अन्य आचार्योए कहेल छे, ते आ प्रमाणे-स्वपर्यायो अने परपर्यायोवडे विवक्षित अखंड वस्तुनुं सत्असत्पणुं छे. आ कारणथी ज आचारांगनी टीकामां कहेलुं छे के-अहिं उत्पत्तिने स्वीकारीने पाछला त्रण विकल्पो संभवता नथी, कारण के पदार्थना अव-यवनी अपेक्षा तेमज उत्पत्तिना अवयवनो अभाव होय छे एम अज्ञानिकवादीओना सडसठ विकल्पो थाय छे. वैनयिकोना बत्रीश विकल्पो थाय छे. ते आ प्रमाणे जाणवा-१ देव, २ राजा, ३ यति, ४ ज्ञाति, ५ वृद्ध, ६ अधम, ७ माता अने ८ पिता-ए दरेकतं काया. वाणी, मन अने दानवडे देश, काळने अनुसारे विनय करवो. एवी रीते आ चार भेदो देवादि आठ स्थानोने विषे थाय छे. सर्व मेळवतां बत्रीश थाय छे. चारे वादीओनी सर्व संख्या त्रण सो त्रेशठ थाय छे. पूज्यपुरुषोए कह्यं छे के-" नित्यानित्यात्मक आत्मादि नव पदार्थी, स्वथी अने परथी स्थापेला, काळकृत, नियतिकृत, स्वभावकृत, ईश्वरकृत अने आत्मकृत. आ प्रमाणे एक सो ऐंशी भेद आस्तिक(क्रियावादी) मतना थाय छे ।। १ ।। पुण्य अने पाप रहित सात पदार्थी स्वर्थी अने परथी स्थापेला १ काळ, २ यदच्छा. ३ नियति, ४ ईश्वर, ५ स्वभाव अने ६ आत्मकृत नथी-आ प्रमाणे नास्तिक(अक्रियावादी) मतना चौराशी भेद छे ॥२॥ सत्, असत् विगेरे सात भेदथी गुणायेल जीवादि नव पदार्थी

श्रीस्था-ना**ङ्गध**त्र सानुवाद १। ५१२ ॥ अने भावनी उत्पत्तिना सत्, असत्, सदसत् अने अवक्तव्यथी कोण जाणे छे ? आ प्रमाणे अज्ञानिक वादीना सडसठ भेद थाय छे ॥ ३ ॥ सुर, नृपति, यति, ज्ञाति, स्थविर, अधम, माता अने पिताने विषे मन, वचन, काया अने दानवडे विनय करवा योग्य छे. आ वैनियकमतना बत्रीश भेद छे ॥ ४ ॥ "-ए ज चार समवसरणोने चतुर्विशति दंडकने विषे निरूपण करता थका सत्रकार कहे छे-' नेरइयाण ' मित्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-मन सहित होवाथी नारक विगेरे पंचेंद्रियोमां आ चारे समवसरणो संभवे छे. ' विगल्हेंदियवज्ञं ' ति० एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, त्रींद्रिय अने चतुर्रिद्रियोने मन न होवाथी तेओने समवसरणो संभवता नथी. (स० ३४५) पुरुषना अधिकारथी पुरुषविशेषनुं प्रतिपादन करवा माटे प्राय: दृष्टांत सहित त्रेंतालीश पुरुषस्त्रोने ' चक्तारि मेहे ' त्यादि० सत्रोवडे कहे छे-

चत्तारि मेहा पं॰ तं०-गजिता णाममेगे णो वासित्ता, वासित्ता णाममेगे णो गजिता, एगे गजितावि वासित्तावि, एगे णो गजिता णो वासित्ता १ (१) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं०-गजित्ता णाममेगे णो वासित्ता १ (२) चत्तारि मेहा पं॰ तं०-गजिता णाममेगे णो विज्जुयाइता, विज्जुयाइता णाममेगे॰ १ (३) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं०-गजिता णाममेगे णो विज्जुयाइता १ (४) एवामेव चत्तारि

४ स्थान काश्ययने उद्देशः ४ गर्जितादिः मेघपुरुषाः स् ३४६

ા પશ્ચા

पुरिसजाया पं० तं०-वासिता णाममेगे णो विज्जुयाइता ४ (६) चत्तारि मेहा पं० तं०-कालवासी णाममेगे णो अकालवासी ४ (७) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-कालवासी णाममेगे णो अकालवासी १ (०) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं-खेतवासी णाममेगे णो अखेतवासी १ (०) चत्तारि मेहा पं० तं०- जणितत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता, णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणइत्ता १ (११) एवामेव चत्तारि अम्मापियरो पं० तं०-जणइत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता १ (१२) चत्तारि मेहा पं० तं०-देस-वासी णाममेगे णो सव्ववासी १ (१३) एवामेव चत्तारि रायाणो पं० तं०-देसाधिवती णाममेगे णो सव्ववासी १ (१३) एवामेव चत्तारि रायाणो पं० तं०-देसाधिवती णाममेगे णो सव्ववासी १ (१४) सू० ३४६

मूलार्थ:-चार प्रकारना मेघ कहेला छे, ते आ प्रमाण-कोईक मेघ गर्जारव करे छे पण वरसतो नथी, कोईक वरसे छे पण गाजतो नथी, एक गाजे छे अने वरसे छे तथा एक गाजतो नथी ने वरसतो पण नथी. (१) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाण-१ कोईक पुरुष दानादि कार्यमां गाजे छे-मोटे सादे प्रतिज्ञा करे छे पण दानादि कार्य करतो नथी, २ बीजो दानादि कार्य करे छे पण गाजतो नथी-प्रतिज्ञा करतो नथी, ३ बीजो प्रतिज्ञा करे छे अने कार्य पण करे

भीस्या-नाङ्गयत्र सातुवाद 1) ५१३ ॥

के अने ४ चोथो बन्ने करतो नथी. (२) चार प्रकारना मेघ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक मेघ गाजे छे पण बीजळी करतो नथी, २ वीजळी करे छे पण गाजतो नथी, ३ बन्ने करे छे अने ४ बन्ने करतो नथी. (३) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष प्रतिज्ञा करे छे पण आडंबर करतो नथी, २ आडंबर करे छे पण प्रतिज्ञा करतो नथी. ३ बन्ने करे छे अने ४ बन्ने करतो नथी. (४) चार प्रकारना मेघ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक मेघ वरसे छे पण बीजळी करतो नथी, २ एक वीजळी करे छे पण वरसतो नथी, ३ एक उभय करे छे अने एक उभय करतो नथी. (५) ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष दानादि कार्य करे छे पण आडंबर करतो नथी, २ कोईक आडंबर करे छे पण दानादि करतो नथी, ३ कोईक उभय करे छे अने ४ कोईक उभय करतो नथी. (६) चार प्रकारना मेघ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-? कोईक मेघ योग्य अवसरे वरसे छे पण अकाळे वरसतो नथी, २ अकाळे वरसे छे पण काळे वरसतो नथी. ३ काळे अने अकाळे वरसे छे अने ४ काळे के अकाळे वरसतो नथी. (७) ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष योग्य समये दानादि कार्य करे छे पण अयोग्य समये करतो नथी, २ अयोग्य समये दानादि करे छे पण योग्य समये करतो नथी, ३ योग्य अने अयोग्य समये दानादि करे छे तथा ४ योग्य के अयोग्य समये दानादि करतो नथी. (८) चार प्रकारना मेघ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक मेघ धान्यादिना उत्पत्तिस्थानरूप क्षेत्रमां वरसे छे पण अक्षेत्र-रणभूमिमां वरसतो नथी, २ कोईक रणभूमिमां वरसे छे पण क्षेत्रमां वरसतो नथी, ३ बनेमां वरसे छे अने ४ क्षेत्र के अक्षेत्रमां वरसतो नथी, (९) ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेळा छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष पात्रमां

४ स्थान-काष्ययने उद्देश: ४ गर्जितादि-मेघपुरुषाः स् २४६

11 423 1

दानादि आपे छे पण कुपात्रने तिषे दानादि आपतो नथी, २ कुपात्रमां आपे छे पण पात्रमां देती नथी, ३ बन्नेमां आपे छे अने ४ बन्नेमां आपतो नथी. (१०) चार प्रकारना मेघ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक मेघ धान्यना अंकुरादिने उत्पन्न करे छे पण संपूर्ण धान्यने निष्पन्न करतो नथी, २ कोईक मेघ संपूर्ण धान्यने निष्पन्न करे छे पण प्रथमथी धान्यना अंकुरादिने उत्पन्न करतो नथी, ३ कोईक बन्नेने करे छे अने ४ कोईक बन्नेने करतो नथी. (११) ए दृष्टांते चार प्रकारना मातिपता कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ कोईक मातिपता पुत्रने जन्म आपे छे पण पालन करता नथी, २ कोईक पालन करे छे पण जन्म आपता नथी, ३ कोईक जन्म आपे छे अने पाळे छे अने ४ कोईक जन्म आपता नथी अने पाळता नथी. (१२) चार प्रकारना मेघ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक मेघ एक विभाग(खंड)मां वरसे छे पण सर्वत्र वरसतो नथी, २ कोईक सर्वत्र वरसे छे पण विभागमां वरसतो नथी, ३ कोईक विभागमां अने सर्वत्र वरसे छे अने ४ कोईक विभागमां के सर्वत्र वरसतो नथी. (१३) ए दृष्टांते चार प्रकारना राजाओ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक राजा अग्रुक क्षेत्रना देश-विभागनो अधिपति छे पण सर्वनो अधिपति नथी-ते पह्णीपति विगरे, २ कोईक राजा सर्वनो अधिपति छे पण पह्ली विगरे देश (विभाग)नो अधिपति नथी. ३ कोईक उभयनो अधिपति छे ते चक्रवर्ती विगेरे अने ४ कोईक उभयनो अधिपति नथी ते राज्यथी भ्रष्ट थयेल समजवो. (१४) (सू० ३४६)

टीकार्थः-सूत्रो सुगम छे. विशेष ए के-मेघाः-वरसादो गर्जारव करे छे पण दृष्टि करता नथी. (१) एम कोईक पुरुष गर्जनारनी जेम गर्जारवने करे छे अर्थात् दान, ज्ञान, च्याख्यान, अनुष्ठान अने शत्रुनो निग्रह विगेरे विषयमां शब्दवडे श्रीस्था-नाङ्गग्रुत्र सानुवाद ।। ५१४ ।। महाप्रतिज्ञा करे पण मेघनी जेम वरसनार निह अर्थात् स्वीकारेल कार्यनो संपादक निह, बीजो कार्यनो करनार छे पण शब्दथी प्रतिज्ञा करता नथी. एवी रीते त्रीजो अने चोथो भांगो जाणवो. (२) ' विज्जुयाइत्त ' त्ति० वीजळीनो करनार. (३) एम कोईक पुरुष पण शब्दवडे प्रतिज्ञानो करनार छे पण वीजळी करनार मेघनी जेम दानादि प्रतिज्ञात कार्यना आरंभनो आडंबर करनार नथी, बीजो तो आडंबर करनार छे पण प्रतिज्ञा करनार नथी. एम शेप त्रीजो तथा चोथो बंने मांगा पण समजवा. (४) कोईक दानादिवडे वरसनार छे पण दानादिना आरंभनो आडंबर करनार नथी. बीजो ते। आडंबर करनार छे पण दानादि करतो नथी. त्रीजो बंने करे छे अने चोथो कंई पण करतो नथी. (५-६) कालवर्षी-अवसरे वरसनार, एम अन्य त्रण भांगा जाणवा. (७) पुरुष तो अवसरे वरसनार(मेच)नी जेम अवसरे दान अने व्याख्यान।दिवढे प्रवृत्ति करनार-आ एक, बीजो तो आधी विपरीत, एम शेष वे भांगा जागवा. (८) क्षेत्र-धान्यादिनुं उत्पत्तिस्थान. (९) पुरुष तो क्षेत्रमां वर्षनारनी जेम पात्रने विषे दान अने श्रुतादिनो निक्षेपक (वावनार)-आ एक, बीजो आथी विषरीत, त्रीजो तथाप्रकारना विवेकनी विकळताने रुईने अतिशय उदारताथी अथवा शासननी प्रभावना विगेरे कारणथी उभय स्वरूप-पात्र तथा कुपात्रने आपनार अने चोथो तो दानादि कार्यने त्रिप प्रश्चित्त निह करनार (कृपणादि) (१०) जनायता-जे मेघ वृष्टिवडे धान्यने अंकुरादिरूपे उत्पन्न करे छे अने निम्मापियता तो जे मेघ वृष्टिवडे ज सफळपणाने प्राप्त करे छे. (११) एवी रीते माता, पिता पण प्रसिद्ध छे. एम आचार्य पण शिष्य प्रत्ये जोडवाँ योग्य छे. (१२) विवक्षित भरत विगेरे क्षेत्रना अथवा प्रावृट् विगेरे काळना देश-विभागमां अने पोताना (मेघना) देशवडे जे वर्षे छे ते देशवर्षा, जे मेघ ४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ४ गर्जिताबि-मेघपुरुषाः स्र० ३४६

1 488 #

सर्व क्षेत्र अने प्रावृद् विगेरे सर्व काळमां अथवा सर्वात्मवडे वर्षे छे ते सर्ववर्षा, त्रीजा भागाना विकल्पो आ प्रमाणे— क्षेत्रथी देशमां अने काळथी सर्वत्र वर्षे छे १, क्षेत्रथी देशमां अने पोताथी सर्वात्मवडे वर्षे छे २, काळथी देशमां अने क्षेत्रथी सर्वत्र ३, काळथी देशमां अने पोताथी सर्वत्र व अव काळथी सर्वत्र ५, पोताथी देशवडे अने काळथी सर्वत्र ८, काळथी सर्वत्र ६, क्षेत्र अने काळथी देशमां अने पोताथी सर्वत्र ७, क्षेत्रथी देशमां, पोताथी देशवडे अने काळथी सर्वत्र ८, काळथी देशमां, पोताथी देशवडे अने काळथी सर्वत्र ८, काळथी देशमां, पोताथी देशवडे अने क्षेत्रथी सर्वत्र ९—आ उक्त नव विकल्पोवडे जे मेघ वर्षे छे ते देशवर्षी अने सर्ववर्षी छे. चोथो भांगो स्रज्ञात छे. (१३) १ राजा तो मेघनी जेम विवक्षित क्षेत्रमां ज योगक्षेम करवा समर्थ छे ते देशाधिपित परंतु सर्वाधिपित निर्मे ते पर्छीपित विगेरे. २ जे राजा पछी विगेरे विभागमां समर्थ थतो नथी, बीजे स्थळे तो सर्वत्र समर्थ छे ते सर्वाधिपित परंतु देशाधिपित नथी ३, जे बन्ने स्थलनो अधिपित छे अथवा देशाधिपित थईने जे सर्वाधिपित थाय छे ते वासुदेवादिनी माफक देशाधिपित अने सर्वाधिपित होय छे. चोथो प्रक्ष राज्यभ्रष्ट जाणवो.

चत्तारि मेहा पं० तं०-पुत्रखलसंवद्दते पज्जुन्ने जीमूते जिम्हे, पुक्खलवदृष् णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेति, पज्जुन्ने णं महामेहे एगेणं वासेणं दस वाससयाइं भावेति, जीमूतेणं महामेहे एगेणं वासेणं दसवासाइं भावेति, जिम्हेणं महामेहे बहूहिं वासेहिं एगं वासं भावेति वा ण वा भावेइ ४ (१५) सू० ३४७, चत्तारी करंडगा पं० तं०-सोवागकरंडते वेसिता- भीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ५१५ ॥

करंडते गाहावतिकरंडते रायकरंडते ४ (१६) एवामेव चत्तारि आयरिया पं० तं०-सोवागकरंडग-समाणे वेसिताकरंडगसमाणे गाहावइकरंडगसमाणे रायकरंडगसमाणे ४ (१७) सू० ३४८. चत्तारि रुक्खा पं॰ तं॰-साले नाममेगे सालपरियाते साले नाममेगे एरंडपरियाए एरंडे ४ (१८) एवामेव चत्तारि आयरिया पं॰ तं०-साले णाममेगे सालपरिताते साले णाममेगे एरंडपरियाते एरंडे णाममेंगे ४ (१९) चत्तारि रुक्ला पं० तं०-साले णाममेंगे सालपरिवारे ४ (२०) एवामेव चत्तारि आयरिया पं० तं०-साले णाममेगे सालपरिवारे० ४ (२१) सालदुममज्झयारे. जह साले णाम होइ दुमराया । इय सुंदरआयरिए, सुंदरसींसे मुणेयव्वे ॥ १ ॥ एरंडमज्झयारे, जह साले णाम होइ दुमराया । इय सुंदरआवरिए, मंगुलसीसे मुणेयव्वे ॥ २ ॥ सालदुममज्झयारे, एरंडे णाम होति दुमराया । इय मंगुलआयरिए, सुंदरसीसे मुणेयव्वे ॥ ३॥ एरंडमज्झयारे, एरंडे णाम होइ दुमराया । इय मंगुलआयरिए, मंगुलसीसे मुणेयव्वे ॥ ४ ॥ चत्तारि मच्छा पं० तं०-अणु-सोयचारी पडिसोयचारी अंतचारी मज्झचारी ४ (२२) एवामेव चत्तारि भिक्लागा पं० तं-अणु-

सोयचारी पडिसोयचारी अंतचारी मज्झचारी ४ (२३) चत्तारी गोला पं० तं०-मधुसित्थगोले जउगोले दारुगोले महियागोले ४ (२४) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-मधुसित्थगोलसमाणे ४ (२५) चत्तारि गोला पं॰ तं०-अयगोले तउगे।ले तंबगोले सीसगोले ४ (२६) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं॰-अयगोलसमाणे जाव सीसगोलसमाणे (२७) चत्तारि गोला पं॰ तं०-हिरणणगोले सुवन्नगोले रयणगोले वयरगोले (२८) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं-हिरण्णगोलसमाणे जाव वइरगोलसमाणे (२९) चत्तारि पत्ता पं० तं०-असिपत्ते करपत्ते खुरपत्ते कलंबचीरितापत्ते (३०) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-असिपत्तसमाणे जाव कलंबचीरीयापत्तसमाणे (३१) चत्तारि कडा पं० तं०-सुंबकडे विद्लकडे चम्मकडे कंबलकडे (३२) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं०-सुंबकडसमाणे जाव कंबलकडसमाणे (३३) सू० ३४९, चउाव्विहा चउ-प्पया पं॰ तं॰-एगखुरा दुखुरा गंडीपदा सणप्फदा (३४) चउव्विहा पक्की पं॰ तं॰-चम्मपक्की लोमपक्की समुग्गपक्की विततपक्की (३५) चउव्विहा ख़ुडुपाणा पं॰ तं०-बेइंदिया तेइंदिया

श्रीस्था-नाङ्गद्यत्र सानुवाद १। ५१६॥ चउरिंदिया संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया (३६) सू० ३५०, चत्तारि पक्खी पं० तं०-णिव-तिता णाममेगे नो परिवातित्ता परिवइत्ता नाममेगे नो निवइत्ता एगे निवितत्तावि परिवित्तावि, एगे नो निवितत्ता नो परिवित्ता (३७) एवामेव चत्तारि भिक्खागा पं० तं-णिवित्ता णाममेगे नो परिवातित्ता (३८) सू० ३५१, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठे निक्कट्ठे नाम-मेगे अणिक्कट्ठे (३९) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठप्पा णिक्कठे नाममेगे अनिक्कट्टप्पा (४०) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-बुहे नाममेगे बुहे, बुहे नाममेगे अबुहे (४१) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-बुधे नाममेगे बुधिहयए ४ (४२) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-आयाणुकंपते णाममेगे नो पराणुकंपते ४ (४३) सू० ३५२

मूलार्थः – चार प्रकारना मेघ कहेला छे, ते आ प्रमाणे – १ पुष्कलसंवर्त्तक, २ पर्यन्य, ३ जीमूत अने ४ जिम्ह. १ पुष्कलसंवर्त्तक नामनो महामेघ एक वृष्टिवडे दश हजार वर्ष पर्यंत भूमिने उदकना चीकाशवाळी करे छे अर्थात् धान्यादि उत्पन्न करवाने समर्थ करे छे. आ मेघ शीतळनाथ प्रसु सुधी वरसेल छे. २ पर्यन्य नामनो महामेघ एक वृष्टिवडे एक इजार वर्ष पर्यंत भूमिने उदकना चीकाशवाळी करे छे. आ मेघ शांतिनाथ प्रसु पर्यंत वरसेल छे. ३ जीमूत नामनो महामेघ एक वृष्टि-

काध्ययने १ पुष्करसंब-र्ताद्या मेप-**िड कपुरुषाः** वृक्ष-मत्स्थ-गोलपक-दाद्याः

वंडे दश वर्ष पर्यंत भूमिने चीकाशवाळी करे छे. आ मेघ महावीर प्रभु पर्यंत वरसेल छे अने ४ जिम्ह नामनो महामेघ घणी वखत वृष्टिवडे एक वर्ष पर्यंत भूमिने चीकाशवाळी करे छे अथवा न पण करे. (१५) (स्० ३४७) चार प्रकारना करंडीआ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ चांडालनो करंडक-प्रायः चामडाथी भरेल होय, २ वेक्यानो करंडक-ते लाख सहित सोनाना घरेणा विगेरेथी भरेल होय, ३ गृहपति एटले श्रीमंत कौंडुंबिकनो करंडक-उत्तम सुवर्णमणिना आभूषणथी भरेल होय अने ४ राजानो करंडक-अमूल्य रत्नोथी भरेल होय. (१६) ए दृष्टांते चार प्रकारना आचार्यो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ चांडालना करंडक समान आचार्य, लोकरंजन करनार शास्त्रने धारण करनार तेमज विशिष्ट क्रियाविकळ होय, आ अत्यंत असार छे. २ वेदयाना करंडक समान आचार्य, किंचित शास्त्रने दुःखवडे भणेल पण वचनना आडंबरवडे भोळा लोकोने खेंचनार होय. ३ गृहपतिना करंडक समान आचार्य, स्वसमय अने परसमयना जाणनार तथा क्रियायुक्त होवाथी सारभूत छे अने ४ राजाना करंडक समान आचार्य, समस्त आचार्यना गुणयुक्त सुधर्मास्वामीनी जेवा अत्यंत सारभृत छे. (१७) (५० ३४८) चार प्रकारना वृक्षो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक वृक्ष शाल नामे छे अने शालना पर्यायवाळी-घणी छाया विगेरे गुणयुक्त छे, २ कोईक वृक्ष शाल नामे छे पण एरंडना पर्यायवाळो-अल्प छायादि गुणयुक्त छे, ३ कोईक वृक्ष एरंड नामे छे पण शालना पर्यायवाळो-घणी छायादि गुणयुक्त छे, ४ कोईक वृक्ष एरंड नामे छे अने एरंडना पर्यायवाळो-अल्प छायादि गुणयुक्त छे. (१८) ए हब्दांते चार प्रकारना आचार्यो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक आचार्य जातिथी शाल-सुकुलीन अने सद्गुरुना कुलवाळा अने शालपर्याय - ज्ञानिक्रयादि गुणयुक्त छे, २ कोईक आचार्य जातिथी शाल पण एरंडपर्याय-ज्ञानादि गुणथी हीन छे, २ कोईक

श्रीस्थाः नाजः धत्र सातुवाद ॥ ५१७॥

आचार्य जातिथी एरंड-हीन कुलवाळो पण शालपर्याय-ज्ञानादि गुणयुक्त छे अने ४ कोईक आचार्य एरंड-जातिथी हीन कुल-वाळो अने एरंडपर्याय-ज्ञानादि गुणथी हीन छे. (१९) चार प्रकारना वृक्षो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक वृक्ष शाल नामनं अने शाल परिवारवाछं छे, २ कोईक शालनामा अने एरंडना परिवारवाछं छे. ३ कोईक एरंड-नामा अने ज्ञालना परिवारवाळुं तथा ४ कोईक वृक्ष एरंड नामनुं अने एरंडना परिवारवाळुं छे. (२०) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक आचार्य शाल समान उत्तम गुणयुक्त छे अने शाल परिवार-उत्तम गुणयुक्त परिवारवाळा छे. ए प्रमाणे चतुर्भगी जाणवी. (२०) आ संबंधमां चार गाथाओनो अर्थ आ प्रमाणे छे-"शालवृक्षो ना मध्यमां जेम शाल नामनं वृक्ष, वृक्षोनो राजा होय छे तेम उत्तम आचार्य, सुंदर शिष्योवडे राजा समान जाणवा अर्थात् सुधर्मास्वामी जेवा स्वयं आचार्य पण उत्तम अने जंबुस्वामी विगेरे उत्तम परिवार जाणवो ।। १ ।। एरंड वृक्षोनी मध्यमां जैम शाल वृक्षोनो राजा होय छे तेम असुंदर शिष्योना मध्यमां सुंदर आचार्य होय छे. जेम स्वयं गर्गाचार्य उत्तम अने तेनो परिवार असंदर हतो ॥ २ ॥ क्वाल वृक्षोनी मध्यमां जेम एरंड वृक्षोनो राजा होय छे तेम संदर क्विष्योनी मध्यमां असंदर आचार्य होय छे. जेम अभव्य अंगारमर्दक आचार्य उत्तम पांच सो शिष्योना परिवारवाळा हता ॥ ३ ॥ एरंड वृक्षोनी मध्यमां जेम एरंड वृक्षोनो राजा होय तेम असुंदर शिष्योनी मध्यमां असुंदर आचार्य जाणवो ।। ४ ।। " चार प्रकारना मच्छो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ कोईक मच्छ अनुश्रोतचारी-नदीना प्रवाह प्रमाणे चाले छे. २ कोईक मच्छ प्रतिश्रोतचारी-प्रवाहनी सामे चाले छे, ३ कोईक मच्छ प्रवाहना तीरमां चाले छे अने ४ कोईक मच्छ प्रवाहना मध्यमां चाले छे. (२२) ए

काध्ययने ⁰ड कपुरुषाः वृक्ष-मत्स्य-गोलपकटाः चतुष्प-दाद्याः पक्षिमिश्रू

दृष्टांते चार प्रकारना अभिग्रहधारी साधुओ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक साधु उपाश्रयथी आरंभीने क्रमशः भिक्षाटन करे छे ते अनुश्रोतचारी, २ कोईक साधु अग्रुक गृहस्थना घरथी आरंभीने उपाश्रय प्रत्ये आवे छे ते प्रतिश्रोतचारी. ३ कोईक साधु छेल्ला घरोने विषे भिक्षाटन करे छे ते अंतचारी अने ४ कोईक साधु मध्य भागना घरोने विषे भिक्षाटन करे छे ते मध्य-चारी. (२३) चार प्रकारना गोळा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ मीणनी गोळो, २ लाखनी गोळो. ३ काष्ट्रनी गोळो अने ४ माटीनो गोळो. (२४) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष मीणना गोळा समान कोमळ होय छे, २ कोईक लाखना गोळा समान कंईक कठण होय छे, २ कोईक काष्ठना गोळा समान विशेष कठण होय छे अने ४ कोईक पुरुष माटीना (पत्थरना) गोळा समान परिषहादि सहन करवामां अत्यंत कठण होय छे. (२५) चार प्रकारना गोळा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ लोढानो गोळो, २ त्रप-कलईनो गोळो, ३ त्रांबानो गोळो अने ४ सीसानो गोळो. (२६) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ लोढाना गोळा समान, २ कलईना गोळा समान, ३ त्रांबाना गोळा समान अने ४ सीसाना गोळा समान. क्रमशः अधिक भारे होय छे. (२७) चार प्रकारना गोळा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ ह्रपानो गोळो, २ सोनानो गोळो, ३ रत्ननो गोळो अने ४ हीरानो गोळो. (२८) ए दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ रूपाना गोळा समान, २ सोनाना गोळा समान, ३ रत्नना गोळा समान अने ४ हीराना गोळा समान. क्रमशः आ सर्व ज्ञानादि गुणवडे श्रेष्ठ छे. (२९) चार प्रकारना पत्र-[पांदडांनी जेम झीणी धार] कहेल छे, ते आ प्रमाणे--१ तरवारनी धार,२ करवतनी धार, ३ क्षर-सजायानी धार अने ४ कंदंबचीरिका-शस्त्रविशेषनी धार. (३०) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे,

भीस्था-नाङ्गद्धत्र साजुवाद ॥ ५१८ ॥

ते आ प्रमाणे-१ असिपत्र समान यावत् ४ कदंबचीरिका पत्र (धार) समान,स्नेहपासने छेदवामां समर्थे छे. (३१) चार प्रकारना कट-पाथरवानी वस्तुविशेष कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ सुंब-तृणविशेषथी बांधेल कट(सादडी), २ वांसनी सळीओथी गुंथेल कट, ३ चामडाथी गुंथेल कट अने ४ कंबलकट. (३२) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाण-सुंब कट समान यावत कंबलकट समान-गुरु विगेरेमां अल्प, विशेषत विशेषतर अने विशेषतम प्रतिबंध-(राग)वाळा छे. (स्० ३४९) चार प्रकारना चतुष्पदो (चोपगा पशु) कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ एक खुरवाळा ते अश्वादि, २ वे ख़ुरवाळा ते गाय प्रमुख, ३ गंडीपदा-एरणना जेवा पगवाळा ते हाथी प्रमुख अने ४ सनखपदा-न्होरवाळा--सिंह विगेरे. (३४) चार प्रकारना पक्षीओं कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ चर्मपक्षी-चामडानी पांखवाळा-ते वागोळ प्रमुख. २ लोमपक्षी-रुंवाळानी पांखवाळा-हंस प्रमुख. ३ समुद्रगकपक्षी-बोडायेली पांखवाळा. ४ विततपक्षी-मोकळी (खुल्ली) पांखवाळा. त्रीजा तथा चोथा प्रकारना पक्षी अढी द्वीपनी बहार छे. (३५) चार प्रकारना क्षुद्र प्राणीओ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-बेइंद्रियो, तेइंद्रियो, चौरिंद्रियो अने संमुध्छिम पर्चेद्रिय तिर्थंचयोनिको. (३६) (स०३ ५०) चार प्रकारना पक्षी कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पक्षी माळाथी बहार नीकळे छे पण फरवाने समर्थ नथी, २ कोईक फरवाने समर्थ छे पण माळाथी बहार नीकळतुं नथी, ३ कोईक बहार नीकळे छे अने फरे पण छे अने ४ कोईक बहार नीकळतुं नथी अने फरतुं पण नथी. (३७) आ दृष्टांते चार प्रकारना साधुओ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ काईक साधु भिक्षा माटे नीकळे छे पण फरता नथी, २ कोईक साधु फरवाने समर्थ छे पण भिक्षा माटे नीकळता नथी, ३ कोईक नीकळे छे अने फरे छे

≭ेष्ट्रक्ष-मत्स्य-गोलपक-र्भे टाः चतुष्पः दाद्याः पश्चिमिश्चः सः निष्कुष्टाः दाः स्र० सः सः

अने ४ कोईक भिक्षा माटे नीकळता नथी ने फरता नथी. (३८) (स्० ३५१) चार प्रकारना पुरुषा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष तपथी प्रथम कृश शरीरवाळो छे पण पछी तप करवाथी कृश शरीरवाळो छे, र कोईक प्रथम स्थूल शरीरवाळो छे पण पछीथी तपवडे कुश शरीरवाळो छे, ३ कोईक प्रथम कुश शरीरवाळो छे पण पछीथी स्थूल शरीरवाळो छे अने ४ कोईक प्रथमथी स्थूल शरीरवाळो अने पछीथी पण स्थूल शरीरवाळो छे. (३९) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक पुरुष कुश शरीरवाळो छे अने कुश-आत्मा-पातळा कषायवाळो छे,२ कोईक कुश शरीरवाळो छे पण स्थूल आत्मा -बहुलकषायवाळो . छे, ३ कोईक स्थूल शरीरवाळो छे पण क्रशआत्मा -पातला कषायवाळो छे,४ कोईक स्थूल शरीरवाळो अने स्थूलआत्मा—बहुलकषाय-वाळो छे (४०) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष बुध-सत्क्रियावाळो अने विवेकवाळो छे, २ कोईक सतुक्रियावाळो छे पण विवेकवाळो नथी, ३ कोईक सतुक्रियावालो नथी अने विवेक्त्वाळो छे अने ४ सतुक्रियावाळो नथी अने विवेक-वाळो पण नथी. (४१) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष बुध-शास्त्रज्ञ छे अने बुधहृदय-कार्यमां चतुर छे, २ कोईक शास्त्रज्ञ छे पण कार्यमां चतुर नथी, ३ कोईक शास्त्रज्ञ नथी पण कार्यमां चतुर छे अने ४ शास्त्रज्ञ नथी अने कार्यमां चतुर पण नथी. (४२) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष पोतानी अनुकंपानो कर-नार छे परंतु बीजानी अनुकंपानो करनार नथी ते प्रत्येकचुद्धादि, २ कोईक बीजानी अनुकंपानो करनार छे पण पोतानी अनुकंपा करतो नथी ते तीर्थंकरादि, ३ कोईक बन्नेनी अनुकंपानो करनार ते स्थविरकल्पी, ४ कोईक बन्नेनी अनुकंपानो करनार नथी ते कालसौकरिकादि. (४३) (स्० ३५२)

श्रीस्था-नाङ्गपत्र सानुवाद ॥ ५१९ ॥

टीकार्थ:- 'पुक्खले ' त्यादि० ' एगेणं वासेणं ' ति० एक वृष्टिवडे भावित करे छे-उदकना स्नेह(चीकाश)-वाळी भूमिने करे छे अर्थात धान्य विगेरेने उत्पन्न करवामां सामर्थ्यवाळी करे छे. जिम्ह मेघ तो घणा वखत वरसवावडे एक वर्ष पर्यंत भूमिने भावित-चीकाशवाळी करे छे अथवा तेना जलनुं रूक्षपणुं होवाथी रसवाळी करतो नथी. आ वर्णन पछी पुरुषना अधिकारथी मेघना अनुसारे पुरुषो पृष्कलावर्त्त विगेरेनी समान जाणवा. तेमां एक ज वखतना उपदेशवडे अथवा दानवडे चिरकाल पर्यंत प्राणीने शुभ स्वभाववाळो अथवा समृद्धिवाळो जे करे छे ते आद्य मेघ(पुष्कळावर्त) समान जाणवो, एवी रीते अल्पतर अने अल्पतम काळनी अपेक्षाए ऋमशः द्वितीय अने तृतीय मेघ समान छे. अनेक बखत उपदेशादिवडे प्राणीन अल्प काळ पर्यंत उपकारने करतो थको अथवा न करतो थको चतुर्थ मेघ समान छे. (१५) करंडक-वस्त्र अने आभरण विगेरे राखवानुं स्थान, ते लोकमां प्रसिद्ध छे. १ श्वपाक-चांडालनो करंडक, ते प्रायः चामडाने संस्कारवाना उपकरणरूप वधादि चर्मांशना स्थानवडे अत्यंत असार होय छे. २ वेक्यानो करंडक तो लाखवडे पूरित सोनाना आभरण विगेरेनुं स्थान होवाथी किंचित् प्रथम करं-डकथी सारभूत छतां कहेवामां आवनार त्रीजा तथा चोथा करंडकनी अपेक्षाए असार छे. ३ गृहपति-श्रीमंत कौटुंबिकनो करंडक, ते विशिष्ट मणि अने सुवर्णना आभरणादि युक्त होवाथी सारतर छे. ४ राजकरंडक तो अमुल्य रत्नादिना भाजनपणाथी सार-तम छे. (१६) एवी रीते जे आचार्य पर्प्रज्ञक गाथादिरूप सूत्रधारी अने विशिष्ट क्रियाथी हीन छे ते प्रथम करंडक समान छे, कारण के ते अत्यंत असार होय छे. बीजो जे दुःखपूर्वक श्रुतना लवलेशने भणेल छे पण वचनना आडंबरवडे ग्रुग्ध लोकोने आकर्षे छे-रंजित करे छे ते परीक्षामां समर्थ न होवाथी असारपणाने लईने द्वितीय करंडक समान छे. जे आचार्य स्वसमय

काध्ययने ∄गोलपक-¥ गोलपक-¥ टाः चतुष्प-* दाद्याः* पश्चिमि* निष्काः ¥ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ । ५१९ ॥

अने परसमयने जाणनार तथा कियादि गुणयुक्त छे ते सारतर होवाथी त्रीजा करंडक समान छे अने जे आचार्य समस्त आचार्यना (छत्रीश छत्रीशी) गुणोथी युक्त तीर्थंकर सद्य छे ते चतुर्थ करडंक समान छे-सुधर्मादिवत सारतम होवाथी. (१७) कोईक शाळ नामना दृक्षनी जातियुक्त होवाथी शाल छ अने शालना ज पर्यायो-बहुलछायापणुं, सेववापणुं विगेरे धर्मी छे जेने ते शालपर्याय-आ एक, कोईक नामथी पूर्ववत् शाल पण एरंडना ज पर्यायो-अबद्वल (अल्प छ।या पणुं, असेववा योग्य-पणुं विगेरे धर्मी छे जेने ते एरंडपर्याय-आ बीजो, कोईक एरंडनामा वृक्षनी जातिवाळो होवाथी एरंड नामनो छे पण शाल-पर्याय-बहुलछायात्व विगेरे धर्मयुक्त होय छे आ त्रीजो, कोईक एरंडनामा वृक्ष प्रवेवत अने एरंडपर्याय-अल्प छायापणुं विगरे एरंडना धर्मयुक्त होय छे-आ चतुर्थ. (१८) आचार्य तो शालनी जेम शाल जातिवाळी छे तेम आचार्य पण सुकुलीन अने सदुगुरुकुलवाळो छे ते शाल ज कहेवाय छे. तथा शालपर्याय-शालना धर्मवाळो छे. जेम शाल छाया विगेरे धर्म सहित छे तेम जे आचार्य ज्ञान अने क्रियाथी थयेल यशः विगेरे गुणोयुक्त होय छे ते शालपर्याय कहेवाय छे-आ एक, तथा एक आचार्य पूर्ववत् बाल छे अने पूर्वोक्तथी विषरीत होवाथी एरंडपर्यायवाळी छे-आ बीजो. तृतीय अने चतुर्थ भंग पण एवी रीते समजवा. (१९) तथा पूर्व प्रमाणे ज ज्ञाल अने ज्ञालरूप ज परिवार छे जेनो ते ज्ञालपरिवार, एवी रीते शेष त्रण भंग जाणवा. (२०) आचार्य तो शालनी जेम गुरुकुल अने श्रुतादिवडे उत्तम होवाथी शाल छे अने शाल समान महानुभाव साधुना परिवारथी शाल परिवारवाळो छे, तथा (बीजो) एरंड तुल्य निर्मुण साधुना परिवारथी एरंड परिवारवाळो छे तथा त्रीजो श्रुतादिवडे हीनपणाथी आचार्य एरंड जेवो छे अने चोथो तो सुज्ञात छे. उक्त चतुर्भगीवडे ज भावना माटे श्रीस्था-नाङ्गधत्र सानुदाद हा ५२०॥

सालदुमें ' इत्यादि० गाथाचतुष्क छे. ते सुगम छे. विशेष एके–मंगुल-असुंदर (२१). अनुश्रोतवडे जे चाले छे ते अनु-श्रोतचारी-नदी विगेरेना प्रवाहमां गमन करनार, एवी रीते बीजा भांगा जाणवा. (२२) एम भिक्षाक-१ जे साधु अभिग्रह लईने उपाश्रयना समीपथी क्रमवडे कुलोने विषे भिक्षा करे छे ते अनुश्रोतचारी मत्स्यनी जेम अनुश्रोतचारी छे. र जे साधु क्रमवडे अन्य घरोने विषे भिक्षा करतो थको उपाश्रयमां आवे छे ते बीजो. ३ जे साधु क्षेत्रना अंत-छेल्ला घरोने विषे भिक्षा करे छे ते त्रीजो अने ४ क्षेत्रना मध्यमां जे भिक्षा करे छे ते चोथो. (२३) मधुसित्थु-मीणनो गोळो-गोळाकार विंड ते मधुसित्थु गोळो. एम बीजा पण गोळा जाणवा. विशेष ए के-जतु-लाख, काष्ठ अने माटी प्रसिद्ध छे. (२४) जेम ए गोळाओ मृदु, कठिन, कठिन-तर अने कठिनतम क्रमवडे होय छ तेम जे पुरुषो परिषद्द विगेरेमां मृदू, दृढ, दृढतर अने दृढतम सत्यवाळा होय छ ते मधुसित्थु विगेरे गोळा समान कथनवडे कहेला छे. (२५) लोढाना गोळा प्रमुख प्रसिद्ध छे. (२६) आ लोढाना गोळा विगेरेना कमवडे गुरू भारी), गुरूतर, गुरूतम अने अत्यंत गुरूवडे जे पुरुषो आरंभादि विविध प्रवृत्तिथी उपार्जन करेल कर्मना भारवाळा होय छे ते लोढाना गोळा समान इत्यादि व्यपदेशवाळा होय छे. अथवा माता, पिता, पुत्र अने स्त्री संबंधी स्नेहना भारथी (अधिक अधिक) भारवाळा होय छे. (२७) रूपा विगेरेना गोळाओमां क्रमशः अल्पगुण, गुणाधिक, गुणाधिकतर अने गुणाधिकतमने विषे पुरुषो समृद्धिथी अथवा ज्ञानादिगुणथी समानपणाए योजवा. (२८-२९) पत्रनी माफक पातलापणाए जे तरवार विगेरे छे ते पत्रो असिः-खड्ग, ते ज पत्र ते असिपत्र, जेनावडे काष्ठ छेदाय छे ते करपत्र-करवत, क्षुर-सजायो ते ज पत्र ते क्षुरपत्र, कदंबचीरिका शस्त्रविशेष छे (३०) १ तेमां खड्गतुं शीघ छेदकपणुं होवाथी जे पुरुष जलदी रनेहना पाशने छेदे छे ते असि-

क्राध्ययने पुरुषाः,कर-ण्डकपुरुवाः वृक्ष-म 'रस्य-गोल पकटाः च तुष्पदाद्याः पक्षिमिश्च ¥ે|३४७–५**૨** ¥ ॥ ५२० ॥

पत्र समान छे-चोकस करेल देवना वचनवडे सनस्क्रमोर जेम संसारना स्नेहनो त्याग कर्यो तेम, २ फरी फरी उपदेशातो थको जे पुरुष दीक्षानी भावनाना अभ्यासथी स्नेहरूप तरुने छेदे छे ते करपत्र समान, तथाविध श्रावकनी जेम. केमके गमना-गमनथी कालना विलंबवेड करवततुं छेदकपणुं छे. ३ जे पुरुष धर्मनो मार्ग सांभळे छे तो पण सर्वथा स्नेहने छेदवामां असमर्थ छे अने देशविरति मात्रने ज स्वीकारे छे ते क्षरपत्र समान, सजायो तो अल्प केशादिकने छेदे छे अने ४ जे पुरुष स्नेहना छेदनने मनोरथ मात्रवडे ज करे छे ते चतुर्थ-अविरति सम्यग्दृष्टि अथवा जे गुरु विगेरने तिषे शीघ, मंद, मंदतर अने मंदतमपणाए स्नेहने छेदे छे ते पूर्वीक्त रीते व्यपदेश कराय छे. (३१) कांब विगेरेथी आतानवितान-ताणावाणावडे जे बनाव-वामां आवे छे ते *कट-पाथरणविशेष. कटनी जेम कट माटे उपचारथी तांतणादिमय पण उपचारथी कट ज छे तेमां ' सुंबकंड ' त्ति ॰ घासविशेषथी बनेल, ' विदलकंड ' त्ति ॰ वांसना कटकावंड करेल, ' चम्मकंड ' त्ति ॰ कोमळ चामडाथी बनेल मंचक विगेरे तेमज 'कम्बलकडे' त्ति० कंबल ज. (३२) आ सुंबकटादिने विषे अल्प, बहु, बहुतर अने बहुतम अवयवीवडे प्रतिबंधने विषे पुरुषो योजवा, ते आ प्रमाण-गुरु विगेरेने विषे जेनो अल्प प्रतिबंध-स्नेह े छे ते अल्प असत्यादिवडे पण नाभ थवाथी सुंबकट समान छे. एवी रीते सर्वत्र भाववुं. (३३) चतुष्पदो-स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचो. दरक पगने विषे जेओने एक ख़ुर छे ते एकख़ुरा-अश्व विगेरे, एवी रीते वे ख़ुर छे जेओने ते द्विख़ुरा-गाय विगेरे. गंडी-सोनी विगेरेना अधिकरणहर एरण, तेना जेवा पग छे जेथाना ते गंडीपदा-हाथी विगेरे. ' सणप्फय ' त्ति० सनखपदा अर्थात * कट्टासणं, सादडी.

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ५२१ ॥

न्होरवाळा सिंह विगेरे. आ सूत्र अने पछीना वे स्रत्रोने विषे जीवोने पुरुष शब्दवडे वाच्य होवाथी पुरुषनुं अधिकारपणुं छे. (३४) चर्ममय पांखवाळा चर्मपक्षीओ-वागुली विगेरे, एम लोमनी पांखवाळा इंस विगेरे, डाबलानी माफक बीडायेल छे पांखों जेओनी ते समुद्राक पक्षीओं (अहिं समासांत 'इन ' प्रत्यय थयेल), ते मनुष्यक्षेत्रनी बहारना द्वीप-समुद्रोने विषे हे. एवी रीते ज विततपक्षीओ पण जाणवा. (३५) क्षुद्र-अनंतर-बीजा भवने विषे मोक्षे जवाना अभावथी अधम एवा उच्छवासा-दिवाळा ते क्षद्रप्राणा. संमुच्छवडे थयेला अर्थात पोतानी मेळे उत्पन्न थयेला ते संमुर्च्छिमो. आवा तिर्यंच संबंधी छे योनि जेओनी ते सम्मर्व्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिको. (अहिं त्रण पदोनो कर्मधारय समास कर्ये छते आ प्रयोग सिद्ध थाय छे.) (३६) 'निपतिता-माळाथी उतरनार अर्थात कोईक पक्षी दृढताथी अथवा अज्ञताथी माळाथी नीचे आवे छ एण बाळक होवाथी परिभ्रमण करवाने शक्तिमान नथी-आ एक. एवी रीते बीजो पुष्ट होवाथी परिभ्रमण करवाने शक्तिमान छे पण भीरु होवाथी माळायी उत्तरवाने माटे शक्तिमान नथी. त्रीजो उभय रीते शक्तिमान छ अने चोथो अति बालपणाथी उभय रीते शक्तिमान नथी. (३७) निपतिता-भोजनादिनो अर्थी होवाथी भिक्षाचर्यामां जनार छे पण परिश्रमण करनार नथी, केमके ग्लानपणाथी अथवा आळसुपणाथी के लजाखपणाथी-आ एक, बीजो उपाश्रयथी नीकळतो थको परिश्रमणशील छे पण भिक्षाने माटे जवाने अशक्त छे, कारण के सत्रार्थमां आसक्त होय छे. ततीय अने चतर्थ मंग स्पष्ट छे. (३८) निकृष्ट-तपबडे कुश देहवाळो. वळी निकृष्ट छे केमके कषायने कुश (पातळा) करेला होय छे. एवी रीते अन्य त्रण भांगा पण जाणवा. (३९) एवी ज भावना माटे अनंतर सूत्र कहे छे-कुश शरीरवडे निकृष्ट, वळी कषायादिना मंथनवडे निकृष्ट छे आत्मा जेनो ते निकृष्टात्मा, एम बीजा त्रण भांगा जाणवा. अथवा

काध्ययने 🕱 उद्देशः ४ पुष्करसंब-तीद्या मेघ-ृष्ट्य-मत्स्य-गोलपक-टाः चतुष्प-दाद्याः पक्षिभिक्षु ३४७-५२ ॥ ५२१ ॥

प्रथम निकृष्ट-तपवडे कुश करेल शरीरवाळो छे अने पछी पण निकृष्ट छे. एवी रीते अहिं प्रथम (३९) स्त्रनुं व्याख्यान करवं अने बीजुं (४०) सूत्र तो जेम कहे छुं छे तेम कहे चुं. (४०) बुधत्वना कार्यभूत सिकयाना योगथी बुध. कहुं छे के-'' भणनार, भणावनार अने बीजा तस्वना चिंतको, आ बधाय व्यसनवाळा छे माटे हे राजन्! जे क्रियावान ते ज पंडित छे. (१)" वळी बुध-विवेक सहित अंतःकरण होवाधी-आ एक, बीजो बुध-सिक्तयावाळो छे अने विवेक रहित अंतःकरण होवाधी अबुध छे. त्रीजो असत्क्रियावाळो होवाथी अबुध अने विवेक सहित चित्त होवाथी बुध छे. चोथो तो उभयना निषेधथी अबुध-अबुध छे. (४१) अनंतर सूत्रवंडे ए ज स्पष्ट कराय छे-सत्कियावाळो होवाथी बुध, अने जाणनार छे हृदय जेनुं ते बुधहृदय-विवेक युक्त मन होवाथी, अथवा शास्त्रनो जाण होवाथी बुघ अने बुधहृदय तो कार्यमां अमृढ लक्षवाळो होवाथी-आ एक, एवी रीते बीजा त्रण भांगा पण विचारवा योग्य छे. (४२) १ आत्मानुकंपक-आत्माना हितने विषे प्रवर्त्तनार ते अप्रत्येकबुद्ध के जिन-कल्पिक मुनि अथवा बीजानी अपेक्षा न करनार निर्दय, २ परानुकंपक-ते कृतकृत्य थवावडे तीर्थंकर अथवा पोतानी अपेक्षा सिवाय दयारूप एक रसवाळा मेतार्यमुनिनी जेम. ३ उभयनो अनुकंपक ते स्थिवरकरुपी साधु, ४ उभयनी अनुकंपा निर्ह करनार ते पापात्मा कालसौकरिक विगेरे (४३) (छ० ३५२) अनंतर पुरुषोना भेदो कहा. हवे तेना वेदबडे संपादन करवा

* प्रत्येकबुद्धादि मुनिओ, एकलविहारो होवाथो अन्य मुनिओनो वैयाष्ट्रस्यादि करता नथी तेम प्रायः उपदेशादि आपता न होवाथी बीजाने उपकार करता नथी. आ कारणने अंगे परानुकंपक कहेला छे पण बीजा जीवोनी अनुकंपा न करे एम समज्वुं नहिं केमके तेओ दयाद्य छे. श्रीस्था-नाङ्गद्यत्र सानुवाद ॥ ५२२ ॥ ** योग्य पुरुषना व्यापारविशेषने कहेवाने इच्छता सत्रकार सत्रसप्तकने कहे छे-

चउिवहे संवासे पं० तं०-दिव्वे आधुरे रक्खसे माणुस्से ४ (१) चउिवहे संवासे पं० तं०-देवे णाममेगे देवीए सर्डि संवासं गच्छति, देवे नाममेगे असुरीए सर्डि संवासं गच्छति. असुरे णाममेगे देवीए सिंद्धं संवासं गच्छति, असुरे नाममेगे असुरीए सिंद्धं संवासं गच्छति ४ (२) चउ-विवहे संवासे पं० तं०-देवे नाममेगे देवीए सार्द्ध संवासं गच्छति, देवे नाममेगे रक्लसीए सर्द्धि संवासं गच्छति, रक्खसे णाममेगे देवीए सर्डि संवासं गच्छति, रक्खसे णाममेगे रक्खसीए सर्डि संवासं गच्छति ४ (३) चउव्विहे संवासे पं० तं०-देवे नाममेगे देवीए सर्ढि संवासं गच्छित, देवे नाममेगे मणुस्तीहिं साद्धं संवासं गच्छति, मणुस्ते नाममेगे देवीहिं सिद्धं संवासं गच्छति, मणुस्से नाममेगे मणुस्सीइ सिर्द्ध संवासं गच्छित ४ (४) चउव्विधे संवासे पं० तं०-असुरे णाम-मेगे असुरीए सर्द्धि संवासं गच्छति, असुरे नाममेगे रक्खसीए सर्द्धि संवासं गच्छति ४ (५) चउव्विहे संवासे पं॰ तं॰-असुरे नाममेगे असुरीए सर्द्धि संवासं गच्छति, असुरे नाममेगे मणु-

रिशा परंग ।

स्सीए सिद्धं संवासं गच्छति ४ (६) च उदिवहे संवासे पं० तं०-रक्खसे नाममेगे रक्खसीए सिद्धं संवासं गच्छति, रक्लसे नाममेगे माणुसीए सिद्धं संवासं गच्छति ४ (७) सू० ३५३, चउविवहे अवद्धंसे पं० तं०-आंसुरे आभियोगे संमोहें देविकिब्बिसे चउहिं ठागेहिं जीवा आसुरताते कम्मं पगरेंति तं -कोवसीलताते पाइडसीलयाते संसत्ततवोकम्मेणं निमित्ताजीवयाते, चउहिं ठाणेहिं जीवा आभिओगत्ताते कम्मं पगरेंति तं०-अतुक्कोसेणं परपरिवातेणं भृतिकम्मेणं कोउयकरणेणं, चउहिं ठाणेहिं जीवा सम्मोहत्ताते कम्मं पगराति तं०-उम्मग्गदेसणाए मग्गंतराएणं कामासंसप-ओगेणं भिज्ञानियाणकरणेणं, चउँहिं ठाणेहिं जीवा देविकिबिसियत्ताते कम्मं पगेरेति तं०-अरहं-ताणं अवन्नं वयमाणे, अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वयमाणे, आयारिय उवज्झायाणमवन्नं वद्माणे चाउवन्नस्स संघस्स अवन्नं वद्माणे । सृ० ३५४

मूलार्थः-चार प्रकारनो संवास-संभोग कहेलो छे, ते आ प्रमाणे-दिन्य (वैमानिक) संबंधी, असुर-भवनपति संबंधी, राक्षस-न्यंतर संबंधी अने मनुष्य संबंधी. (१) चार प्रकारनो संवास कहेलो छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक वैमानिक देव 'देवी साथे संवास करे छे, २ कोईक देव असुरी साथे संवास करे छे, ३ कोईक असुर देवी साथे संवास करे छे अने ४ कोईक असुर श्रीस्था-नाङ्गस्त्र साजुवाद ॥ ५२३ ॥

असरी साथे संवास करे छे. (२) चार प्रकारनो संवास कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक देव देवी साथे संवास करे छे. २ कोईक देव राक्षसी-व्यंतरी साथे संवास करे छे, ३ कोईक राक्षस देवी साथे संवास करे छे अने ४ कोईक राक्षस राक्षमी साथे संवास करे हो. (३) चार प्रकारना संवास कहेल हो, ते आ प्रमाणे-१ कोईक देव देवी साथे संवास करे हो. २ कोईक देव मनुष्यणी साथे संवास करे छे, ३ कोईक मनुष्य देवी साथे संवास करे छे अने ४ कोईक मनुष्य मनुष्यणी साथे संवास करे छे. (४) चार प्रकारना संवास कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक असूर असूरी साथे संवास करे छे. २ कोईक असूर राक्षसी साथे संवास करे छे. ३ कोईक राक्षस असुरी साथे संवास करे छे अने ४ कोईक राक्षस राक्षसी साथे संवास करे छे. (५) चार प्रकारनो संवास कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक असुर असुरी साथे संवास सेवे छे, २ कोईक असुर मनुष्यणी साथे संवास सेवे छे, ३ कोईक मनुष्य असुरी साथे संवास सेवे छे अने ४ कोईक मनुष्य मनुष्यणी साथे संवास सेवे छे. (६) चार प्रकारनो संवास कहेल छे. ते आ प्रमाण-१ कोईक राक्षस राक्षसी साथे संवास सेवे छे. २ कोईक राक्षस मनुष्यणी साथे संवास सेवे छे, ३ कोईक मनुष्य राक्षसी साथे संवास सेवे छे अने ४ कोईक मनुष्य मनुष्यणी साथे संवास सेवे छे. (७) (स्० ३५३) चार प्रकारे अपध्वंस-(चारित्रना फळनो विनाश) कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ आधुरीभावनाजन्य ते आसुर, २ अभियोगभावनाजन्य ते आभियोग, ३ संमोहभावनाजन्य ते संमोह अने ४ देविकल्बिष भावनाजन्य ते देविकल्बिष अपध्वंस. चार कारणवडे जीवो असुरपणानुं आयुष्कादि कर्म करे छे, ते आ प्रमाणे-१ क्रोधी स्वभाववडे, २ कलह करवाना स्वभाववडे, ३ आहारादिमां आसक्ति सहित तप करवावडे अने ४ निमित्तादि प्रकाशीने आजीविका चलाववा-

% ४ स्थान* काष्ययने
* उद्देशः ४
* संवादः
आसुराभियोग्याद्याः
* स्८०३५३०
५४

11 423 11

मनुष्य

मानुषी

वहे. चार कारणवहे जीवो आभियोगताने अर्थे आयुष्कादि कर्म करे छे, ते आ प्रमाणे-१ आत्मानो उत्कर्ष(गर्व) करवा-वहे, २ बीजानी निंदा करवावहे, ३ भूतिकर्म- ताववाळा विगेरेने राख विगेरेथी रक्षादि करवावहे अने ४ कीत्ककरण-सौभा-ग्यादिने माटे बीजाना शिर उपर हस्तना अमण विगेरेथी मंत्रवावडे. चार कारणवडे जीवो संमोहपणाने अर्थे आयुष्कादि कर्म करे छे, ते आ प्रमाणे-१ उन्मार्गनी देशनावहे, २ सन्मार्गनो अंतराय करवावहे, ३ कामभागनी आशंसा(वांछा)-वडे अने ४ लोभथी नियाणुं करवावडे. चार कारणवडे जीवो देविकिल्बिषपणानुं आयुष्कादिकर्म करे छे-बांध छे, ते आ प्रमाणे-१ अरिहंतीना अवर्णवादने बोलतो थको, २ अरिहंते कहेला धर्मना अवर्णवादने बोलतो थको, ३ आचार्य उपाध्यायना अवर्णवादने बोलतो थको अने ४ चतुर्विध संघना अवर्णवादने बोलतो थको. (स्ट० ३५४)

टीकार्थः-' चडिवहे संवासे 'इत्यादि० स्त्र सरळ छे. विशेष ए के-स्त्रीनी साथे संवसन-शयन करवं ते संवास. चौ:-स्वर्ग, तेमां वसनार देव पण उपचारथी द्यौ, तेमां थयेल ते दिव्य अर्थात् वैमानिक संबंधी संवास. भवनपति विशेष असुर संबंधी संवास ते आसुर. एवी रीते अन्य बे संवास जाणवा. विशेष ए देव 🤋 श्रसुर २ राक्षस १ के-राक्षस-व्यंतरविशेष. देव अने असुर विगेरेना संयोगथी छ चतुर्भगी सूत्रो देवी असुरी गश्रसी थाय छे. (सू० ३५३) पुरुषिक्रयाना अधिकारथी ज अपध्वंससूत्र जणावे छे-अपध्वंसन-विनाश र्थेवुं ते अपध्वंस-चारित्रनो अथवा तेना फळनो असुरादि भावनाजनित विनाश.

थयेल ते आसर, अथवा जे अनुष्टानने विषे वर्त्ततो थको असुरपणाने उत्पन्न करे, तेनावडे आत्माने वासित करवो ते आसुर

नीस्था-नाङ्गद्धश्र साजुनाद १। ५२४ । भावना, एवी रीते बीजी भावनाओ पण जाणवी, अभियोग(दास)भावनाजनित ते आभियोग, संमोहभावनाजनित ते संमोह, देविकिल्बिष भावनाजनित ते दैविकिल्बिष, कंदर्पभावनाजनित कांद्र्प अपध्वंस पांचमो छे परंतु अहिं चतुःस्थानकना अनुरोधथी तेने कहेल नथी, भावना तो आगममां पांच कहेल छे. कहुं छे के—

कंरप १ देविकिब्बिस २, अभिओगा ३ आसुरा य ४ संमोहा ५। एसा उ संकिलिट्टा, पंचिवहा भावणा भणिया ॥ २०२॥

१ कामप्रधान विष्ठपाय देवो संबंधी जे भावना ते कंदपीं, २ किल्बिषक देवो संबंधी ते किल्बिपिकी, ३ किंकर स्थानीय देव संबंधी ते आभियोगिकी, ४ असुरदेव संबंधी ते आसुरी अने ५ मूटातमा देव संबंधी जे भावना ते संमोही -आ पांच संक्षिप्ट (अप्रशस्त) भावनाओं कहेली छे,

आ पांच मावनाओने पैकी जे मावनानी अंदर जे जीव वर्त्त छे ते अल्प चारित्रना प्रमावधी तेवा प्रकारना देवोने विषे जाय छे. कह्युं छे के—

जो संजओऽवि एया–सु अप्पसत्थासु वद्यइ कहंचि । सो तब्बिहेसु गच्छइ,सुरेसु भइओ चरणहीणो ॥ २०३

आ अप्रशस्त भावनाओने विषे जे संयत कंईपण वर्ते छे ते तेवा प्रकारना देवोने विषे जाय छे ते सर्वेथा चारित्रथी हीन छे तेथी देवोने विषे जवानी तेने माटे भजना छे अर्थात जाय किंवा न पण जाय. ४ स्थान-काश्ययने उद्देशः ४ संवासः आसुरामि-योग्याद्याः स्०३५३— ५४

11 659 IL

आसुरादि भावनाजन्य अपध्वंस कह्यो, ते असुरत्व विगेरेनो हेतु छे माटे असुरत्वादि भावनाना साधनभूत कर्मीना कार-णोने चार स्त्रोवडे कहे छे-' चडिं ठाणेहीं 'त्यादि० सत्र सुगम छे. विशेष ए के-असुरोने विषे थयेल ते आसुर-असुर-विशेष, तेनो ने भाव ते आसुरत्व, तेना माटे-आसुरपणाने अर्थे अथवा असुरपणा माटे के असुरपणाए तेना आयुष्कादि कर्मने करवा माटे आरंभ करे छे, ते आ प्रमाणे-१ क्रोध स्वभावपणावडे, २ क्लेशना संबंधवडे, ३ संसक्ततपकर्म-आहार, उपिध अने शय्यादिने विषे प्रतिबद्धभावरूप तपश्चर्यावडे अने ४ त्रण काल संबंधी लाभ अलाभादि विषयक निमित्तयी मेळवेल आहारादिवडे उपजीवनरूप निमित्त आजीविकावडे. आ अर्थ अन्यत्र आ प्रमाणे कह्यो छे-अणुबद्धविग्गहोविय, संसत्ततवो निमित्तमाएसी ।निक्कित्रागिराग्रुकंषो, आसुरियं भावणं कुणइ ॥२०४ साधु अने श्रावकने विषे निरंतर कलह करनार, आहाराहिमां आसिक्त सहित तप करनार, निमित्तनो प्रकाशनार, निश्क अने अनुकंपा रहित अर्थात् दुःखी प्राणीने जोईने जेना हृदयमां कंपारीन आवे ते प्राणी आसुरीभावना करे छे.

जे कार्य प्रत्ये योग्य छे ते आभियोग्य-किंकर देविविशेषो, तेशोनो जे भाव ते आभियोग्यता, ते अर्थे अथवा आभियोग्य-पणाए. १ आत्मोत्कर्ष-पोताना गुणना अभिमानवडे, २ परपिरवाद-परना दोषने कहेवावडे, ३ भृतिकर्ष-ज्वरवाळा विषेरेने भृति (राख) विषेरेथी रक्षा करवावडे अने ४ कौतुककरण-सौभाग्यादिना निमित्ते बीजाना शिर उपर हस्तना अमणादिवडे मंत्र-किया विषेरे करवावडे. आ भावना पण बीजे स्थळे आवी रीते जणावी छे — श्रीस्या-नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ५२५ ॥

कोउय भूईकम्मे, पितणा इयरे निमित्तमाजीवी। इड्डिरससायगरुओ, अभिओगं भावणं कुणइ॥२०५

१ अनिष्टनी शांति माटे थु थु विगेरे करबुं ते कौतुक, २ मंत्रवडे मंत्रीने राख विगेरेनुं देवुं ते भूतिकर्म, ३ अंगुष्ठ अने अशिसा विगेरेमां देवनुं आकर्षण करीने प्रश्ननुं पूछवुं, ४ स्वम विद्यावडे कहेवुं, ५ निमित्त विगेरे प्रकाशीने आजीविका चला-विगे तथा ऋदि, रस अने सातगौरव सहित उक्त प्रश्नृत्तिने करतो थको प्राणी आभियोग्य भावना करे छे.

संमोह पामे छ ते संमोह-मूढात्मा देविवशेष, तेनो जे भाव ते संमोहता, तेना माटे अथवा संमोहपणाए. १ उन्मार्ग-देशना-सम्यग्दर्शनादिरूप भावमार्गथी विरुद्ध धर्मना कथनवडे, २ मार्गातराय-मोक्षमार्गने विषे प्रवृत्त थयेलने विष्न करवा-वडे, ३ कामाशंसाप्रयोग-शब्दादि विषयोने विषे अभिलाषा करवावडे अने ४ 'भिज्ञ' ति० लोभ-गृद्धिवडे नियाणुं करवुं ते, 'आ तप विगरेथी मने चक्रवर्त्तिपणुं विगरे मळो'आवी रीते निकाचना-इढ करवावडे. आ भावना पण अन्यत्र नीचे प्रमाणे कहेल छे- उम्मग्गदेसओ मग्ग-नासओ मग्गविष्पडीवत्ती। मोहेण य मोहेता, संमोहं भावणं कुणइ ॥ २०६॥

१ उन्मार्गनो कहेनार, २ मार्गनो नाश करनार-पोताना तथा बीजाना बोधिबीजनो नाश करनार, ३ विपरीत मार्गने स्वीकारनार एवो जीव स्वयं मृढ थयो थको बीजाने मोह उपजावीने संमोह भावना करे छे.

१ उन्मार्गनो कहेनार, २ मार्गनो नाश करनार-पोताने तथा बीजाने बोधिबीजनो नाश करनार, ३ विपरीत मार्गने स्वीकारनार एवो जीव स्वयं मृढ थयो थको बीजाने मोह उपजावीने संमोह भावना करे छे.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ४ संवासः आसुरामि-योग्याद्याः स्० ३५३-५४

।। ५२५ ॥

देवोना मध्यमां किल्बिप-पाप, तेने लईने ज अस्प्रश्यादि धर्मवाळो देवरूप किल्बिष ते देवकिल्बिष. बीजुं वर्णन तेमज जाणवुं. अवर्ण-निंदा-खोटा दोषनुं आरोपण करवुं. आ अर्थ अन्यत्र आवो रीते कहेल छे.

नाणस्स केवलीणं, धम्मायरिआण सव्वसाहूणं। भासं अवन्नमाई, किब्बिसियं भावणं कुणइ॥ २०७।।

१ ज्ञाननी, २ केवलीओनी, २ धर्माचार्योनी अने ४ सर्व साधुओनी निंदानो करनार तथा ५ मायावी एवो प्राणी किल्बि-पिकी भावना करे छे.

चोथुं स्थानक होताथी अहिं पांचमी कंदर्प भावना कही नथी, पण भावनानुं वर्णन चालतुं होवाथी ते बतावे छे— कंद्प्पे कुक्कुइए, द्वसीले यावि हासणकरे य । विम्हाविंतो य परं, कंद्प्पं भावणं कुणइ ॥ २०८ ॥

१ कामनी कथा करनार, २ कुकुचित-भांडना जेवी चेष्टा करनार, ३ द्रवशील-गर्वथी शीघ्र गमन अने भाषणादि करनार, ४ वेष अने वचनादिवडे स्वपरने हास्य उत्पन्न करनार, ५ बीजाने इंद्रजालादिवडे विस्मय करावनार एवी जीव कंद्षी भावना करे छे. (६० ३५४) आ अपध्वंस प्रवज्यावाळाने छे माटे प्रवज्यानुं निरूपण करवा ' चउठ्विहा पठ्वज्ञे '- त्यादि० आठ सत्रो कहे छे.

चउिवहा पव्वजा पं॰ तं॰-इहलोगपिडवद्धा परलोगपिडवद्धा दुहतो लोगपिडवद्धा अप्पडिवद्धा १, चउिवहा पव्वजा पं॰ तं॰-पुरओ पडिवद्धा, मग्गओ पडिवद्धा, दुहतो पडिवद्धा, श्रीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद स ५२६॥ अपिडवद्धा २, चउित्रहा पठत्रजा पं० तं०-ओवायपद्यजा, अक्खातपठत्रजा, संगारपठ्यजा, विहगगइपट्यजा ३, चउित्रहा पठ्यजा पं० तं०-तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, मोयावइत्ता, परिपूर्याव-इत्ता ४, चउित्रहा पठ्यजा पं० तं०-नडखइ्या, भडखइ्या, सीहखइ्या, सियालक्खइ्या ५, चउित्रहा किसी पं० तं०-वाविया, परिवाविया, णिदिता, परिणिदिता ६, एवामेव चउित्रहा पठ्यजा पं० तं०-वाविता, परिवाविता, परिणिदिता, ७ चउित्रहा पठ्यजा पं० तं०-धन्नपुंजित-समाणा, धन्नविरिखत्तसमाणा, धन्नविरिखत्तसमाणा, धन्नसंकद्वितसमाणा ८। सू० ३५५

मूलार्थः—चार प्रकारे प्रवज्या-दीक्षा कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ उदर भरवा माटे दीक्षा लेवी ते आलोकप्रतिबद्धा, २ देवादि संबंधी सुखन माटे दीक्षा लेवी ते परलोकप्रतिबद्धा, ३ उभय लोकना सुखने अर्थे दीक्षा लेवी ते उभयलोकप्रतिबद्धा अने ४ मोक्षना अर्थे दीक्षा लेवी ते अप्रतिबद्धा. (१) 'जो हुं दीक्षा लईश तो मने शिष्य, आहारादि मळशे' एम अगाउथी दीक्षा लेनाराओंने विषे जे अभिलाषा ते अग्रतःप्रतिबद्धा, २ स्वजनादिके प्रथमथी दीक्षा लोधेल छे तेना स्नेहने लईने जे पाछऊर्थी दीक्षा लेवी ते पृष्टतःप्रतिबद्धा,३ उभयतः प्रतिबद्धा—आगळथी अने पाछळथी पण प्रतिबंधवाळी छे अने चोथी अप्रतिबद्धा पूर्ववत्(२) चार प्रकारे प्रवज्या कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ सद्द्युरुओनी सेवावडे जे दीक्षा लेवाय छे ते अवपातप्रवज्या, २ 'तुं दीक्षा प्रहण

स्थान-स्थान्ययने स्याध्ययने स्याध्यये स्याध्ये स्या

॥ ५२६ ॥

कर ' एम कहेवाथी जे दीक्षा लेवाय छे ते आख्यातप्रव्रज्या, ३ ' जो तुं दीक्षा ले तो हुं पण लईश ' एवा संकेतथी जे दीक्षा लेवी ते संकेतप्रवर्ण्या अने ४ परिवारादिना वियोगथी एकाकीपणे देशांतरमां जईने दीक्षा लेवी ते विहगगतिप्रवर्णा (३) चार प्रकारनी प्रवच्या कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ तोदियत्वा-पीडा उपजावीने जे दीक्षा अपाय ते, २ प्लावियत्वा-बीजे ठेकाणे लई जईने दीक्षा अपाय ते, ३ मोचियत्वा-करज विगेरेथी मुकावीने जे दीक्षा अपाय ते, ४ परिष्छतयित्वा-भोजननी लालचवडे जे दीक्षा। अपाय ते. (४) चार प्रकारनी प्रवज्या कहेली छे, ते आ प्रमाण-१ नटनी जेम संवेग रहित धर्मकथा करवावडे भोज-नादि मेळववुं ते नटखादिता, २ सुभटनी जेम बळ देखाडीने भोजनादि मेळववुं ते भटखादिता, ३ सिंहनी जेम बीजानी अवज्ञा करीने भोजनादि मेळववुं ते सिंहखादिता अने ४ शीयाळनी जेम दीनतावडे भोजनादि मेळववुं ते शृगालखादिता. (५) चार प्रकारनी कृषी(खेती) कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ जेमां एक वखत धान्य बवाय ते वाविया, २ बे त्रण वखत उखेडीने स्थानां-तरमां रोपाय ते परिवाविया, ३ जेमां एक वार निंदण-घास विगेरे दूर कराय ते निंदिया अने ४ वारंवार निंदण-घास विगेरे द्र कराय ते परिनिदिया. (६) आ दृष्टांते चार प्रकारनी प्रवज्या कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ सामायिक चारित्रनुं आरोपण करवुं ते वाविया, २ वडीदीक्षा अथवा फरीथी दीक्षा आपवी ते परिवाविया, ३ एक वखत अतिचारनी आलोचना करवी ते निंदिया अने ४ वारंवार अतिचारनी आलोचना करवी ते परिनिंदिया. (७) चार प्रकारनी प्रव्रज्या कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ खळामां शुद्ध करेल धान्यना ढगला जेवी-अतिचार रहित दीक्षा, २ खळामां ज कचराने पवनवडे दूर करेल धान्यना एकत्र नहिं करेल पुंज समान-अल्प अतिचारवाळी, ३ बळदनी खुरीवडे खुंदावाथी वेरायेल धान्यना जेवी-बहु अतिचारवाळी अने ४

भीस्था-नाजुस्त्र सानुवाद ॥ ५२७।

क्षेत्रमांथी लावीने खळामां मुकेल धान्य समान-बहुतर अतिचारवाळी प्रवज्या. (८) (सू०२ ५५) टीकार्थः—आ सूत्रो सुगम छे. विशेष ए के-१ मात्र उदरभरणादि इच्छावाळानी जे दीक्षा ते इहलोकप्रतिबद्धा, २ भवांतर संबंधी कामभोगनी इच्छावाळानी जे दीक्षा ते परलोकप्रतिबद्धा, ३ उभय लोक संबंधी सुखना अभिलाषीओनी जे दीक्षा ते द्विधालोकप्रतिबद्धा अने ४ विशिष्ट सामायिक चारित्रवाळाशोनी जे दीक्षा ते अप्रतिबद्धा. (१) पुरतः - प्रत्रज्या लेवाथी भविष्यमां थनारा शिष्य अने आहारादिने विषे आगळथी प्रतिबंधवाळी जे दीक्षा ते १ पुरतःप्रतिबद्धा कहेवाय छे. एम स्वजनादिने विषे (स्नेहवडे पाछळथी लीधेल दीक्षा) ते २ मार्गतःप्रतिबद्धा कहेवाय छे. ३ कोईक प्रव्रज्या आगळथी अने पाछळथी पण एम द्विधाप्रतिबंधवाळी छे अने ४ कोईक अप्रतिबद्धा पूर्वनी जेम छे. (२) 'ओवाय ' त्ति ०-अवपात-सद्गुरुओनी सेवा. तेथी ज प्रव्रज्या ते १ अवपातप्रव्रज्या, २ 'तुं दीक्षा ले ' एम कहेवाथी दीक्षा लेनारनी जे प्रव्रज्या ते आख्यातप्रव्रज्या-आर्य-रक्षितस्रारेना भाई फल्गुरक्षितनी जेम, ३ ' संगार ' त्ति ० - संकेतथी जे प्रव्रज्या-मेतार्यादिनी जेम अथवा ज्यारे ' तं दीक्षा लईश त्यारे हुं पण लईश 'एम संकेतथी जे दीक्षा ते संकेतप्रवर्णा, ४ 'विह्गगड 'ति० विहगगितवडे-पक्षी जेम बीजे जाय छे ते न्यायवडे परिवारादिना वियोगथी अने देशांतरमां जवावडे एकलानी जे दीक्षा ते विहगगतिप्रव्रज्या. क्यांक ' विद्यापञ्चित्ते ' ति० पाठ छे त्यां पक्षीनी जेम एम जाणवुं. अथवा विहत-दारिद्रवडे के शत्रुओवडे पराभव पामेलनी जे दीक्षा ते विहतप्रवज्या. (३) 'तुयावइत्त ' त्ति० व्यथा(पीडा) उत्पन्न करीने जे दीक्षा देवाय छे ते १ तोदियत्वा प्रव्रज्या, सागरचंद्र मुनिवडे अपायेल मुनिचंद्र नृपना अपुत्रनी जेम. ' उयावइत्त ' त्ति ० एवो क्यांक पाठ छे त्यां ओज-* आ कथा मुनिपति चरित्रमां छे.

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ४ इहलोक-प्रतिबद्धा-दिप्रव्रज्या-भेदाः सु० ३५५

॥ ५२७ ॥

शारीरिक अथवा विद्यादिकना बलने देखाडीने जे दीक्षा देवाय छे ते ओजियत्वा एम कहेवाय छे. 'पुयावइत्त ' त्ति ० प्लुङ् धातु गति अर्थमां छे, आ वचनथी २ प्लावियत्वा-आर्थरिक्षतनी जेम बीजे स्थळे लई जईने अथवा पूत-दूषणने दूर करवा वडे पवित्र करीने जे दीक्षा अपाय छे ते पूतियत्वा, ' बुयावइत्त ' त्ति ॰ जेम गौतमस्वामीए खेइतने सारी रीते समजावीने दक्षा आपी तेम अथवा पूर्वपक्षरूप वचनने करावीने अने तेने जीतीने अथवा प्रतिज्ञा करावीने जे दक्षिा देवाय छे ते ३ बोधियत्वा. क्यांक 'मोयावइत्त' त्ति ॰ एवो पाठ छे त्यां साधुवडे छोडावीने जे दिक्षा अपाय छे ते ३ मोचियत्वा, तेलने अर्थे दासपणाने पामेली भगिनीनी जेम. [दीक्षित थयेल बंधुना उपचारने माटे कोईकनी दुकानेथी एक कर्ष प्रमाण तेल लाबीने तेनी बहेने आप्युं. एम दररोज एक कर्षनी वृद्धिवडे तेल लावीने ते साधुने आपती तेथी घडादि संख्यावाळं तेल थयुं, करज वध्युं परंतु देवुं अपायुं निह तथी तेणी जीवन पर्यंत तेनी दासी थईने रही. त्यारबाद कोई वखत फरीने ते साधु त्यां आच्या त्यारे बहेननी हकीकत जाणीने तेणे ते व्यापारीने समजाव्यो अने बहेनने छोडावीने दीक्षा आपी.] ' परिचुयावइत्त ' त्ति० घृतादिवडे परिपूर्ण भोजन ते परिप्छत-भोजनना माटे जे दीक्षा अपाय छे ते-आर्यसहस्ति आचार्य-वडे रंकने (संप्रति राजाना जीवने) अपायेल दीक्षांनी जेम ४ परिष्छतयित्वा कहेवाय छे. (४) नटनी जेम संवेग रहित धर्म कथाना करवावडे मेळवेल भोजनादिनुं ' खइय ' त्ति० खावुं छे जेने विषे ते १ नटखादिता अथवा नटनी जेम 'खइव' त्ति० संवेगग्रन्य धर्मकथाना कथनरूप स्वभाव छे जेने विषे ते नटस्वभावा एम भट विगेरेमां पण जाणवुं. विशेष ए के-तथा प्रकारना बळने बतावीने मेळवेल भोजनादिनुं खावुं छे जेने विषे ते २ भटखादिता अथवा भाट या चारणनी वृत्तिरूप स्वभाव भीस्थाः नाङ्गसत्र सानुवाद छे जेमां ते भटस्वभावाः सिंहनी जेम शौर्यना अतिशयथी अन्यनी अवज्ञावडे मेळवेल अथवा भक्षणवडे जेम शरू कर्यु तेम खावुं छे जेने विषे ते ३ सिंहखादिता अथवा सिंहस्वभावा. शीयाळ तो दीनवृत्तिवडे मेळवेल मोजनतुं अथवा मक्षणवडे अन्य स्थानमां शरू कर्युं अने अन्य स्थानमां खावुं छे जेमां ते ४ शृंगालखादिता अथवा शृगालस्वभावा. (५) कृषि-धान्यने माटे क्षेत्रनुं खेडवुं, 'वाविष 'त्ति० एक बखत धान्य ववाय एवी, २ 'परिवाविष 'त्ति० बे अथवा त्रण वार उसेडीने अन्य स्थानमां रोपवाथी परिवपनवती-शालि(डांगर)नी स्वेतीनी जेम, ३ ' निंदिय ' त्ति० एक वखत अन्य जातीय घास विगरेने दर करवावडे शोधेली ते निदाता. ४ 'परिनिंदिय ' त्ति० वे अथवा त्रण वखत तृणादिना शोधनवडे परिनिदाता कृषी छे. (६) प्रव्रज्या तो सामायिक(चारित्र)ना आरोपणवडे १ वाविया, २ परिवा-विया एटले निरतिचार चारित्रवाळाने महात्रतना आरोपणवडे अथवा सातिचार चारित्रवाळाने मूळ प्रायश्वित देवाथी, ३ निंदिया-एक वार अतिचारना आलोचनथी अन ४ परिनिंदिया-वारंवार अतिचारना आलोचनथी जाणवी. (७) ' धन्नपुं-जियसमाण ' त्ति० खळामां तूस विगेरे कचरो काढीने निर्मळ करेल धान्यना पुंज समान समस्त अतिचाररूप कचराना अभाववडे मेळवेल स्वस्वभावपणाथी, आ एक प्रवज्या, बीजी तो खळामां ज ' चद्धिरेख्नितं ' वायुवडे कचराने विस्तारेल-उडावेल पण ढगलो निहं करेल एवा धान्य समान प्रव्रज्या, जे थोडा पण प्रयत्नवडे स्वस्वभावने प्राप्त करशे. त्रीजी तो यद्विकीर्ण-बळदना खुरवडे खुंदावायी छूटा थयेल धान्य समान, जे प्रव्रज्या सहज उत्पन्न थयेल अतिचारहर कचरायुक्त होवाथी सापेक्षित अन्य सामग्रीवडे काळना विलंबधी स्वस्वभावने मेळववा योग्य थाय छे ते धान्यविकीर्ण

काध्ययन उद्देशः ४ इहलोक-प्रतिबद्धा-दिप्रव्रज्या-भेदाः

11 426 11

समाना कहेवाय छे. चोथी तो क्षेत्रथी लावेल अने खळामां राखेल धान्यना जेवी जे प्रव्रज्या, ते बहुतर अतिचार सिहत होवाथी बहुतर काळवडे प्राप्त करवायोग्य स्वस्वभाववाळी छे ते धान्यसंकर्षित समाना जाणवी. अहिं धान्यना विशेषण पुंजित विगेरे शब्दनो प्राकृतशैलीथी परनिपात करेल छे. (८) (स० ३५५) आ प्रव्रज्या संज्ञाना वश्र्यी आ प्रकारे विचित्र प्रकारे होय छे तथी संज्ञानुं निरूपण करवा माटे स्त्रपंचक कहे छे—

चत्तारि सन्नाओ पं० तं०-आहारसन्ना भयसन्ना मेहुणसन्ना परिगहसन्ना (१) चउिं ठाणेिं आहारसन्ना समुप्पज्जति, तं०-ओमकोट्ठताते १ छुहावेयणिज्ञस्स कम्मस्स उद्एणं २ मतीते ३ तद्ट्ठावओगेणं ४ (२) चउिं ठाणेिं भयसन्ना समुप्पज्जति, तं०-हीणसत्तताते १ भयवेयणिज्ञस्स कम्मस्स उद्एणं २ मतीते ३ तद्ट्ठावओगेणं ४ (३) चउिं ठाणेिं मेहुणसन्ना समुप्पज्जति, तं०-चितमंससोणिययाए १ मोहणिज्ञस्स कम्मस्स उद्एणं २ मतीते ३ तद्ट्ठावओगेणं ४(१) चउिं ठाणेिं परिगहसन्ना समुप्पज्जइ, तं०-अविमुत्तयाए लोभवेयणिज्ञस्स कम्मस्स उद्एणं मतीते तद्ट्ठावओगेणं (५) सू० ३५६, चउिवहा कामा पं० तं०-सिंगारा कळुणा बीभत्सा[च्छा] रोह्। सिंगारा कामा देवाणं कळुणा कामा मणुयाणं बीभत्सा कामा तिरिवखजोणियाणं रोहा कामा

८९

श्रीस्था-नाष्ट्रस्त्र साजुवाद ॥ ५२९॥

णेरइयाणं । सु० ३५७

मूलार्थ:-चार प्रकारे संज्ञा-चेतनाशक्ति कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ आहारसंज्ञा-आहारनी इच्छा, २ भयसंज्ञा-डरवुं, ३ मैथुनसंज्ञा-विषयनी इच्छा अने ४ परिग्रहसंज्ञा-धन विगेरेना संचयनी इच्छा. (१) चार कारणवडे जीवने आहार-संज्ञा उत्पन्न शाय छे, ते आ प्रमाणे-१ उदर खाली थवाथी, २ क्षुधावेदनीय कर्मना उदयथी, ३ आहारनी कथा सांभळवा विगेरेथी उत्पन्न थती मतिवडे अने ४ निरंतर भोजननी चिंतना करवाथी. (२) चार कारणवडे जीवने भयसंज्ञा उत्पन्न थाय छे, ते आ प्रमाणे-१ हीनसत्त्व(धेर्य)पणाथी, २ भय अवेदनीय कर्मना उदयथी, ३ भयजनक कथा सांभळवा विगेरेथी उत्पन्न थती मित-वडे अने ४ भयनी ज विचारणा करवावडे. (३) चार कारणथी मैथुनसंज्ञा उत्पन्न थाय छे, ते आ प्रमाणे-१ मांस अने रक्तनी वृद्धि थवाथी, २ मोहनीय कर्मना उदयथी, ३ कामनी कथा सांभळवा विगेरेथी उत्पन्न थयेल बुद्धिवडे अने ४ निरंतर विषयतुं चिंतन करवाथी. (४) चार कारणवडे परिग्रहसंज्ञा उत्पन्न थाय छे, ते आ प्रमाणे-१ परिग्रह सहित होवाथी, २ लोभवेदनीय कर्मना उदयथी, ३ धन विगेरेने जोवादिकथी उत्पन्न थयेल मितवडे अने ४ सतत धन विगेरेनुं चिंतन करवाथी. (५) (स्व०३५६) चार प्रकारना कामो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-शृंगार, करुण, विभत्स अने रौद्र, शृंगाररसवाळा कामो देवोने होय छे, करुण-

* भयवेदनीय शब्दथी भयमोहनीय कर्म समज्तुं, वेदनीय शब्दने। अर्थ अनुभववायाग्य हेावाथी बधा कर्म वेदनीय छे. विशेष

व्याख्यावडे साता असाता प्रकृतिरुक्षण वेदनीय कर्म छे.

४ स्थान-काष्ययने उदेशः ४ संज्ञाः का-माश्र स्र० ३५६-५७

॥ ५२९ ॥

रसवाळा कामो मनुष्योने होय छे, बीभत्सरसवाळा कामो तिर्यंचयोनिकोने होय छे अने रौद्ररसवाळा कामो नैरियकोने होय छे. (सु० ३५७)

टीकार्थः-' चत्तारी ' त्यादि० सत्र स्पष्ट छे. विशेष ए के-संज्ञानं संज्ञा-जाणवुं ते संज्ञा अर्थात् चैतन्य, ते +असा तावेदनीय अने मोहनीय कर्मना उदयजन्य विकार युक्त चैतन्य, आहारसंज्ञादिपणाए व्यपदेश कराय छे. तेमां आहारसंज्ञा-आहारनो अभिलाष, भयसंज्ञा-भयमोहनीय कमवडे प्राप्त थवा योग्य जीवनो परिणाम, मैथुनसंज्ञा-वेदना उदयथी थयेल मैथुननो अभिलाष अने परिग्रहसंज्ञा-चारित्रमोहना(लोभना) उदयथी थयेल परिग्रहनो अभिलाष (१). अवमकोष्टतया-खाली उदरवडे, मत्या-आहारनी कथाना सांभळवा विगेरेथी थयेल मतिवडे, तदर्थीपयोगेन-आहारनी सतत चिंतावडे आहारसंज्ञा उद्भवे छे (२). हीनसत्व-हिम्मतना अभावथी, मत्या-भयनी वार्ता सांभळवाथी अने भयंकर वस्तुने जोवाथी थयेल मतिवडे, तदथींपयोगेन-इहलोकादिभवरूप अर्थनी विचारणा करवाथी सामान्यथी भयसंज्ञा उपजे छे. (३) वृद्धि पामेल छे मांस अने ग्रोणित जेना ते चितमांसशोणित, तेना भावपणाए-मांस अने रक्तनी वृद्धि थवावडे, मत्या-कामक्रीडानी कथाना श्रवण विगेरेथी थयेल बुद्धियहे, तदर्थोपयोगेन-मैथुनरूप अर्थह्यं वारंवार चिंतन करवावहे मैथुन संज्ञा थाय छे. (४). अविमुक्ततया-सपरिग्रहपणाए, मत्या-सचेतनादि परिग्रहने जोवा विगेरेथी थयेल मातिवडे, तदर्थीपयोगेन-परिग्रहनुं अनुचितन 🕂 आहारसंज्ञा असातावेदनीय कर्मना उदयजन्य चैतन्य छे अने ऋमश: शेष त्रण संज्ञा भयमोहनीय, वेदमे।हनोय अने लोभ-मोहनीय कर्मना उदयनन्य चैतन्य लक्षण छे. संज्ञा उदय अने क्षयोपशमभावरूप छे.

भीस्था-नाज्ञपत्र बानुवाद ॥ ५३० ॥ ्तज्ञा थाय छे. (५) (य० ३५६) संज्ञाओं ज कामगोचर छे माटे कामनु .

जन ए के-कामा-शब्दादि विषयों छे. देशेने शुंगाररूप काम छे, केमके एकांतिक अने आत्यंतिक
अस्पंत रित्तसमुं स्थान होशाथी रितेरूप ज शूंगार छे. कर्धुं छे के- "अस्पोन्य आत्क थयेल पुरुष अने स्त्री सम .

प्रित्त समुं स्थान होशाथी रितेरूप ज शूंगार छे. कर्धुं छे के- "अस्पोन्य आत्क थयेल पुरुष अने स्त्री सम .

प्रित्त रित्त स्त्री स्थान होया अभित्रणाए शोचनात्मक होशाथी तथाप्रकारमुं मनोज्ञपणुं नथी होतुं. "करुणः शोकःप्रत्रकार स्त्र शोकस्त्रमात्र ज छे. तिर्थचोंने विभरस काम होय छे, केमके ते जुणुप्तानुं स्थान होय

प्राप्तकृतिवीक्तिस्सः " वीभरसरस जुणुप्तासक ज छे. नैरियकोंने अस्पंत अनिष्टपणाए

होय छे. कर्धुं छे के-" रीजः क्रोधमकृति " रिति रीज़ रस ज कोधरूप छे.

पाधक छे, माटे तुच्छने तथा गंभीरने कहेवाने इच्छता सत्रकार

प्रत्राणे णाममेगे गंभीरोद्रुष, गंभीरे

प्रिस्तजाया पं० तं०—उत्ताणे

पं० तं०—उत्ताणे णा-

ममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी ४ (३) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं०— उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी ४ (४) चत्तारि उदही पं॰ तं०— उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदही, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदही ४ (५) एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं॰ तं०—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोहियए ४ (६) चत्तारि उदही पं॰ तं०—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी ४ (७) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं०—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी ४ (८) सू॰ ३५८

मूलार्थ:—चार प्रकारना उदक कहेला छे, ते आ प्रमाणे—१ कोईक उदक उत्तान—थोड़ं ऊंड़ं (छीछरुं) छे. वळी निर्मळ-पणाथी उदकनो मध्यभाग देखाय छे ते उत्तानोदक, २ कोईक उदक उत्तान—थोड़ं ऊंड़ं छे पण उहाेळुं जल होवाथी मध्यभाग देखाता नथी ते गंभीरोदक, ३ कोईक गंभीर—ऊंड़ं जल छे पण स्वच्छ होवाथी मध्यभाग देखाय छे ते उत्तानोदक अने ४ कोईक जल गंभीर—ऊंड़ं छे अने उहाेळुं होवाथी मध्यभाग देखाता नथी ते गंभीरोदक. (१) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—१ कोईक पुरुष बाह्य चेष्टाथी उत्तान—अगंभीर अने अगंभीर (तुच्छ) हृदयवाळो छे, २ कोईक बाह्य चेष्टाथी कारणने लईने तुच्छ छे पण स्वभावथी गंभीर हृदयवाळो छे, ३ कोईक बाह्य चेष्टाथी गंभीर छे पण स्वभावथी

मीस्था-नाङ्गस्त्र सासुवाद ॥ ५३१ ॥

तुच्छ हृदयवाळो छे ४ अने कोईक बाह्य चेष्टाथी गंभीर अने गंभीर हृदयवाळो छे (२) चार प्रकारना उदक कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पाणी उत्तान-छीछरुं छे अने छीछरा जेवुं देखाय छे, २ कोईक छीछरुं छे पण सांकडा स्थानविशेषथी ऊंडुं देखाय छे, ३ कोईक अगाध पाणी छे पण विस्तारवाळा स्थानने लईने छीछरा जेवुं देखाय छे अने ४ कोईक पाणी अगाध छे अने अगाध(गंभीर) देखाय छे. (३) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष प्रकृतिथी तुच्छ छे अने तुच्छ जेवो देखाय छे, २ कोईक प्रकृतिथी तुच्छ छे पण बाह्यवृत्तिथी गंभीर जेवो देखाय छे, ३ कोईक प्रकृतिथी गंभीर छे पण कारणवशात तुच्छ जेवो देखाय छे अने ४ कोईक प्रकृतिथी गंभीर छे अने गंभीर जेवो देखाय छे. (४) चार प्रकारना समुद्रो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक समुद्र एक देश-विभागमां प्रथम पण तुच्छ छे अने पछी पण तुच्छ छे, २ कोईक समुद्र एक विभागमां प्रथम तुच्छ छे पण पछी वेल-भरती आववाथी गंभीर छे. ३ कोईक समुद्र एक विभागमां प्रथम गंभीर छे पण पछी ओट थवाथी तुच्छ छे अने ४ कोईक समुद्र प्रथम अने पछी पण गंभीर छे. (५) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष प्रथम पण तुच्छ अने पछी पण तुच्छ छे, २ कोईक प्रथम तुच्छ पण पछीथी गंभीर छे, ३ कोईक प्रथम गंभीर पण पछीथी तुच्छ छे अने ४ कोईक प्रथम गंभीर अने पछीथी पण गंभीर छे. (६) चार प्रकारना समुद्रो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक समुद्र तच्छ छे अने तच्छ जेवो देखाय छे, २ कोईक तुच्छ छे पण गंभीर जेवो देखाय छे, ३ कोईक गंभीर छे पण तुच्छ जेवो देखाय छे अने ४ कोईक सम्रद्ध गंभीर छे अने गंभीर जेवी देखाय छे. (७) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक पुरुष प्रकृतिथी

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ४ उदकोदाध-समपुरुषाः स्र० ३५८

11 439 1

तुच्छ छे अने बाह्य वृत्तिथी तुच्छ जेवो देखाय छे एम पूर्वोक्त रीते चोथा स्नन्नी माफक चोभंगी जाणवी (८) (स्० ३५८) टीकार्थः-'चत्तारी' त्यादि० सूत्रो स्पष्ट छे. विशेष ए के-उदक-पाणी कहेला छे तेमां १ कोईक जळ उत्तान-तुच्छपणाथी छीछरुं छे. वळी स्वच्छपणाने लईने मध्य स्वरूप देखातुं होवाथी उत्तानोदक छे. ('उत्ताणोदये' त्ति० आ निर्देश, समासरहित प्राकृतशैलीने अंगे समस्त पदनी जेम जणाय छे). मूलमां स्वीकारेल उदक शब्दवडे आ पद कहेल अर्थवाळं थशे एम कहेबुं नहिं, केम के तेनुं (उदक शब्दनुं) बहुवचनांतपणावडे अहिं असंबंध्यमानपणुं छे. साक्षात् उदक शब्द छे तो बहुवचनांत उदक शब्दने लाव-वावडे तेना वचनना परिणामथी हुं प्रयोजन छे १ एवी रीते उद्धि सत्रने विषे पण भाववं. तथा २ उत्तान पूर्वनी जेम अने गंभीर उदक मलिन होवाथी तेनुं स्वरूप जणातुं नथी, र गंभीर-बहु जळ होवाथी अगाध छे अने स्वच्छपणाने लईने मध्य स्वरूप देखातुं होवाथी उत्तानोदक छे, ४ अगाध होवाथी गंभीर, वळी मिलन स्वरूप होवाथी गंभीरोदक छे. (१) १ पुरुष तो उत्तान-बहारथी देखाडेल मद अने दीनता विगेरेथी थयेल विकृत शरीर ने वचननी चेष्टाथी अगंभीर-तुच्छ छे, वळी दैन्य विगेरे गुणथी युक्त अने गृह्यने धारण करवामां असमर्थ चित्तवाळो होवाथी उत्तान-तुच्छ(हृदय) छ-आ एक, बीजो कारणवशात देखाडेल विकृत चेष्टाथी उत्तान छे अने स्वभावथी उत्तान हृदयना विपरीतपणाथी गंभीर हृदयवाळो छे, त्रीजो तो दैन्यादिवाळो छते पण कारणवद्मात् आकारने गोपववावडे गंभीर अने उत्तानहृदय पूर्वनी जेम अर्थात् स्वभावथी तुच्छ हृदयवाळो छे अने चोथो प्रथम भंगथी विपरीत होवाथी बाह्यथी अने अंतरथी गंभीर छे. (२) तथा प्रतलपणाथी-थोडुं पाणी होवाथी उत्तान अने स्थानविशेष-थी उत्तान जेवो देखाय छे-आ एक, द्वितीय-उत्तान पूर्ववत पण सांकडा स्थान विगेरेथी अगाध जेवो देखाय छे.

श्रीस्या-नाङ्गधत्र सातुवाद ॥ ५३२ ॥

त्तीय गंभीर छे अने तथाप्रकरना स्थानना आश्रितपणा विगेरेथी उत्ताननी माफक देखाय छे, [चतुर्थ गंभीर अने गंभीर माफक देखाय छे] (३) पुरुष तो उत्तान-तुच्छ अने उत्तान ज देखाय छे-आ एक, बीजो तुच्छ छे पण विकारने गोपववाथी गंभीर जेवो देखाय छे, तृतीय गंभीर छे पण कारणविशात विकारत्वने देखाडवाथी तुच्छ जेवो देखाय छे, चोथो सुगम छे. (४) बे उदकसूत्रनी माफक बे उदिधसूत्र पण दार्थातिक सिहत समजवा अथवा एक उदिध-समुद्रनो देश छीछरो होवाथी उत्तान-प्रथम अने पछी पण छे केम के मनुष्यक्षेत्रनी बहारना समुद्रोने विषे वेलनो अभाव होय छे, आ एक, बीजा तो प्रथम उत्तान अने पछी गंभीर-वेलना आववाथी, त्रीजो प्रथम गंभीर अने पछी वेलना चाल्या जवाथी उत्तान छे, चोथो सुगम छे. (५-८) (स० ३५८) समुद्रना प्रस्तावथी तेना तरनाराओनं वर्णन बे सूत्रवडे करे छे—

चत्तारि तरगा पं० तं०-समुद्दं तरामीतेगे समुद्दं तरइ, समुद्दं तरामीतेगे गोप्पतं तरित, गो-प्पतं तरामीतेगे० ४ (१) चत्तारि तरगा पं० तं०-समुद्दं तरित्ता नाममेगे समुद्दे विक्षीतते, समुद्दं तरेत्ता णाममेगे गोप्पते विक्षीतित, गोपित० ४ (२) सू० ३५९, चत्तारि कुंभा पं० तं०-पुन्ने नाममेगे पुन्ने, पुन्ने नाममेगे तुच्छे, तुच्छे णाममेगे पुन्ने, तुच्छे नाममेगे तुच्छे (१) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पुन्ने नाममेगे पुन्ने० ४ (२) चत्तारि कुंभा पं० तं०-पुन्ने नाममेगे पुन्नोभासी,

४ स्थान-काश्ययने उद्देशः ४ तरक्षकुम्भ-समपुरुषाः

॥ ५३२ ॥

पुन्ने नाममेगे तुच्छोभासी, तुच्छे नाममेगे पुन्नोभासी, तुच्छे नाममेगे तुच्छोभासी ४ (३) एवं चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं०-पुन्ने नाममेगे पुन्नोभासी ४ (४) चत्तारि कुंभा पं॰ तं०-पुन्ने नाममेगे पुन्नरूवे, पुन्ने नाममेगे तुच्छरूवे ४ (५) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पुन्ने नाममेगे पुन्न-रूवे ४ (६) चत्तारि कुंभा पं० तं०-पुन्नेवि एगे पित्तहे, पुन्नेवि एगे अवदले, तुच्छेवि एगे पियहे, तुच्छेवि एगे अवद्ले ४ (७) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पुन्नेवि एगे पितट्ठे ४ (८) तहेव चत्तारि कुंभा पं० तं०-पुन्नेवि एगे विस्संद्ति, पुन्नेवि एगे नो विस्संद्ति, तुच्छेवि एगे विस्संद्ति, तुच्छेवि एगे नो विस्संदइ ४ (९) एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं०-पुन्नेवि एगे विस्संद्ति ४ (१०) तहेव चत्तारि कुंभा पं० तं०-भिन्नं, जज्जरिए, परिस्साई, अपरिस्साई ४ (११) एवामेव चउव्विहे चरित्ते पं० तं०-भिन्ने जाव अपरिस्साई ४ (१२) चत्तारि कुंभा पं० तं०-महुकुंभे णाममेगे महुप्पिहाणे, महुकुंभे णाममेगे विसपिहाणे, विसकुंभे णाममेगे महुपिहाणे, विसकुंभे णाममेगे विसपिहाणे ४ (१३) एवामेव चत्तारि पुरिसजावा पं॰ तं०-महकुंभे णाममेगे महपिहाणे

भीस्था-नाङ्गस्रत्र सान्जुवाद ॥ ५३३ ॥

४:(१४) हिययमपावमकल्लुसं, जीहाऽवि य महुरभासिणी निच्चं। जांमे पुरिसंमि विज्ञित, से मधुकुंभे मधुपिहाणे ॥१॥ हिययमपावमकलुसं, जीहाऽवि य कडुयभासिणी निच्चं। जांमे पुरिसंमि विज्ञित, से मधुकुंभे विसपिहाणे ॥२॥ जां हिययं कलुसमयं, जीहाऽवि य मधुरभासिणी निच्चं। जांमे पुरिसंमि विज्ञित, से विसकुंभे महुपिहाणे ॥३॥ जां हिययं कलुसमयं, जीहाऽवि य कडुयभासिणी निच्चं। जांमे पुरिसंमि विज्ञित, से विसकुंभे विसपिहाणे ॥४॥ सू० ३६०

मूलार्थ:—चार प्रकारे तरनारा—तारु कहला छं, ते आ प्रमाणे—१ कोईएक समुद्रनी जेम दुस्तर सर्वविरितने हुं तरुं छुं— करुं छुं एम स्वीकारीने तेने पाळे छे, २ कोईएक समुद्रनी जेम दुस्तर सर्वविरितने स्वीकारीने असमर्थपणाथी क्ष्मापद समान देशविरितने पाळे छे, ३ कोईएक गोपद समान देशविरितने पाळे छे अने ४ कोईएक गोपद समान देशविरितने स्वीकारीने देशविरितने ज पाळे छे. (१) चार प्रकारे तरनारा कहेला छे, ते आ प्रमाणे—१ कोईक पुरुष समुद्र समान महाकार्य करीने समुद्र जेवा बीजा महाकार्यमां सीदाय छे—असमर्थ थाय छे, २ कोईक समुद्र जेवुं कार्य करीने गोपद समान सामान्य कार्यमां सीदाय छे, ३ गोपद जेवुं सामान्य कार्य करीने गोपद जेवा अन्य कार्यमां सीदाय छे. (२) (स० ३५९) चार प्रकारना कलशो कहेला छे, क्ष्मीपद एउछे लोकभाषामां ' समुद्रनी खाडी ' एम दोपिकाकार कहे छे.

8 स्थान-काश्ययने उद्देशः ४ तरककुम्भ-समपुरुषाः स्र० ३५९ –६०

॥ ५३३ ॥

आ प्रमाणे-१ कोईक कलश पूर्ण-संपूर्ण अवयववाळो अने वळी पूर्ण-मध विगेरेथी भरेल छे, २ कोईक कलग्न संपूर्ण अवयव-वाळो छे पण तुच्छ-खाली छे, ३ कोईक कलश अपूर्ण अवयववाळो छे पण पूर्ण-मध विगेरेथी भरेल छे अने ४ कोईक कलश अपूर्ण अवयववाळो अने खाली छे. (१) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष जात्यादि गुणवडे पूर्ण अने वळी ज्ञानादि गुणवडे पूर्ण छे, २ कोईक जात्यादि गुणवडे पूर्ण छे पण ज्ञानादि गुणथी हीन छे, ३ कोईक जात्यादि गुणथी हीन पण ज्ञानादि गुणवडे पूर्ण छ अने ४ कोईक जात्यादिवडे हीन अने ज्ञानादि गुणथी पण हीन छे. (२) चार प्रकारना कलशो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक कलश संपूर्ण अवयववाळो छे अने जोनारने संपूर्ण जेवो देखाय छे, २ कोईक संपूर्ण अवयववाळो छे पण जोनारने तुच्छ जेवो देखाय छे, ३ कोईक तुच्छ छे पण संपूर्ण जेवो देखाय छे अने ४ कोईक तुच्छ छे अने तुच्छ जेवो देखाय छे. (३) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष धन विगेरेथी पूर्ण छे अने तेनो उपयोग करवाथी पूर्ण जेवो देखाय छे, २ कोईक धनादिवडे पूर्ण छे पण तेनो उपयोग न करवाथी तुच्छ जेवो देखाय छे, ३ कोईक धनादिथी तुच्छ छे पण तेनो उपयोग करवाथी पूर्ण जेवो देखाय छे अने ४ कोईक तुच्छ छे अने तुच्छ जेबो देखाय छे. (४) चार प्रकारना कुंभ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक कुंभ जळ विगेरेथी पूर्ण अने सुंदर रूपवाळी छे, २ कोईक जलादिवडे पूर्ण छेपण तुच्छ रूपवाळो छे, ३ कोईक जलादिवडे तुच्छ(खाली) पण सुंदर रूपवाळो छे अने ४ कोईक जलादिथी तुच्छ अने तुच्छ रूपवाळो छे. (५) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष ज्ञानादिवडे पूर्ण अने पवित्ररूप-रजोहरणादि विशिष्ट वेषवाळो छे, २ कोईक पुरुष ज्ञानादिवडे पूर्ण छे पण तुच्छ

श्रीस्था-नाङ्गम्रत्र सानुवाद ॥ ५३४॥

रूपवाळो-द्रव्यिलंगथी रहित छे, ३ कोईक पुरुष ज्ञानादि गुणथी रहित छे पण द्रव्यिलंग(मुनिवेष) युक्त छे अने ४ कोईक बनेथी तुच्छ छ अर्थात् ज्ञानादि गुणथी अने वेपथी रहित छ. (६) चार प्रकारना क्वंभ कहेला छ, ते आ प्रमाणे-१ कोईक कुंभ जलादिथी पूर्ण छे अने कनकादिमय होवाथी प्रीतिकर छ, २ कोईक कुंभ जळादिथी पूर्ण छे पण मृतिकादि हीन द्रव्य-वाळो होवाथी अपदल-असारभूत छे, ३ कोईक जलादिथी रहित छे पण श्रेष्ठ द्रव्यमय होवाथी प्रीतिकर छे अने ४ कोईक जलादिथी रहित छे अने हीन द्रव्यवाळो होवाथी असार छे. (७) आ दृष्टांत चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष धन, श्रुतादिथी पूर्ण छे अने दानादिथी प्रीतिकर छे, २ कोईक धन, श्रुतादिथी पूर्ण छे पण दानादिना अभावथी श्रीतिकर नथी, ३ कोईक धन,श्रुतादिथी हीन छे पण दानादिथी प्रीतिकर छे अने ४ कोईक उभयप्रकारे हीन(असार) छे.(८) चार प्रकारना कुंभ कहेला छे, ते आ प्रमाण-१ कोईक कुंभ जलादिथी पूर्ण छे अने झरे छे, २ कोईक जलादिथी पूर्ण छे पण झरतो नथी, ३ जलादिथी हीन छे पण झरे छे अने ४ जलादिथी हीन छे अने झरती नथी. (९) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष धन, श्रुतादिवडे पूर्ण छ अने झरे छे-धन, श्रुतादिने आपे छे, २ कोईक धनादिथी पूर्ण छे पण धनादिने आपतो नथी, ३ कोईक धनादिथी हीन छे पण आपे छे अने ४ कोईक धनादिथी हीन छे अने धनादिने आपतो नथी. (१०) चार प्रकारना कुंभ कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ फ़ूटेल, २ जाजरो-फाटवाळो, ३ पाणीने झरनार (काचो) अने ४ पाणीने नहिं झरनार-पाको. (११) आ दृष्टांते चार प्रकारना चारित्र कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ खंडित-मूलप्रायश्चित्त(फरीथी दीक्षा)ने योग्य, २ जर्जरित-छेदादि प्रायश्चित्तने योग्य, ३ स्नस्मअतिचारयुक्त, अने ४ निरतिचारचारित्र. (१२) चार प्रकारना

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः ४ तरककुम्भ समपुरुषाः स्० ३५९

कुंभ कहेला छ, ते आ प्रमाण-कोईक मधनो कुंभ अने मधनुं ढांकणुं छे, २ कोईक मधनो कुंभ अने विपनुं ढांकणुं छे, ३ कोईक विषनो कुंभ अने मधनुं ढांकणुं छे अने ४ कोईक विषनो कुंभ अने विषनुं ढांकणुं छे. (१३) आ दृष्टांते चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाण-१ कोईक पुरुष निष्पाप हृदयवाळो छे अने मधुरभाषी छे, ए प्रमाणे चार भांगा जाणवा. (१४) अहीं मूळनी चार गाथानो अर्थ आ प्रमाणे विचारवो-जे पुरुषमां पापरहित, प्रीतिकर हृदय अने जीभ पण मधुर बोलनारी नित्य विद्यमान छे ते पुरुष मधुनो कुंभ अने मधुना ढांकणा जेवो छे॥१॥ जे पुरुषमां पापरहित, प्रीतिकर हृदय छे परंतु जीभ कहक बोलनारी नित्य विद्यमान छे ते पुरुष मधुना कुंभ अने विषना ढांकणा जेवो छे॥ २॥ जे पुरुषमां पापमय, अप्रीतिकर हृदय छे पण जीभ मधुरभाषिणी नित्य विद्यमान छे ते पुरुष विषनो कुंभ अने मधुना ढांकणा जेवो छे॥ ३॥ जे पुरुषमां पापमय, अप्रीतिकर हृदय छे अने जीभ पण कहकभाषिणी नित्य विद्यमान छे ते पुरुष विषनो कुंभ अने विषना ढांकणा जेवो छे॥ ४॥ इसे ।। । (६० ३६०)

टीकार्थः—' चत्तारि तरगे ' त्यादि० स्पष्ट छे. विशेष ए के-तरे छे ते तरा, ते ज तरको-तरनाराओ छे. 'समुद्रनी माफक दुस्तर सर्वविरित विगेरे कार्यने (हुं) तरामि—करुं छुं ' एवी रीते स्वीकारीने तेमां समर्थ कोईएक समुद्रने तरे छे अर्थात् ते ज समर्थन करे छे—आ एक, बीजो तो तेने (सर्वविरत्यादिने) स्वीकारीने असमर्थपणाथी गोष्पदसमान देशविरित विगेरे अल्पतमने तरे छे—पाळे छे, त्रीजो तो गोष्पदप्राय(देशविरित)ने स्वीकारीने वीर्यना अतिरेकथी समुद्रप्राय(सर्वविरित)ने पण साथे छे. चतुर्थ भंग सुगम छे. (१) समुद्रप्राय कार्यने निर्वाहीने समुद्रप्राय अन्य प्रयोजनमां खेद पामे छे पण तेनो निर्वाह करतो नथी, कारण के क्षयोपशमनी विचित्रता होय छे. एवी रीते शेष त्रण मांगा पण जाणवा. (२) कुंभना दृष्टांतवडे

श्रीस्था-नाङ्गग्रत्र ग्रानुवाद ।। ५३५ ॥

पुरुषोने ज प्रीतपादन करवानी इच्छावाळा धत्रकार सत्रना विस्तारने कहे छे-आ सत्र सुगम छे. विशेष ए के-पूर्ण-समग्र अवयव युक्त अथवा प्रमाणोपेत, वळी पूर्ण-मधु विगेरेथी भरेल, आ प्रथम, बीजा भांगाने विषे तुच्छ-खाली, त्रीजा भांगामां तुच्छ-अपूर्ण अवयववाळो अथवा लघु अने चतुर्थ भंग सुगम छे. अथवा पूर्ण भरेल, पहेलां अने पछी पण पूर्ण, एवी रीते चार भांगा जाणवा. (१) पुरुष तो जाति विगेरे गुणोथी पूर्ण, वळी ज्ञानादि गुणोथी पूर्ण अथवा धनथी के ज्ञानादि गुणोथी प्रथम पूर्ण. एवी रीते बीजा त्रण भांगा पण जाणवा. (२) अवयवीवडे अथवा दहीं विगेरेथी पूर्ण अने जीनाराओने पूर्ण ज जणाय छे-भासे छे ते पूर्णावभासी-आ एक, बीजो तो पूर्ण छे पण कोईक हेतुथी विवक्षित प्रयोजनना असाधकपणादिने लईने तुच्छ जणाय छे. एम बीजा बे मंग जाणवा. (३) पुरुष तो धन, श्रुतादिवडे पूर्ण अने तेनो विनियोग करवाथी-वापरवाथी पूर्ण ज जणाय छे-आ एक. बीजो तो धनादिनो उपयोग न करवाथी तुच्छ ज जणाय छे, त्रीजो तो धनादिवडे तुच्छ-हीन छे परन्तु कोई पण रीते प्रसंगने उचित प्रवृत्ति करवाथी पूर्णनी माफक जणाय छे अने चोथो तो तुच्छ-धन, श्रुतादिथी रहित. आने लईने ज तेनो वपराश न करवाथी तुच्छ जणाय छे. (४) तथा पाणी विगेरेथी पूर्ण. वळी पूर्ण अथवा पुण्य पवित्र रूप छे जेतं ते पूर्णरूप अथवा पवित्ररूप-आ प्रथम, द्वितीय भंगमां तुच्छ-हीन छे आकार जेनो ते तुच्छरूप. एम शेष बे भंग पण जाणवा. (५) पुरुष तो ज्ञानादिवडे पूर्ण अने पूर्णह्रप अथवा विशिष्ट रजोहरणादि द्रव्यलिंगना सद्भावथी पुण्यह्रप सुसाध-आ एक, द्वितीय भंगमां कारणवशात् तजेल वेषवाळो सुसाधु, तृतीय भंगमां तुच्छ-ज्ञानादिथी रहित निह्नवादिक अने चतुर्थ भंगमां ज्ञानादिथी हीन अने द्रव्यिलंगथी हीन गृहस्थादि. (६) तथा पूर्ण पूर्ववत् ('अपि' शब्द तो तुच्छनी अपेक्षाए समुच्चय अर्थमां

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ४ तरककुम्भ-समपुरुषाः स्र० ३५९ -६०

11 434 11

×

छे.) कोईक घट प्रीतिने माटे थाय ते प्रियार्थ, कारण के कनकादिमय होवाथी सारभृत छे, तथा अपदल-कारणभृत मृत्तिकादि द्रव्य असंदर हे जेतं ते अपदल अथवा अवदलति-विदाराय छे-चीराय हे ते अवदल, कंईक ओहो पाकेल होवाथी असार हे. तुच्छ घट पण एवी रीते जाणवो. (७) पुरुष धन, श्रुतादिवडे पूर्ण अने प्रियार्थ-कोईक प्रिय वचन तथा दानादिवडे प्रियकारी सारभत छे. बीजो तो तेवो नथी माटे अपदल छे-परोपकार करवामां अयोग्य छे. तुच्छ पण एवी रीते समजवो. (८) घट पूर्ण छे तो पण जलादिने झरे छे, अहिं जलादिवडे तुच्छ-ओछो छे ते ज झरे छे. 'अपि ' शब्द सर्वत्र प्रतियोगीनी अपेक्षाए समुच्चय अर्थमां छे. (९) कोई एक पुरुष तो धन के श्रुतादिवडे पूर्ण छे अने तेने आपे छे-आ एक, बीजो तो पूर्ण छे पण धनादि आपतो नथी, त्रीजो तुच्छ अल्प धनादिवाळो छे तो पण धन, श्रुतादिने आपे छे, चोथो धनादिथी रहित छे ने आपतो पण नथी. (१०) तथा भिन्न-फ़टेलो, जर्जरित-रेखायुक्त अर्थात फाटवाळो, परिश्रावी-दुष्पक्व होवाथी झरनारो अने अपरिश्रावी-कठिन होवाथी झरनारो नथी. (११) चारित्र तो मूल प्रायिश्वत्तनी प्राप्तिवडे भिन्न-भांगेलुं, छेदादि प्रायिश्वत्तनी प्राप्तिवडे जर्जारित-नबळं, सूक्ष्म अतिचारपणावडे परिश्रावी-अल्प दोषवाळं चारित्र अने निरतिचारपणाए अपरिश्रावी चारित्र छे. अहि पुरुषना अधिकारमां पण जे चारित्रलक्षण पुरुषधर्मनं कथन करेल छे ते धर्म अने धर्मीनं कथंचित अभेदपणुं होवाथी निर्दोष जाणवं. (१२) तथा मधुनो कुंभ ते मधुकुंभ अर्थात् मधुथी भरेल अथवा मधु छे पिधान-ढांकणुं जेनुं ते मधुपिधान, एम बीजा त्रण भांगा पण जाणवा. (१३) पुरुषसत्र स्वयमेव सत्रकार भगवाने 'हिय ' मित्यादि० गाथाचतुष्टयवडे भावेल छे. तेमां हृदय-मन, अपाप-हिंसा रहित, अकलुप-अप्रीति रहित अने मधुरभाषिणी जिह्ना पण जे पुरुषने विषे विद्यमान छे ते श्रीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ५३६ ॥ **

पुरुष मधुंकुभनी जेम मधुकुंभ छे अने मधुपिधाननी जेम मधुपिधान छे, एम प्रथम भंगनी योजना करवी. त्रीजी गाथामां जे हृदय कछषमय-अप्रीतिवाळं, उपलक्षणथी पापवाळं अने जे मधुरभाषिणी जिह्वा ते जे पुरुषने विषे नित्य विद्यमान छे ते पुरुष विषकुंभ अने मधुपिधान छे; कारण के तेनुं समानपणुं छे. (१४) (स्० ३६०) अहिं कहेल चतुर्थ पुरुष उपसर्गनी करनार थाय, माटे उपसर्गनी प्ररूपणा करवा माटे 'चडव्विहा उवस्तरगो 'त्यादि० सत्त्रपंचक कहे छे-

चउिवहा उवसग्गा पं० तं०-दिव्वा माणुस्सा तिरिक्खजोणिया आयसंचेयणिजा १, दिव्वा उवसग्गा चउिवहा पं० तं०-हासा पाओसा वीमंसा पुढोवेमाता २, माणुस्सा उवसग्गा चउिवहा पं० तं०-हासा पाओसा वीमंसा कुसीलपिडसेवणया ३, तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउिवहा पं० तं०-मता पदोसा आहारहेउं अवचलेणसारक्खणया ४, आतसंचेयणिजा उवसग्गा चउिवहा पं० तं०-घट्टणता पवडणता थंभणता लेसणता ५। सू० ३६१

मूलार्थः – चार प्रकारना उपसर्गी कहेला छे, ते आ प्रमाणे – दिन्या – देव संबंधी, मनुष्य संबंधी, तिर्यंचयोनिक संबंधी अने पोताथी ज करायेला. (१) दिन्य उपसर्गी चार प्रकारना कहेला छे, ते आ प्रमाणे – हास्यथी, प्रद्वेषथी, विमर्श – परीक्षाथी अने जुदी जुदी रीते हास्यादिथी. (२) मनुष्य संबंधी उपसर्गी चार प्रकारना कहेला छे, ते आ प्रमाणे – हास्यथी, प्रद्वेषथी, परीक्षा-थी अने कुशील सेववानी इच्छाथी. (३) तिर्यंचयोनिक संबंधी उपसर्गी चार प्रकारना कहेला छे, ते आ प्रमाणे – मयथी,

॥ ५३६

प्रदेवियी, आहारना हेतुथी तथा बाद्यक अने स्थाननी रक्षा माटे. (४) आत्मसंचेतनीय उपसर्गी चार प्रकारना कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ संघट्टणधी-आंखमां रज पडतां तेने हाथे चोळवाधी पीडा थाय छे, २ पडी जवाधी, ३ घणी वार बेसवा विगेरे-वडे अंग झलाई जवाथी अने घणो ४ काळ पग संकोचीने बेसवाथी वायुवडे तेमज पग लागी-मळी जवाथी. (५) (सू० ३६१) टीकार्थ:- आ सत्र सरळ छे. विशेष ए के-समीपे प्राप्त थवारूप अथवा धर्मथी जेओवडे अष्ट कराय छे ते उपसर्गी-दुःख-विशेषो, ते कत्तीना भेदथी चार प्रकारना छे. कह्युं छे के-उवसज्जणमुवसम्गो, तेण तओ य उवसिजाए जम्हा। सो दिव्वमणुयतेरिच्छ-आयसंवेयणाभेओ ॥२०९॥ प्रायः उक्तार्थ छे.

आत्मावहें 'संचेत्यन्ते '-कराय छ ते आत्मसंचेतनीयो १, तेमां दिन्य उपसर्गो ' हास ' त्ति० हास्यथी थाय छ अथवा हासवहे उत्पन्न थवाथी हासउपसर्गो. एवी रीते अन्य उपसर्गोमां पण जाणवुं. जेम भिक्षाने अर्थे प्रामांतरमां गयेल क्षुल्लक मुनिओए न्यंतरी पासे प्रार्थना करी के ' जो अमे इन्छित भोजन मेळवशुं तो तने उंडरेक (रेवडी) विगेरे आपशुं 'एम अंगीकार करीने इष्टभोजन प्राप्त थये छते 'आ तारुं छे 'एम कहीने ते उंडरेकादि तेओए पोते ज खाधुं. देवीए हास्यवडे तेओना रूपने छुपावीने तेओनी साथे कीडा करी. क्षुल्लक मुनिओ न आन्ये छते गन्छना मुनिओए न्याकुल थई आचार्य पासे निवेदन कर्युं के देवीए क्षुल्लकोने आ प्रमाणे विघ्न करेल छे. बाद वृषभ(समर्थ) मुनिओए उंडरेकादि याचीने ते देवीने आप्युं त्यारे ज तेणीए क्षुल्लक मुनिओने बतान्या. प्रद्वेषयकी जेम संगमक देवे महावीर भगवंतने उपसर्गी

भीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद H 430 11

राणीनो सामुं पण जोयुं नहि.

कर्या. विमर्श-परीक्षार्थी जेम वर्षाऋतुने विषे कोईक देवकुलिका(देरी)मां केटलाएक महानुभाव साधुओ चातुर्मास रहेला. चातुर्मास पूर्ण थया बाद तेओ अन्यत्र गया. तेमांथी एक साधु पुनः ते देवकुलिकामां आवीने रह्यो त्यारे देवीए विचार्यु के-आ साधु केवो छे ? एम तेनी परीक्षा करवा माटे उपसर्ग करवा लागी. पृथक्-भिन्न भिन्न प्रकारनी मात्रा-हास्यादि वस्तुरूप छे जेओने विषे ते पृथग्विमात्रा, अथवा पृथग्-विविध मात्रावडे (आ लोप थयेल तृतीया विभक्तिना एकवचनवाळुं पद जाणवुं.) हासवडे करीने प्रद्वेषवड़े उपसर्ग करे छे, एवी रीते संयोगवाळा थाय छे, जेम संगमक देव ज विमर्षद्वारा प्रद्वेषवड़े उपसर्ग करतो हतो. २. मनुष्य संबंधी हास्यथी, जेम गणिकानी पुत्री क्षुष्ठक मुनिने उपसर्ग करती हती. क्षुष्ठकमुनिवडे ते गणिकानी पुत्री दंडवडे ताडन कराई. बाद राजद्वारमां ते बन्नेनो विवाद थवाथी क्षुल्लकग्रुनिए भंडारनुं दृष्टांत कह्युं. [जेम राजाना भंडारनी चोरी करनारने ताडन कराय छे तेम आ गणिकानी पुत्री पण साधुना आचाररूप भंडारना शीलरूपी रतनने चोरनारी छे माटे में तेणीन दांडावडे मारेल छे.] प्रद्रेपथी जेम गजसुकुमार म्रुनि सोमिल ब्राह्मणद्वारा मराया. परीक्षार्थी जेम चाणाक्यना कथनथी चंद्रगुप्त राजाए धर्मनी परीक्षा माटे अंतःपुरमां #अन्यलिंगीओने बोलाव्या अने धर्मनी व्याख्या कराववाद्वारा श्लोभित कर्या, परंतु जैन साधुओने क्षोभ पमाडवाने माटे समर्थ न थयो. कुशील एटले अब्रह्मनुं प्रतिसेवन, तेनो भाव ते प्रतिसेवनता उपसर्ग अथवा कुशीलतुं प्रतिसेवन छे जेओने विषे ते प्रतिसेवनको अथवा कुशीलनी प्रतिसेवनावडे एम व्याख्यान करतुं. जेम वसति-उपाश्रय *अन्यिलगोओनं शील दृढ न होवाथी राजानी राणी विगेरेना रूपमां व्यामोह पाम्या अने साधुओ तो शीलमां दृढ होवाघी

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः 🛭 उपसर्गाः

॥ ५३७ ॥

माटे प्रोषित-परदेश गयेला भर्तारवाळी इर्घ्याल स्त्रीना घरने विषे सायंकालना समये साधु आव्या त्यारे ते इर्घ्याल एवी चार स्त्रीओए साधुने रहेवा माटे आवास आप्यो. पछी दरेक स्त्रीए चार प्रहर पर्यंत साधुने उपसर्ग कर्यो पण ते क्षोम न पाम्या ३. भयथी श्वान विगेरे तिर्यंचो करडे छे, प्रद्वेषथी चंडकोशिक नाग भगवानने डक्यों (डंख मार्यों), आहारना हेतुथी सिंह विगेरे अने संतान तथा स्थाननी रक्षा करवा माटे कागडी विगेरे उपसर्ग करे ४. आत्मसंचेतनीया-पोताथी करायेला उपसर्गी. घट्टणता-घसबुं अथवा घसवावडे, जेम आंखमां रज पडवाथी आंखने हाथवडे मशळी तेथी दुःखने माटे श्ररूआत करी अथवा स्वयमेव आंखमां के गळामां मांसना अंकुर विगेरे थयेल होय तेने घसे, प्रवतनता-पडवापणुं अथवा पडवावडे जेम उपयोग विना चालनारतुं पतन थवाथी दुःख उत्पन्न थाय छे ते, स्तंभनता अथवा स्तंभनवडे, जेम त्यां सुधी बेठो ऊभी रह्यो अने सतो के ज्यां सुधी पग विगेरे स्तब्ध-अकडाई जाय ते स्तंभनता, श्लेषणता अथवा श्लेषणावडे, एवी रीते पगने संकुचीने रह्यों के जेथी वायुवडे पग रही गयो-मळी गयो. अहिं आ संबंधी गाथाओं दर्शावे छे-हास १ प्पदोस २ वीमंसओ ३, विमायाय ४ वा भवे दिव्वो ।

एवं चिय माणुस्सो, कुसीलपिडसेवणचउत्थो ॥ २१० ॥ तिरिओ भय १ प्पओसा २-ऽऽहाराऽ३वचौदिरक्खणत्थं वा ४ । घट्टण १ थंभण २ पवडण ३, लेसणओ वाऽऽयसंचेओ ४ ॥ २११ ॥

४ स्थान-

काष्यय ने

उद्देश: 🛭

कर्मसङ्घः

बुद्धिः

जीवाः

भीस्था-नाङ्गपत्र सातुनाद ॥ ५३८॥ **

१. तत्काल प्रस्ता गाय विगेरे.

दिव्वंमि वंतरी १ संगमे २, गजइ ३ लोभणादीया ४ [इत्युत्तरार्छ]
गाणिया १ सोमिल २ धम्मोव-एसणे ३ सालुजोसियाईया ४।
तिरियंमि साण १ कोसिय २, सीहा ३ अचिरसूँवियगवाई ४॥ २१२॥
कणुग १ कुडणा २ भिपयणाइ ३, गत्तसंलेसणादओ ४ नेया।
आओदाहरणा वाय १, पित्त २ कफ ३ सन्निवाया वा ४॥ २१३॥
पहेली साडीत्रण गाथा उपर जणावेला अर्थवाळी छे. आत्मसंचेतनीय उपसर्गीमां वायु, पित्त, कफ अने सन्निपात
उदाहरणो छे. (छ० ३६१)

उपसर्गोने सहन करवाथी कर्मनो क्षय थाय छे तेथी कर्मना स्वरूपनुं प्रतिपादन करवा माटे खत्रकार कहे छे— चउठिवहें कम्मे पं॰ तं०-सुभे नाममेगे सुभे, सुभे नाममेगे असुभे, असुभे नाम० ४ (१) चउ-ठिवहें कम्मे पं० तं०-सुभे नाममेगे सुभविवागे, सुभे णाममेगे असुभिववागे, असुभे नाममेगे सुभ-विवागे, असुभे नाममेगे असुभविवागे ४(२), चउठिवहें कम्मे पं० तं०-पगडीकम्मे ठितीकम्मे अणु-

।। ५३८ ॥-

भावकम्मे पदेसकम्मे ४(३)। सू० ३६२, चउिवहे संघे पं० तं०-समणां समणीओ सावगा सावि-याओ । सू० ३६३, चउठिवहा बुद्धी पं० तं०-उप्पत्तिता वेणतिता कम्मिया पारिणामिया, चउठिवधा मई पं॰ तं॰-उग्गहमती इहामती अवायमई धारणामती, अथवा चउविवहा मती पं॰ तं॰-अरंजरोदगसमाणा वियरोदगसमाणा सरोदगसमाणा सागरोदगसमाणा । सू० ३६४, चउव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पं० तं०-णेरइता तिरिक्खजोणीया मणुस्सा देवा, चउव्विहा सव्वजीवा पं० तं०-मणजोगी वइजोगी कायजोगी अजोगी, अहवा चउँ विवहा सब्वजीवा पं० पं०-इत्थिवे-यगा पुरिसवेदगा णपुंसकवेदगा अवेदगा, अथवा चउठिवहा सब्वजीवा पं॰ तं-चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी अहवा चउठिवहा सठवजीवा पं० तं०-संजया असंजया संजयासंजया णोसंजयाणोअसंजया । सू० ३६५

मूलार्थ:-चार प्रकारे कर्म कहेल छे, ते आ प्रमाण-१ एक कर्म ग्राम-पुण्यप्रकृतिरूप अने ग्रुभानुबंधी-पुण्यना अनुबंध-वाछं छ अर्थात् पुण्यानुबंधी पुण्य, २ कोईक ग्रुभ छ पण अग्रुभना अनुबंधवाछं छे अर्थात् पापानुबंधी पुण्य, २ कोईक अग्रुभ छे पण शुभ पुण्यना अनुबंधवाछं छे अर्थात् पुण्यानुबंधी पाप अने ४ कोईक अग्रुभ छे अने अग्रुभना अनुबंधवाछं छे अर्थात् श्रीस्था-बाङ्गध्त्र बाजुबाद ॥ ५३९ ॥

पापानुबंधी पाप. (१) चार प्रकारे कर्म कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक कर्म ग्रुभपणे बांधेल छे अने उदयमां पण ग्रुभपणा-ए आवे छे. २ कोईक कर्म शुभपणे बांधेल छे पण संक्रमकरणवडे अशुभप्रकृतिमां मळी जईने अशुभपणाए उदयमां आवे छे. ३ कोईक कर्म अञ्चभपणे बांधेल छे पण संक्रमकरणवडे शुभपणाए उदयमां आवे छे अने ४ कोईक कर्म अञ्चभपणे बांधेल हे अने अञ्चभपणे उदयमां आवे छे. (२) चार प्रकारे कर्म कहेल छे, ते आ प्रमाणे-प्रकृतिकर्म, स्थितिकर्म, अनुभावकर्म अने प्रदेशकर्म. (३) (स्० ३६२) चार प्रकारनो संघ (ज्ञानादि गुणना पात्रभूत जीवसमृह) कहेल छे, ते आ प्रमाणे-अमणो. श्रमणीओ, श्रावको अने श्राविकाओ, (स्० ३६३) चार प्रकारनी बुद्धि कहली छे, ते आ प्रमाणे-तात्कालिक उत्पन्न थती बुद्धि ते औत्पत्तिकी, विनयथी उत्पन्न थती ते वैनयिकी, कार्य करवाना सतत अभ्यासथी उत्पन्न थती बुद्धि ते कार्मिकी अने लांबा काळ पर्यंत अनुभव मेळववाथी उत्पन्न थती जे बुद्धि ते पारिणामिकी. चार प्रकारनी मृति कहेली है. ते आ प्रमाणे-अवग्रहमति, इहामति, अवायमति अने धारणामति अथवा चार प्रकारनी मति कहेली छे, ते आ प्रमाणे-घडाना पाणी जेवी. विदर-विरडाना पाणी जेवी, तळावना पाणी जेवी अने सागरना पाणी जेवी. (स्० ३६४) चार प्रकारना संसारमां रहेला जीवो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ नैरियको, २ तिर्यंचयोनिको, ३ मनुष्यो अने ४ देवो. चार प्रकारे सर्व जीवो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ मनयोगी, २ वचनयोगी, ३ काययोगी, ४ अयोगी. अथवा चार प्रकारे सर्व जीवो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-? स्त्रीवेदवाळा, २ पुरुषवेदवाळा, ३ नपुंसकवेदवाळो अने ४ अवेदको. अथवा चार प्रकारे सर्व जीवो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ चक्कदर्शनी, २ अचक्कदर्शनी, ३ अवधिदर्शनी अने ४ केवलदर्शनी. अथवा चार प्रकारे सर्व जीवो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-

४ स्थान
 काश्ययने
 उद्देशः ४
 कर्मसङ्घः
 बुद्धिः
 जीवाः
 स०३६२ ६५

11 630 H

? संयत, २ असंयत, ३ संयतासंयत-देशविरति अने ४ नोसंयतनोअसंयत (सिद्ध) (६० ३६५)

टीकार्थ:—'चडिवहें ' त्यादि० त्रण सत्र स्पष्ट छे. विशेष ए के-जे कराय ते कर्म-ज्ञानावरणीय विगेरे. ते १ श्रम- पुण्यप्रकृतिरूप, पुनः श्रम-श्रमना अनुबंधवाछं होवाथी, भरतादिनी जेम. २ श्रम पूर्ववत् पण अश्रमना अनुबंधवाछं होवाथी अश्रम छे, ब्रह्मदत्त विगेरेनी जेम. ३ अश्रम-पापप्रकृतिरूप, पण श्रमना अनुबंधवाछं होवाथी श्रम छे-दुःखविशिष्ट अकाम निर्जरावाठा गाय विगेरेनी जेम. ३ अश्रम-पापप्रकृतिरूप, पण श्रमना अनुबंधवाछं होवाथी अश्रम छे, धीवर विगेरेनी जेम. (१) १ श्रम-साता विगेरे, जेम सातादिपणाए बांध्युं तेम ज उदयमां जे आवे ते श्रमविपाक. २ श्रमपणाए जे बांधेछं परंतु संक्रमकरणवश्चात् अश्रमपणाए उदयमां आवे ते बीजुं, संक्रमनामाकरण(जीवना सामर्थ्य)ना वश्चथी कर्मने विषे बीजा कर्मनो प्रवेश थाय छे. कह्युं छे के-'' मूळप्रकृतिवहे अभिन्न, उत्तरप्रकृतिओने आत्मा, प्रकृतिना स्वभावथी संक्रमावे छे अर्थात् जे प्रकृतिमां संक्रमावे तत्स्वरूप संक्रमती प्रकृति थई जाय छे, प्रश्न-आत्मा अमूर्त होवाथी केवी रीते संक्रमावे १ उत्तर-अध्यवसायप्रयोगवहे केम के आत्माने कर्मजन्य अध्यवसायो होय छे तेने लईने संसारस्थ आत्मा कथंचित् मूर्त्त पण छे।।१।।'' तथा मतांतर आ प्रमाणे जाणवो—

मोत्तूण आउयं खलु, दंसणमोहं चिरत्तमोहं च। सेसाणं पयडीणं, उत्तरविहिसंकमो भिणओ ।२१४। आयुषकर्मनी चार प्रकृतिओनो परस्पर संक्रम थाय निहं तथा दर्शनमोहनीय अने चारित्रमोहनीयनी प्रकृतिओनो पर-

श्रीस्था- | नाङ्गस्त्र 🖟 सानुवाद 🛙 🙀 ा ५४० ॥🕰

स्पर संक्रम न थाय. शेष प्रकृतिओंनो स्वजातीय उत्तरप्रकृतिमां संक्रम थाय पण विजातीयमां न थाय. मूल प्रकृतिनो सर्वथा परस्पर संक्रम थतो नथी.

३ अशुभपणाए जे बांधेलुं अने शुभपणाए उदयमां आवे ते त्रीजुं अने चोथुं सुगम छे. त्रीजुं कर्मसूत्र आ चतुर्थ स्थान किना द्वितीय उद्देशकमां कहेल बंधसूत्रनी जेम जाणवुं. (मू० ३६२) चार प्रकारना कर्मना स्वरूपने संघ ज जाणे छे माटे संघसूत्र अने ते संघ सर्वज्ञपुरुषना वचनवडे संस्कारित बुद्धिवाळो होय छे माटे बुद्धिसूत्र, अने बुद्धि ते मितिविशेष छे माटे बे मितिसूत्रो कहेल छे. आ बधा य सूत्रो सुगम छे. विशेष ए के-संघ-गुणरत्नना पात्रभूत जीवोनो समुदाय. ते संघमां मतिस्त्रो कहेल छे. आ बधा य सूत्रो सुगम छे. विशेष ए के-संघ-गुणरत्नना पात्रभूत जीवोनो समुदाय. ते संघमां *'आम्यन्ति',-तपश्चर्या करे छे ते श्रमणो. अथवा शोभन मनवडे-नियाणांना परिणामलक्षण पाप रहित चित्त सहित वर्त्ते छे ते समनसः तथा समान-स्वजन अने परजनने विषे तुल्य छे मन जेओनं ते समनसः. कहां छे के-

तो समणो जइ सुमणो, भावेण य जइ न होइ पावमणो। सयणे य जणे य समी, समो य माणावमाणेसुं

ज्यारे शून्य मनवाळी होय छे, अने आत्मपरिणामरूप भाववडे पापयुक्त मनवाळी थतो नथी, तथा स्वजन अने पर-जनमां के मान अने अपमानमां समानभाववाळो रहे छे त्यारे श्रमण कहेवाय छे अथवा सम-समानपणाए शत्रु के मित्र विगेरेने विषे प्रवर्ते छे ते समणाः. कह्यं छे के-

काध्ययने उद्देशः ४ कर्मसङ्घः बुद्धिः जीवाः ६५

480 1

^{*}मृलमां 'सम्ण' शब्द छे तेना श्रमण, समनसः, समण:, समना इत्यादि अनेक रूपो करेला छे.

निश्य य सि कोइ वेसो, पिओ व सब्वेसु चेव जीवेसु। एएण होइ समणो, एसो अन्नोऽवि पजाओ ।२१६।

समस्त जीवोने विषे जेने कोई पण द्वेष करवा योग्य नथी अथवा कोई प्रिय नथी, आ समभाववडे समनाः, एनो गीजो पण पर्याय छे.

प्राकृतपणाने लईने सर्वत्र 'समण ' शब्द छ एम 'समणीओ 'छे. 'श्रृण्वन्ति '-जिनश्चनने जे सांभळे छे ते श्रावक छे. कहुं छे के " प्राप्त करेल दृष्टि विगेरे विशुद्ध संपत्ति (सम्यग्दृष्टि), साधुजन पासेथी दररोज प्रभातमां जे आळस रहित उत्कृष्ट समाचार(सिद्धांत)ने सांभळे छे तेने जिनेंद्रो श्रायक कहे छे. " (१) अथवा ' श्रान्ति ' पचावे छे, तत्त्वार्थना श्रद्धानने निष्ठा प्रत्ये लई जाय छे (निष्ठित-स्थिर थाय छे) ते 'श्रा 'तथा 'वपन्ति'-ग्रणवाळा सप्त क्षेत्रोने विषे धनरूप बीजने वावे छे ते 'वा 'तथा किरन्ति '-क्किष्ट कर्मरूप रजने फेंकी दे छे ते 'का 'तथी कर्म-धारय समास कर्षे छते ' आवकाः ' एवा प्रयोग सिद्ध थाय छे. कहुं छे के-" पदार्थना चितनथी श्रद्धालुताने इट करे छे, निरंतर पात्रोने विषे धन वावे छे अने सारा साधुना सेवनथी पापोने बीघ फेंके छे-दूर करे छे तेने ज्ञानीओ आत्रक कहे छे." एवी रीते श्राविका पण जाणवी. (सू० ३६३) तथा उत्पत्ति ज छे प्रयोजन जेणीतुं ते १ औत्पत्तिकी बुद्धि. दांका-आ बुद्धितुं तो क्षयो-पश्चम कारण छे. समाधान-तमारुं कथन सत्य छे, परंतु ते अंतरंग कारण होवाथी सर्व बुद्धिनुं साधारण कारण छे, तेथी तेनी विवक्षा अहीं करेल नथी. वळी अन्य शास्त्र अथवा कर्म-शिल्पादिकार्यनी आ बुद्धि अपेक्षा करती नथी परंतु बुद्धिनी उत्पत्ति थया

श्रीस्था-नाक्सस्त्र सानुवाद ॥ ५४१ ॥ अगाउ पोते निह जोयेल. बीजा पासेथी निह सांभद्रेल अने मनवडे पण निह विचारेल अर्थने ते जक्षणमां जैम छे तेम जैनावडे ग्रहण कराय छे ते उभय लोक अविरुद्ध, एकांतिक फळवाळी आ औत्पत्तिकी बुद्धि छे. कह्युं छे के-

पुट्यमदि ट्रमसुयम-वेइयतक्खणविसुद्धगहियत्था । अट्वाह्यफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तियानाम ॥ २१७ ॥

भावार्थ उपर मुजब छे. आ बुद्धि नटपुत्र रोहक विगेरेनी जेम जाणवी.

गुरुनी शुश्रूषा-सेवारूप विनय जेमां कारण छे अथवा विनय प्रधान छे जेमां ते २ वैनयिकी बुद्धि. वळी कार्यना भारने पार पहोंचाडवाना सामर्थ्यवाळी, धर्म, अर्थ अने कामशास्त्रों संबंधी खत्रार्थना परमार्थने ग्रहण करनारी अने उभय लोकमां फळवाळी आ वैनयिकी बुद्धि छे. कह्युं छे के—

भरानित्थरणसमत्था, तिवग्गसुत्तत्थगहिअपेयाला। उभओ लोगफलवती विणयसमुत्था हवइ बुद्धि॥२१८ उक्तार्थ छे. आ बुद्धि नैमित्तिक सिद्धपुत्रना शिष्यादिनी जेम जाणवी.

अचार्य-शिक्षक सिवाय शीखेलुं ते कर्म अने आचार्य पासेथी शीखेलुं ते शिल्प अथवा कोईक वखत करवामां आवतुं ते कर्म अने निरंतर व्यापार करातुं ते शिल्प जाणवुं. कर्म-कार्यथी उत्पन्न थयेली बुद्धि ते कर्मजा. विवाधित कार्यमां मनने जोडवाथी तेना परमार्थने जाणनारी, कार्यना अभ्यासथी अने विचारथी विस्तार पामेली तेमज 'सारुं कर्युं ' एम विद्वानोद्वारा प्रशंसा थाय तेवा फळवाळी त्रीजी कर्मजा बुद्धि हो. कह्युं हो के-

४ स्थान काध्ययने उद्देशः ४ कर्मसङ्घः बुद्धिः जीवाः स्०३६२-

। ५४१ ॥

उवआगादिटुसारा, कम्मपसंगपरिघोलणविसाला । साहुकारफलवती, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥२१९॥

उक्तार्थ छे. हेरण्यक-सोनाचांदी प्रमुखनी परीक्षा करनार पारेख अने खेडूत विगेरेनी जेम आ बुद्धि जाणवी.

परिणाम-चिरकाल पर्यंत पूर्वापर पदार्थना अवलोकनथी उत्पन्न थयेल आत्मधर्म, ते प्रयोजन छे जेनुं अथवा परिणाम छे प्रधान जेमां ते ४ पारिणामिकी बुद्धि, वळी अनुमान, कारणमात्र अने दृष्टांतोवडे साध्यने साधनारी, वयनी बुद्धिवडे पुष्ट थनारी तेमज अभ्युदय अने मोक्षना फळवाळी आ बुद्धि छे. कह्युं छे के—

अणुमाणहेउदिट्ठंत-साहिया वयविवागपरिणामा । हियनिस्सेसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ।२२०। उक्तार्थ हे. *अभयक्रमारादिनी जेम आ बुद्धि जाणवी.

मनन करतुं ते मित. तेमां समस्त विशेषनी अपेक्षा सिवाय निर्देश निह करायेल एवा रूप विगेरे सामान्य अर्थनुं 'अव'— प्रथमथी ग्रहण (जाणतुं) ते अवग्रह, तद्रूप मित ते अवग्रहमित. एवी रीते सर्वत्र जाणतुं. विशेष ए के—ते ग्रहण करेल अर्थनुं विशेष आलोचन करतुं ते इहा. आलोचित अर्थविशेषनो निश्चय ते अवाय अने निश्चित करेल अर्थविशेषनुं जे (हृदयमां) अविच्युतिषणे धारी राखतुं ते धारणा. कहुं छे के—

सामन्नत्थावगहण-मोग्गहो भेयमग्गणमिहेहा। तस्सावगमोऽवाओ, अविच्चुई धारणा तस्स ॥२२१॥

* चार प्रकारनी बुद्धि उपर दर्शावेला दृष्टांतो नंदीसूत्रनी टोकाथी जाणी लेवा.

भोस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद 1482 11 उक्तार्थ छे.

अरंजर-उदकनो कुंभ, ते अलंजर नामथी पण प्रसिद्ध छ, तेने विष रहेल उदकना जेशी मति. केमके विशेष अर्थनुं प्रहण, विचारणा अने धारणामां सामर्थ्यना अभावथी अल्व होय छे तेमज अस्थिरपणुं होय छे. अरंजरोदक ते जल थोई छे अने शीघ्र खाली थई जाय छेते. बीजी विदर-नदीना किनारा विगेरेमां जळने माटे करेल खाडामां (वीरडामां) जे पाणी छे तेना जेवी माति. केमके अल्प होवा छतां अन्य अन्य अर्थनाविचारमां समर्थ थाय छे अने जरुदी खाली थई जतुं नयी. तेमां जेम पाणी अरुप छे तेम अन्य अन्य थोडुं थोडुं पाणी झरे छे-आवे छे तेथी जलदी खाली थतुं नथी. त्रीजी सरोवरना पाणी जेत्री मित कारण के सरोवर विस्तारपणाथी घणा जनने उपकारक छे अने खाली थतुं नथी. बळी चोथी सागरना पाणी जेबी मति. ते समस्त पदार्थना विषयपणायहे अत्यंत विपुल, अक्षय अने मध्यपणुं न जणाय तेवी छे. समुद्रना उदकतुं पण एवं ज स्वरूप होय छे. (स्र॰ ३६४) उपर वर्णवेल मतिवाला जीवो ज होय छे माटे जीव संबंधी पांच खत्रो कहेल छे, ते स्पष्ट छे. विशेष ए के-मनयोगी-मन सहित, त्रण योगना सद्भावमां पण मनोयोगतुं प्राधान्य होताथी. एम वचनयोगी द्वीन्द्रिय विगरे, काययोगी एकेंद्रियो, अने अयोगी-रुंघन करेल योगवाळा तथा सिद्धो छे. अवेदक जीवो सिद्ध विगेरे छे. चक्कुयी सामान्य अर्थतुं ग्रहण करवुं ते अवग्रह अने इहारूप दर्शन ते चक्षुदर्शन. चक्षुदर्शनवाळा चतुरिंद्रिय त्रिगेरे छे. अचक्षु-स्पर्शन विगरे इंद्रियों, ते दर्शनवाळा एकेंद्रिय विगरे. संयत-सर्वविरतिओ, असंयत-अविरतिओ, संयतासंयत-देशविरतिओ अने संयतादि त्रणेना निवेधवाळा ते सिद्धी जाणवा. (स्० ३६५) जीवना अधिकारथी जीव विशेषभूत पुरुषना भेदी चार स्त्रोवडे कहे छे-

8 स्थान-काष्ययने उद्देशः अ कर्मसङ्घः बुद्धिः जीवाः

। ५४२ ।

चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-मित्तेनाममेगे मित्ते, मित्ते नाममेगे अमित्ते, अमित्ते नाममेगे मित्ते, अमित्ते नाममेगे अमित्ते ४ (१) चतारि पुरिसजाया पं० तं-मित्ते णाममेगे मित्तहवे चउमंगो ४ (२) चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-मुत्ते णाममेगे मुत्ते, मुत्ते णाममेगे अमुत्ते ४ (३) चत्तारिपुरिसजाया पं० तं०-मुत्ते णाममेगे मुत्तरूवे ४ (४) सू० ३६६, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चउगईया चउआगईया पं० तं०-पंचिदियतिरिक्खजोिणया पंचिदियतिरिक्खजोिणएसु उत्रवज्जमाणा णेरइएितो वा तिरिक्खजोणिएहिंतो वा, मणुस्सेहिंतो वा, देवेहिंतो वा उववज्ञजा, से चेवणं से पंचिदियतिरिक्ख-जोणिए पंचिंदियतिरिक्लजोणियत्तं विष्पजहमाणे णेरइत्तताए वा जात्र देवताते वा उत्रागच्छेजा, मणुस्सा चउगईआ चउआगतिता. एवं चेव मणुस्सावि । सू॰ ३६७, बेइंदिया णं जीवा अस-मारभमाणस्स चउविवहे संजमे कजाति, तं०-जिब्भामयातो सोक्खातो अववरोवित्ता भवति. जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति, फासमयातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवइ, फासमयाओ दुक्लाओ असंजोगित्ता भवति ४, बेइंदियाणं जीवा समारभमाणस्त चउविधे असंजमे कज्जति,

श्रीस्था-नाङ्गपत्र सानुनाद ॥ ५४३ ॥

तं - जिड्भामयातो सोक्खाओ ववरोवित्ता भवति, जिड्भामएणं दुक्खेणं संजोगित्ता भवति, फासामयातो सोक्लाओ ववरोवेत्ता भवइ, फासामएणं दुक्लेणं संजोगित्ता भवइ ४। सू० ३६८, सम्मिद्दिद्वाणं णेरइयाणं चत्तारि किरियाओ पं० तं०-आरंभिता परिग्गहिता मायावत्तिया अपच्चवलाणिकरिया, सम्मिद्दियाणं असुरकुमाराणं चत्तारि किरियाओ पं० तं०-एवं चेव. एवं विगलिंदियवजं जाव वेमाणियाणं । सृ० ३६९, चउहिं ठाणेहिं संते गुणे नासेजा. तं० कोहेणं पिडिनिवेसेणं अकयण्णुयाए मिच्छत्ताभिनिवेसेणं । चउहिं ठाणेहिं संते गुणे दीवेजा. तं०-अब्भासवत्तितं परच्छंदाणुवत्तितं कजाहेउं कतपडिकतितेति वा । सू० ३७०, णेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं सरीरुपत्ती सिता, तंजहा-कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं एवं जाव वेमाणियाणं, णेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं निव्वत्तिते सरीरे पं॰ तं॰-कोहनिव्वत्तिए जाव लोभनिव्वत्तिए, एवं जाव वेमाणियाणं । सु० ३७१

मूलार्थ:-चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष मित्र-आ लोकमां उपकारी, वळी मित्र-पर-लोकमां पण उपकारी-सद्गुरुवत्, २ कोईक मित्र-स्नेहवाळा होवा छतां पण परलोकना साधनमां आहितकर होवाथी अमित्र स्त्री

४ स्थान• काष्ययने उद्देशः ४ मित्रपश्चे-न्द्रियनर-गत्या ग-तिद्वींद्रिया संयमेतर-ंसम्यग्दष्टि-क्रिया गुण-नाशतन्-त्पादाः स्० * | 444-01 * || 483 ||

तथा प्रत्रादिवत, ३ कोईक प्रतिकूल करनार होवाथी अमित्र पण वैराग्यनुं कारण थवाथी मित्र ते-अविनीत स्त्री विगेरेनी जेम अने ४ कोईक प्रतिकूल करनार होवाथी अमित्र अने संक्लेशनो हेतु थवाथी पुनः पण अमित्र छे. (१) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक मित्र अंतरंग स्नेहवाळो छे अने भित्ररूप-बाह्यथी पण स्नेह बतावे छे, २ कोईक मित्र अंतरंग स्नेहवाळो छे पण अमित्ररूप-बहारथी स्नेह बतावतो नथी, ३ कोईक अमित्र-अंतरंग स्नेहवाळो नथी पण मित्ररूप-बहारथी कृत्रिम स्नेह देखाडे छे-असती स्त्रीवत् अने ४ अमित्र अने अमित्ररूप-अंतरंग के बाह्य स्नेह रहित छे. (२) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ कोईक पुरुष मुक्त-द्रव्यथी संगनो त्याग करेल छे अने मुक्त-भावथी पण मुर्च्छानी त्याग करेल छ-सुसाधुवत, २ कोईक द्रव्यथी मुक्त अने भावथी अमुक्त-आसिकवाळी होवाथी रंकवत, ३ कोईक द्रव्यथी संगवाळो होवाथी अग्रुक्त पण भावथी ग्रुक्त ते गृहवासमां केवळज्ञान पामेल भरत चक्रीवत अने ४ द्रव्य तेमज भाव उभयथी अम्रक्त ते गृहस्थ. (३) चार प्रकारना पुरुषो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-कोईक पुरुष मुक्त-आसक्ति रहित, वळी मुक्तह्रप वैराग्यने म्रचक वेषवाळो-यतिनी माफक, २ कोईक पुरुष म्रक-आसक्ति रहित पण अम्रकरूप-साधुना वेष रहित-शिवकुमारनी माफक, ३ कोईक अमुक्त-आसक्तिवाळो पण मुक्तरूप-कपटथी यतिवेषने ग्रहण करनारनी जेवो अने ४ अमुक्त अने अमुक्तरूप ते गृहस्थ. (४) (स्० ३६६) पंचेंद्रियतिर्थचयोनिको चार गतिवाळा अने चार आगतिवाळा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिको अर्थात पंचेंद्रियतिर्यंच संबंधी * आयुष्यना उदयवाळा, पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिको विषे उत्पन्न थतां * प्रथम आयुष्यनो उदय थाय छे, पछी गति विगेरेने। उदय थाय छे.

भीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद श ५४४ ॥

नैरियकोमांथी, तिर्येचयोनिकोमांथी, मनुष्योमांथी अथवा देवोमांथी उत्त्वन्न थाय ते ज पंर्वेद्रियतिर्यच योनिक, पंर्वेद्रियतिर्यच-योनिकपणाने छोडतो थको नैरियकपणाए अथवा यावत देवपणाए उत्पन्न थाय. मतुष्यो चार गतिवाळा अने चार आगति-वाळा कहेल छे. ए प्रमाणे ज तिर्थंचपंचेंद्रियनी जेम मनुष्यो पण जाणवा. (सू॰ ३६७) बंइंद्रिय जीवाना आरंभने निह करनारने चार प्रकारे संयम कराय छे-थाय छे, ते आ प्रमाणे-१ जिह्वाना रनास्वादह्वा सुवयी भ्रष्ट करनार थतो नथी. २ जिह्वानी हानिरूप दुःखने जोडनार थतो नथी, ३ स्पर्शन इंद्रिय संबंधी सुखना विवाश करनार थतो नथी अने ४ स्पर्शमय दुःखनो संयोग करनार थतो नथी. बेइंद्रिय जीवोना समारंभ करनारने चार प्रकारनो अतंयम कराय छ-थाय छे, ते आ प्रमाणे-१ रसनाना रसास्वादरूप सुखर्थी अष्ट करनार थाय छे, २ रसनाती हानिरूप दुःखने जोडनार थाय छ, ३ स्पर्शन इंद्रिय संबंधी सुखनो विनाश करनार थाय छ अने ४ स्पर्शनय दुःखना संगान करनार थाय छ. (स्० ३६८) सम्यग्दृष्टि नैरियकोने चार क्रियाओं कहेली छे, ते आ प्रमाणे-आरंभि ही, पारिप्रदिकी. मायाप्रत्यया अने अप्रत्या-च्यानिक्रया. सम्यग्दृष्टि असुरकुमारोने ए ज प्रमाणे चार कियाओं कहेली छे. ए है हीने ए हैंद्रिय अने विकलेंद्रियने छोडीने यावत् सम्यग्दृष्टि वैमानिकोने चार कियाओ कहेली छे. अहिं पांच क्रियानी अपेक्षाए चार क्रिया समज्ञी. मिथ्यादशेनप्रत्यया न होय. (स्० ३६९) चार कारणोवडे अन्यना छता गुणोनो नाज करे-अवलाव करे, त आ प्रनागे-१ क्रोधबी, २ बीजाना उत्कर्षनी ईष्याने लईने, ३ अकृतज्ञताथी-बीजाना उपकारने न जाणवाथी अने ४ दुराग्रहथी. चार कारणोवडे अन्यना छता गुणोने दीपाव -प्रगट करे, ते आ प्रमाणे-१ प्रशंसा करवाना स्वभाववडे, २ बीजाना अभिनाय प्रमाण वर्त्तेताथी, ३ इच्छित

१ स्थान माध्ययन 🞇 उद्देशः ४ ¥ मित्रपश्चे-¥ ¥िद्रयनर-गत्या ग-ितिद्वींद्रिया संयमेतर-🗩 ∤सम्यग्दष्टि-¥ंकिया गुज-नाशतनू-💥 त्वादाः स्ट०

कार्यने सिद्ध करवा माटे अने ४ करेल उपकारनो प्रत्युपकार करवा माटे. (सू० ३७०) नैरियकोने चार कारणोवडं श्रारिनी उत्पत्ति-प्रारंभ थाय, ते आ प्रमाणे-क्रोधथी, मानथी, मायाथी अने लोभथी. एवी रीते यावत् वैमानिकोने जाणवुं. नैरियकोने चार कारणोवडे शरीरनी निष्पत्ति-पूर्णता थाय, ते आ प्रमाणे-क्रोधवडे निर्वित्तित यावत् लोभवडे निर्वित्तित. एवी रीते यावत् वैमानिकोने माटे पण जाणवुं. (स० ३७१)

टीकार्थः - 'चत्तारी' त्यादि० सूत्रो स्पष्ट छे. विशेष ए के - मित्र - आ लोकमां उपकारी होवाथी, वळी मित्र - परलोकमां उपकारी होवाथी सद्गुरुती जेम. बीजो मित्र स्नेहवाळो होवाथी पण अमित्र - परलोकना साधतना नाग्रकारक होवाथी - प्रेमाळ स्त्री विगेरेनी जेम. त्रीजो तो अमित्र - प्रतिक्रूळ होवाथी पण निर्वेदता - वैराग्यने उत्पन्न करवावडे परलोकता साधतने विषे उपकार करनार थवाथी - अविनीत स्त्री विगेरेनी जेम. चतुर्य अमित्र - प्रतिक्रळपणाथी पुनः संक्रियता हेतुरणाए दुर्गतिनुं निमित्त थवाथी अमित्र छे. अथवा प्रथम मित्र अने पछी पण मित्र एम काळती अपेक्षाए चोमंगी जाणवी. (१) मित्र - अंतरंग स्नेहथी, पुनः बाह्य उपचार करवाथी मित्रनो ज रूप (आकार) छे जेनो ते मि रूप - आ एक, बीजो तो बाह्य उपचारना अभावथी अमित्ररूप, त्रीजो स्नेहथी रहित होवाथी अमित्र अने चतुर्य प्रतीत छे. (२) मुक्त - द्रव्यथी संगनो त्याग करनार, पुनः मुक्त - आसक्तिना अभावथी - सुसाधुवत, बीजो आसक्तिवाळो होवाथी अमुक्त - रंकवत्, त्रीजो द्रव्यथी अमुक्त पण भावथी मुक्त - आसक्ति रहित - राज्यावस्थामां उत्पन्न थयेल केवळज्ञानवाळा भरतचकवर्तीनी माफक, चोथो गृहस्थ अथवा पूर्व अने अपर - पछी पण अमुक्त. कालनी अपेक्षाए आ सूत्र विचारवं. (३) आसक्ति न होवाथी मुक्त अने वैराग्यने

भीस्था-नाङ्गधत्र साजुनाद ॥ ५४५ ॥

म्रचक आकार(वेष)वडे मुक्तरूप-यातिनी माफक, आ एक, बीजो साधुना वेषथी विपरीत होवाथी अम्रुक्तरूप, गृहस्थावस्थामां (बे वर्ष) रहेल श्री महावीर भगवंतनी जेम, त्रीजो आसक्ति सहित होवाथी अम्रुक्त-शठ यतिनी जेम, चोथो गृहस्थ. (४) (स॰३६६) जीवना अधिकारवाळा पंचेंद्रियतिर्पंच अने मनुष्य संबंधी वे सत्र सुगम छे. एम बेइंद्रिय संबंधी वे सत्र सुगम छे. (स॰३६७) विशेष ए के-बेइंद्रिय जीवो प्रत्ये आरंभ निह करनार नाश निह करनारने जिह्वानो विकार ते जिह्वामय, तस्मात् सौक्यात-रसना अनुभवमय आनंदरूप सौक्यथी नाश नहि करनार तथा जिह्नेंद्रियनी हानिरूप दृःखवडे नहि जोडनार थाय छे. (सू० ३६८) जीवना अधिकारथी ज सम्यग्द्राष्ट्रि जीवोना कियास्त्रों छे ते सुगम छे. विशेष ए के-सम्यग्द्रष्टि जीवोने मिध्या-त्विक्रयाना अभाव होवाथी चार क्रियाओं छे. ' एवं विगलिंदियवज्ञं ' ति० एकेंद्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अने चतुरिंद्रिय जीवोने पांचे क्रियाओं छे: कारण के तेओने मिध्यादृष्टिपणुं होय छे. द्वीन्द्रिय विगरेने सासादन (पत्तन्ज्ञील) सम्यक्तवना अल्पत्वने लईने तेनी विवक्षा नथी करी. एवी रीते अहिं विकर्लेद्रियना वर्जनवडे सोळ क्रियास्त्रो थाय छे. (सू० ३६९) अनंतर कियाओं कही, कियावाळी अन्यना सद्भूत- छता गुणो प्रत्ये नाश करे छे अने अवगुणीनो प्रकाश करे छे माटे आ अर्थवाळा बे धत्र छे ते सगम छे. विशेष ए के-सत:-अन्यना विद्यमान गुणोने नाश करवानी माफक नाश करे छे-अपलाप करे छे. मानतो नथी क्रोध-रोषबंडे, तथा प्रतिनिवेश-''आ पूजाय छे, हुं तो पूजातो नथी'' एम परनी पूजाने सहन न करवावडे (मात्सर्य-थी) तेमज बीजाए करेल उपकारने जे जाणतो नथी ते अकृतज्ञ. तेना भावरूप अकृतज्ञतावडे अने मिथ्यात्वाभिनिवेश-बोधना विपर्यासवडे. कह्यं छे के-

४ स्थान **** काध्ययने उदेशः ४ मित्रपश्चे-े न्द्रियनरग-त्या गति-द्वींद्रियासं-यमेतरस-म्यग्दष्टि-💥 क्रिया गुण-नाशतन्-

蒸炭蒸炭炭

रोसेण पडिनिवेसेण, तहय अक्षयण्णुमिच्छभावेणं। संतग्रणे नासित्ता, भासइ अग्रणे असंते वा।२२२।

प्रायः उक्तार्थ छे.

असत:-निह विद्यमान गुणा प्रत्ये, (क्वचित 'संते' त्ति पाठ छे त्यां विद्यमान गुणा प्रत्ये) दीपयेत्-बोले. अभ्यास-स्वभाव अथवा वर्णन करवा योग्यनी समीपतारूप निमित्त छे दीपन-बोलवामां ते अभ्यासप्रत्यय, अभ्यास(टेव)थी विषय सिवाय अने फळ सिवाय पण प्रश्वीत देखाय छे. समीपमां रहेनारना गुणोनुं ज प्रायः ग्रहण थाय छे. परच्छंद बीजाना अभिप्रायनी अनुवृत्ति-तेनी पाछल वर्त्तवुं छे जेमां ते परच्छंदानुवृत्तिक, तथा कार्यना हेतुथी-प्रयोजन निमित्ते इच्हित कार्यन अनुकूल करवा माटे, तथा उपकारने विषे प्रत्युपकार छे जेने ते कृतप्रतिकृतिक अर्थात् उपकारनी प्रत्युपकार करनार आ हेतुथी अथवा उपकारना प्रत्युपकार माटे अथवा कोई एक व्यक्तिने एकनो उपकार कर्यो अथवा गुणा प्रशंस्या, ते तेना अछवा गुणाने पण प्रत्युपकार माटे प्रशंसे छे. 'इति ' शब्द समीप देखाडवामां अने 'वा' शब्द विकल्पमां छे. (स्० ३७०) आ गुणानो नाश करवो विगेरे शरीरवडे कराय छे माटे शरीरनी उत्पत्ति अने निर्देश्ति-पूर्णता सूत्रना वे दंडक छे ते सुगम छे. विशेष ए के-क्रांध विगेरे कर्मबंधना हेतुओ छे अने कर्म शरीरनी उत्पत्तिनुं कारण छे माटे कारणमां कार्यना उपचारथी क्रोधादि शरीरनी उत्पत्तिना निमित्तपणाए कथन कराय छे. आ हेतुथी ' चउहिं ठाणेहिं सरीरे ' त्यादि० कह्यं क्रोधादिजन्य कर्मबढे पूर्ण थतुं होवाथी क्रोधादिवडे निर्वर्तित शरीर एम कह्युं. अहिं उत्पत्ति - शरूआतमात्र अने निर्वित्त तो निष्पत्ति - पूर्णतारूप छ. (स्व ३७१) क्रोध विगरे श्ररीरनी निर्वृत्तिना कारणो छे एम कहां, तेना निग्रहो-नाश करनारा धर्मना कारणो छ ते सत्रकार दर्शावे छ

For Private and Personal Use Only

श्रीस्था-नाङ्गद्वत्र सानुवाद ा ५४६॥

चत्तारि धम्मदारा पं॰ तं॰-खंती मुत्ती अज्जवे मद्दे। सू॰ ३७२, चउिहं ठाणेहिं जीवा णेरति-यत्ताए कम्मं पकरेंति, तंजहा-महारंभताते, महापरिग्गहयाते, पंचिदियवहेणं, कुणिमाहारेणं १, चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति, तं - माइस्रताते, णियडिस्रतात, अलिय-वयणेणं, कूडतुलकूडमाणेणं २, चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्तत्ताते कम्मं पगरेंति, तं०-पगतिभइताते, पगतिविणीययाए, साणुकोसयाते अमच्छरिताते ३, चउँ हिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पग-रेंति तं?-सरागसंजमेणं, संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामाणिजराष् ४। सू० ३७३, चउ-विवहे वजे पं तं नतते वितते घणे झुसिरे १, चउिवहे नहे पं तं नअंचिए, रिभिए, आरमडे, भिसोले २, चउिवहे गेए पं० तं०-उक्सिनए, पत्तए, मंदए, रोविंदए ३, चउिवहे महे पं० तं०-गंथिमे, वेढिमे, पूरिमे, संघातिमे ४, चउव्विहें अलंकारे पं० त०-केसालंकारे, वत्थालंकारे, मछा-लंकारे, आभरणालंकारे ५. चउविवहे अभिणते पं॰ तं॰-दिट्टांतिते +पांडुसुते, सामंतोवाताणिते,

🕂 श्रीरायपसेणोसूत्रना ८८ मा सूत्रमां " पार्डि ग्यं " एवो पाठ मळे छे. आ चारे प्रकारना अभिनयोनुं विशेष वर्णन टोकाकारे

कर्युं नथों एटले जिज्ञासुए निष्णात पासेथो जाणवा प्रयत्न करवो.

४ स्थान काष्ययने उद्देशः ४ धर्मद्वारायु हेतुनाद्यादि-विमानन-णीदि स्रव् ३७२-७५

लोगमब्भावसितं ६। सू॰ ३७४, सणंकुमारमाहिंदे सुणं कप्पेसु विमाणा चउवन्ना पं॰ तं॰-णीला लोहिता हालिहा सुक्किला, महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिजा सरीरगा उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ उड्डं उच्चत्तेणं पन्नता। सू॰ ३७५

मूलार्थः – धर्मना चार द्वारो कहेला छे, ते आ प्रमाणे – श्वमा, निर्लोभता, सरलता अने मार्दवता. (स्० ३७२) चार कारण-वह जीवो नैरियक्षिपणाना आयुष्कादि कर्मने बांधे छे, ते आ प्रमाणे – महान् आरंभ करवाथी, महान् परिग्रह धारण करवाथी, पंचोंद्रियना वधिथा अने मांसाहार करवाथी. (१) चार कारणवह जीवो तिर्यंचयोनिकपणाना आयुष्कादि कर्मने बांधे छे, ते आ प्रमाणे – मननी कुटिलताथी, बीजाने ठगवा माटे कायानी जुरी रीते चेष्टा करवाथी, अलिक (जूढ़ं) बोलवाथी अने खोटा तोल अने मापवह व्यवहार करवाथी. (२) चार कारणवह जीवो मनुष्यपणाना आयुष्कादि कर्मने बांधे छे, ते आ प्रमाणे – सरल स्वभावथी, विनीत स्वभावथी, द्याळपणाथी अने मत्सर रहितपणाथी. (३) चार कारणवहे जीवो देवपणाना आयुष्कादि कर्मने बांधे छे, ते आ प्रमाणे – सरल स्वभावथी, विनत क्रियाथी अने अकाम निर्जराथी. (४) (स० ३७३) चार प्रकारे वाद्य – चार्जित कहेल छे, ते आ प्रमाणे – तत – त्रीणा विगरे, वितत – ढोल प्रमुख, घन – कांस्यतालादि अने खिपर – वांसली विगरे. (१) चार प्रकारे नाट्य (नाटक) कहेल छे, ते आ प्रमाणे – अंचित – रहीरहीने नाच्चं, रिभित – गीत सहित पदनी संज्ञावहे नाच्चं, आरमड – नाचते छते पंक्तिना अभिप्रायने हस्तादिद्वारा बतावतां थकां बोलचं. अने भिसोल –

श्रीस्था-नाज्ञचत्र सादुनाद ॥ ५४७॥

नाचते छते निचे पडवुं. (२)चार प्रकारे गेय-गायन कहेल छे, ते आ प्रमाणे-उक्षिप्त-प्रथमथी प्रारंभ करातुं गायन, पत्रक-छंद विगेरे चार भागरूप पदवडे बांधेछं, मंद-मध्यभागमां मूर्च्छनादि गुणयुक्तपणाए मंद मंद घोलनात्मक अने कहेल लक्षण-युक्तपणाए भावित छे छेडो जेनो ते रोचितावसान अर्थात् धीमे धीमे स्वरनी वृद्धि करवारूप. (३) चार प्रकार माल्य-पुष्पनी रचना कहेल छे, ते आ प्रमाणे-ग्रंथिम-सूत्रवडे गूंथेल पुष्पनी मालादि, वेष्टिम-पुष्पना वींटनवडे बनावेल, पुरिम-मुक्टादि पूरवावडे थयेल अर्थात जे पुष्पोवडे पूराय छे ते अने संघातिम-जे परस्पर पुष्पनालना संघात-मळवाथी बने छे ते. (४) चार प्रकारे अलंकार कहेल छे, ते आ प्रमाणे-केशवडे करीने पुरुष शीभे छे ते केशालंकार. एम वस्त्रालंकार, माल्यालंकार अने आभरणालंकार जाणवा.(५) चार प्रकारे अभिनय-भावने बतावनार चेष्टाविशेष कहेल छे, ते आ प्रमाणे-दार्हांतिक, पांडुसुत, सामंतोवाचनीक अने लोकमध्यावसान, (६) (स्व० ३७४) सनत्कुमार अने माहेंद्रकल्पने विषे विमानो चार वर्णवाळा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-नीला, राता, पीळा अने घोळा. महाशुक्र तथा सहस्रार नामना देवलोकने विषे देवोना भवधारणीय शरीरो उत्कृष्टथी चार हाथनी ऊंचाईवाळा कहेला छे. (स० ३७५)

उत्कृष्टया चार हाथना ऊचाइवाळा कहला छ. (सू० २०५)
टीकार्थः-'चत्तारि धम्मे' त्यादि० चारित्रलक्षण धर्मना चार द्वारो-उपायो कहेल छे. (स० ३७२) क्षमा विगेरे
धर्मना द्वारो छे एम कह्युं, हवे नारकत्वादिना साधनरूप आरंभादि कर्मना द्वारो छे ते विभागथी ' चउहिं ठाणेहिं '
इत्यादि स्त्रचतुष्ट्यवेड कहे छे. आ स्त्र सुगम छे. विशेष ए के-'नेरहयत्ताए' त्ति०-नैरियकपणा माटे अथवा नैरियकपणाए कर्म-आयुष्कादि. ' नेरडयाउयत्ताए ' त्ति० आ पाठांतरने विषे नैरियकायुष्करूप कर्मदिलक्षित ने बांधे छे). महान-

४ स्थान काष्ययन उद्देशः ४ धर्मद्वारायु-हेंतुवाद्यादि-विमानव-णीदि स्र० ३७२-७५

॥ ५४७ ॥

इच्छाना परिमाणवडे न करायेल मर्यादापणाए पृथिवी विगेरेना उपमईन लक्षणरूप मोटो आरंभ छे जेने ते महारंभ-चक्रवर्त्ती प्रमुख, तेनो भाव ते महारंभता, ते महारंभपणाएँ नारकीनुं आयुष्कादि कर्म बांधे छे. एवी रीते महापरिग्रहपणाथी. विशेष ए के-चातरफथी ग्रहण कराय ते परिग्रह-हिरण्य, सुवर्ण, द्विपद अने चतुष्पदादि. 'कुणिमं'-मांस, ते ज आहार(भाजन)वडे. (१) 'माइस्ट्रयाए' त्ति॰ मायावीपणाए अने माया एटले मननी कुटिलता, 'नियडिस्ट्रयाए' त्ति॰ निकृति एटले अन्यने ठगवा माटे शरीरनी चेष्टानुं अन्यथा करणरूप अथवा अभ्युपचाररूप, अने खोटा त्राजवा(तोला) तथा खोटा मापवडे जे व्यवहार ते कूटतुला-कूटमान कहेवाय छे, तेनावडे. (२) प्रकृति-स्वभाववडे भद्रकता, बीजाने अनुताप न करनारी ते प्रकृतिभद्रकतावडे, सानुक्रोश्चता-दयाळुपणाथी, मत्सीरकता-अन्यना गुणोने नहि सहन करवारूप ईर्ष्याना प्रतिषेधरूप अमत्सरिकपणाए (३) सरागसं-यम-कषाययुक्त चारित्रवडे, कारण के #वीतरागसंयमीओने आयुष्यना बंधनो अभाव होय छे. संयम अने असंयमरूप बे स्वभाववाळो होवाथी देशसंयम, बालकोनी जेम बाल-मिध्यादृष्टिओ, तेओनुं तपकर्म-तपरूप क्रिया ते बालतपःकर्मवर्ड, ' अकामेन '-निर्जरा प्रत्ये अभिलाषा न होवाथी जे निर्जरा कमेने निर्जरण (खरवाना) हेतुरूप भृख विगेरेनुं सहवुं ते अकाम निर्जरा, तेना बढे ४. (स्० ३७३) हमणा ज देवनी उत्पत्तिनां कारणो कह्या अने देवो तो वाद्य, नाटच विगेरेमां रितवाळा होय छे. माटे वाद्यादिना भेदोने कहेवा माटे छ सूत्र पैकी प्रथम 'वज्जे 'त्ति० वाद्य, वीणादि ते तत जाणवुं, पटह-ढोल ***अ**ायुप्यना बंधनी प्रारंभ छट्टा गुणठाणा सुधी होय छे, छट्टे बांधतो सातमे गुणठाणे आयुप्यना बंधने पूर्ण करे परंतु सातमे प्रारंभ करे नहि. तदुपरांत गुणठाणे सरागी होवा छतां पण विद्याद्ध परिणाम होवाथी आयुष्यने बांधे नहि.

श्रीस्था-नामध्य बानुवाद ॥ ५४८ ॥

प्रमुख वितत, कांस्यतालादि घन अने वांसली प्रमुख शुषिर मानेल छे. (१) नाट्य, गेय अने अभिनय विषयक सूत्रोतं वर्णन संप्रदायना अभावश्री करेल नथी. मालाने विषे सुंदर ते माल्य, पुष्प-तेनी रचना पण माल्य, ग्रंथ-संदर्भ, सूत्रथी गुंथवा-वडे बनावेछं तं ग्रंथिममालादि, वेष्टन-बीटबुं, तेनावडे बनावेछं ते वेष्टिम-मुक्कुट विगरे. पूर-पूरवावडे बनावेछं ते पुरिम, माटी-मय अनेक छिद्रवाळं अथवा वांसनी शळीशे। विगेरेनुं पिंत्रहं अर्थात जे पुष्योवडे पूराय छ ते पूरिम, संवात-एकत्रित करवावडे बनावेल ते संघातिम, जे परस्परथी पुष्पनाल विगरेना जोडाणवडे उत्पन्न कराय छे ते. जेनावडे शोभा कराय ते अलंकार.केशो ए ज अलंकार ते केशालंकार, एवी रीते बस्नालंकार विगेरे जाणवं.(म् ०३७४) देवना अधिकारवाळा वे स्त्रो सुगम छे. विशेष एके-सनत्क्रमार अने माहेंद्र कराने विषे चार वर्णवाळा विनानो छे. अध्य करवीने विषे तो जुरी रीत छे. कहां छे के-सोहम्मे पंचवन्ना, एक्रगहागी उ जा सहस्तारो । दो दो तुह्या कप्पा, तेग परं पुंडरीयाओ ॥ २२३ ॥

सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोकमां पांच वर्णवाळा विमानो छे, त्रीजा अने चोयामां कृष्णवर्ग सिवायना चार, पांचमा अने छहामां नीलवर्ण सिवाय त्रण, सातमा अने आठमामां राता वर्ण सिवाय पीत अने श्वेत ए वे वर्ण अने नवमाथी मांडीने छेक सर्वार्थिसिद्ध पर्यंतना विमानोमां एक श्वेतवर्ण छे. ते भवमां धारण कराय अथवा ते भव प्रत्ये धारण कराय ते भवधारणीय अर्थात जे जन्मथी मरण पर्यंत रहे. बीडेल म्रष्टि ते रित, अने ते ज खुळी आंगलीबाळी मुष्टि ते अरित, एवं वचन होवा छतां पण 'रितन ' शब्दवडे अहिं सामान्ययी हाथ कहेबाय छे. शुक्र अने सहस्रार कल्पने विषे चार हाथना प्रमाणवाळा देवो छे. बीजा देवलोकने विषे तो जुदी रीते छे. कह्यं छे के-

े स्थाः का ध्ययन उद्देशः ४ धर्मद्वारा-युर्हेतुवाद्या-दिविमान-वर्णादि स० 302-04

॥ ५४८ ।

भवण १० वण ८ जोइस ५ सोह-म्मीसाणे सत्त होंति रयणीओ । एक्केक्कहाणि सेसे, दुदुगे य दुगे चउक्के य ॥ २२४ ॥ गेविजेसुं दोन्नी, एका रयणी अणुत्तरेसु । ति०

दश भवनपति, आठ वानव्यंतर, पांच ज्योतिष्क अने सौधर्म तथा ईशानकराने तिषे देवोतुं सात हाथतुं शरीर होय छे. त्रीजा चोधामां छ, पांचमा छद्वामां पांच, सातमा आठमामां चार, नवमाथी बारमा सुधीमां त्रण, नव ग्रैवेयेकमां बे अने पांच अनुत्तर विमानोमां देवोतुं एक हाथतुं शरीर होय छे. भवधारणीय शरीरो आ प्रमाणे छे.

उत्तरवैक्रिय शरीरों तो उत्कृष्टथी एक लक्ष योजन पण संभवे छे. जघन्यथी तो भवधारणीय शरीरो उत्पत्तिकालमां अंगुलना असंख्येय भाग प्रमाणवाळा होय छे अने उत्तरवैक्रियों तो अंगुलना संख्येयभाग प्रमाणवाळा होय छे. (सू० ३७५) अनंतर देव संबंधी वक्तव्यता कही अने देवो अप्कायपणाए पण उत्पन्न थाय छे माटे उदक संबंधी गर्भनुं प्रतिपादन करवा माटे ' चत्तारि ' इत्यादि० वे सूत्र कहे छे—

चत्तारि उद्कगन्भा पं॰ तं०-उस्ता महिया सीता उत्तिणा, चत्तारि उद्कगन्भा पं० तं०-हेमगा अन्भसंथडा सीतोसिणा पंचरूविता,-माहे उ हेमगा गन्भा, फग्गुणे अन्भसंथडा । सीतो- श्रीस्था-नाङ्गध्त्र सातुनाद ॥ ५४९ ॥

सिणा उ चित्ते, वितसाहे पंचरूविता ॥१॥ सू० ३७६, चतारि माणुस्सीगब्भा पं० तं०-इत्थिताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए बिंबत्ताए-अप्पं सुक्कं बहुं ओयं, इत्थी तत्थ पजाति। अप्पं ओयं बहुं सुक्कं, पुरिसो तत्थ पजाति ॥१॥ दोण्हं पि रत्तसुक्काणं, तुस्लभावे णपुंसओ। इत्थीतोतसमाओगे, बिंबं तत्थ पजायित ॥२॥ सू० ३७७

मूलार्थः- उदकना चार गर्भो-काळांतरे जल वरसवाना हेतुओ कहेला छे, ते आ प्रमाण-अवश्या-झाकळ, महिका- धूमस, श्वीता-अत्यंत टाढ अने उष्णा-गरमी. उदकना चार गर्भो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-हिम-बरफतुं पडवुं, अभ्रतंस्थिता- वादळांओवडे आकाशनुं आच्छादन थवुं, शितोष्ण-अत्यंत ठंडी अने गरमी तेमज गाज, वीज, जल, वायु तथा वादळां-आ पांच लक्षणना मिलनरूप पंचरूपिका. माह मासमां हिमवाळा गर्भो, फाल्गुन मासमां अभ्रसंस्थिता लक्षण गर्भो, चैत्र मासमां शितोष्णा अने वैशाख मासमां पंचरूपी गर्भो होय छे. (६० ३७६) चार प्रकारे मनुष्यणीना गर्भो कहेला छे, ते आ प्रमाणे- स्त्रीपणाए, पुरुषपणाए, नपुंसकपणाए अने बिंच-गर्भाश्यमां गर्भनी आकृतिरूप रूधिरनो बंध-पिंडपणाए. ज्यां अल्प वीर्य अने विशेष रुधिर होय छे त्यां स्त्रीपणे गर्भ उत्पन्न थाय छे, ज्यां अल्प ओज-रुधिर अने बहु वीर्य होय छे त्यां पुरुषपणे गर्भ उत्पन्न थाय छे ॥ १ ॥ रुधिर अने वीर्य, ए बन्नेनो समानभाव ज्यां होय त्यां नपुंसकपणे गर्भ उत्पन्न थाय छे अने वायुना वश्रथी ज्यां स्त्रीनुं रक्त स्थिर थई जाय छे त्यां गर्भाश्यमां विवरूपे गर्भ उत्पन्न थाय छे ॥ २ ॥ (६० ३७७)

४ स्थान-काष्ययने उद्देशः ४ उदकगर्भः मनुष्यगर्भ-श्र स्र॰ ३७६-७७

।। ५४९ ॥

टीकार्थ:-' दगगडभ त्ति ० दक-उदकना गर्भांनी जेम गर्भों ते उदकगर्भों अर्थात काळांतरने विषे जल वर्षवाना हेतुओ. वर्षादने सूचन करनारा एवं तात्पर्य छे. अवश्याय-ठारनं पाणी, महिका-धूमस, अत्यंत ठंडी अने गरमी. जे दिवसे ए उदकना गर्भी उत्पन्न थाय छे त्यारथी उत्कृष्टतः नाश न थया थका छ महिने उदकने वरसावे छे. बीजाओए वळी एवी रीते कहां छे के-" १ पवन, २ वादळा, ३ वृष्टि, ४ वीजळी, ५ गर्जारव, ६ शीत, ७ गरमी, ८ किरण, ९ परिवेष (कुंडाळुं) अने १० जळमत्स्य-ए दश्च प्रकार जळने उत्पन्न करवाना हेतुओ कहेला छे. तथा-" शीत, पवनो, बिंदु, गर्जारव अने कुंडाळं-आ लक्षणोने गर्भोने विषे सारी रीते जोनारा निर्प्रथो श्रेष्ठ कहे छे. " तथा सातमे सातमे मासे अथवा सातमे सातमे दिवसे गर्भी परिपक्व थाय छे, जेवा गर्भी तेवुं फळ समजवुं. हिम-बरफ, ते ज हिमक, तेना गर्भी ते हैमका अर्थात् हिमना पडवारूप, ' अञ्भसंथडा '-अभ्रसंस्थितो-वादळाओवडे आकाशना आच्छादनो, आत्यंतिक शीतोष्ण अने गर्जवुं, विद्युत्, जळ, वायु अने वादळांरूप पांच लक्षणोत्तुं एकत्रित थबुं ते पंचरूप, ते छे जेओने ते पंचरूपिका-पांच रूपवाळा उदकामी. अहिं मतांतर आ प्रमाणे छे-" मागशर अने पौष मासमां संध्याराग अने परिवेष (कुंडाळुं) सहित वादळां, मागशर मासमां अत्यंत टाढ निहं अने पौष मासमां अति टाढ अने हिमनुं पडवुं. (१) माह मासमां प्रबल वायु, तुषार-बरफना कणीआवडे कछप (झांखी) कांतिवाळा सूर्य अने चंद्र, अने अतिशय शति तथा वादळां सहित सूर्यनो अस्त * सातमे मासे परिपक्व धनारा गर्भो उत्कृष्टधी जाणवा, ते सारी वृष्टि करे छे अने सातमे दिवसे परिपक्व थनारा गर्भो अल्प वृष्टि करे छे.

श्रीस्था- ** नाङ्गदत्र ** प्रानुवाद ** भ ५५०॥ **

तथा उदय श्रेष्ठ छे. (२) फाल्गुन मासमां रूक्ष (छू) अने आकरी पत्रन, हिनम्घ अने सजल वादळाओ, असंपूर्ण कुंडालाओ तथा कपिल अने ताम्रवर्णवाळो रिव शुभ छे. (३) चैत्र मासमां पवन, वादळा वृष्टियुक्त तथा कुंडाळाओ सहित गर्भो शुभ छे अने वैशाख मासमां वादळा, पत्रन, पाणी, वीजळी अने गर्जनावडे गर्भी हितने माटे थाय छे. (४) " मासना भेदवडे सत्रकार गर्भोने ज बतावे छे 'माहे ' इत्यादि (मूळमांना) श्लोक० (स० ३७६) गर्भना अधिकारथी नारी संबंधी गर्भसत्र कहेल छे ते स्पष्ट छे. मात्र 'इत्थित्ताएं' त्ति० स्त्रीपणाए 'बिम्बम्'-मर्भनुं प्रतिबिंब अर्थात् गर्भनी आकृतिरूप आर्तव-रुधिरनो परिणामः परंतु गर्भस्वरूप निहं ज. कहुं छे के-"वायुवडे अवस्थित (स्थिर) थयेल स्त्रीना रक्तने अजाण लोको गर्भ कहे छे केमके गर्भाकृति जणाय छे. वली कहुक, तीक्ष्म अने उष्म खोराकवडे केवल रक्तमां ज परिणाम थाय छे एम पण श्रुतमां कहेल छे. (१) "जड पुरुषो भूतवडे हरण करायेल गर्भने कहे छे इत्यादि. गर्भतुं विचित्रवणुं कारणना भेदथी छे ते बे श्लोकवडे कहे छे ' अप्प ' मित्यादि । शुक्र-पुरुष संबंधी वीर्य, ओज-आर्तव एटले गर्भाशयमां स्त्री संबंधी रक्त. तथा स्त्रीना ओजवडे समायोग-वायुना वश्रथी तेतुं स्थिर थर्बु. उक्त लक्षण स्त्रीना ओजनो सनायोग थये छते गर्माशयमां विंब उत्पन्न थाय छे. बीजाओए पण आ विषयमां कहुं छे के-'' आ हेत्यी ज शुक्रना बाहुल्ययी पुरुष थाय छे, रक्तनी बहुलताथी स्त्री थाय छे. वली शुक्र अने रक्तनी समानताथी नपुंसक थाय छे. (१) बायुवडे शुक्र अने शोणित अत्यंत मिन्न थये छते यथायोग्य बहु संतित थाय छे. विकृति पामेल मळोवडे वियोनि-गर्भीत्वित्ते अयोग्य अने विकृत आकारवाळा गर्भाशयो थाय छे. (२) " (सू० ३७७) गर्भ प्राणीओनो जन्मविशेष छे, ते उत्पाद कहेवाय छे, अने उत्पाद, उत्पाद नामना पूर्वने विषे विस्तारपूर्वक

३ स्थान•
 ३ काष्ययवे
 ३ देशः ४
 उदक्रगर्भः
 मनुष्यगर्भ ३ स०
 ३७६+७७

11 440 11

कहेवाय छे माटे तेना स्वरूपनुं विशेष प्रतिपादन करवा माटे कहे छे-

उप्पायपुब्वस्स णं चतारि मूलवत्थू पन्नता । सू० ३७८, चउब्विहे कन्त्रे पं० तं०-गजे पजे कत्ये गेए । सू० ३७९, णेरातिताणं चत्तारि समुग्वाता पं० तं०-त्रेयणासमुग्वाते कसायसमु-ग्घाते मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्धाए, एवं वाउक्काइयागवि । सृ० ३८०, अरिहतो णं अ-रिट्टनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुठवीणमजिणाणं जिगसंकासाणं सञ्बब्धरसन्निवाईगं जिगो इव अवितथवागरमाणाणं उक्कोसिता चउइसपुब्विसंपया हुत्था । सृ० ३८१, समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वादीणं सदेवमणुयापुराते परिसाते अपराजियाणं उक्कोसिता वातिसंपया हुत्था।सू० ३८२, हेट्विछा चतारि कप्पा अद्धचंद्संठाणसंठिया पन्नता तं०-सोहम्मे ईसाणे सणं-कुमारे माहिंदे, मिन्झिछा चत्तारि कप्पा पिडियुन्नचंदसंठाणसंठिया पन्नता, तं --वंभ छोगे छंतते महासुके सहस्सारे, उवरिक्षा चत्तारि कःपा अद्धवंदसंठाणसंठिया पन्नता, तंजहा-आगते पागते आरणे अच्चुत्ते । सू० ३८३, चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा पं० तं०-ळ्य गोदे वरुणोदे खीरोदे

भीस्था-नाङ्गस्त्र सानुवाद ॥ ५५१॥ घतोदे । सृ० ३८४, चत्तारि आवत्ता पं० तं०-खरावत्ते उन्नतावत्ते गृढावत्ते आमिसावत्ते, एवामेव चत्तारि कसाया पं० तं०-खरावत्तसमाणे कोहे, उन्नत्तावत्तसमाणे माणे, गूढावत्तसमाणा माता, आमिसावत्तसमाणे लोभे, खरावत्तसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति णेरइएसु उववज्जति उन्नत्तावत्तसमाणं माणं एवं चेव गूढावत्तसमाणं मातमेवं चेव आमिसावत्तसमाणं लोभमणुपविद्रे जीवे कालं करेति नेरइएसु उववजेति । सू० ३८५

मुलार्थ:-उत्पाद नामना प्रथम पूर्वनी चार चूलिकानी जेम चूलिका वस्तुओ कहेली छे. (स० ३७८) चार प्रकारे काव्य (ग्रंथ) कहेल छे, ते आ प्रमाणे-गद्य-छंद रहित, शस्त्रपरिज्ञाअध्ययनवतः पद्य-छंदबद्धः विम्रुक्तिअध्ययनवत् कथ्य-कथामां सारुं अने गेय-गावा योग्य. (सू० ३७९) नैरियकोने चार समुद्धात कहेल छे, ते आ प्रमाणे-वेदनावडे समुद्-घात, कषायवडे समुद्घात, मरणना अंतमां थनारो मारणांतिक समुद्घात अने उत्तरवैक्रिय करवाने माटे थतो वैक्रियसमुद्घाते. एवी रीते वायुकायिकोने पण चार समुद्धात छे. (सू० ३८०) अरिहंत अरिष्टनेमिने जिन नहिं पण जिन सरखा, सर्व अक्षरना सन्निपाती-संयोगना जाण, जिननी जेम सत्य वचनना कहेवावाळा एवा चार सो चौदपूर्वी मुनिओनी उत्कृष्टी चौदपूर्वी संपदा हती. (सू० ३८१) श्रमणभगवान् महावीरस्वामीने देव, मनुष्य अने असुरो सहित परिषदने विषे कोईथी पराजय नहि पाम-

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः ४ वस्तुस-मुद्घात-पूर्विवादि-कल्पसंस्था-नाब्धिर-सावतोः **※ ほっ**きゅくー

॥ ५५१ ॥

नारा एवा चार सो वादी मुनिओनी उत्कृष्टी वादीसंपदा हती. (सू० ३८२) नीचेना चार कल्पो अर्द्धचंद्राकार संस्थित कहेला छे, ते आ प्रमाण-सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार अने माहेंद्र. वचला चार कल्पो परिपूर्ण चंद्राकारे संस्थित कहेला छ, ते आ प्रमाण-ब्रह्मलोक, लांतक, महाशुक्र अने सहस्रार. उपरला चार कल्पो अर्द्धचंद्राकारे संस्थित कहेला छे. ते आ प्रमाण-आनत, प्राणत. आरण अने अच्युत. (सू० ३८३) चार समुद्रो भिन्न भिन्न रसवाळा कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ लवणोद-मीठाना जेवा पाणीवाळा, वारुणोद-दारुना जेवा पाणीवाळो, श्रीरोद-दूधना जेवा पाणीवाळो अने घृतोद-वृतना जेवा पाणीवाळो छे. (स॰ ३८४) चार आवर्त-भ्रमण कहेला छे, ते आ प्रमाणे-समुद्रमां चक्रनी जेम पाणीनुं भमवुं ते खरावर्त्त, पर्वतना शिखर पर चडवाना मार्गरूप आवर्त्त ते उन्नतावर्त्त, दडाने गुंथेल दोरीनी जेम आवर्त्त ते गृहावर्त्त अने मांसादि माटे पक्षीओं जे भ्रमण ते आमिषावर्त्त. आ दृष्टांते चार कषायो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-खरावर्त्त समान क्रोध, उन्नतावर्त्त समान मान, गृहावर्त्त समान माया अने आमिषावर्त्त समान लोभ छे. खरावर्त्त समान क्रोधने प्राप्त थयेल जीव-क्रोधना उदयवाळो जीव काळ करे छते नैरियकोने विषे उत्पन्न थाय छे, उन्नतावर्त्त समान मानना उदयमां, गूढावर्त्त समान मायाना उदयमां अने आमिषावर्त्त समान लोमना उदयवाळो जीव काळ करे छते नैरियकोने विषे उत्पन्न थाय छे. (स० ३८५)

टीकार्थः-' उप्पाये ' त्यादि० सूत्र सरळ छे. विशेष ए के-चौद पूर्वोमां प्रथम उत्पाद नामनुं पूर्व छे, तेनी चूला-आचारना अग्रभागोनी जेम तद्रूप वस्तुओ अर्थात् बोधविशेषो अध्ययननी माफक चूलावस्तुओ छे. (सू० ३७८) उत्पाद पूर्व काव्य छे माटे काव्यसूत्र कहेल छे, ते सुगम छे. विशेष ए के-काव्य एटले ग्रंथ. १ गद्य-छंदमां नहि बंधायेल-शस्त्रपरिज्ञा अध्ययननी जेम, श्रीस्था-नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ५५२॥

२ पद्य-छंदमां बंधायेल-विम्रक्ति अध्ययननी जेम, ३ कथामां सारुं ते कथ्य-ज्ञातात्रध्ययननी जेम अने ४ गेय-गावा योग्य. अहिं गद्य अने पद्यमां अंतर्भाव होते छते पण कथ्य अने गेयना, कया अने गानधर्मना विशिष्टपगाथी विशेष विवक्षा करेल छे. (स् २७९) अनंतर गेय कहुं, ते भाषास्त्रभाव होवाथी दंड अने मंथानादिना ऋप बड़े लोकना एक देश-विभागने पूरे छे अने सम्रद्घात पण ए प्रमाणे ज छे. आ साधर्म्यथी सम्रद्घातना वे सुत्रो कहे छे, ते सुगम छे. त्रिशेष ए के-'सम्' 'उत्' 'हननम्' अर्थात् एकी भाववडे, प्राबल्यताथी (कर्म पुद्गलोनो) घात ते समुद्वात एटले के शरीरयी जीवना प्रदेशों र बहार प्रकेप-काढवुं. वेदनावडे समुद्धात, कषायवडे समुद्धात, मरण ज अंत ते मरगांत, तेमां थनारो ते मारगांतिक सनुद्धात. एती रीते अहिं *समासो करवा. (सू० ३८०) वैक्रियसमुद्द्यात लिब्बह्न कहेल छे माटे लिब्बना प्रतायथी विशिष्ट श्रुतलब्ब-मानोने कहेवा माटे ' अरहओ ' इत्यादि बे सूत्रो कहेल छे, जे सुगम छे. विशेष ए के -सर्वज्ञ निर्ह हो गयी अजिन, अवि-रोधी वचन होवाथी अने पूछेल प्रश्नने यथातथ्य कहेनार होवाथी जिन सद्द्य, अकारादि बधा य अक्षरोना सन्निपाती-द्वयादि संयोगो, अभिधेय-कहेवा योग्य भावोना अनंतपणाथी अनंता पण अक्षरना संगोगो विद्यमान छे जेशोने ते सर्शक्षरसित्रा-तीओ, एओनुं जिन समानपणुं होवानुं कारण कहे छे-' जिणो विव ' इत्यादि० 'उक्कोसिय'-क्यारे पण उक्त संख्याथी

४ स्थान-काध्ययने उद्देतः ४ ब स्तुत-मुद्यात-पूर्विगादि-कर्यसं-|स्थान।विध-रसावतीः

^{*} वेदनावडे समुद्घात ते वेदनासमुद्घात, कषायवडे समुद्घात ते कषायसमुद्घात, मरणना अंतमां धनारो समुद्घात ते मारणांतिकसमुद्घात अने वैक्रिय शरीर करवा माटे समुद्घात ते वैक्रियसमुद्घात.

अधिक #चौदपूर्वीओ (एमना) थया न हता. (सू॰ ३८१-३८२)×। ते मुनिओ +प्रायः देवलोकमां गयेला छे माटे देवलोक संबंधी सत्रो छे ते सुगम छे. विशेष ए के-' अद्धचंदसंठाणसंठिए ' त्ति॰ पूर्वापरथी मध्यमां सीमा(हद)- ना सद्भावथी. (सू॰ ३८३) देवलोको क्षेत्र छे माटे क्षेत्रना प्रस्तावथी समुद्र सत्र कहेल छे ते सुगम छे. विशेष ए के-एक- एक प्रत्ये भिन्न छे रस जेओना ते प्रत्येक रसो-जुदा रसवाळा. लवणना रसतुं उदक होवाथी लवण, पाठांतरमां तो लवण माफक उदक छे जेमां ते लवणोद, (आ शब्द निपातथी सिद्ध थयेल छे.) आ प्रथम समुद्र. वारुणी एटले सुरा, तेनी समान ते वारुण, सुरा समान उदक छे जेमां ते वारुणोद-आ चतुर्थ समुद्र. दूध समान उदक छे जेमां ते क्षीरोद-पांचमो समुद्र अने घृत जेवुं उदक छे जेमां ते घृतोद छट्ठो समुद्र. कालोद समुद्र, पुष्करोद समुद्र अने स्वयंभूरमण समुद्र उदक रसवाळा छे, शेष समुद्रो इक्षुरसवाळा छे. कह्यं छे के-

वारुणिवरखीरवरो, घयवर लवणो य होंति पत्तेया। कालो पुक्खर उदही, सयंभुरमणो य उदगरसा ॥२२५॥

भावार्थ उपर मुजब छे. (सू० ३८४)

- * नेमनाथ भगवानना एथी वधु थया न हता एम समजबं. श्री ऋषभादि तीर्थंकरोना तो घणा हता.
- × स् ३८२ नी व्याख्या सुगम होवाशो टोकाकारे करी नथी.
- + प्रायः कहेवानुं कारण ए के केटलाक मोक्षमां पण गयेला छे.

गीस्था-ना**ज्ञस्**त्र सानुवाद ॥ ५५३ ॥

अनंतर समुद्रो कह्या, तेओने विषे आवर्त्तो (वमळ) होय छे माटे दृष्टांतरूप आवर्त्तोने अने दार्ष्टांतिकरूप कपायोने कहेवानी इच्छावाळा सुत्रकार वे सुत्रने कहे छे जे सुगम छे. विशेष ए के-खर-कठण अति वेगथी पाडनार अथवा छेदनार अमण ते आवर्त्त, ते समुद्रादिनो अथवा चक्रविशेषोनो खरावर्त्त, उन्नत-ऊंचो तद्रूप आवर्त ते उन्नतावर्त, ते पर्वतना शिखर उपर चडवाना मार्गनो अथवा ऊँचे चडवारूप वायुनो छे, गृढ एवो आवर्त्त ते गृढावर्त्त, ते दडा संबंधी दोरानो अथवा लाकडानी गांठ प्रमुख-नो होय छे, आमिष-मांसादि, तेने माटे शमळी विगेरेनो आवर्त्त ते आमिषावर्त. खरावर्त्तादिनी समानता क्रमशः क्रोधादिनी कहे हो. बीजाने अपकार करवामां कठार होवाथी क्रोधने, पांदडां अने तृण विगेरे वस्त्तनी जेम मनने उन्नत(मोटाई)पणाने विष आरोपण करवाथी मानने, अत्यंत दुर्रुक्य होवाथी मायाने अने सेंकडो अनर्थनी प्राप्तिवडे व्याप्तस्थानने विषे पण नीचे पडवातुं कारण होवाथी लोभने उपमाओ घटे छे. आ उपमा क्रमशः अतिशय क्रोधादिने छे. हवे तेओनुं फल कहे छे-' खरावत्ते ? त्यादि० अग्रुभ परिणाम ने अशुभ कर्मबंधना निमित्तपणाए दुर्गतिना निमित्तपणाथी कहेवाय छे के 'णेरइएसु उववज्जह' त्ति० (सू० ३८५) अनंतर नारको कह्या ते वैक्रिय विगेरेथी समान धर्मवाळा देवो छे माटे तेओना विशेषभूत नक्षत्र देवो संबंधी चार स्थानक प्रत्ये कहेवानी इच्छावाळा स्त्रकार ' अणुराहे ' त्यादि० त्रण स्त्रने कहे छे-

अणुराहानक्खत्ते चउत्तारे पं०-पुव्वासाढे एवं चेव उत्तरासाढे एवं चेव । सू० ३८६, जीवाणं चउठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, नेरतियनिव्व-

४ स्थान-काध्ययने उद्देशः ४ नक्षत्रता-रकाः पुद्ग-पुद्गलप्रदे-

॥ ५५३ ॥

त्तिते तिरिक्खजोणितानेव्वत्तिते मणुस्स॰ देवनिव्वत्तिते, एवं उविचिणिसु वा उविचणित वा उविचणित्स्ति वा, एवं चिय उविचय बंध उदीर वेत तह निज्जरे चेव। सू॰ ३८७, चउपदेसिया खंधा अणंता पन्नत्ता—चउपदेसोगाढा पोग्गला अणंता, चउसमयद्वितीया पोग्गला अणंता, चउगुणकालगा पोग्गला अणंता, जाव चउगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता। सू॰ ३८८॥

चउत्थो उद्देसो समत्तो चउठाणं चउत्थमज्झयणं समत्तं ॥

मूलार्थः-अनुराधा नक्षत्रना चार तारा कहेला छे. पूर्वाषाढा ए प्रमाणे छे, उत्तराषाढा ए प्रमाणे छे. (स० ३८६) जीवाए चार स्थानवडे निर्वर्षित-कर्मपरिणामने पमाडेल पुद्गलोने पापकर्मपणाए चय-एकत्रित करेल छे, अर्थात् अल्प प्रदेश-वाळी पापप्रकृतिओने बहु प्रदेशवाळी करेल छे, करे छे अने करशे, ते आ प्रमाणे-नैरियकपणाए निर्वर्तित, तिर्यंचयोनिक-पणाए निर्वर्तित, मनुष्यपणाए निर्वर्तित अने देवपणाए निर्वर्तित. एवी रीते उपचय-फरीने फरीने दृद्धि करेल छे, करे छे अने करशे. ए प्रमाणे चय, उपचय, बंध-शिथलबंधवाळा कर्मोने गाढ बंधवाळा क्रकरेल छे, उदीरण-उदयमां आवेल दिलकने विषे उदयमां निर्हे आवेल कर्मदिलकने वीर्यवडे आकर्षीने भोगवेल छे, वेदन-प्रतिसमय स्वविपाकवडे अनुभवेल छे तेमज निर्जरा-

^{*} करे छे अने करशे एम सर्वत्र समज्बं.

श्रीस्था-नाङ्गधत्र सासुनाद ॥ ५५४ ॥ आत्मप्रदेशथी दूर करेल छे, करे.छे अने करशे. (स॰ ३८७) चार प्रदेशवाळा स्कंधो अनंता कहेला छे. चार आकाशप्रदेशने अवगाहीने रहेला पुद्गलो अनंता कहेला छे. चार गुणवाळा काळा पुद्गलो अनंता कहेला छे यावत् चारगुण ळूखा पुद्गले। अनंता कहेला छे. (स॰ ३८८)

टीकार्थ:-आ सत्र सरळ छे. (स्० ३८६) जीवोना देवत्वादि भेद, कर्मपुद्गलना चय विगेरेथी करायेल छे माटे तेतुं प्रतिपादन करवा सारु ' जीवाणं ' इत्यादि० छ धूत्र, जो के पूर्व (आनी) व्याख्या करायेल छे तथापि कंईक लखाय छे. 'जीवाणं ' ति ॰ 'णं ' शब्द वाक्यना अलंकार अर्थमां छे. निर्वर्तित-कर्मना परिणामने पामेला. तेवा प्रकारना अञ्चम परिणामना वञ्चथी बांधेला ते चतुःस्थाननिर्वर्तितो. ते पुद्गलोने केवी रीते बांधेला छे ते कहे छे-पापकर्मतया-अग्रभस्त्रहरप ज्ञानावरणादिपणाए ' चिणिस्त्र ' त्ति ० तथाप्रकारना अपर पुदुगलवडे वृद्धि करेला-अल्प प्रदेशवाळी पाप-प्रकृतिओने बहुप्रदेशवाळी करेली. 'नेरइचनिव्वत्तिए ' सि० नैरियकपणाए वर्तता सतां जे निर्वित्तिता ते नैरियकनिर्वितिता. एवी रीते सर्वत्र समास करबो. तथा ' एवं उचचिणिंस्त ' त्ति ० उपचय अर्थात् पुनः पुनः पुद्धि करेल छे ' एव ' मिति ० चयादिना न्यायवडे बंध विगेरेना सूत्रो कहेवा. अहिं ' एवं बंध उदीरें ' त्यादिना वक्तव्यमां चय, उपचयतुं ग्रहण करेल छे ते स्थानांतरमां प्रसिद्ध गाथाना उत्तरार्द्धनी अनुवृत्तिना वश्थी जाणवुं. तेमां 'बंघ 'त्ति० 'बंधिंसु ३ शिथिल बंधनवडे बांधल कर्मोने गाढ बंधनवडे बंधवाळा कर्यां छे. करे छे अने करशे. ' उदीर ' त्ति ॰ ' उदीरिंसु ३ उदयमां आवेल दिलकने विषे जे उदयमां निह आवेल कर्मदिलकोने करण(वीर्य)वडे आकर्षीने वेदेल छे २, ' वेघ ' ति ० ' वेदिंसु ३

८ स्थान-काण्ययने उदेशः ४ नसम्बद्धा-

।। ५५४।